MSS No. 256 Subject Religion

Name of MSS छान्दोग्य उपनिषद्

Author

Period Folios 270 (1 To 33 + 35 To 257 + 259 To 272)

Script Hindi Source Prithipal Singh

Missing Folios 34, 258 Amritsar

12

256

1 TO 241 11 X 6½

256

सृष्टि के भेदों को तीन कहा उद्गीथ अग्नि तत्व है

वाक और प्राण साम ओं की ध्वनि उद्गीथ

१॥ ओं॥ श्रीपरमात्मने नमः॥ ॥ ॥ अथ उपनिषद छांदूक सामवेद भाषा लिख्यते॥ ॥ ॥
ओं अर्थ यह है जो तीन करता भेदों का ब्रह्मा कार्या के हैं॥ तांको उद्गीथ जान कर ऐसी उ
पासना कर जय ही नाम उद्गीथ है॥ वास्ते इनके जय यह नाम सब्द सामवेद के सा
थ शब्द गंभीर के साथ उचार करीयत है॥ उद्गीथ अग्नि तत्व है॥ जैसे सर्व के स्थि
ति अर इस पृथ्वी में एथवी तत्व है॥ अर पृथ्वी सो जल तत्व है॥ अर जल मो मथए
कर ना तत्व है॥ अर मथ ए कर न हारे सों वाक इंद्री॥ अर वाक इंद्री सों श्रुति वेद की
अर श्रुति में सांम जो साथ धुन के उचारीयत है॥ अर सांम सों उद्गीथ तत्व है॥ अ
र्थ यह है ओं को साथ धुन गंभीर के उचार करना॥ उद्गीथ तत्त्व सो तत्व है॥ अर तत्व
अवर उद्गीथ सों श्रेष्ठ नहीं॥ कवन सी है व श्रुति अर कवन सा है वा साम अर
कवन सा है उद्गीथ॥ वाक इंद्री श्रुति है॥ प्राण ही सांम है॥ ओं साथ धुन के उद्गीथ है
वाक इंद्री जो सकि है॥ साथ प्राण के जुपल बुहै इन दोनो का संबंध है॥ वाक इंद्री

इच्छा 2

औं स्वीकृति का वचन है।

अत्यन्त 4

अरु प्राणसाधस्रुतिके सामकें मुखित होत संते इन दोनोंके मिलापसें नामु उचा
रीयत है॥ जब वहि हिपर्स परी मिलत है॥ तब वहि चाह्रा वकताकी प्रगट होत है॥ जो के
ऊं हैं ताको उद्गीथ जान कर अभ्यास करे॥ प्राणसंदू नें चाह्रोंके प्राप्त होत है॥ याप्राण
वकाउच्चार करना ही धारना है॥ प्रसिद्ध है जो कोऊ वचन को हूं को अंगीकार कर
त है तांके उत्तरमो वही कहलावत है॥ यांके उत्पत्ति इस्थानको अरु लय इस्था
नको अभ्यास करना अतिनिधि गंभीर है॥ जो कोऊ ऊंको उद्गीथ जानकर उ
पासना करे संपूर्ण निधिको प्राप्त होत है॥ अरु अवरोहूंको आनंदको प्राप्त कर
त है॥ अरु तीन ही वेद रिग यजुर साम चतुर्थ अथर्वण है॥ जो तत्व इन तीन
हीसों निकसा है॥ तांते नाम वांका मद्ध इनके नहीं कहा॥ जो मूल है॥ अरु य
ह सर्व मद्धया नामके है॥ पुसंगजु द्धसुरोंका अरु असुरोंका अजीतना असु
रोंका॥ सुर अरु असुर वासते युद्धके परस्पर एकठा मये॥ अरु देवत्योंने ऊं

केसाथउद्गीथकोउच्चारकीया॥ जोवाकीउपासनासोऊपरदेवतैकेजीतवावेहम
निकटघ्राणइंद्रीकेजातमये॥ अरकहतमयेजुवासतेजीतहमारीकेशब्द
प्रणवकाकहो॥ घ्राणइंद्रीनेअंगीकारकीया॥ अरोचनरूपनेमोवीचारकर
तमई॥ जोजीतइनकीहोगी॥ तौपुनवाकामेरेभागमेहूहोगा॥ असुरोंनेवा
सतेइसकेजुवानेपुनकीप्राप्त्यापमोवीचारकरीथी॥ ताकोजीताअरूआश्र
केकीया॥ इसीकारनतेघ्राणइंद्रीसुगंधअरदुर्गंधकोअंगीकारकरतहै॥
पुनःदेवतानिकटवाकइंद्रीकेजातमये॥ अरकहतमये॥ जुवासतेजीतह
मारीकेशब्दप्रणवकेसोसहाइहमारीकरे॥ वाकइंद्रीनेअंगीकारकीया॥
अरोचितमोल्यावतमई॥ जजीतइनकीहोगी॥ पुनवाकामागमेरेमोहो
गा॥ असुरोंनेइसीवास्तेवानेपुनकरपुनमागमोवीचारकीयाथा॥ वा
कइंद्रीकोजीततमई॥ अरदंडदेतमये॥ इसीतेवाकइंद्रीशुभअशुभ

कहत हैं॥ पुनः देवता चंद्र इंद्री के जात भये॥ अरु कहत भये॥ जु वासते जीत हमारी के सहाय
करो॥ चंद्र इंद्री ने अंगीकार कीया॥ अरु चित्त में ल्यावत भई॥ जु जीत इन की होगी॥ पुन
वांका भाग मेरे मों होगा॥ असुरों ने इसी ते जु वा ने पुन आप ने भाग मो वीचार कीया र
था॥ चंद्र इंद्री को जीतत भये॥ अरु दंड देत भये॥ इसी ते चंद्र इंद्री देवनों के अरु असुरन के
बने को देखत हैं॥ पुनः देवतां नि कर श्रवण इंद्री के जात भये॥ अरु कहत भये॥ जु वा
सते जीत हमारी के सहाइ करो॥ श्रवण इंद्री ने अंगीकार कीया॥ अरु चित्त मो ल्यावत भ-
ई॥ जु जीत इन की होगी॥ पुन वांका भाग मेरे मो होगा॥ इसी ते असुरों ने जु पुन वां ने
आप ने भाग मो वीचार कीया था॥ श्रवण इंद्री को जीतत भये॥ अरु दंड देत भये॥ ता
ते श्रवण इंद्री शुभ अरु अशुभ को श्रवण करत हैं॥ पुनः देवतां नि कर मन के जात
भये॥ अरु कहत भये॥ जु वासते जीत हमारी के सहाइ करो॥ मन ने अंगीकार क

रकरीचित्तमेंल्यावतभया॥जुजीतइनकीहोगीपुंनवांकामुझेहोगा॥इसीतेऋसुरोंने
जुवानेपुंनऋपुनेमांगमेंवीचारकीयाथा॥मनकोजीततभये॥ऋरदंडदेतभये॥
तातेमनवीचारऋरऋनवीचारकोवीचारतहै॥पुनःदेवतानिकटब्राह्मणके
जन्मलनमकाहैजानतभये॥ऋरकहतभये॥वासतेजीतहमारीकेसहोइकेल॥
ब्राह्मणोंनेकेहंगीकारकरकरऋरपुंनकोनवीचारकरकरसहाइकरी॥ऋसुरोंके
संवूहजुयेवांकोजीतनमसके॥ऋरऋापस्वासप्रमानकालमेंनाशभये॥ऋव
हूंजोकोउब्राह्मणरूपऋापकोजानकरसाथब्राह्मणकेऋभ्यासकरतहै॥ऋरजो
कोउवांकाऋभमयानहीचाहतावांकावाहीकालमेंनाशहोतहै॥ऋरव
ह्मंसमाब्राह्मणरूपजनमहमनकेहै॥ऋरऋभऋरऋऋभगंधकोनहीजा
नत॥वांसोसंपूर्णऋऋभपदार्थदूरभयेहै॥ऋरजोकछुमथणकरतहै ऋ

ब्र० वि०

रपानकरतहैं ॥ तासेंअवरप्राणेंनकोप्रेरितकरतहैं ॥ अरुअंतकालमेंनिकसजातहै
बुद्धिवानजयाउँकोउद्गीथजानकरउपासनाकरतहैं ॥ संपूर्णइच्छाहेंताकोप्राप्तहोतहैं
ओं प्राणोहं
अर्थयहिजमहत्रसरीरकेंउँजहैउद्गीथप्राणरूपस्वरजवतप्रकासतहैं ॥ इतिअध्यात्म
उपासना ॥ अथवाह्यउपासना ॥ पदार्थजोवाह्यशरीरकेहैं ॥ सूरजजोप्रकाश
तहैवाकोउद्गीथजानकरउपासनाकरे ॥ तथथा ॥ जवसूर्जउदैहोइशासेंनिक
सतहैसंपूर्णमनुषादिकचेतंनताकोप्राप्तहोकरउचारमेंप्रवर्त्ततहैं ॥ अरुअं
धकारजोअज्ञानकहैंसोदूरहोतहैं ॥ जोकोउयाभांतजानेमरतलोकअरुस्वर्ग
मृत्युविस्तार
लोक ॥ अर्थयहिजुअर्थअरुधर्ममोक्षदोनोंकोपावे ॥ व्यानपवनकोउद्गीथजा
नकरअभ्यासकरे ॥ जापसेंजीवधारीजीवतहैं ॥ तासेंप्राणवकहीयतहैं ॥ अरु
रजोसोलघुवीजरमेलडारीयतहैं ॥ ताकोअपानकहीयतहैं ॥ अरुप्राणअरु
अपानकीजोसंधमध्यनामहै ॥ ताकोव्यानकहीयतहैं ॥ वहीव्यानवाक्

४

प्राण और अपान के संयोग से उद्गीथ प्रकट होता है वही मैं व्याख्या आदि है

प्राकहंदी है॥ जा काल मो प्राण अर अपान इस्फुरण ता सो इस्थित होत है॥ त
व उच्चारी रिचा वेदकी का होत है॥ रिचा ही साम है॥ अर साम ही उद्गीथ है॥ अ
र उद्गीथ हू प्राण अर अपान के इस्थित होए सो उच्चार होत है॥ जैसे घिसने
दोल करी के सो अग्नि निकसत है॥ तैसे ही घिसणे इन दोनों के सों उद्गीथ
प्रगट होत है॥ अर वही विस्वानर अग्नि है॥ अर वही ओं है॥ अर काम जो
बल सों करीयत है॥ जैसे युद्ध मो सस्त्रों खैंच कर धनष सो डारीयत है॥
तैसे ही इत्यादिक अवर के म हूं प्राण अर अपान के इस्थित होत संते होत है॥ ताते व्यान
पवन ही उद्गीथ है॥ साधवां के अभ्यास चाहीये॥ कीया॥ अक्षर ओं के को उदगीथ जा
नकर अर उदगीथ को अक्षर ओं का जान कर उपासना चाहीये करी॥ उद्गीथ के तीन
अक्षर है उद्गीथ अर अर्थ॥ प्राण जो साधन सकत अपने के ऊर्ध को स्फुरत है॥ ताको

उद्गकहतहै ॥ अरुवायसूंरननतासोशब्दजुप्रगटहोतहै तासोंगीकहतहै ॥ प्राणकोंभ २१
क्तिअंनुहीसोहै ॥ जांतेयकहतै ॥ अर्थयाहै जोइस्फुरणप्राणकीसाथक्षत्रअंनहीके
है ॥ अरुअवरउद्अर्थस्वर्गहूकेहै ॥ अरुगीअर्थअंतरिक्षकोअरुथ, पृथिवीके ॥ अरु
अवरउदअर्थसूर्यकेहै ॥ अरुगीअर्थपवनके ॥ अरुथअर्थअग्निके ॥ अरुअवरसाम
अर्थउदकेहै ॥ अरुयजुअर्थगीके ॥ अरुऋगअर्थथके ॥ अरुयाहिअर्थअदारउद्गी
थसोकामधेनुहै ॥ जैसेदुहिनेइसनोकामधेनुसोजोकछुचाहीयेसोप्राप्तहो
तहै ॥ तैसेहीजोकोऊउदगीथकोयथार्थजानेसर्वप्रकारकेरसकोपावै ॥
अरुअंगीकारकरनहाराअंसप्राणरसकाहोतहै ॥ यांतेजोउद्गीथमंडारमंत्रहुका
है ॥ जोकछुसर्वमंत्रहुसोप्राप्तहोतहै ॥ सोएकउद्गीथसोंप्राप्तहोतहै ॥ देवतोकेसंवू
हमरतुसोभयकरकरमहतीनोवेदोकेप्राप्तभये ॥ अर्थयाहिजुवेदोकीत्रयामोप्रव
र्तनभये ॥ अरुछंदोमोजापकोछपावतभये ॥ इसीतेछंदकाछंदनामभया ॥ अ

५

ध्ययहि है जो ध्यापावन नहारे॥ अरु जैसे मन्न को कोऊ मनुष्य जल के देषे॥ तैसे ही मनुष्य ने देवत्यो
कों देषा॥ अरु ध्ययहि है जैसें मीन जल ही न जीवती नहीं॥ तैसे ही देवता हूं वेद सो रहित नहीं
सकत जीव॥ अरु देवता मनुष्य शब्द के जु उद्गीथ है॥ धुन सामवेद की सैं वाक्यों उच्चार क
रत है॥ अरु गमन करत भये॥ इसी ते जो कोऊ ऋग्वेद अरु यजुर्वेद अरु सामवेद
को उच्चार करत है॥ आदि कों प्रणव को उच्चार करै है॥ यौंही नाम अविनाशी अरु
अभय है॥ देवता मनुष्य या नाम के इस्थित होकर मैं तु सों अभय अरु अविना
शी भये॥ अरु जो कोऊ साधु या के अभ्यास करे॥ अभय अविनाशी होत है॥
अरु जाने वां सो अभ्यास कीया है॥ देवत्यों की न्याई॥ अभय अरु अविनाशी
भया है॥ अथ प्रसंग॥ तीन रिषीश्वर आत्म ज्ञाता ता॥ तीन रिषीश्वर जो उद्गीथ
के ज्ञान नहारे थे॥ एक स्थर इस्थित होकर वीचार करत भये॥ जह्म तीन ही उद्गीथ के
ज्ञाता हैं॥ मनुष्य अपुने चरचा उद्गीथ की करै हम॥ एक ने साथ वादों के कहा प्रथम

दोन्यो प्रश्नउत्तर करे।। प्राकृत मैं मे उच्चार करैं ता।। तब वादोन्यो मैं एक द्विती प्रति प्रश्न
करत भया।। जो सांमी क्या है।। उत्तर।। शब्द।। प्रश्न।। शब्द कीक्या है।। उत्तर।। प्राण प्रश्न
प्राण क्या है।। उत्तर।। अंन।। प्रश्न।। अंन कीक्या है।। उत्तर।। आप।। प्रश्न।। आप कीक्या
है।। उत्तर।। स्वर्ग।। प्रश्न।। स्वर्ग कीक्या है।। उत्तर।। साम मद्ध स्वर्ग ही के रह्या है।। स्व
र्ग सो आगे ज्ञा नहीं सकता।। प्रश्न।। यो है उत्तर स्वे पूछन नहीं।। जो साम स्वर्ग सो आ
गे जा न हीं सकता।। जो को ऊर्द्ध सवर इस भांत उत्तर देता।। सी सवां का गिरता।। जो
ते जो को ऊर्द्ध ऐसा वचन नीच करै है।। सी सवां का गिरत है।। सी सते रहू गि
रता इस ते जो शापु दे एप पाप है।। ऐसे ऐसा कहा जु सी सुते रागि रे।। तब वाहि
वांके उत्तर मो प्रश्न करत भया।। द्वितीयो वाच।। तूं कहु जु स्वर्ग कीक्या है।। प्रथमो
वाच।। जो रह सर्व स्वर्ग का यहि ह पृथवी लोक है।। जाते जो ज्ञान आर स्वर्ग आगम
न करने मनुष्य लोक के आरत पुकारने यालोक के सां प्राप्त होत है।। आर रह स्व

स्वर्गकायाहीलोकसोजान्याजाताहै॥प्रश्न॥जोरहस्यायापृथिवीलोकोकियाहै॥उत्तर॥
जोसामन्आगमनकरकरमद्धपृथिवीलोककेइस्थितभयाहै॥यापृथिवीसेंआगे
नहीगमनकरसकता॥तृतीयोवाच॥त्रितीवादेकोकहा॥एताहीसामर्हेजोम
ध्यालोककेजोहैतांसहतनाशवंतहै॥तामेआगमकरकरइस्थितभयाहै॥
जैसानीचलघुवचनजोअवरकोऊकहतासीसवांकागिरता॥अरसीसते
राहूंगिरता॥इसतेजोश्रापुदेएकाहूकोपापुहै॥तांतेमेनेकहा॥नाजुसीसतेरा
गिरे॥प्रथमोवाच॥तूकहुजयीहएथवीलोकोकिसप्रकारहै॥तृतीयोवाच॥का
रनयालोककाआकाशहै॥जोतेजउतपत्तिइस्थितिप्रलैसर्वकीआकाशहीमें
होतहै॥अरयासोंहूंगंभीरनिराकासहै॥अरवोहिनिराकाशम्ब्रह्माअरब्र
वधसर्वकीहै॥इहीउड्डीयहै॥अरवहीअपारअरवहीआत्मातेराहै॥जो
कोऊउड्डीयकोआकाशवतव्यापकजानकरसाधअभ्यासकरे॥जैसेआ

काशा गंभीर है ॥ वहि ज्ञाता उड्डीयका हू गंभीर होत है ॥ और वां के सर्व लोक वश्य होत
है ॥ और भूपतों का भूपति होत है ॥ और जब लग या संसार मो जीवत रहे ॥ सदा सु
खी और प्रसन्न रहे ॥ और जब या संसार को त्याग करै संपूर्ण या लोको पर जीत पा
वे ॥ और सर्व का धनी हों का ज्ञाता व्योमवत व्यापक और प्रकाशक होत है ॥ और यहि
संपूर्ण संसार ब्रह्म ही है ॥ ब्रह्म ही सो उतपन्न होत है ॥ और ब्रह्म ही सों इस्थित
है ॥ और ब्रह्म ही मो लीन होत है ॥ जो कोऊ इस प्रकार जान कर और अच
ल होकर अभ्यास करे ॥ वीह तत्व संपूर्ण लोकों और कर्मों का है ॥ और संपूर्ण क
र्मों के शुभ है ॥ और चाहों वाला यासन है ॥ वीह केवल आकाश है ॥ और कर तास
वं कामो का है ॥ और सर्व का और चाहो की चाह वही है ॥ और सर्व गंधों की गंध वही
है ॥ और सर्व रसों का रस वही है ॥ और संपूर्ण संसार को वही धार रहे है ॥ और व
ही है जो आत्मा मद्ध मन के है ॥ और अजीत सब दाम थी स्वदाम है ॥ और दाने हरे का

अंतरिक्ष

सबैसोहूंसूक्ष्मतमहै॥औरदानेचावलकेसोहूंसूक्ष्मतमहै॥वहिआत्मातेराहै॥जोमद्धम
नकेहै॥अर्थयहिजवहितुहीहै॥औरतूंहीवहिआत्माहै॥औरवहीआत्मापृथिवी
सोंअधिकअस्थूलहै॥औरयालोकजोअंतरिक्षहैतासोंइस्थूलतरहै॥औरकूर
ता॥औरस्वर्गलोकहूंसोंइस्थूलतरहै॥औरसपर्शनलोकहूंसोइस्थूलतरहै॥
औरकरतासपर्शकोभीकोहै॥औरसपर्शनेकरनहारासर्वचाहीकोहै॥औरसप
र्शनंगंधवहीहै॥सर्वरसवहीहै॥सर्वठवरव्यापकवहीहै॥यहिआत्मातेराहै॥औ
रवहीतूंआत्माहै॥औरमद्धमनकेवहीब्रह्महै॥तीनहीसरीरअस्थूलसूक्ष्म
कारेन॥यहिजवत्यागकरैगातूं॥जोकछुथावहीहोगा॥औरअवहूंवहीहै॥
जाकोयहिनिश्चैहैजुयहितीनहीशरीरमैंनहीं॥वहिकेवलपरमात्माहै॥
औरजाकोयीहनिश्चैनहीवहिकेवलनहीहै॥अर्थयहिजोजीवहै॥अथ
वैराठरूपजग॥यहिलोकमद्धगर्भहै॥वाका॥जेसपर्शनपदार्थकामोहै॥

रथवी इस्थिति इस्थान है ॥ वांका ॥ अरु वीह अविनाशी है ॥ अरु संपूर्ण दिशा श्रोत्र अरु पा
रस्वक स्थान है ॥ वांके ॥ अरु स्वर्ग मुख है वांका ॥ अरु यीह शरीर फैलाय अभ्यास भकि
यांसें पूर्ण है ॥ अरु संपूर्ण संसार इसी शरीर मों है ॥ तैसे जीवात्मा को योग यज्ञ के ज्ञान
अर्थ यीह जो वल करन के ज्ञान ॥ अरु मद्र या जग के तीन देवता है ॥ एक विद्म द्वितीय
लक्ष्मी तृतीय अग्नि यीह तीन देवता ही उद्गीथ है ॥ यही मद्र मानव के प्राण है ॥ जांसे
शरीर नि वताये सो प्राण है ॥ अरु वसुन तें है ॥ सो प्राण रूप विद्म है ॥ अरु जासें लदन क
रत है सो प्राण रूप लक्ष्मी है ॥ जासें रस का अंगीकार करत है सो प्राण रूप दिवाकर
है ॥ मद्र शरीर के जो उद्गीथ के सें अभ्यास है ॥ यही यज्ञ मो दक्षिणा है ॥ मद्र मान
व के तप है अरु दान ॥ अरु सर्व का शुभ करना ॥ अरु घात मन वच कर्म सें काहू
का न करना ॥ अरु सतता अरु निष्कपटता सो रहणा ॥ अरु निरभिमान
ता ॥ अरु दासन का अंगीकार करना ॥ जो कोऊ इछा यज्ञ की राषत है सो याय

ज्ञ को कहे॥ और या प्रकार की दक्षिणा को देइ॥ अंगिरा ऋषीश्वर ने या प्रकार यज्ञ सो यज्ञ सम
स्त देवकी के उपदेश कीयो है॥ इति यज्ञ समाप्तं॥ मध्य शरीर के जैसे सात दगन हो॥ सम
मीरज मंत्र की जो केवल जाप ही है॥ अंतर गन ब्रह्म ही है॥ और वा ब्रह्म सो साध्य साध्य प्रका
र के जैसे सात दगत है॥ जो पृथ्वी सों आकाश प्रयंत सर्व ब्रह्म ही है॥ अर्थ यह है जु एक मे
ही सब सर्व के व्यापक है॥ तो ते अंमंत्र और वा सू जो कछु है सर्व ब्रह्म ही है॥ और
मन को जो ब्रह्म स्वरूप है॥ वाके चतुर्भाग जाने॥ एक वाक इंद्री द्वितीय प्राण॥ तृती
चक्षु इंद्री॥ चतुर्थ श्रवण इंद्री॥ और आकाश जो ब्रह्म है॥ ताके हू चतुर भाग है॥
अग्नि पवन सूर्य दिशा॥ और मन जो ब्रह्म है॥ वाक इंद्री वाके चतुर्भाग है॥
और आकाश जो ब्रह्म है॥ अग्नि वाके चतुर्भाग है॥ और वाक इंद्री अग्नि सों शोभाव
त॥ और प्रकाश और चमत्कार रूप होत है॥ जो को ऊ यों को जाने सो यशु नो सुभ
के॥ और शब्द गंभीर के ज्ञान के जानन हारा॥ और सो यह प्रकाश ज्ञान के प्रकाशक

हे॥ मन को जो ब्रह्म है प्राण चतुर्थ भाग वाले मो है॥ अरु आकाश जो ब्रह्म है॥ पवन चतुर्थ भाग वाले मो है॥ प्राण पवन सो शोभावंत अरु प्रकाशक अरु चमत्कार होत है॥ जो कोऊ यां को जाने॥ सो यश्य श्रम के अरु शब्द गंभीर के प्रगट अरु साथ प्रकाश ज्ञान के प्रकाशक होत है॥ अरु मन जो ब्रह्म है॥ चक्षु इंद्री चतुर्थ भाग मो है॥ अरु आकाश जो ब्रह्म है॥ सूर्ज वाके चतुर्थ भाग मो है॥ चक्षु इंद्री सूर्ज सें शोभावंत॥ अरु प्रकाशक अरु चमत्कार रूप होत है॥ जो कोऊ याको जाने॥ सो यश्य एश्व्रम के अरु शब्द गंभीर के प्रगट होत है॥ अरु साथ ज्ञान के प्रकाश होत है॥ अरु मन जो ब्रह्म है॥ श्रवण इंद्री वा के चतुर्थ भाग मो है॥ अरु आकाश जो ब्रह्म है॥ दिशा चतुर्थ भाग वाके मो है॥ श्रवण इंद्री दिशा सें शोभावंत अरु प्रकाशक अरु चमत्कार रूप होत है॥ जो कोऊ यां को जाने सो यश्य एश्व्रम के अरु शब्द गंभीर के प्रगट अरु साथ प्रकाश ज्ञान के॥ प्रकाशक होत है॥ अथ उत्पत्ति दिनकर सूर्ज को ब्रह्म जानकर साधवां के अभ्यास करे॥ तब व्याख्या॥ आदि मो के

छुनयो॥ एकु निराकार ही यो॥ चाहत भयो प्रगट हों॥ वासों अंड उ प्रगट भयो॥ और वीह अंड उ
वरष प्रयंत रह्यो॥ पुनः वा अंड उ फूटत भयो॥ और ऊर्ध्व भाग वाको स्वर्न भयो॥ और अर्ध भाग
वाको रूपा भयो॥ वीह अर्ध जो कंचन भयो सो आकाश भयो॥ और द्वितीय अर्ध रूपा पृ
थवी भई॥ और जो मे अंड उ इस्थित यो वाइ स्यान सों पर्वत भये॥ और तु चा अंतस्
थम जु माहि वाइ स्यान के हे॥ और अंड वा मो रहत है॥ और तीषन तालाब तहे॥ तासों
मेघ अर्णव दत भये॥ और नाडी का वातु चाकी सों संबूह सलता के भये॥ और जल जो
मद्ध वाइ स्यान के यो तासों समुद्र भये॥ और तत्र जो वासों प्रगट भयो॥ सो सूर्ज
है॥ और प्रगट होते ऐ वा सूर्ज के सों शवद जाति अंभीर मद्ध संसार के प्रगट भयो॥
और तिससी कामो मे संपूर्ण उतपन्न उत्तमु जे और जअंड जकी सर्व साथ चाहे॥ और जा
सों और फलों के प्रगट भये॥ जो कोऊ बुधवान या दिन कर को ब्रह्म जान कर उपा
सना करे॥ वाको संपूर्न पदार्थ सर्व काम प्राप्त होत है॥ अथ उपदेस रसी की रबी

श्वरराजेज्ञानसंतप्रीति॥राजायाज्ञानसुतनामजोयादवमेश्वरमाया॥अरुजेन
वहुतुलोकेकोमवएकरवावताथा॥अरुअनेकसंराईवासतेइस्थतहोएके
अरसखुप्राप्तहोएमारगचलएहारथोकेकीयांथीयां॥अरुराज्ञातिवुद्धवानश्रमकोमा
काकरताथा॥एकदिवसवंगलेऊपरगहिआपुएकेमगुआकाशकीओरराषकरलंवा
सनभयाथा॥केतेकीराषवांकेंवृद्धवानअरश्रमकामोंकाकरताजानकर॥वासतेप्रा
प्राप्तहोएगंभीरज्ञानको॥राजाकोइस्थानआपुनेसोंसाथरूपहंसके॥ऊर्धको
गमनकरकरकेपरीसिषरगृहराजेकेप्रवेशकरतभये॥अरयाहिउप्रदेशमप्र
स्परदोनोआरंभुकरतभये॥तथा॥हंसआगेकोपक्षलेहंसकोकहतभया॥जो
प्रकाशतेजयाराजेभुभवंतकेनेआकाशमोप्रकाशकीयाहै॥मद्धयातेजकेसाम
तगमनुकरीये॥जोआपवाजातितेजयाकेसोंदग्धहोतहैं॥तवहंसपिपक्षले
नेकहाएतीउस्तातियाराजेकीवरनीतुमहुनेकदाचितयहिरसीकोरषीस्वरहै

प्रथमहंसउवाच॥ जाभांत कार षीकी रषीस्वर है॥ उत्पति वाकी कह॥ द्वितीयहंसोवाच॥
वीह याभांत कारिषीस्वर है॥ जो सदा साधन करि पुनि एकु गाडी राषत है॥ अर फेर वर यीह
उत्पति है॥ वाकी॥ जो जो कोउ शुभ कर्म करत है॥ वीह संपर्न कर्म वाके कर्मा मो प्रा
प्त होत है॥ अर जो कोउ ज्ञान करि फेर पुनि स्वरूप की प्राप्त राषत है॥ सर्व वीह वाके ज्ञा
न अर पछान मो प्राप्त होत है॥ अर वीह सदा सजीत जुवारी के है॥ जैसे जुवारी एक दा
उ जीत के सो दुव संपर्न अनुभव रोका हिरत है॥ तैसे ही वीह हू कर्म अर ज्ञान करि पुनि
सो सर्व के कर्म अर ज्ञान को हिरत है॥ याव्रचन हंस के को राजे श्रवण कीया॥ अ
र या श्रवण सो भ्रम वासो प्रगट भया॥ तो ते जीत दुःख सो निशा को वीतावत भया॥
जब प्रात भई अर स्मृगुउदे भया॥ काहू निकट वरती को कहत भया॥ अजा जु निशा को
इस प्रकार चरचा हंसो की श्रवण करत भया है॥ तू वा रिषीस्वर को ढुंढ कर प्रगट
करु॥ अनुचरोवाच॥ षोजवा का किया है॥ राजोवाच॥ षोजवा कीयी है है॥ जो

के

सदा सावधान पुन्ने गाडी राषत हैं॥ एक बहूं गाडी को आपसें भिन्न नही करता॥ ताते वा अन
चर जात भया॥ यद्यपि संपूर्न देसों को देषत भया॥ निकट राजें पुन ह आगमन्न करत
भया॥ अनुचरोवाच॥ मैं वासे ते देषएं वां के के भीतभ्रमा॥ ता को कहूं न देषत भया॥
राजोवाच॥ वा को मद्र पर्वतो के आरउद्यानो के जो रिषीस्वर वाठवरें मो रहत हैं॥
ताइस्थानो मो चाहीये देषा॥ अनुचरस्या बचन सें आश्रव एक रकर पुनः वा स
ते देषऐ रिषीस्वर के मद्र सून इस्थलें को आर वनो के जात भया॥ एक ठवर मो दे
षत भया॥ जो गडी ठाढी है॥ अन्नी चेवां के तपसी मद्र पुत्रम के पडा है॥ वा अन
चर एछत भया॥ मो महाराजर सी कों रिषीस्वर तु मही हो॥ रिषोवाच॥ रसी क मैं ही
हैं॥ अनुचर निकट राजा के आगमन करकर प्राप्त हो॥ एरिषीस्वर का प्रगट कर
त भया॥ जो मैं ने रिषीस्वर को देषा है॥ राजा अति प्रसंन ता को पाइ कर त्रिसत म
ऊत्तर माला मोतीया की एक गाडी अस्सावधान पुरोहत कर निकट रिषीस्वर के आ

व

उमनकरतभया॥अरजोकछुसाथलेआयाथा॥सोरिषीस्वरकीभेटकरी॥अरवेनतीक
रतभया॥राजोवाच॥भो महाराजसायदेवताकेजोतुमअँसकरतहो॥अरज्ञानकी
प्राप्तभईहै॥तुमको॥वांकोमुझेहूंउपदेसकरो॥अरभेटयामेरीकोअंगीकारकरीये
राजेनेवासतेप्राप्तहोएज्ञानकेआगमुकीयाथा॥भेटवांरिषीस्वरनेअंगीकार
नकरी॥रिषोवाच॥एनीचयाइवभेटकातुहीराष॥यावचनकोउचारकरतूस्नीभ
या॥ताते राजेनेजोकछुभेटराषीथी॥पुनःअपुनेमंदरमोलेजातभया॥जोतेजोम
हमनराजेकेचाहप्राप्तहोएज्ञानकेअतितीव्रउठीथी॥द्वतीयदिवससहस्त्रगऊअरस
तअपुनीकोसाथलेकरभेटरिषीस्वरकोकरतभया॥रिषीस्वरनेचाहअरलगनवां
कीअतिदेषी॥अरसत्वप्रतीतप्रगटभई॥अरजानतभया॥अरभेटअंगीकारनाकर
नेसोंअयवायाहूसोंअधकभेटल्यावतहै॥तांतेभेटअंगीकारकरकरराजाकोव्र
स्मविद्याजुज्ञानहैउपदेसकरतभया॥रिषीस्वरोवाच॥पवनसोंसंपूर्णपदार्थली

न होत है ॥ अरु जैं जब आकास सो होत है ॥ पवनहीमें लीन होत है ॥ अरु जल जब सुषक होत है ॥
पवनहीमें लीन होत है ॥ अरु पवनहीसें पृथ्वी पदार्थ्यों को आपमें लीन होत है ॥ अरु
शरीत वायु पवन वर्नन ॥ अथ पवन अमंत्र जो प्राण है ॥ सर्व को आपमें लीन
करत है ॥ जब यह मानुषी निद्रा में लीन होत है ॥ वाकी इंद्री मुख्य प्राण के लीन होत
है ॥ अरु चक्षु इंद्री हू लीन होत है ॥ तैसेंही श्रवण इंद्री अरु मन हू लीन होत है ॥ तातें
प्राण दो रूप सों सर्व को आपमें लीन करत है ॥ वायु पवन है ॥ अरु अंत्र जीवधारी
यों के प्राण है ॥ या दो प्रकार सो एक पवनही उत्पति को योग है ॥ जो कोई या भेद को जा
ता होइ ॥ तो के प्राण अरु पवन को जा ज्ञा मो होत है ॥ अरु अब या दो रिषी स्वरो की ॥ दो रिषी
स्वर भोजन करन जो न करते थे ॥ एक ब्रह्मचारीने वासे तो त्रि प्रकार ने पुछ्या आपनी के
जाचना अंन नकी वासें करी ॥ वासे ते प्रीछ्या करने ब्रह्मचारी कि रिषी स्वर अंन वाकों
न देत भये ॥ जो वांही ह क्रिया करेगा ॥ ब्रह्मचारी यों बाच ॥ देवता एक ही जो प्राण है ॥ सं

तर्णिइंद्रैंअरवासनआज्ञावाहीकीमोंहै॥अरवहीप्रगटकरनहारासंपूर्णइनकाहै॥
अरधारनहारासंपूर्णइनकाहै॥वांकोअज्ञानीमूरतकमननहींदेषत॥अर्थ
यहिहैजोअंनकोषेतीउतपन्नकरतहै॥पीसावतहै॥पकावतहै॥वाप्राणकोंनदेकरआ
पपसरीतसिउभषणकरतहै॥वाॠषीश्वरवचनब्रह्मचारीकाश्रवणकरकरनिकट
ब्रह्मचारीकेआगमकरतभये॥ॠषीश्वरोवाच॥वहिहैजोतैनेकहामूरतकमनअज्ञा
नीनहीजानतहमवांकोजानतहैं॥वहिहैउतपन्नकरतासर्वकाहै॥अरवहिभष
णकरतासर्वकाहै॥अबरसर्वपदार्थभषणकरतहैअरअलसावतनही॥वहिहैज्ञा
तगंभीरहै॥अरसर्वकोअगंभीरतावांकीकहतहै॥अरवांकीविभूतअधिकहै॥अ
रज्ञानीवांकोज्ञातश्रेष्ठअरगंभीरजानतहै॥जोपदार्थकोऊनसकेभषणकर
वहिकरतहै॥जाप्राणकोजोतुमप्राणकहतहो॥हमवांकोप्राणनहीजानतब्र
ह्मजानकरउपासनाकरतहै॥यहिवचनकोहिकरवांकोअंननदेतभये॥जेसे

सर्इंद्रि सरीन शोक अरु जाग्रित अरु अपमद्ध पवन के लीन होत है॥ ते सही वा अर्इंद्री अ
र सब व एइंद्री अरु चक्षु दर्इंद्री अरु मन अरु मद्ध प्राण के लीन होत है॥ अरु याहि प्राण सो यह इन
के वे कल्लकंस न होत है॥ अरु इंद्रीन को भक्षण करत है॥ जो को ऊ या इंद्रीन को जो कारण व ल
प्राण को है॥ ब्रह्म जान कर साधवो के अभ्यास करे॥ मानो वांने सर्व को देषा॥ अरु स
र्व को जान्या॥ अरु सर्व को प्राप्त भया॥ अरु सर्व को भक्षण कीया॥ अथ कथा जापाल तथा
गौतम॥ जापाल नाम रिषीस्वर सो अपनी माता अपुनी के जापाल या नाम सुवां को कहत भया
मो न मस्कार को योग मै चाहत हें जु वेद को काहू सो उचार करे॥ तू कहु जु मे संतान को
की हों॥ माता ने वां को कहा जु मो तू उत्पन्न भया है सो मै नहीं जानत॥ मोसु तमे जोव
न अवस्था विषे सर्व रिषीस्वरो के आश्रमो मो जाती थी॥ जां के स्नक सें तू उत्पन्न भ
या है॥ तां को मै नहीं जानत॥ अरु नाम मेरा जापाल है॥ अरु नाम ते सत्यकाम हू
है॥ जापाल निकट गौतम रिषीस्वर के आगमन करत भया॥ जापालो वाच॥ मैं चा

हता हैं। जतुम सें वेद का पाठ करें।। इसी प्रयोजन सें निकट तुमारे आगमन कीया
है।। मैं ने।। गौतमोवाच।। तूं को की संतान है।। जापालोवाच।। मैं यां को नही जानत जो कि
से उतपत भया हैं।। अर इही प्रश्न मैंने मात से कीयाथा।। सो माता ने उत्तर यों कहा
था।। मैं योवन अवस्था में अनेक आश्रमो में विचरी थी।। जा सो उतपत तेरी है ता को
मैं नही जानत।। अर जापाल नाम मेरा है।। अर सतकाम तूं नाम तेरा है।। तां ते मैं स
तकाम सुत जापाल कहे है।। गौतमोवाच।। हे सुभ प्रकृति ऐसा वचन साय ब्राह्मण
के नही सकीयत कहि है।। अर तेने कहा।। अर यथार्थ जु सत्त वचन ब्राह्मण सें भिंन
अवर नही सकीयत की है।। निकट आगमन कर।। अरु निश्चत जो तैने सत्त धर्म
अंगीकार कीया है।। तां ते यज्ञोपवीत तुझे पहिरावों मैं।। या वचन को कहि कर ता को य
ज्ञोपवीत पहिरावत भया।। अर चतुसत गाऊ अर वेल वल हीन अति क्रिश भिन्न करि क
कहत भया।। हे सुभ प्रकृति इन को वास ते चरावण के मद्धि चरावणे के इस्थान मो ले जा

हू॥ जबलगउसहंस्र न होइ॥ तबलग न ल्याईयो॥ तो ते आज्ञा गुर की सों जात भया॥ और सत
बरख वा इस्थान मो रहा॥ पाछे सत बरख के जब गई और बैल सहंस्र भये॥ तां के मधि सों
एक बैल वा सों कहत भया॥ और प्रणव जो नमस्कार करोंयो गहै॥ तो को उचार करत भया
बैलो वाच॥ उ अब हम सहंस्र भये हैं॥ निकट गुरू के ले चलु॥ और चतुर्भाग ज्ञान को
तुझे उपासना करने हों मैं॥ पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर यह चतुर्दिशा जो है चतुष्कला जो है
ब्रह्म सो चतुर्भाग ज्ञान ब्रह्म का है॥ प्रकाशवान है नाम याका॥ जो या भांत ज्ञाता होय प्रकाशरू
प मनुष्य कहावें॥ और प्रकाशरूप लोकों पर गमन होवोगा॥ और पुनः बैल ने कहा
जो चतुर्भाग और ब्रह्म ज्ञान का अग्नि मुख सों तुझे उपदेस होवेगा॥ द्वितीय दिवस
गऊयों को और बैलों को साथ ले कर गुर के गृह को गमन करत भया॥ जब सायंका
ल भये॥ अग्नि को प्रकाश कीया॥ और बैलों को एक ठे इस्थान में ठाढा कीया॥
और उत्तर दिशा की ओर मुख कर कर निकट अग्नि के होवे के इस्थित भया॥ अग्नि

सें आज्ञा बद्ध भया है॥ सतकाम॥ सतकामोवाच॥ तें नमस्कार कों योग्य॥ अग्निउवा
च॥ हे शुभ प्रवृत्त चतुर्भाग अरु जव ब्रह्मज्ञान का मैं तुझे उपदेस करत हैं॥ सत
कामोवाच॥ कहु हे नमस्कार कों योग्य॥ अग्निउवाच॥ पृथ्वी अरु अंतरिक्ष
लोक अरु आकास॥ अरु संवूह सलता के यहि चतुर्कला चतुर्भाग ब्रह्मज्ञा
न का है॥ अरु वहि संपूर्ण अनंतवान नाम राषत है॥ अरु जो कोऊ ऐसे सा जा
ने अनंतवान होत है॥ अरु ऊपर लोकों अनंत के जीत होत वां की॥ पुनह:
अग्निने कहा जब स्व चतुर्भाग ब्रह्मज्ञान को प्र जे के मुष सों उपदेस होगा
तुझे॥ द्वतीय दिवस सतकाम पर्वत आगे को अनुकरत भया॥ जब सा
यंकाल भया अग्नि को प्रज्वलत कीया॥ अरु वे लोकों इस्थान मों इस्थि
त कीया॥ अपवास ते अग्निहोत्र के पूर्व दिशा की ओर मुष राषकर॥

इस्थित भया ॥ अरु जब प्रातह काल भई ॥ तब जो आगि मकार कर कहत भया ॥ हे सतकाम
सतकामोवाच ॥ ॐ नमस्कार कोयो ॥ तब ओउवाच ॥ चतुर्भाग ब्रह्म के ज्ञान का मैं तुझे
उपदेस करत हो ॥ सतकामोवाच ॥ कहु नमस्कार कोयो ॥ दिवाकरोवाच ॥ अंतर
दिन अरु रात्रि निशा अरु रवि दुतीय है चतुर्भाग ब्रह्म के ज्ञान का है ॥ अरु याहि संपूर्ण
ज्ञात समान मान राखत है ॥ जो कोऊ या का ज्ञाता होइ जो तत्स्वरूप है ॥ ऊपस्लोको
जो तत्स्वरूप के जीत पावै ॥ पुनः तब जेने कहा ॥ अब स्व चतुर्भाग ब्रह्म के ज्ञान का प्रा
ण के मुष सों तुझे उपदेस है ॥ ॥ त्रितीय दिवस सतकाम तब तब तरु आगे को गम
न करत भया ॥ जब सायंकाल भया ॥ अग्नि को प्रज्वलत कीया ॥ अरु गऊ त्रादि
कें को एक ठवर इस्थित भया ॥ अरु आप अग्नि होत्र के इस्थित भया ॥ अरु मुष
सर्व दिशा की ओर करत भया ॥ पूर्व दिशा सों प्राण का शब्द भया ॥ जु हे सतका
म ॥ सतकामोवाच ॥ ॐ नमस्कार कोयो ॥ प्राणोवाच ॥ चतुर्भाग ब्रह्म के ज्ञान का

तुझे उपदेस करें में ॥ सनतकामोवाच ॥ कहु मनका को योग ॥ सनतकामोवाच ॥ प्राणेणवा
च ॥ प्राणा अस्वदाइ इंद्रीआं श्रवण इंद्रीआर मन यहि चतुर्केल्ला चतुर्भाग ब्रह्म ज्ञानको है
आरहुन सर्व कों आइतनवान कहीयत है ॥ स्व स्वरूप सें कहत है ॥ जो कोऊ या भेद को
जानै ते जीत सरवी होइ ॥ और ऊपर लोकों सुषके जीत पावै ॥ यी है चतुर उपदेस चतुरइ
स्यानो मे सनतकामो को एक एक ने एक एक उपदेस कीया ॥ ततक सकामगह गुरके मो
नि कट गुरके आज्ञा मनन करत भया ॥ गुरोवाच ॥ हे सनतकाम ॥ सनतकामोवाच ॥ ओं नम
स्कार कें योग ॥ गुरोवाच ॥ जैसे तत्त्ववेता आनंदरूप देषीयत है ॥ तैसे ही तूं हूं दिषाई देत
है ॥ तुझे ब्रह्मज्ञानकों ने उपदेस कीया है ॥ सनतकामोवाच ॥ मनुषन्ने मुझे नहीं उपदेसा
आवैं ते ने उपदेसा है ॥ यद्यपि उपदेस कीया है वांने ॥ तो हूं निवरत संदेह कौ नहीं भई
चाहत हैं जो महाराज मुझे उपदेसे ॥ जाते जो मैंने तुम सा रवै स्रे ऐसि उश्रवण कीया है
जो कोऊ गुरें सो उपदेस लेत है ॥ वही सफल होत है ॥ और वा उपदेस का नास नहीं

होता॥ गौतम जापाल प्रति उवाच॥ जो कछु ब्रह्मज्ञान वासें श्रवण कीया है तैंने॥ ब्रह्मज्ञान सं
पूर्ण इही है॥ भिंन यासें नहीं कछु॥ अथ कथा जापाल तथा उपकुशल॥ उपकुशल ना
मरि षीश्वर वासतें उच्चार करनैं वेद कें निकट जापाल के आगमन कीया॥ द्वादश वर्ष पर्यं
त निकट वाके टहल अग्नि होत्र की करत भया॥ जापाल नें अवर सेवकों अपुनें यों कों
आज्ञा गृहस्थ धर्म अंगीकार करने की दई॥ अरु वाकों आज्ञा न करत भया॥ सकृत
जापालकी नें जापाल कों कहा॥ या सेवक तुमारे नें अति तपस्या अरु टहल अग्नि हो
त्र की करी है॥ याकों जु आज्ञा ज्ञान दई अग्नि तुमसें अप्रसंन होगा॥ जापाल नें उत्त
र कान दीया॥ तूष्णी होकर गृह सें वास्ये गमन करत भया॥ उपकुशल वा दिवस
संध्य के अन प्राप्त होनें सें गुरु के अप्रसंन भया॥ भोजन भक्षण करना त्याग कीया॥ सत
गुरकी वां सो कहत भई॥ हे सेवक कछु आहार करन का है कों कछु आहार नहीं करता॥
उपकुशलोवाच॥ पुरुष का मंत्र मेरे को अति चाहे ज्ञान प्राप्त होय ऐ की राषत है॥ अरु

याअपरवचाहसेंरोगीभयाहों॥ तांतेकछुभवएाकरनकीइछानहीमुझे॥ तीनप्रकारकीअ
ग्निहै॥ तोमोहवनकरीयतहै॥ सोवातीनहीअग्निएकठवरहोकरअतिप्रसनहुए
सेंकज्ञाकरतभई॥ अरवीचारकरतभई॥ जुयातपसीनेटहलहमारीअतिकरीहै॥
अरमुझेंप्रतीतदृढराषतहै॥ यांकोब्रह्मविद्या जुप्राप्तब्रह्मकीहै॥ उपदेसकरेंहम॥
ततःतीनहीअग्निसापचांकेउपदेसुकरतभई॥ अंसएगिरग्निउवाच॥ जीवज
हैप्राणसोब्रह्महै॥ अरकंजुहैआनंदरूपअमृतसोब्रह्महै॥ अरषंजुहै॥ आकाश
सोब्रह्महै॥ अपकुशलोवाच॥ यामांतसमुझामेंनेइस्फुरणताप्राणकी॥ सेंजोप्रसर
ण जीवधारीजीवतहै॥ तातेप्राणब्रह्महै॥ अरकंब्रह्मषंब्रह्मयांकोनहीसमुझामेंने॥
कंब्रह्मजोआनंदरूपहै॥ जोमिरतहैताकानाशहैहिचनमों॥ अरआकाशजडहै॥
चेतनतनहीतांतेब्रह्मांतभये॥ त्रिआग्निउवाच॥ आनंदअरआकाशएकही
है॥ अरआकाशअरप्राणएकहीहै॥ अरयहिआनंदजोकहामेंनेसोस्वरूपानं

दहै ॥ याहिसंसारविषयनंदहै ॥ अरुज्ञानप्रकाशविद्याकाशहै ॥ सोकेवलज्ञानंदस्वरु
पहीहै ॥ अरुवहीप्राणहै ॥ ततःभिंनभिंनवांसोउपदेसोकैअग्निहीकरतभया ॥ प्र
थमअग्निउवाच ॥ पृथ्वीअरुअग्निअरुअंनअरुआदित्यसूर्ययहिचतुर्हशरीरमेराहै ॥
अरुवोहिपुरषजोमध्यसूर्यकेदेषीयतहै ॥ अरुआत्मप्रकाशहै ॥ वोहिमैहां ॥ जोको
ऊयामांतस्यमझकरसूर्यकीउपासनाकरेमंपुर्णपापवांकेदग्धहोतहै ॥ अरुया
लोकमेस्थितहो ॥ तहांहीइस्थितहोतहैवांकी ॥ अरुसंपुर्णआउप्रयंतप्रश
नरहै ॥ अरुज्ञानवतगंभीरशवदहोतहै ॥ अरुसंतानवांकीअगधकहोतहै ॥
अरुयालोकमेंमैसहाइहोंवांके ॥ द्वतीयअग्निउवाच ॥ अपअरुदिशाअरु
निक्षत्रअरुनिशाकरयहिचतूरहीशरीरमेराहै ॥ अरुवोहिपुरषनिशाक
रमोदेषीयतहै ॥ सोमैहीहों ॥ जोकोऊयामांतस्यमझकरनिशाकरकीउपा
सनाकरे ॥ सर्वपापोसोंसुधहो ॥ अरुयालोकमेमैहोतहांवेहभीहोतहै ॥ अरु

संपर्ण आउ प्रयंत प्रशंन रहै॥ अरु आत्मवत गंभीर शब्द है॥ अरु संतानवां की आधक
है॥ अरु जब लग पृथ्वी अरु आकाश है तब लग इस्थिर है॥ अरु दोनो ही लोको मों सु
हाइ होइ वां को॥ त्रितीय अग्नि उवाच॥ प्राण आकाश अरु अंतरिछ अरु विद्युत याह
चतु शरीर मेरा है॥ वाह पुरख जो मधि विद्युत के देखीयत है॥ सो मै हों॥ जो कोऊ या मांत
समझ करि विद्युत की उपासना करे॥ पापो सों सुध होइ॥ वाह हूं संपर्ण आउ प्रयं
त प्रशंन रहै॥ अरु आत्मवत गंभीर शब्द होइ॥ अरु संतानवां की आधक होइ॥
अरु जब लग पृथ्वी अरु आकाश है तब लग संतान अरु कुल वां की रहै॥ अरु
मध्य दोनो लोक के मे स्महाइ वांकी होइ॥ त्रितीय अग्नि उवाच॥ ॐ॥ ॐ॥ हे प्र
भ प्रकृत यही अद्वैत ज्ञान हमारा था॥ सो तुझे उपदेस कीया है मोने॥ अरु इ
ही ब्रह्म विद्या है॥ अस्या भेद को गुर हूं तुझे उपदेष्टा होइगा॥ एता कहि कर त्रि अग्नि
हूं उपदेस सों तू हमी भये॥ ततः वाही काल मो गृह के आगमन कीया॥ बुलावत भया

आपकुशलोवाच॥ विद्या कहते हो नमस्कार को योग॥ जापालोवाच॥ जैसे आत्म ज्ञाता प्र
शंन देषीयत है॥ आत्मज्ञान तुझे कांन्हे उपदेस कीया है॥ आपकुशलोवाच॥ मंन
तें मसें उपदेस करत अवर कवन है॥ जापालोवाच॥ अग्नि कों प्रथम अवर भांत दे
षता थामें॥ अब अवर भांत देषत हैं॥ तां ते जानीयत है जो अग्निने तुझे ब्रह्मवि
द्या उपदेस करी है॥ वांने आत्मज्ञान की अंगीकार करी॥ अरु जो कछु अग्निने उपदे
स कीया था॥ सो संपूर्ण प्रगट कीया॥ गुरोवाच॥ जो कछु अग्निने तुझे उपदेस की
या है॥ सो ज्ञात यही था॥ अरु ब्रह्मज्ञान यही है॥ अरु मैं तुझे ब्रह्मज्ञान उपदेस करत हों
जो जांके ज्ञान सें जैसे पात कमल के कों जल भेदत नही॥ तैसे ही ज्ञान के उपदेस
मेरे सें कोऊ पाप तुझे सपरस करेगा नही॥ आपकुशलोवाच॥ कहु मो नमस्कार
को योग॥ जापालोवाच॥ ॐ॥ यहि है वा पुरष जो पलकों ने नेत्रकुं कीया के षुलने के अ
अर ढांपने मों मध्य नेत्रकुं के सर्व को देषत है॥ वही आत्मा जीव का जीव है॥ अरु सर्व

कात्मा है॥ अरु वही अविनाशी है॥ अरु वही अभय दायक है॥ अरु वही ब्रह्म है॥ दृष्टांत
यहि जु जल अरु यवागी उमद्र नेत्रो केडारीये मध्ये तो नाही कोन्यो नेत्र हू के सो निकसज्ञा
त है॥ पुतरी कोंखों की नली नसपर्स न हीतो त॥ अरु पुतरी दवनेत्र की जह जामराष
त है॥ अर्थ यहि जु ज्ञात है सर्व इंद्री अरु सुभ पदार्थो का॥ जो कोऊ वाको या प्रकार
जानै॥ सर्व शुभ पदार्थो का धनी होइ॥ अरु याही पुतरी नेत्र की वामनी होत है॥ केह
अर्थ यहि जो ज्ञाता है सर्व शुभ पदार्थो का॥ जो कोऊ या पुरुष को वामनी जानै
संपूर्ण शुभ पदार्थो का वहि गाही कहै॥ अरु या वामनी भामनी हूं कहत है॥ अ
र्थ यहि जु तेज अरु प्रकाश वां काम इस संपूर्ण संसार के है॥ जो कोऊ या प्रकार जानै
म इस सर्व संसार के प्रकाशवान अरु तेजमै होइ॥ अरु या भेद के ज्ञाता को पितृक
र्म को ऊन नहीं चाहीयत॥ जो कर्म पाछे वाले करे॥ वहि सर्व सो स्त ब्रह्म अरु निहकाम
है॥ अरु जो कोऊ या का ज्ञाता होइ॥ मार्ग प्रकाश के सो सनेस नेकअघ प्रकाश मों

प्राप्त होकर केवल प्रकाश अज्ञान नाही है ॥ अरु मुक्त होकर पुनः जन्म नहीं धारै ता अरु
विद्वांन जो आत्मा में सर्व सों अधिक है ॥ अरु विमस्त में सर्व सों श्रेष्ठ है ॥ ज्ञाता होइ ॥
अरु आप हूं आत्मा अरु विमस्त में अधिक है ॥ प्रश्न ॥ सो कैसा श्रेष्ठ पुरातन केवल है ॥
उत्तर ॥ प्राण है जो ते जो गर्भ में उत्पन्न होय सो शरीर के अंग अरु इंद्रियो के आधार होइ या ॥ ता
ते प्राण आत्मा में अरु विमस्त सर्व सों श्रेष्ठतर है ॥ अरु जो कोऊ परातिष्ठ कों समुझे व
हि महत् कुटंब अपुने के प्रतिष्ठत होइ ॥ अर्थ यहि जु सर्व में श्रेष्ठ है ॥ प्रश्न ॥ प्रतिष्ठि
या है ॥ उत्तर ॥ प्रतिष्ठ वाक इंद्री है ॥ जो सर्व पदार्थ मध्य प्रतिष्ठ के है ॥ अरु जो कोऊ प्रति
ष्ठा को जो सर्व का मूल माहि है ॥ समुझै ॥ या लोक में अरु वा लोक में इस्थान गंभीर
कों प्राप्त होइ ॥ प्रश्न ॥ अथ यमस्त प्रतिष्ठा ॥ उत्तर ॥ प्रतिष्ठ यहि जो प्रकाश मध्य नेत्रहु के है ॥
अरु प्रकाश नेत्रहु के सों इस्थान सम अरु असम देखीयत है ॥ अरु संपूर्ण प्रका
श सों प्राप्त हू जीयत है ॥ जो कोऊ या प्रतिष्ठा को समझै ॥ अर्थ यहि जो धन को जाने

सोघनवान है॥ अरु संपूर्ण मनोर्थ को प्राप्त है॥ प्रश्न॥ कथंमस्तंवाधनः॥ उत्तर॥ धन प्रवणइं
द्रीकरन की है॥ जो करन सों उपदेस गुरु रागा सुनीयत है॥ अरु वा उपदेस सों कर्म करीयत है
अरु वा कर्म सों कामना की सिद्ध होत है॥ अरु ज्ञायतनवान है॥ जो कोउ ज्ञायतनवा
न को जाने सो श्रेष्ठ संपूर्ण कुटंब अपुने मो है॥ प्रश्न॥ कथंमस्तं वायतनवान॥
उत्तर॥ अज्ञायतनवान मन है॥ अर्थ यहि जो संपूर्ण इंद्री अरइं द्रयो के विषयो को गहत है
जो मन सों रहत एकठि सइंद्री सों काम अपुना नही करसकत है॥ प्रसंग॥ चरना
प्राणादिक अरु मनादिक इंद्रै का अरु गमन करना निकट प्रजापति के॥ प्राण अरइं
द्रै अरु मन परस्पर स्वर्चा करत भये॥ एक एक कहत भया जो मैं सर्व सों श्रेष्ठ हैं॥ ताते
संपूर्ण निकट प्रजापति के जात भये॥ प्राणादिकोवाच॥ जो मद्ध हमारे श्रेष्ठ कवन है॥
प्रजापतोवाच॥ मद्ध तुमारे वहि श्रेष्ठ है॥ जु जाके निकसे सों तनु निरजीव है॥ वाकइं
द्री निकसत भई॥ अरु गमन करत भई॥ वरष प्रयंत तन सों भिंन रहकर पुनः आ

गमन करत भई ॥ अरु साधु तन के कहत भई ॥ भिन्न मो सों को भांत जीवत भया ॥ है तूं ॥ शरीरो
वाच ॥ जैसे म्रख वचनन उचरे अरु साधु प्राण के जीवे ॥ अरु साधु नेत्र हु के देखे ॥ अरु सा
धु कर्ण के श्रवण करे ॥ अरु साधु मन के वीचार करे ॥ तां ते वाक इंद्री अपुने इस्थान मो
लजत होकर इस्थित भई ॥ चक्षु इंद्री निकसत भई ॥ अरु जात भई ॥ वरष पर्यंत तन सों
भिन्न रहकर पुनः आगमन करत भई ॥ अरु साधु तन के कहत भई ॥ भिन्न मो सों को भां
त जीवत भया तूं ॥ शरीरोवाच ॥ जैसे अंध जो नहीं देखत अरु साधु प्राण के जीवे ॥ अरु
साधु वाक इंद्री के उचरे ॥ अरु साधु कर्नो के श्रवण करे ॥ अरु साधु मन के वीचार क
रे ॥ तां ते चक्षु इंद्री अपुने इस्थान मो लजत होकर इस्थित भई ॥ तचैव श्रवण इंद्री
हूं गमन अरु आगमन शरीर मो करत भये ॥ तो हूं तन को नाश ना भया ॥ पुनः म
नु निकसत भया ॥ अरु गमन करत भया ॥ पाछे वरष पर्यंत के पुनः तन मो आग
मन करत भया ॥ अरु शरीर सों पूछत भया ॥ भिन्न मो सों को प्रकार जीवत रहा है तूं ॥ श

रीरोवाच॥ जैसें लरका अज्ञाता जो कछु नहीं जानता॥ और साथ प्राण के जीवे॥ और
साथ वाक् इंद्री के उचरे॥ और साथ नेत्रहु के देषे॥ और साथ करनों के स्रवण करे॥
तैसें मन हूं आपुने इस्थान मों लजत है॥ कर प्राप्त भया॥ प्राण ने चाहा जो मैं नि
कसों और गमन करों॥ मन ने और इंद्रय संपूर्ण आपुने इस्थानों सों हलन और दु षतम
ई॥ और उचारत भई॥ हे नमस्कार है योग तुम मत गमन करो॥ जो गमन करने तुमारे सें
हम संपूर्ण नाश को प्राप्त होत हैं॥ तुम को आउ मो पुरातन जाना है हम नों॥ और अब तुम को
विस्मृत मों हू सर्व सो श्रेष्ठ जानत भये॥ वाक् इंद्रीयोवाच॥ मैं जु प्रतिष्ठत हों सो प्रतिष्ठ तुम
ही हो॥ चक्षु इंद्रीयोवाच॥ मैं जु प्रतिष्ठत हों सो प्रतिष्ठ ता तुम ही हो॥ श्रवण इंद्रीयोवाच॥
मैं जो धन रूप श्रवण इंद्री हों॥ सो श्रवण इंद्रे तुम ही हो॥ मनोवाच॥ मैं मन नाम सर्व को हृ
आर्थयी है सर्व मुझ ही मों वसत हैं॥ सो मन नाम सर्व का तुम ही हो॥ चक्षु इंद्रे और वाक् इंद्रे
और श्रवण इंद्रे और मन संपूर्ण प्राण ही है॥ और प्राण ही कहीयत है॥ प्राण ही है॥ जो

यहि संपूर्ण भया॥ ततः प्राण उनसों पूछत भया॥ प्राण उवाच॥ तुम वर्ण मेरा कीया है॥ मन
नादि इंद्र्यो वाच॥ अंडज जेरज संपूर्ण सृष्टि जो कछु भक्षण करत है॥ सो भक्षण तुम
ही करत हो॥ प्राण उवाच॥ वस्त्र पहिरने मेरे कीया है॥ मनादि इंद्र्यो वाच॥ अब इस
वास्ते रत्न शरीर के वेदन सास्त्र मो कहा है॥ जो आदि अंत अन्न भक्षण के जलपान क
रे॥ अन्न के बल प्राण ही है॥ तो ते आप वं का वस्त्र है॥ सतकोन जापा लै आपकु श
ल सुखे वक प्रीत उवाच॥ जो यहि उपदेश प्राण विद्या सा यह ब्रिक्ष सुष्कके रहत
वा नके है॥ यहि ब्रिक्ष हरीया व ल और फल फूल पात प्रगट करे॥ अथ एक या राजा
के है॥ और वरन तो विश्वानर आत्मा की॥ तो संबूह एक रिषी श्वेर का जो वेद के ज्ञा
ता थे॥ एकठे होकर वीचारत भये॥ और कहत भये आत्मा कवन सा है॥ और
ब्रह्म कवन सा है॥ धारत भये जो निकट उद्यालक रिषी श्वर के चाहीये गमन कीया॥
विश्वानर आत्मा जो जो तरिह रदेखी है॥ और बीज सर्व संसार का वही है॥ और सर्व

संसार वाही मो है ॥ ताको वीह जाने है ॥ ता तें निकट वां के जात भये ॥ उद्दालकोवा
चा ॥ मै वा अग्नि को जो वीज सर्व संसार को है ॥ नहीं जानत ॥ अजे के काल मे
या मं तआत्मा को राजा वैकेके श्रीतश्रेष्ट जानत है ॥ तहां गमन करो ॥ तवीर
षीश्वर निकट वां के जात भये ॥ राजे ने सर्व को भिंन नमस्कार कर कर प्रात
काल को उपदेस कीया ॥ राजोवाच ॥ मद्र देस मेरे के चोर नहीं ॥ कुकर्मी अर
मद्य आहारी नहीं ॥ अरु रष्टन प्रकाश आत्मा के जानही ॥ अरु अज्ञानी
नहीं ॥ अरु स्वाद्धी हो ऐ कान नहीं राषत ॥ अरु स्वाद्धी ही नहीं ॥ तुम कछु व
नव वरसों आगमन करत भये हो ॥ ऋषीश्वरो वाच ॥ विस्वानर आत्मा
अर्थ याहि जो वीज संपूर्ण संसार को है ॥ अरु सर्व संसार वाहू मो इस्थि
त रव ही जठर अग्नि है ॥ अरु व्यापक है ॥ तुम वा के ज्ञाता हो ॥ अरु हम

वाकेंगतके जो बीज सर्वको है ज्ञाता नहीं ॥ राजोवाच ॥ जे ताकषु दान अवर लोकमे रे पावते है ॥ तु
म हूं अंतीकार करो ॥ अर याठवर मोर हे ॥ अर ज्ञाता होकर गछत हूजीये ॥ वासंबू हरिषी
श्वरोवाच ॥ वाके ज्ञानसें जो यह मानुषमानुष होत है ॥ वीहै आत्म प्रकाश है ॥ अर आत
मा है ताको मुझे उपदेस करो ॥ राजोवाच ॥ मैं विश्वानर आत्माको जानत हों ॥ प्रातका
लको उपदेस करोंगा ॥ ताते द्वितीय दिवस संपूर्ण रिषीश्वर निकट राजाके आग
मन करत भये ॥ वा संपूर्णसें एक हूं को राजा प्रथम उपदेस तम या ॥ राजोवाच ॥ तूं म
हकौन रूपके आत्माको पूजत अर उपासत हो ॥ रिषीश्वरोवाच ॥ हे नमस्कार करो यो
गमन्द्र रूप देवलोकके ॥ राजोवाच ॥ यहि देवलोक रूप जो ताविश्वानर आत्माको
है ॥ अर इन्द्री आत्माते राहै ॥ या भांत जो विश्वानर आत्माको उपासता संता
नसुतादिकते रे दीपवत प्रकाशवान उतपन्न होते ॥ अर चतुर्थ पद ... सद्व है हो
ते ॥ अर जोको अयामांत उपासना करे ॥ ताकी संतान मो तत्व वेता पुरुष उतप

तहे॥ यहि मे दृ आतिगुह्य है॥ सो सुते राउ तरंगिरता जो निकट मेरे न आवता॥ और
अज्ञान नहीं मो मिरत पावता॥ अर्थ यहि जु विश्वानर आत्मा अपुने सों भिंन देव
लोक को आत्मा जानत यही अज्ञान रूप मिरत है॥ यद्यपि या उपासना हं सोध
न और संतान की प्राप्त होत है॥ तो हूं निकट ज्ञानीयों के अज्ञान है॥ और देवलोक सी से है वां का
जो को उ देवलोक को सीस आत्मा का जान कर उपासे॥ सो सव वांका गिरे॥ इति वृत्तस्य सीस उ
पासना॥ ततः तृतीय प्रति राजोवाच॥ तू कवन रूप सों आत्मा को उपासत है॥ रिषोवाच
यी हि सुर्ज रूप विश्वानर आत्मा का है॥ या रूप सों जो तू उपासता था॥ यद्यपि या उपा
सना सों तू विमल तराजकी जो अठ और आस्व और वहुल और रथ और दास और दा
सी और धन और भक्ष्य भोजकी प्राप्त होत है॥ तो तू ज्ञान मो यही अज्ञान है॥ और
जो को उ सुर्ज को विश्वानर आत्मा का नेत्र जान कर उपासे॥ ज्ञान नेत्र वाले का
प्रकाश हो॥ और मन संतान वां की के आत्मज्ञाता उतपन्न हो॥ जो निकट मेरे न

ज्ञावतातूंनेत्रतेराउतरीगरता॥अर्थयहिहैजोज्ञाननेत्रसेंअंधहोता॥इतिब्रह्मनेत्रउपा
सना॥ततः त्रतीयप्रतिराजोवाच॥तूंकवनरूपसेंआत्माकोउपासतहै॥रिषोवाच॥
माघरूपपवनको॥राजोवाच॥यहिहैमार्गगंभीरविस्थानरआत्माकोहै॥यामार्गगं
भीरकीउपासनासेंतुऊकोमार्गआत्माकेमेंप्राप्तहोइगी॥अर्थनादकपदार्थोंको
सेंप्राप्तहोइगी॥अरसंतानमेंब्रह्मज्ञातापुरुषउतपन्नहोतहै॥यहिपवनआत्माकाप्रा
णहै॥प्राणतेरेनिकसजातेजोतूंमुझपेआगमनकरता॥अर्थयहिहैजोकोरूपव
नकोविस्थानरआत्माकेप्राणजानकरउपासनानहींकरता॥अरपवनहीकोआत्मा
जानकरउपासतहै॥सोआज्ञानहीमेंप्राप्तहोतहै॥इतिब्रह्मप्राणउपासना॥ततःचतुर्थ
प्रतिराजोवाच॥तूंकवनरूपसेंआत्माकोउपासतहै॥रिषोवाच॥साधकआकाशरूपको॥
राजोवाच॥यहिहैशब्दगंभीरविस्थानरआत्माकीहै॥यांतेयारूपकीउपासनासेंतुऊध
नअरमानुषपावशेषप्राप्तहोइ॥अरभोगअधकमवएकेरें॥अनेकभोगलोकोंकोंव

२३ रवावे॥ अरविभ्रमतेंआधककदेवें॥ अरसंतानमोमुमोद्दापुलषकोउतपत्नहोइ॥ याहि
आकाशनिश्चेआत्माकोरूप॥ अरवधआत्माकीहै॥ जुइस्थानवोकोमद्भछाती
केहै॥ छातीतेरीबंद्रवंद्रहोतिजोनिकरमेरेआगमननकरता॥ अर्थयाहिजोवो
ऊयाआकाशकोवुधआत्माकीसोंभिनजानकरउपासनाकरतहै॥ मात्नो
आपकोअज्ञानरूपवान्नसोंबंद्रवंद्रकरतहै॥ इतिब्रह्मवुधउपासना॥ अथपं
चमपुतिराजोवाच॥ तूंकवनरूपसोंआत्माकोउपासतहे॥ रिषेोवाच॥ साय
रूपआपके॥ राजोवाच॥ याहिमंडारधनविस्यानरआत्माकोहै॥ यारूपसोआ
त्माकोजोउपासतहै॥ तातेतूंभोगोसोंअरधनसोंतिपृहोगा॥ अरभोगोअरध
नसोअवरोहूंकोतिपृकरें॥ अरकुलतेरीमोमुमोद्दापुलषउतपत्रहे॥ अर
आपमिषइस्थानवैस्यानरआत्माकोहै॥ मिषआसततेरेगलते॥ जोनि

कर मेरे न आवता तूं॥ अर्थ यहि है मिं नीमिष अरु अम सत आत्मा के सों आप
को जान कर जो को ऊ उपासत है॥ अज्ञान रूप सु[illegible] सों मिष अरु अम सत
आपुनो को गालता है॥ इति ब्रह्म निमिष उपासना॥ अथ षष्ठम प्रतिराजो वा
च॥ तूं के वन रूप सो आत्मा को उपासत है॥ ऋषो वाच॥ सा य रूप पृथ्वी के॥
राजो वाच॥ यहि इस्था न इस्थित हो नी विस्वानर आत्मा का है॥ या रूप सों
जे आत्मा को उपासत है तूं॥ ता ते तु जे चतुर्प अन्नादिक [illegible] आति प्राप्त है॥
अरु रसादिक भष्यण करें॥ अरु अपवर्ग को देइ॥ अरु कुल तेरी मो मुमोक्ष
पुरुष उतपन्न होइ॥ या पृथ्वी चरण आत्मा का है॥ चरन ते रा अज्ञान ता
२ सों हूं ता जो नि कर मेरे न आवता॥ अर्थ यहि जो को ऊ पृथ्वी को भिंन
चरन आत्मा के उपासत है॥ अज्ञान रूप चरन सों वां का दूरत है॥ इति ब्र
जान कर [illegible] पाषाण सों

सेचरन उपासना ॥ अथ संपूर्णरिषो
प्रतिराजोवाच ॥ या मंत्र एक विज्ञानात्माको जानकर उपास
त है ॥ तुम विज्ञानात्माको भिंन भिंन जानत हो ॥ एकु नहीं जान
त ॥ जोको ऊ प्राणको जो एक अजपा गमन अरु आगमन वाका है ॥ अरु
वाकी इस्फुरनसों अजपा गायत्री प्रगट होती है ॥ वाको विज्ञानात्मा
जानकर उपासना करे ॥ मद्ध संपूर्ण लोकोंके अरु मद्ध संपूर्ण पदार्थों
के ॥ अरु मद्ध संपूर्ण जीवात्मयोंके आनंद गंभीर होत है ॥ अरु सीसया
विज्ञानात्माका प्रकाश गंभीर जो देव लोक सों आदि संपूर्ण लो
कों मो व्यापक है ॥ अरु रूप संपूर्ण संसारका नेत्र है वाका ॥ अरु मार्ग गं
और वाका प्राण है ॥ अरु मद्ध मन न के इस्थान जात वाकी ॥ का है ॥ अरु नी

वेनामकेमंडारहेवांका॥अरुपृथवीदोन्चरनहेवांके॥अरधातीवेदीहेवांकी॥याइस्थानमो
समगीहवनकीराषीयतहे॥अरकेसधातीकेकुशाइस्थानहे॥जोनीचेसमगीयग्यकी
केराषीयतहे॥अरयंयहिजुप्रथमहवनकेकुशावेदीकोस्वाहीयतहे॥अरमध्यशरीरकेतीन
अग्निन॥एकमनद्वारहिरदेकेतीनअग्निहे॥एकमनद्वारहिरदेकेजाकोगार्हपतअग्निकीकही
यतहे॥दुतीयदषणाग्निजाकोप्रजापतिअग्निहूकहीयतहे॥वहिहूहिरदेइस्थानमोभेद
मोइस्थितहे॥त्रतीयमध्यमुषकेजाकोअजावनीयकहीयतहे॥अरयहत्रयामथणकरनेअंगन
की॥प्रथमक्रमाचमनकरकेमनमेंधारे॥जोयहीग्रासप्राणकोमथणकरवावेहे॥जुयासों
प्राणेत्रिप्तहोहि॥पुनःप्राणायस्वाहा॥मंत्रकोउच्चारकरप्रथमग्रासमथणकरे॥अरप्राणेत्रिप्त
भया॥तबनेत्रत्रिप्तभया॥जबनेत्रत्रिप्तभयातबसूर्जत्रिप्तभया॥जबसूर्जत्रिप्तभया॥
तबस्वर्जलोकत्रिप्तभया॥जबस्वर्जलोकत्रिप्तभया॥तबजोकछुस्वर्जलोकमेंयाप
दार्थ॥सोसंपूर्णस्वर्जसहतत्रिप्तभया॥तातेप्रथमग्रासकोउप्राणकोदेतहे॥एतेसं

बहु पदार्थां के तृप्त होत हैं ॥ और तां के फल सें यां को अंत तद्रूप रसबंध होत है ॥ इति प्रथम ग्रास क्रि
या ॥ द्वितीय ग्रास को या प्रकार भक्षण करै ॥ जो व्यान पवन को भक्षण करवावत है ॥ ततः व्या
नाय स्वाहा ॥ इति मंत्र उच्चार या द्वितीय ग्रास भक्षण किया ॥ यासें व्यान तृप्त होत है ॥ और
जब व्यान तृप्त भया श्रवण इंद्रि तृप्त भई ॥ और जब श्रवण इंद्री तृप्त भई ॥ दिशा कर तृ
प्त भया ॥ और जब दिशा कर तृप्त भया ॥ संपूर्ण दिशा तृप्त भई ॥ और जब दिशा तृप्त भई
जो कछु मध्य दिशा के आश्रय दिशा करके है सर्व ही तृप्त भया ॥ ता ते ग्रास देन हारे व्यान के ने
संपूर्ण पदार्थां को तृप्त कीया ॥ इति तृतीय ग्रास क्रिया ॥ तृतीय ग्रास को अपान पवन के तृ
प्त करने की भावना धार कर ॥ अपानाय स्वाहा ॥ या मंत्र को उच्चार कर भक्षण करे ॥ जब
समान तृप्त भया ॥ मनु तृप्त भया ॥ जब मनु तृप्त भया ॥ मेघ जल डार न हारा तृप्त भया
जब मेघ तृप्त भया विद्युत तृप्त भई ॥ जो कछु मध्य विद्युत के आश्रय मेघ के है संपूर्ण तृप्त भया
ता ते ग्रास देन हारा समान को या संपूर्ण पदार्थ जो समान के तृप्त पावत है ॥ तास

र्वेकोत्रिप्रकारकरतेहैं॥ इतिचतुर्थमुद्रासत्क्रिया॥ पंचममुद्रासमायभावनात्रिप्रकारनेउदानपव
नको॥ उदानायस्वाहा॥ यामंत्रकोउच्चारनमषणकरे॥ जबउदानत्रिप्रभया॥ पवनत्रिप्रभया
जबपवनत्रिप्रभया॥ तबआकाशत्रिप्रभया॥ जबआकाशत्रिप्रभया तबजोकछुमहद्आका
शपवनमेंहै सर्वत्रिप्रभया॥ तातेयासुदेनहारा॥ उदानकोयासंपूर्णपदार्थजोउदानसों
त्रिप्रपावतहैं॥ तासंपूर्णकोत्रिप्रकारकरतेहैं॥ इतिपंचममुद्रासत्क्रिया॥ पुनःअंतपंचममुद्रास
केआचमनकरे॥ यांकोपंचमहाभूतहोत्रकहतहैं॥ मद्रकमेंवेदोक्तकेश्रेष्ठकर्महैं॥ यासों
श्रेष्ठकश्रेष्ठकर्मनाहीं॥ जोकोऊयाकर्मकोनजानेआरअंतनमषणकरे॥ जेसेअग्निको
निशाकरमहद्वाषकेहवनकीजीये॥ तैसेहीयाक्रियासोंहीनअंतनमषणकरतहैं॥ वा
अंतनजोतीहूदेकीजोतअंगीकारनहीकरत॥ अरजोकोऊसर्वरीतसोंमषणकरतहैं॥
मानोसंपूर्णसंसारकोआरसर्वपदार्थोंकोआरसर्वजीवधारीयोकोआसुदेतहैं॥ जे
सेतृणकाष्ठादिकमहद्अग्निकेडारनेसोंदगधहोतहैं॥ तैसेहीएकनमषणमेंसंपूर्णप

पवांकेदगधहेसहै॥अरजोप्रवर्त्तनहारायाज्ञिकयाअग्निहोत्रकीमोअर्धमखएणकीयाअप
नामतेगकोभवएकरवावै॥मानोमृद्धइस्थानकोवोरे॥अर्थयहिहजोवाहूकोपवित्रक
रै॥अरयाकीसुधताकीहीनतानहोइ॥जैसेबुध्यावंतवालकमाताकीउपासनाक
रतहै॥तैसेहीसपर्णपदार्थयाअग्निहोत्रकीउपासनाकरतहै॥अथकथा॥स्वेतके
तजोसुतउद्यालककाअरपोताअरनकाथा॥स्वेतकेतनिकटउद्यालकपिताके
ठाडाथा॥उद्यालकोवाच॥स्वेतकेतवेदोंकोउचारकर॥जोमद्धकुलहमारीकेऐसा
नहीभयाकोऊ॥जानेवेदपाठनकीयाहोइ॥स्वेतकेतद्वादशवर्षकाथा॥जोवास
तेपाठकरनेवेदकेपिताकीआज्ञासेगछतभया॥मद्धद्वादशवर्षअवरकेसंपूर्न
वेदोकोअर्थहुसंयुक्तपाठकरकेअरसमझकरपुनः॥निकटपिताकेआगमन
करतभया॥अरकाहूकोसमानअपुनेमद्धवेदकेज्ञातामोनजानतभया॥अ
वपितानेवामेगर्वजाननेवेदअरवेदकेअर्थकाअधिकदेखा॥अरजानतभया

जैहें कार शास्त्रो का अरु आपसा ईश्वर को न जाणना या भांत तमु वामे गर्व तमया है ॥ अ-
रमार्गी सें मिला है ॥ तव च्या है तमया ॥ जु वांको मार्ग मे ल्यावें ॥ उदालक उवाच ॥ हे स्वेतके-
तु तूं ऐसा अभिमान संयुक्त ॥ आप सा ईश्वर को न देषण ॥ आत्मा आपही को प्रगट कर-
न भया है ॥ जैसे सो वा पदार्थ हू श्रवण कीया है तैंने ॥ जो श्रवण करने वा पदार्थ के सों
नही जो श्रवण भया तो श्रवण करीयत है ॥ अरु नही जो जानीयत सो जानीयत है ॥
अरु नही जो पछानीयत सो पछानीयत है ॥ स्वेतकेतु सुन उदालक रषी स्वर का श्रवण करने
या वचन के सों आश्चर्यवंत भया ॥ अरु आश्चर्य का वंत भया ॥ स्वेतकेतो वाच ॥ किस भांत होत है ॥
यह जो अन सुनीयत सुनीयत है ॥ अरु अन जानत जानीयत है ॥ अरु अन पछानीय-
त पछानीयत है ॥ उदालक उवाच ॥ जैसे एक मृत्तिका के कासादिक वासन है वां के ॥ नाम मो मृ-
त्तका का ही ज्ञान होत है ॥ नाम अरु चिह्न न वा वासनो के केवल कहन मात्र है ॥ है नही कछु
संपूर्ण मृत्तका ही है ॥ अरु पूर्ण है ॥ तैसे वर्णक ना दिक जो पदार्थ स्वर्ण के है ॥ एक ज्ञान

स्वर्ग ऐसें सों संपूर्न में मोक्ष स्वर्ग ही पाईयत है॥ नाम अक्षर रूप केवल वचन बिलास ही है॥ अब रन ही
कछु॥ अंपर्न स्वर्ग ही पर्ण है॥ तयेव न दृष्टि न सो आदि लेकर जो पदार्थ लो है वे है॥ एक लो
है के ज्ञान सो संपर्न को वह ही जानीयत है॥ नाम अक्षर रूप वचन मात्र ही है॥ सो लो ही ही
है॥ तातें सम झ एक घर का या मांत होत है॥ स्वेतकेता वाच॥ ॐ॥ हे नमस्कार के योग जो अ
छु मैं ने निकट गुर के उपदेस गुर का अर वेद का अंगीकार कीया है॥ वीहया न जानतया
जो जान ताका हे मुझे न उपदेसता॥ अब नमस्कार को योग गुर दीषत मेरे तुम ही हो
तातें तुम उपदेस करो मुझे॥ उदालक उवाच॥ ॐ॥ मैं तुझे उपदेसत हों॥ सर्व सो आदि नित्र
निराकार निरंयन ही जो है सो था॥ नाम अक्षर षो जग अर दो षक अर नून ता अ आपसा न था
राषत केवल एक ही था॥ को ऊ एक अज्ञानी कहत है॥ जब या द्रिष्ट संसार आदि मो न था अ
छु तब एक सून ही था॥ अर्थ यहि वाही सों जो न था अछु अर यहि जो अछु है सो ताही
सो प्रगट भया है॥ हे सेवक सुभ प्रतीत ना सत को असत न हीं सकत है॥ या सर्व सो आ

दि जो है एक अद्वैत वही था ॥ वही एक अद्वैत ने चाहत भया जो मैं बहुत होंं ॥ अर्थ यह है जो अने
क भांत रूपों सों प्रगट होंं ॥ ता ते शुद्ध प्रकाश आप ने सो अग्नि को उतपत्त कीया ॥ पुनः वा
अग्नि ने चाहा जो मैं बहुत होंं ॥ ता ते अनेक रूपों सों आ[illegible]पां को उतपत्त कीया ॥ इसी सों
जब मानुष्य को उसन तअधिक होती है ॥ पसीने का आगमन होता है ॥ ते सी ही अग्नि
सों आप उतपत्त होता है ॥ पुनः वा आप ने चाहा जो मैं बहुत होंवां ॥ सो यह आप ने करूप के
पृथवी को पृथवी के कार्ज संयुक्त उतपत्त कीया ॥ इसी ते है जो इस स्थान मों मेघ वरस
ते हैं ॥ उतपत्त पृथवी की पृथवी सों होता है ॥ तिस ते आप औ संसर्ग स्त्रिष्ट उतपत्त होता है
मलसंसर्ग जीवधारीयों का अग्नि जल पृथवी यह तीन ही है ॥ अवर उतभुज अंडज जे
र जया तीन प्रकार की स्रिष्ट इन ही सों भई है ॥ अवर वा देवता जो प्रकाश का प्रकाश है
अंतर आत्मा है सर्व का ॥ अवर अद्वैत है ॥ पाछे उतपत्त करने इन तीन के पुनः चाहत भया
जो मद्ध अग्नि अवर आप अवर पृथवी के जीवात्मा रूप सों ॥ आप प्रवेश करों ॥ अनेक

२८

नामअरुरूपसोंप्रगटहे॥ तातेप्रथमशरीरकेआपमहाभूयातीनभयेतोकेजोदेवताहेंअ
वेशकरतभया॥अरुयातीनभयेतोकेत्रिवृतकरनकरतभया॥ तद्यथा॥ प्रथमयाती
नकेषष्टभागकीये॥अर्थयोंहैजुएकएककाअर्धअर्धभागकरतभया॥ पुनःती
नअर्धभागकोभिंनराषतभया॥अरुतीनजोरहेतेये॥ ताकोपुनःअर्धभा
भागकरकरषष्टभागकरतभया॥ जोसर्वनवभागभयेयोंहैजोतीनभागभिं
नराषेये॥ तोएकभागपृथ्वीकेमोंचतुर्थभागअपअरुतेजकाजोवायषष्टभा
गमोंयामिश्रितकीया॥ तैसेहीअपकेप्रथमभागमोंपृथ्वीअरुअग्निकाच
र्थभागमिश्रितकीया॥अरुअग्निके[illegible]भागमोंपृथ्वीअरुअपकाचतुर्थभा
गमिश्रितकीया॥अरुजोभागमोंपृथ्वीअधिकहैतासोंमानुषअरुतृणादिस्थि
ष्टभई॥अरुजामोंतेजअधिकहैतासोंदेवतामये॥अरुजामोंजलअधिकहै
तासोंजलजीवभये॥अरुशास्त्रोउक्तनकीअरुरसवकाशकीजोपुत्रादिकअरुपं

बीनो है॥ सो भेद अघ आकाश अरु पवन का है॥ जो तेजो वहि है सो सत रूप दाम अरु लक्ष
दृशो है॥ नहीं वरनन न मये॥ इति त्रिवृति कर्म संपूर्ण॥ अथ व्या है त्रिवृति करन॥
उदालकोवाच॥ ॐ॥ ए स्वेतकेत अब एक अरु समझ गरने रूप जो महत् अगनि के
है॥ रूप वा अगनि का है॥ जो प्रथम में विभाग करने अगनि ने महत् अगनि के या॥ स्वे
त रूप जो महत् अगनि के है रूप वा जल का है॥ जो प्रथम विभाग करने अप के महत्
अप के या॥ कृष्ण रूप जो महत् अगनि के है रूप वा पृथवी का है॥ जो प्रथम विभा
ग करने पृथवी के या॥ अगनि तें अगनि का एक ठौर होने या तीन रूप के सों है॥
अब यहि तीन रूप आपस में भिन्न होत है॥ अगनि तें अगनि का मिथ्या होत है
ता तें अगनि के वलना नहीं है॥ कछु नहीं है। सत वही तीन रूप ही है॥ अरु
सूर्ज है॥ रक्त रूप जो महत् सूर्ज के है॥ रूप वा अगनि का है॥ जो प्रथम विभाग
करने अगनि के महत् अगनि के या॥ स्वेत रूप जो महत् सूर्ज के है रूप वा जल का है॥

जोसर्वविभागकरनेजलकेमध्यजलकेथा॥रक्तमनरूपजोमध्यसर्जकेहैरूपवापृथवी
काहै॥जोसर्वविभागकरनेपृथवीकेमध्यपृथवीकेथा॥सर्जतत्सर्जकाएकठव
रहोनेयातीनस्वरूपकेसोहै॥जबयहितीनस्वरूपआपससेभिन्नहोतेहै॥सर्ज
तत्सर्जकामिथ्याहोतेहै॥सर्जतत्सर्जयहिकेवलनाममात्रहीहै॥कछुनहीहै॥असत
वहीतीनरूपहीहै॥औरपरनहै॥रक्तरूपजोमध्यनिशाकरकेहैरूपवाअग्निकाहै॥जोसर
र्वविभागकरनेअग्निमध्यअग्निकेथा॥श्वेतरूपजोमध्यनिशाकरकेहैरूपवाजल
भा काहै॥जोसर्वविभागकरनेजलकेमध्यजलकेथा॥कृष्णरूपजोमध्यनिशाकरकेहै
रूपवापृथवीकाहै॥जोसर्वविभागकरनेपृथवीकेमध्यपृथवीकेथा॥चंद्रमाका
चंद्रमतानिश्चतकरनेयातीनरूपकेसोहै॥जबयहितीनहीरूपआपससेभिं
नहोइ॥चंद्रमतचंद्रमाकामिथ्याहोतेहै॥निशाकरकेवलनाममात्रहीहै॥कछु
नहीहै॥असतवहीतीनरूपहीहै॥औरपरनहै॥रक्तरूपजोमध्यविद्युतकेहै

रूपवाअग्निकाहै॥जोपूर्वविभागकरनेमद्धअग्निकेथा॥श्वेतरूपजोमद्धविद्धतकेहै॥
रूपवाअपकाहै॥जोपूर्वविभागकरनेअपकेमद्धअपकेथा॥कृष्णरूपजोमद्धविद्धतके
है॥रूपवापृथवीकाहै॥जोपूर्वविभागकरनेपृथवीकेमद्धपृथवीकेथा॥विद्धतभाव
विद्धतकाभिष्वतहोनेयातीनरूपकेसोंहै॥जबवहितीनरूपअपसेंभिनहोहै॥
विद्धतभावाविद्धतकानिष्याहोतहै॥विद्धतहूकेवलनाममात्रहीहै॥कछुनहीहोअ
सतवहीतीनरूपहीहै॥औरपूर्वनेहै॥यात्रिवृतकरनकोवुद्धमाननहीजानतहै॥और
ऋषीस्वरहमारेजोपुरातनवेदअरअर्थोवेदांकयांकोजाननहारेयेतिनहूनेव
हाहै॥जोमद्धकुलहमारीकेअवलगनहीभयाकोऊ॥यामांतकहै॥जोमेपदार्थजा अन
ननेअनपछाननेकानहीजानतअरनहीपछानत॥अरसर्वपदार्थांकेज्ञाताभ
येथे॥ज्ञानयात्रिवृतकरनकेसोजैसेयावृतिकरनकेज्ञाताभयेथे॥तैसेहीअव
रसंपूर्नपदार्थोकोतीनरूपअसतहीजानतेथे॥अवयामांतकेज्ञाताभये॥जोर

३० मतरूपअग्निसोहै॥अरुहमनरूपपृथवीसोहै॥अरुस्वेतरूपअपसोहै॥तववापदार्थके
जोशीघ्रतासोनहीसकीयतजान॥अरुवासार्थाअवरनहोइ॥जैसेसाजोअरूपजो
नहीद्रिष्टपरत॥ताकोहूजानीयतहै॥जोअंसप्रथमयहितीनमतस्रुद्रमनरूपअसत
होहै॥यहित्रिवर्तकारनवाह्यकीतुजेप्रगटकरीमेने॥अयोत्रिवर्तकारनअभंत्र
कीकोश्रवणकरु॥अंनजोभषणकरीयतहैतीनप्रकारहोतहै॥इस्थलचिरकीन
सोमन तामद्धमाम्ससूक्षमनेंहोतहै॥अरुजलजोअचवीयतहै॥तीनप्रकारहोतहै॥इस्थ
ललघवीमध्यरक्त॥सूक्षमनेहोतहैप्राण॥घेउजोभषणकरीतहैतीनप्रकारहोतहै॥
इस्थूलअसतमध्यमिष॥सूक्षमवाक्इंद्रीहोतहै॥मनकेवलअंनहै॥प्राण
केवलजलहै॥रसनाकेवलघीयजोअग्निहै॥स्वेतकेतोवाच॥हेनमस्कारके
योग्यपुनःमुझेउपदेसकरो॥उदालकोवाच॥श्रवणकरु जैसेदधिकोअतिमथी
यतहै॥ततवांकाऊर्धकोगमनकरकेघीहोतहै॥तैसेहीअंनजोभषणकरी

यतेहे॥सूक्ष्मतत्त्ववांकामनुहोतहे॥तैसेवजलजोअचवीयतहे तत्त्ववांकामनुहोतहे॥
ऊर्ध्वकोजाकरप्राणहोतहे॥तैसेवघीजोहेअग्निमेताकोजोभषणकरीयतहे॥सूक्ष्
मतत्त्ववांकाऊर्ध्वकोगमनकरकरवाक्इंद्रीहोतहे॥तातेमनुकेवलअन्नहे॥प्राणके
वलजलहे॥वाक्इंद्रीकेवलअग्निहे॥श्वेतकेतोवाच॥हेनमस्कारकोयोगपुनःमु
झेउपदेसकरो॥जोअंनकोमांतमनहोतहे॥उदालकोवाच॥श्रवणकरमानुष्यषो
डसकलाराषतहे॥तातेतूंपंचदशदिवसकछुभषणमतकरु॥अरजलजेताकछुचाह
तहेअचवजोप्राणभिन्नअपसोंनहीरहत॥श्वेतकेतनेययाअज्ञापिताकीकीया॥
जवयाभांतसोंपंचदसदिवसवतीतभये॥पुनःनिकटपिताकेआगमनकरतभया॥
स्वेतकेतोवाच॥अबकियाअज्ञाहे॥उदालकोवाच॥केतेऋक्स्तुतवाकतीनवेदकेउचार
करु॥श्वेतकेतोवाच॥जोकछुसिमरनेमेनहीआवत॥उदालकोवाच॥जवतीदाणअ
ग्निविकारीकोसांतकीजीयतहेअरवासोंअतिसूक्ष्मअंसमात्ररहतहे॥जेसेवासूक्ष्म

हमकं अंसमसे सूक्ष्म पदार्थहूं को नहीं स्पर्श कीयत दग्ध करे॥ तैसे ही सायया एक भाग षोडस कला के जो
अन्न तुम्मो अवशिष्ट है॥ वेदों को उच्चार मो नहीं स्फुरीय तल्याइ॥ अन्न वकछु भक्षण करकर पाई है सो
श्रवण करीयो॥ कछु तव तुमको संपूर्ण स्मिरन मो प्रवेश होगा॥ तव स्वेतकेतु कछु भक्ष
ण कर कर पुनः निकट पिताके आवत भया॥ पिताने वेद वचन जो कछु वासों पूछे सर्व को
उच्चारत भया॥ उदालक उवाच॥ जैसे प्रदीप्त एक अग्निको शांत करीयत है॥ एक सूक्ष्म अंगसमात्र
जो वासों रहत है॥ ताके पुनः तृनैसने प्रज्वलकरत है॥ जब प्रज्वलत भई तब संपूर्ण पदार्थोंस
कोहूं दग्ध करे॥ वा षोडस कलासें जो एक भाग तुम मो था॥ केचत कीं केचत भक्षण करने सें जब
वाने वलकों अंगीकार कीया॥ तव सर्व स्मिरन करने तेरे मो आवत भया॥ इसी से कहत हैं
मैं जो मन केवल अन्न नहीं है॥ अरु प्राण केवल जल पर है॥ अरु वाक इंद्री केवल अग्नि है॥ स्वे
तकेतने केवल श्रवण करने या वचन पितके सें जो कछु ज्ञात त्वयासो जानत भया
इति अग्निर्त्रिवरत करन समाप्तं॥ अथ षष्ठया उदालक जो महा वाक स्वेतकेतकोन

बवार उपदेस कीया॥ तैं जिसका जो है लय इस्थान गाढ निंद्रा जा कौ सुषपत कहीयत है॥
ता सुषपत को मुझ सों समझ॥ जब मानुष मांही निंद्रा के मगन होत है॥ ता को सुषप
त या ते कहीयत है॥ आतमा जो है आपुन आप सों याह वा आतमा के एक होत है॥ इस ते
सुषपत का अर्थ आपुन आप की प्रापत का है॥ ता का यहि नाम राषत है॥ जो सब प्रकार सु
षपत के आदि ही प्रगट है॥ जैसे पंषी को सूत सों बांध कर सा यल करी के बांधत है॥ व
ह या ओर वा ओर गिरत है॥ जब को ऊ ठवर वासते इस्थित होने को न हीं पावत॥ तब
पुन: वाही लकरी पर इस्थित होत है॥ तैसे ही मन जो विस्व आकार ते जाग्रत अवस्था
मो पंषी की न्याई फिरत है॥ अर को ऊ इस थान अरु ठवर वासते सुष के नहीं पावत॥ जो
प्राण सों बांधा हूया है ता मो इस्थित होकर सुषपत मो सुष को पावत है॥ अब स्वेतकेतवा
ह अंन मषण करने की अर जल पान करने की हूं मुझ सों समझ॥ जब मानुष चाहत भ
षण की करत है॥ भषण कर नहारा नाम पावत है॥ अर जल जो आचवीयत है अंन को

मक्षुसंपर्शनेअंगीशरीरक्रियाकेप्राप्तहोतहैं॥जैसेचरवालगोआदिकाकोअरअश्वोंकोअर
सैनापतिसेनाकोजाठरमोचाहततहैलेजातहै॥इसप्रकारआपकोलेजानहाराअं
नमथणएकेकोसर्वठरमोकहीयतहै॥इस्थानआपकेमोशरीररूपीवूटीउतपतहो
तहै॥अरयोहवूटीशरीरकीमलसेंारहतनहीहोत॥अरभिंनमथणकरनेअंनके
अवरमलहूवोलानहीं॥तैसेहीअंनहूवूटीहै॥अरमलयावूटीकाजलहै॥अरज
लहूवूटीहै॥सोमलवोकाअग्निहै॥अरअग्निहूवूटीहै॥जोमलयावूटीअग्निकी
काअसतअद्वैतदिष्टांतसोरहततहै॥यहिसंपर्शनउतपतइसीसेंप्रगटभईहै॥अरवा
हीमोइस्थितहै॥अरअसीमेलीनहोइगी॥जवमनुषचाहपानकरनेकोकरतहै
पानकरतानानुपावतहै॥आपकोमित्रकीअग्निजाठरमोचाहततहैलेजातहै॥जै
सेचरवालगोआदिकोकोअरअश्वोंकेरदाकअश्वोकोअरसेनापतिसेनाको
याहीप्रकारअग्निकोपेलकआपकाकहीयतहै॥आपइस्थानसोंयोहवूटीशरीरकी

उतपत होत है॥ अरु याहि बूटी मल लसो हीन नहीं होत॥ अरु भिन जल सों अवरमल नहीं यां का॥ अरु मल या बूटी जल की का अग्नि है॥ अरु मल या बूटी अभिन की आग निका आसत रुकही दिष्टांत सो हीन है॥ जो यामें यहि संपर्ण संसार उतपत मया है॥ अरु वाही मो इस्थित है॥ अरु वाही मो लीन होत है॥ स्वेतकेत याहि तीन तत्व जो है॥ सूक्ष्म सो मद्ध शरीर के मानुष के एक एक तीन तीन भाग होत है॥ जैसे पूर्व वर्नन कीया है मानुष को मिरतकाल मो जिह्वा मद्ध मन के लीन होत है॥ अरु मन मद्ध प्राण के अरु प्राण मद्ध विग्यान रहे॥ अरु विग्यान रमद्ध प्रमात्मा के॥ जो अती सूक्ष्म है॥ अरु सब ही याहि सर्व है॥ अरु संपर्न वीह आत्मा ही है॥ अरु वही सत सत है॥ तत्वमसि॥ अर्थ याहि जो वीह तु ही है॥ तत्पद ईश्वर त्वंपद जीव असि पद ब्रह्म॥ निरंतर सीव॥ बूंद मांह चीटी न समावे॥ कैसे बूंद समुद्र कहावे॥ जो पे बूंद कहे मैं पानी॥ मा ने सम अज्ञानी अज्ञानी॥ पुन सागर हूं पानी कहीये॥ लघु दीर्घ जो भेद ही हलहीये॥ भेद उपाध कके हनके

३३

हानी॥सागर बूंद सर्व गत पानी॥ तिउ जीव ईश्वर माया मैं॥ निर्विचार माया मिथ्या है॥ तातें ब्र
ह्म निरंतर लहै॥ अहं ब्रह्म निश्चै करहै॥ याको ब्रह्मज्ञान महावाक कहत हैं॥ श्वेत
केतोवाच॥ हे नमस्कार कोयोग पुनः मुझे ब्रह्मज्ञान उपदेस करो॥ उद्दालक उवाच॥ सु
ण हे पुत्र मोष॥ जैसे माषीयां माषयां कीयां रस संबूंद भिंन भिंन ब्रिषां के ल्याइ कर एक माष
यो कर तै है॥ तब र मद्ध वा माष्यां के अनेक ब्रिषां के रस सो सो न ष्यां कर तै है॥ आप को जानत
रसो काहे स्वन कतन हो॥ जो वामें रस प्रमहीं है॥ तैसे ही हे पुत्र मोष संपर्न जीव धारी
सुषपत अवस्था में अरु मरत अवस्था में अरु महा परले मैं या तीन ही काल में सा
यवा ब्रह्म सत्त अविनाशी के एक हो तें हैं॥ अरु न ही जानत जो सायवां के एक भये॥ त
थे व्रिंगिया सिंह वियाची तो मिया वघ या डींमिया सरपादि कोकिया पतंग गमिया मछरा मे
यां मषजा जाने जो जो रूप पुरुष नी कार कीया है॥ जानत हे जो हम यहि रूप ही हे॥ अरु निं
श्चै विद्म परमात्मा आप ही हे॥ जब लग आप पुने आप सो मिले ते हे॥ तब लग महलक्षप

नेकोनहीप्राप्तहोत॥जोवहिअणिमातिसूक्ष्मतनहै। यहिसंपूर्णवहिएकआत्माहीहै॥अरवहिसत
सतहै॥ततत्वमसि॥अर्थयहिजोवहितूहीहै॥तातेब्रह्मनिरंतरलहे॥अहंब्रह्मकहीकहे
श्वेतकेतोवाच॥हेनमस्कारलोयोगपुनः मुझेउपदेसनकेयोगहोतुम॥उद्दालकोवाच
सुणएनुमोष॥यहिसंपूर्णसलताजेपूर्वदिशासेंपश्चिमकीओरजातहै॥अरसमु
द्रसेंनिकसकरपुनःसमुद्रमोलीनहोतहै॥अरजाकालमोनिकसीहैगंगा॥अ
रयमुनाहूयहीजानतहैजुहमगंगाअरयमुनाहैअरअवरनहीहूं॥अतेवआ
पुनेमूलस्वरूपकोनहीजानतजुहमसमुद्रहीहै॥तैसेहीयहिसंपूर्णजीवधारी
आत्मतत्वअविनाशीसेंनिकसेहै॥अरनहीजानतजोहमआत्मतत्वअविनाशीहै॥
इसीतेक्रियासिंहक्रियाचीताक्रियाविघयारक्रियासूकरक्रियासर्पादिकक्रियापतंग
क्रियामछरक्रियामषजाजानेजोजोरूपधारतहै॥जानतहैजोहमयहिरूपुहीहै॥
तातेमूलस्वरूपआपुनेसेंवेमुखभयेहै।जबलगस्वरूपकोनहीजानत॥तबल

गइ॥ इसीभांत भ्रमें हैं॥ अरु वोहि सूछम ही संपर्न एव आत्मा है॥ अरु सत सत है॥ तत्वमसि॥
अर्थ यहि जु वोहि आत्मा तू ही है॥ तो तें ब्रह्म निरंतर लहे॥ अहं ब्रह्म निधार कही के है॥
स्वेतकेतोवाच॥ पुनः ब्रह्मज्ञान मोकुं उपदेश करो॥ उदालक उवाच॥ सुणहे मुमोष॥ त्रि
बगंभीर के जे अगधी है सो लोटीयत हैं॥ तैसे ही मकार उधे के बडे तरवर ने ही सो सजी
वरहत हैं॥ अर्थ यहि जो काटने हीर इस्थानवा के सो जल वा सो प्रगट होत है॥ तो ते जीव
सर्व इस्थानो वाके नियो पूर्ण हैं॥ अरु वोहि व्रिष जल को अपुने मों अंगीकार करत हैं॥ अ
र वा सों रस पावत हैं॥ अरु त्रिप्त रहत हैं॥ जा इस्थान वा व्रिष के जीव त्यागत हैं॥ वा इ
स्थान शुषक होत हैं॥ अरु जब संपर्न वा व्रिष को जीव त्यागत हैं॥ संपर्ण सूषक हो
त हैं॥ तैसे ही हे मुमोषनि श्रेष्ठ ज्ञान॥ जब या शरीर हू को जीव त्यागत हैं॥ शरीर मि
तक होत हैं॥ जीव मिरतक नहीं होत॥ इसी भांत वोहि सूछम का अपुना स्वरूप है॥ अर
वोहि यहि संपर्ण एव आत्मा है॥ अरु वोही सत सत है॥ तत्वमसि॥ अर्थ यहि जो वोहि

तही है॥ तातें ब्रह्मलीन निरंतर लहे॥ अहं ब्रह्मलीन धरकही कहे॥ स्वेतकेतोवाच॥ पुनः ब्रह्मज्ञा
न मुझे उपदेस करो॥ उदालकोवाच॥ हे पुत्र मो षट्त्रिषवट के फलकों ल्याउ॥ स्वेतकेत ल्याव
त भया॥ उदालकोवाच॥ या फलकों षंडतकर॥ स्वेतकेत षंडतकरत भया॥ अरु कहत भ
या जो षंडतकीया मैंने॥ उदालकोवाच॥ अब या फलकों क्या देषत है॥ स्वेतकेतोवाच॥
दाने सूक्ष्म से देषत हौं॥ उदालकउवाच॥ इन दानिउ सों एक कों षंडतकर॥ स्वेतकेत ने षंडत
कीया अरु कहा जो षंडतकीया है मैंने॥ उदालकोवाच॥ अब यामें क्या देषत है॥ अब यामें देषीय
त नहीं कछु॥ उदालकोवाच॥ जो कछु बीज सों नहीं देषीयत वाही में यहि संपूर्ण ब्रिषका स्थूलत
लीन है॥ अरु वाही सें यहि ब्रिष इ स्थूल प्रगट भया है॥ इसी भांत ब्रह्म सूक्ष्म न है॥ अरु याहि स
सर्व एक आत्मा है॥ अरु वही सत सत तहै॥ तत्वमसि॥ अर्थ यहि जो कहि आत्मा ता तू ही है॥ तांते
ब्रह्मलीन निरंतर लहे॥ अहं ब्रह्मलीन धरकही कहे॥ स्वेतकेतउवाच॥ पुनः ब्रह्मज्ञान मुझे
उपदेस करो॥ उदालकउवाच॥ हे पुत्र मो षस्तु॥ लवणकों मद्ध जलके मिश्रत करकर प्रा

तहकाल कोंनिकटमेंरेल्याउ॥ स्वेतकेतनेंतैसेंहीकीया॥ उदालकउवाच॥ बालकएको जोनिशा
कोंजलसेंमिश्रतकीयाथातेनें॥ अबवाकोंजलसेंभिनकर॥ वानेंजेताइक जलमेंलव
णकोदेषानपावतभया॥ जोजलसेंएकभयाथा॥ उदालकोवाच॥ याजलकोंजिह्वापर
राषअररसलेजोकिसभांतहै॥ वानेंरसलेकरकहा॥ जोलवनहीहै॥ उदालकोवाच॥
अबवरठवरसोंरसलेजोकिसभांतहै॥ पुनः वानेंरसलेकर कहाजो लवणहीहै॥ उदा
लकउवाच॥ अबयारसलेनेंसोछाउ॥ फेरिनिकटमेंरेआगमनकर॥ स्वेतकेतनेंऐसेहीकी
या॥ उदालकोवाच॥ याजलमोंजोसायनेंतोकेलवनकोंनदेषतभयातूं॥ फेरकरसो
नथाहीवकसका॥ अरसायरसनाकेरसलेतभयाजोलवनहीहै॥ इसीभांतहैवीहस्त
षनअरयहिसपर्सवीहएकआत्माहीहै॥ अरवहीसतसतहै॥ तत्वमसि॥ अर्थयाहिवदि
आत्मातूहीहै॥ तातेंब्रह्मसोंनिरंतरलहे॥ अहंब्रह्मनिधारकहीकहे॥ स्वेतकेतउवाच॥
पुनः ब्रह्मज्ञानमुझेउपदेसकरो॥ उदालकवाच॥ हेनमोष॥ जैसेकाहूकोंनेत्रहुसोंबां

धकरजाठवरमोरहतहै॥वानगरसोनिकासकरउद्यानमोल्याइकरछोडेअरवहिवा
उद्यानमोदिशापूर्वअरपश्चमकीकोनहीजानत॥जोनेत्रवांकेखोलकरकहीय
तहे॥जोनगरगृहतेरेकायादिशामोहे॥तथापसायवांकेकोऊमारगकाप्रकाश
कनहोइ॥तौहूएतेहीउपदेसमात्रवहिबुद्धसोदिशाकोअंगीकारकरकरवस
तीमोआवतहै॥अरवसतीसोंपछतपछतनगरअरग्रहिअपुनेमोप्रवेशकरतहै॥
तैसेहीगुरपूर्णसेवकउत्तमकोएताहीउपदेसकरतहै॥जोनरलखलपतेरासदन
रूपआत्माहे॥वीहएतेहीउपदेससोंअपुनेआपकोजानतहै॥अरवांधकथा
स्वरूपकीप्राप्तमोमोहअरममताद्विशपदार्थकीहै॥जवयाकानाशभया॥आप
सोआपहीप्रगटहोतहै॥वहिसदमरूपआत्मामैंहीहैं॥अरयाहिसंपूर्णवहि
एकआत्माहीहै॥अरवहीसतरसतहै॥तत्वमसि॥अर्थयाहिजोवहिआत्मातूही
है॥तातेब्रह्मनिरंतरलहो॥अहंब्रह्मनिधरकहीकहो॥स्वेतकेतावाच॥पुनःब्रह्मज्ञा

नमुझेउपदेसुकरो॥उदालकोवाच॥सुणहेमनमोवजांकालमोमानुषकोअंतरो
गप्राप्तहोतहोतहै॥जांरोगमोसरीरत्यागअवस्यहीहोइ॥मातात्र्यरपिताअर
भ्राताअवरनिकटवरतीजुवांकेयाडोरवाडोरदृष्यतहोतहै॥वासोंपूछतहैजुहमको
पछानतहै॥वारोगीकीजवलगवाकीइंद्रीमनमोलीननहीभई॥अरमनमद्धप्राण
केलीननहीभया॥अरप्राणमद्धविस्वानरकेलीननहीभये॥अरविस्वानरमद्धपर
मात्माकेलीननहीभया॥तवलगपिताअरमाताअरभ्राताअरनिकटवरतीयाको
पछानतहै॥अरजववाकीइंद्रीमनमोलीनभई॥अरुमनमद्धप्राणकेलीनभया॥अ
रप्राणमद्धविस्वानरकेअरविस्वानरमद्धपरमात्माकेलीनभई॥तवकाहूकोनही
पछानत॥सोवीहसूछमएकपरमात्माहीहै॥अरवहीसतसतहै॥तत्वमसि॥अ
थीयाहैजुवीहआत्मातूहीहै॥तांतेब्रह्मलीनंरतरलहो॥अरहंब्रह्मनिधारकहीकहै॥
स्वेतकेतउवाच॥पुनःब्रह्मज्ञानमुझेउपदेसकरो॥उदालकउवाच॥मानुषकोजो

चोरकरतहै कैसेंसोंवांधकरनिकटन्यांउकरताकेल्यावतहैं ॥ जोयाचोरनेचोरीकरीहै ॥ तबव
हैवाकेकरेंपरलोहेकोतपाइकररखावतहै ॥ जोवहियथार्थचोरहीहै ॥ मिथ्याकोअंगी
करकरकरसप्रकरतहै ॥ औरकहतहै जुयहिद्रवमेनेनहीहरा ॥ करवांकेदग्धहोतहै ॥
औरन्याउकरतावाकोंदंडहूंदेतहै ॥ औरजोवानेचोरीनहीकरीसत्यकोअंगीकारकरक
रसप्रकरतहै ॥ करवांकेदग्धनहीहोते ॥ औरदंडहूंसोमुक्तहोतहै ॥ तातेसत्यस्वरूपवाआ
त्माहीहै ॥ जोआत्मसत्यहै ॥ औरवहिआत्माएकहीहै ॥ औरसत्यसत्तहै ॥ तत्वमसि ॥ अर्थ
यहिजुवहिआत्मातूंहीहै ॥ तातेब्रह्मनिरंतरलहो ॥ अहंब्रह्मनिधरकहीकहो ॥ याउपदेस
पिताकेसोंजोकछुस्वेतकेतनेस्रमकरायो ॥ सोस्रमकरो ॥ इतिमहावाक्यसमाप्तं ॥ अथकथास
नतकुमारोकी ॥ जोनारदप्रतिउपदेसकरतमये ॥ वासतेउपदेसकेनारदनिकटसनतकुमा
रकेआगमनकरतभया ॥ हेनमस्कारकोयोगचाहतहो ॥ मैंजोतुमतेउपदेसकोअंगीका
रकरें ॥ सनतकुमारोवाच ॥ जोजोकछुतूंपूर्वज्ञानराषतहैसोप्रथमेप्रगटकरो ॥ तवकमध

कवासों हम उपदेस करें तुझे॥ नारद उवाच॥ हे नमस्कार को योग॥ चतुर्वेद अर संपू
र्ण शास्त्र को उच्चार कीया है मैं ने॥ अर आत्मा वां की को ज्ञान तहां मैं॥ तथापि आत्म ज्ञा
ता न हूं भया मैं॥ अर तुम सेरिषों सों श्रवण कीया है मैं॥ जो आत्म ज्ञाता संपूर्ण शोको
अर शोक को सो मुक्त है॥ हे नमस्कार के योग मुझे हूं यारो॥ अर शोक आत्म ज्ञान ता के सो
मुक्त करो॥ अर्थ यी है जो आत्म ज्ञाता करे॥ सनत्कुमारोवाच॥ संपूर्ण ते नै चतुर्वेद अर
शास्त्र जो उच्चार कीये है॥ केवल एक नाम ही है॥ ताते नाम को ब्रह्म ही जान कर उपास
ना करो॥ जो को ऊ नाम को ब्रह्म जान कर उपासना करे॥ अधीपस्ता ता नाम का वाकों
प्राप्त होइ॥ अर संपूर्ण कामना पूर्ण होइ॥ जो नाम ब्रह्म का ब्रह्म ही है॥ नारदोवाच
जो नाम हूं सों अधिक श्रेष्ट है तो मुझे उपदेस करो॥ सनत्कुमारोवाच॥ वाक इंद्री नाम
सों श्रेष्ट है॥ जो चतुर्वेद संपूर्ण शास्त्र वाक इंद्री ही सों प्रगट होत है॥ अर स्वर्ग आ
काश अर इस्थल आकाश अर पवन अर अग्नि अर आप अर सुर अर मानुष

ग्रपतंगअरदंतसकादिअरपपीलादिकोकेसंबूहअरचतुपादकोंकेसंबूहअर
पंषीयोकेसंबूहअरसदायोगमनकरनाहीहैधर्मजाकातिनकेसंबूहअर
वृषोकेसंबूहअरबृक्षादिकजोस्थिएहैताकेसंबूहअरकीटादिकोकेसंबू
हअरसुमअरअरसुमअरसतअरसतअरसुमकामअरअरसुमका
मअररमित्रअरअमित्रजोवाह्यइंद्रीनहोतीतोयासंपूर्णपदार्थोकाज्ञानहूनहोताताते
वाह्यइंद्रीहीसोंसंपूर्णप्रगटहोतहैतिसतेवाह्यइंद्रीकोब्रह्मजानकरजोकोउपजेजोअ
धवाह्यइंद्रीमेंआवतहैतेसबकीप्राप्तहोइवांकोनारदउवाचजोवाह्यइंद्रीसोहूअध
कहैजोहैतोज्ञानकेसनत्कुमारउवाचवाह्यइंद्रीसोमनश्रेष्टहैजैसेएकमुष्टमो
योहरडकपवादोवहेराहोइतेसहीवाह्यइंद्रीअरनामसबमनकेहोतहैअरम
नवांकोजानतहैइसतेजानीयतहैजबमनवीचारकरतहैजोवेदकोउचारकरों
तववेदकोउचारकरतहैअरजबवीचारकरतहैजोयाहिकामकीजीयेतबकरतहैअ

रजववीचारकरतहैसतअरगोआदिकअरनुरंगअरषचरप्राप्तहोमुके॥तवकाकोपावतहै॥
अरजववीचारअर्थवांकापरमार्थकाकरतहैतवपावतहै॥इहीमनुआत्माहै॥इहीमा
नषहै॥इहीमनब्रह्महै॥मनकोब्रह्महीजानकरपूज॥जोकोऊमनुकोब्रह्मजानक
रउपासतहै॥वोहिसंपूर्णमनकेमनोर्थपावतहै॥नारदोवाच॥ॐ॥जोमनहूसोक
छुअधकतरहै॥जोहैतोआज्ञाकरो॥सनतकुमारोवाच॥संकल्पजोकहीयतहैचाह
सोमनथीश्रेष्टहै॥प्रथमजवसंकल्पउपजतहै॥पाछेतेमनरूपीवीचारमोआवतहै
ततःवाकइंद्रीसोंवचनकरतहै॥पुनःवाकानामवराषतहै॥अरनाममोसंपूर्णवेदहै॥
अरवेमोसंपूर्नकर्महै॥तातेसर्वयहिपदार्थउतपतएकसंकल्पहीकेहै॥अरसंक
ल्पहीमोइस्थितहै॥अरसंकल्पहीमोलीनहोतहै॥स्वर्गअरआकाशअरपृथ्वीकोसं
कल्पहीकरतहै॥पवनअरइस्थलअकाशकोसंकल्पहीकरतहै॥अरजलअग्नि
कोसंकल्पहीकरतहै॥मिघोंकोसंकल्पहीकरतहै॥उतमजीस्त्रष्टकोसंकल्पहीकरत

है॥ वेदको संकल्पही करत है॥ कर्मों को संकल्पही करत है॥ मानुषहु को संकल्पही करत है
सर्वपदार्थों को संकल्पही करत है॥ संकल्पको ब्रह्म जान कर उपासना करे॥ वाइस्था
नको प्राप्त होत है जो अचल है॥ अर आप हू अचल होत है॥ अर मानुष वाइस्थान
हू के अचल है॥ अर रोगोंसे रहत संपूर्ण कामनाको प्राप्त होत है॥ अर मानुष वाइ
स्थानके हू आपरोठसो हीन होत है॥ जो संकल्प ब्रह्म है॥ नारदोवाच॥ संकल्पहू सो क
छु अधिक तर है॥ जो है तो अज्ञा करो॥ सनत्कुमारोवाच॥ चित्त संकल्प सों श्रेष्ठतर है॥
जब चेतना जो कहीयत है सो चित्त सों होत है॥ तब संकल्प होत है॥ पुनः वीचार करत
है॥ पुनः वचनु करत है॥ पुनः वा वचनका नाम राषत है॥ अर मन्त्र नामके वेदोंकी
एकता है॥ अर वेदमो संपूर्ण कर्म है॥ तातें सर्व यहि पदार्थ चित्तही है चित्तही सो उ
तपन्न होत है॥ अर चित्तहीमो इस्थत है॥ अर चित्तहीमो लीन होत है॥ याहीतें अति
ज्ञाता अचित्त होत है॥ अर मानुष कहत है॥ जो यहि अस वुद्ध है॥ जो कोऊ कामनायासों

नही होत ॥ और वहि श्रुति ज्ञाता है ॥ जो चित्त कों नष्ट तातें अचित्त न होता ॥ सचित्त होता
और जो कोउ अचेतना पावत है ॥ तथापि सूक्ष्म ज्ञाता है ॥ तो दूमानष्य वाकों श्रेष्ठ ज्ञान
कर वचन वाके कों श्रवण करत है ॥ चित्त और संकल्प आदिक वाकों आत्मा है ॥ और स
त इस्थान आत्मा है ॥ और शरीर सत्व इस्थान है ॥ और या है संपूर्ण पदार्थ चित्त ही
सो उतपन्न होत है ॥ और चित्त ही मो इस्थित है ॥ और चित्त ही मो लीन होत है ॥ चित्त
को ब्रह्म जान कर पूजा ॥ जो पूजत वाका वाइस्थान को पावत है ॥ जा इस्थान में
संपूर्ण पदार्थ है ॥ और एकरस है ॥ और निरोग ॥ और वैरी सों भय नही तहां ॥ जो
कोउ चित्त को ब्रह्म जान कर पूजत है ॥ उपरत संपूर्ण पदार्थों के जो मध्य चित्त के है
आज्ञा वरतत है वाकी ॥ नारदोवाच ॥ चित्त हू सों कछु श्रेष्ठ तर है ॥ हे नमस्कार
को योग जो है तो आज्ञा करो मुझे ॥ सनत्कुमारोवाच ॥ ध्यान चित्त सों अधिक तर है

रहै है॥इसीतेपृथवीध्यानकरतेहै॥अरस्वर्गआकाशध्यानकरतेहै॥जलपध्यानक
रतेहै॥अरपर्वतध्यानकरतेहै॥अरसुरध्यानकरतेहै॥अरमानुष्यध्यानकरत
है॥महत्मानुष्यहुकेजो ज्ञानअरतपस्याअरआनंदमो जोश्रेष्टतापावतहै॥सोश्रे
ष्टताफलुध्यानहीकाहै॥अरजोकोऊमानुषतुछहै सोध्यानसोंहीनहै॥अतिदुख
तहै॥अरअतिदीनअरअतिअप्रतीतअरअतिमूढहै॥ध्यानकोब्रह्मजानकर
उपासनाकरै॥जोकोऊध्यानकोब्रह्मजानकरउपासै॥ताहिजोकछुमध्यानके
है॥वासंपूर्णपदार्थोकोप्राप्तहोतहै॥जोध्यानब्रह्महै॥नारदोवाच॥जोध्यानहूसो
अधिकतरहै॥हेनमस्कारकेयोग॥जोहैतो॥आज्ञाकरो॥सनत्कुमारोवाच॥वेदोकेजोहैज्ञा
नअरपुनेआपकेनिश्चैकरनेका॥ताकोविज्ञानकहीयतहै॥सोध्यानसोंश्रेष्टहै॥जा
नेजोज्ञानसोऋगवेदअरयजुर्वेदअरसामवेदअरअथर्वणवेदअरअवरशास्त्रअ
अरज्ञानप्राणकाअरपृथवीअरस्वर्गअरआकाशअरइसथूलअकाशअरपवनअ

अरु आप अरु अग्नि अरु सूर्य अरु मानुष अरु चतुर्पाद को के संबूह ॥ अरु पंषी यो के संबू
ह ॥ अरु रवि ब्रहो अरु स्पर्श उतभुज स्वेद ॥ अरु दंत मसकादिक कीटादिक अरु पतंग अ
रपपीलकादिक अरु शुभ अरु अशुभ अरु सत अरु मिथ्या ॥ अरु उत्तम अधम अरु
निकृष्ट अधम अरु ऊंच अरु नीच अरु यहि संसार अरु वहि संसार यहि सर्व प
दार्थ ज्ञात तत्व होत है ॥ ताते विज्ञान को ब्रह्म जान कर एज ॥ जो विज्ञान को ब्रह्म जा
न करएज त है ॥ वाइ स्थान को प्राप्त होत है ॥ जाइ स्थान मो संपूर्ण विज्ञानी बु
द्धवान रहत है ॥ अरु आप हूं को वाइ स्थान मो ज्ञान संपूर्ण रहत है ॥ अरु जो कछु
मद्ध ज्ञान के आवत है वा संपूर्ण को अधिपता होत है ॥ नारदो वाच ॥ हे नमस
कार को योग विज्ञान हूं सो कछु अधिक तर है ॥ जो है तो आज्ञा करो ॥ सनतकुमार
उवाच ॥ सुण प्राणिमात्र जु है बल सो विज्ञान सो अधिक तर है ॥ याते प्रगट है जु ए
क बलवान अनेक बुद्धिवानों को अपुने वश करत है ॥ जब बल को राषत है ॥

तबवासोरहस्तगुणकीहोतहै ॥ अरुजबरहस्तगुणकोकरतहै ॥ तबसतगुणकोप्रेयहोतहै ॥
अरुजबप्रेयगुणकोहोतहै ॥ तबतीनऊरबरतीगुणकेहोतहै ॥ तबतीब्राद्विएहोतहै ॥
तबवातज्ञानकीश्रवणकरणेकोयोगहोतहै ॥ अरुजबश्रवणकरणेकोयोग
होतहै ॥ तबधनीनिश्चेकाहोतहै ॥ अरुजबद्रिडप्रतीतहोतहै ॥ तबज्ञाताहो
तहै ॥ अरुजबज्ञाताहोतहै ॥ तबकर्मकाकरताहोतहै ॥ अरुजबकर्मकाकर
ताहोतहै ॥ तबधनीअवस्थाकाहोतहै ॥ अरुबलुजोहैशक्तितिसीसोएपृथवी
इस्थितहै ॥ अरुतिसीसेपनेदभेआकाश अरुजल अरुपवन अरुदेवत्योकेसं
बूह ॥ अरुमनुषहुके अरुचतुर्पादोकेसंबूह ॥ अरुपंखीयोकेसंबूह ॥ अरुब्रह्मा
दिकसर्वउतपत्रपृथवीकी ॥ अरुदंतस्तकादिक अरुस्तकादिक अरुग्रहकीटादिक
अरुपतंग अरुपपीलकासर्वयहिदपदार्थशक्तिकहीसोंइस्थितहै ॥ तातेशक्तिको

ब्रह्मज्ञानकरत्ज॥जोकोउशन्तजोहैप्राक्रमताकोब्रह्मज्ञानकरत्जे॥जोकछुम
न्सशन्तकवेहै॥तोसंपूर्णपदार्थोंकीप्राप्तहोतहैउसे॥नारदोवाच॥हेनमस्कार
कोयोगवलहूसेंकछुअधिकतरहै॥जोहैतोआज्ञाकरो॥सनत्कुमारोवा
च॥ज्ञानवलसोंश्रेष्टतरहै॥यातेप्रगटहैजोदोदिवसहूकोअंनभक्षणनहींक
रतअरुजीवतरहतहै॥तोहूद्रिष्टअश्रुतिस्मृतिनेत्रगंधसीहोतहै॥अरुश्रवणइं
द्रीहूअरुपुनिविवहारमोयथार्थनहींप्रवर्त्तती॥अरुवीचारहूनहींकरसकता
अरुवचनकोपावतनहीं॥अरुकछुकरनेकीसमर्थनहींराखत॥अरुआज्ञा
ताहोतहै॥अरुजवहींकछुअंनभक्षणकरेतवज्ञातिप्रकाशनेत्रहुकापावत
है॥अरुश्रवणइंद्रीसोंश्रवणकरतहै॥अरुमनकोवीचारकरतहै॥अरुव
चनकापावनहाराहोतहै॥अरुकरताअरुज्ञाताहोतहै॥ताकेअंनकोब्रह्मज्ञा

जानकर उपासना॥ जो कोउ अंन को ब्रह्म जानकर उपासना करै है॥ वा लोक मे जात है॥ जा लो
क मे अंन के दाता अनेक प्राप्त भये है॥ और जो कछु मन ब्रह्म अंन के है॥ सो वा के संपूर्ण व
श होत है॥ नारद उवाच॥ जो अंन ते सो कछु श्रेष्ठ तर है॥ हे नमस्कार लोयो गजो
है तो आज्ञा करो॥ सनत्कुमारोवाच॥ सुण अप अंन सो श्रेष्ठ है॥ याते प्रगट है जो
मेघ न वरसे दुर्भिक्ष सो संपूर्ण जीव धारी दुःख पावै॥ और जो वरषा उत्तम होइ॥
अति उतपति अंन की सो प्राण धारी सुख पावे॥ या अप ही ने रूप प्रथवी और आका
श और पर्वतो और देवतो और मनुष्य को और चतुर्पादो और पंषीयो और
वृक्षादिक जो उतपत्र पृथवी की है॥ ता और वृक्षादिक और सर्पादिक की
टो और पपीलका आदि को और पतंगो का धारा है॥ और संपूर्ण यह जल ही
है॥ जो रूप देषीयत है॥ ता ते अप को ब्रह्म जानकर उपासना॥ जो कोउ अप को ब्रह्म जा
नकर उपासना॥ सर्व मनोरथ वा के पूर्ण होइ॥ और जो कछु मन ब्रह्म अप के है॥ वा सर्व को

पावतहै॥नारदोवाच॥जलहूसोंकछुअधिकतरहै॥हेनमस्कारकेयोगजोहैतोकहो
सनतकुमारोवाच॥स्नुएतेंअग्निश्रेष्टहै॥यातेप्रगटहैजोअग्निपवनवेगकोरो
ककरमध्यस्ताकाशकेउष्मताकरतहै॥अरजबउष्मताकरतहै॥निश्चेआवत
हैजोअबवरषाहोतहै॥अरजबमेघगाजतहैयाउोरवाउोरसोविद्युतअरशी
घ्रतासोचमकतहै॥अरमानुष्यकहतहैजोमेघगाजतहै॥अरविद्युतचमक
तहै॥अबवरषामेघहोगा॥अरवीहुअग्निहीहै॥जानेआपकोप्रथमउष्मअरवि
द्युतरूपप्रगटकीयाथा॥अरकरतहै॥तातेअग्निकोब्रह्मजानकरउपासजा॥जोकोउ
अग्निकोब्रह्मजानकरउपासतहै॥अरप्रकाशरूपअरतेजवानहोतहै॥अरदू
स्थानप्रकाशवानोकोपावतहै॥जोस्वप्रकाशहै॥अरअंधकारवाइस्थानसें
दूरहै॥अरजोकछुमध्यवालोलोकहैताकोपावतहै॥नारदोवाच॥अग्निहूसोंक
छुश्रेष्टतरहै॥हेनमस्कारकेयोगजोहैतोकहो॥सनतकुमारोवाच॥स्नुएमता

स्मृत ताकाश अग्नि सें श्रेष्ठतर है॥ याते दिनकर अरु निशाकर अरु नक्षत्र अरु अ
ग्नि मध्य मतताकाश ही के होत है॥ अरु आकाश ही सों एक द्वितीय को सर्व करत है॥
अरु आकाश ही सें वहि श्रवण करत है॥ अरु आकाश ही सो सुफुर्ण ताराषत है॥
अरु आकाश ही मो उतपन्न होत है॥ ताते आकाश को ब्रह्म जानकर उपास॥ जो कोउ
आकाश को ब्रह्म जानकर उपासे॥ वाइस्थान को जो आकाश व्रत है॥ अरु यहि
जो आकाश अरु प्रकाश रूप अरु असंपा रहै ताको पावे॥ अरु असमय अरु असोग अ
रु अशोक होय॥ अरु जो कछु मध्य आकाश के है तासंपूर्ण को पावे॥ अरु पक्षानत
है॥ ताते सिमृत को ब्रह्म जानकर उपासे॥ जो कोउ सिमृत को ब्रह्म जानकर उप
आसे॥ जो कछु मध्य सिमृत के है तासंपूर्ण को पावे॥ नारदोवाच॥ सिमृत हू सो कछु
अधिक तर है॥ जो है तो आज्ञा करो॥ सनत्कुमारोवाच॥ सुण चाहकी अज्ञान प्रापता
सो सिमृत वृद्ध होत है॥ अरु जब सिमृत वृद्ध होत है॥ तब वीरगवेद अरु यजुर्वेद

सामवेद उचरत है॥ अरु ताके कर्म करत है॥ अरु कर्म जब करत है॥ सु तब अरु गो अरु तुरं
ग अरु रथ अरु संसार वा संसार को चाहत है॥ ताते चाहकी अनप्राप्त को ब्रह्म
जान करि पूजा॥ जो को अचाह है अनप्राप्त को ब्रह्मे जान करि पूजे॥ जो कछु मन प्रा
न प्राप्त चाहकी केहै ता संपूर्ण को पावे॥ नारद उवाच॥ अनप्राप्त चाहकी सो कछु
अधक तर है॥ हे नमस्कार लो यो॥ जो है तो कहो॥ सनत्कुमार उवाच॥ प्राण अन
प्राप्त चाहकी सों अधक तर है॥ वासो जो जैसे लकरीया संपूर्ण पहीये रथ के की
यां सायनाभ पहीये की के द्रिढ होत है॥ तैसे ही संपूर्ण इंद्रीया मानुष कीयां
सा य प्राण के द्रिढ है॥ अरु षचत है॥ प्राण अवर की सहाय सों रहत स्व ते सुफु
ण ताराषत है॥ अरु ते वायु को गमन करत है॥ अरु स्व ते अभिंत्र को अगम
नु करत है॥ अरु अधीह को जात है॥ प्राण ही माता है॥ प्राण ही पिता है॥ प्राण
ही भ्राता है॥ प्राण ही सुसा है॥ प्राण ही गुर सिष्या दे न हारा है॥ अरु प्राण ही ब्राह्म

न है॥ जो कोऊ पिताऽरु माताऽरु भ्राताऽरु स्वसाऽरु गुरु उपदेष्टाऽरु ब्राह्मण को
वचन॥ ऽरु न कहनो कहे जासों ऊं तो हि कर्न वांको दुखत होय॥ जब लग वांके प्रा
ण राषत है मानुष वांको कहत है जो न ष्टि ष्टकान्न कीया तैने॥ मानो वांका घातु की
या तैने॥ ऽरु पिताऽरु माताऽरु भ्राताऽरु स्वसाऽरु सुतऽरु गुरु उपदेष्टाऽरु
ब्राह्मण जब शरीर त्यागत है तथापि वहीऊ नको दग्ध करत है॥ याते जो प्राण
वामो नहीं होत कोऊ वाकों नहीं कहत जो याहि काम न ष्टि ष्ट करत है॥ ताते पि
ताऽरु माताऽरु सुतऽरु भ्राताऽरु स्वसाऽरु गुरु उपदेष्टाऽरु ब्राह्मण सर्व
प्राण ही है॥ जो कोऊ प्राण को या भांत श्रेष्ठ जाने॥ ऽरु समझे॥ ऽरु कहे॥ ता
कोऽतिवादी कहत है॥ ऽरु जो कोऊ वाको कहे जो तूं अतिवादी है॥ चाहीयत
है जो वाको अंगीकार करे॥ ऽरु कहे जो मे यथार्थ अतिवादी हों॥ ऽरु गुप
ना करे॥ जब नारद प्राण की उस्तुत या भांत सुनकृत भया॥ पुनः सनत्कुमार

सोप्रश्नु करतभया॥ जो प्राणहू सो कछु अधिक तर है॥ या सो सनतकुमार विचारत
भये॥ जो मनो नारदने या प्राणही को सर्व सो श्रेष्ठ बूझो है॥ जो हम सों कछु और वरन
प्रश्न करतभया॥ तातें स्वतहि सनतकुमार नारद के प्रश्न कीये विना ही उपदेसु
करतभये॥ सनतकुमारोवाच॥ सत्य को समुझे सो सत्यवादी कहीयत है॥ नारदोवाच॥
वा सत्य को मै जान्याचाहत हों॥ सनतकुमारोवाच॥ जो मानुष सर्वकाल मैं सत्य
ही उचरे॥ और सत्य ही के अंगीकार करे॥ और मिथ्या को त्याग करे॥ तब वाको सत्य
वादी कहत है॥ तातें चाहीयत है जो सत्य को सत्य जान॥ और असत्य को असत्य॥ अ
र्थयी है जो उपनिषदों के रहस्य को जानने सो सत्य सत्य भासत है॥ और असत्य अ
सत्य॥ नारदोवाच॥ हे नमस्कार के योग्य मैं विज्ञान को जान्याचाहत हों॥
सनतकुमारोवाच॥ जब मनन करीयत है॥ तब विज्ञान पावीयत है॥ और मनन
याको कहीयत है॥ जो वचन को सायवीचार गुरु गुरु के मुखारविंदातें के और युक्ती को के

द्रिढ करना ॥ नारदोवाच ॥ मनन को पाया चाहते हैं ॥ सनत्कुमारोवाच ॥ मनन तब होत है उ
व वचन गुर के पर द्रिढ प्रतीत होत है ॥ अरु उपदेस गुर का वही है जो वेदों के है ॥ नारदो
वाच ॥ वाही निश्चे जो ऊपर वेदों के वचन गुर के है सो कवन है ॥ सनत्कुमारोवाच
मय्यघर का मनन मो राख कर आज्ञा गुर की मो वर्तना इही निश्चै है ॥ नारदोवाच ॥
आज्ञा गुर की कवन है ॥ सनतकुमारोवाच ॥ जो तपस्या अरु कष्ट गुर आज्ञा करे ॥
ता को अभ्यास मो ल्यावणा इहै आज्ञा अरु इहीं टहल गुर की है ॥ नारदोवाच ॥ अं
तु या तपस्या का क्रिया है ॥ अरु फल या क्रिया का प्राप्त होत है ॥ उत्र ॥ तब लग तपस्या
अरु भजन है ॥ जब लग स्वरूप आपुने का ज्ञान अरु आप ही नो आपस खुको न
ही पावत ॥ प्रश्न ॥ वही आपुने स्वरूप का ज्ञान अरु आपुने आप का सुख किया है
उत्र ॥ आपुने स्वरूप का ज्ञान अरु आपुने आप का सुख वाही है ॥ जो जाग्रत स्वप
न तर अवस्था नहीं कह्या ॥ अरु अनंत संपूर्ण ज्ञान नो अरु सबों का है ॥ पुनः प्रश्न ॥ वही ज्ञा

नकारसुखकवनसोहै ॥ ७३ ॥ वाकोंसर्वकामनाकहीयतहै ॥ जुजासोंअधकअ
वरपदनहींकोऊ ॥ आपुनेस्वरूपकाज्ञान अरुआपुनेआपकेसंबंधहीहै ॥ यातेंजो
जोकछुवासोंअधकहैवहींनहैवामोदुःखनहीं ॥ योतेंजोद्वैतमेअधकचा
हहीहै ॥ अरुचाहहीद्वैतहै ॥ अरुचाहहीकेवलदुःखहै ॥ अरुमद्भ्रमनाकेअ
वरकोईनहींदेखता ॥ अवरकोनहींजानता ॥ अरुअवरकोईनहींश्रवणकरत
अरुअवरकोईनहींसमुझता ॥ अरुअवरकोईनहींवीचारता ॥ अरुभ्रमनाका
नाशनहींसदाहै ॥ अरुवांकोपरलोअरुस्वपलतानहीं ॥ अरुमद्भ्रमनाके
नेत्रअरुनेत्रहुकाप्रकाश ॥ अरुवाप्रकाशसोंदेखणाकाहूकोअरुदेखनहारा
एकुहीहै ॥ अरुजाइस्थानमोअवरकोदेखतहै ॥ अरुअवरकोजानतहै ॥ अ
रुअवरकोश्रवणकरतहै ॥ अरुअवरकोसमुझतहै ॥ अरुअवरकोवीचारतहै
अंतुहैवाको ॥ वाइस्थानमोआपुनेस्वरूपकाज्ञान ॥ अरुआपुनेआपकास

रुन ही॥ नारदोवाच॥ हे नमस्कार को योग इस्यानुभ्रन का कथन हे॥ सनतकुमारोवा
च॥ अस्मात् ज्ञापशब्द के मोहोत हे॥ यहि हू की इन्ह हीस कीयत॥ प्रकरण तेर कोअ
हीयत हे अनुप्रनीश के मोहोत हे॥ अर जो सत्त प्रष्ठ तहे वाक इस्या अपर ठ
वरन ही॥ याते अशक्त वा की केवल न वही हे॥ अर वा को काहू सो श्रेष्ठता नही॥
मे से अनंतर को अध ऊतुरं गो सो अर ह की यो सो अर गो आदि को सो श्रेष्ठता
है॥ ताते याभांत वा को श्रेष्ठता नही॥ इसी ने जु वाही हे॥ अधो हि अर वही
ऊर्ध्व॥ अर वही हे पूर्व॥ अर वही है पाछे॥ अर वही हे दक्षण ओर॥ अर
वही है वाम ओर॥ अर वही हे सर्व ओर॥ पुनः सनतकुमारोवाच॥ अध
हि मै ही हों॥ ऊर्ध्व मै ही हों॥ पाछे मै ही हों॥ आगे मै ही हों॥ वाम ओर मै ही
हो दक्षण ओर मै ही हों॥ सर्व मै ही हों॥ पुनः वासते सम्मुख आवरण नारद

केज्ञेअथवा यों समुझता होइ॥ जु मैं शरीर को कहत हैं॥ जु सर्व मे ही है॥ सनत्कु
मारोवाच॥ अथ हि आत्मा है ऊर्ध आत्मा है॥ पाछे आत्मा है आगे आत्मा है॥ वामते
आत्मा है दक्षिण ऊपर आत्मा है॥ आत्मा ही सर्व आत्मा है॥ जो कोउ ऐसें देखे और
ऐसें निश्चै करे॥ और ऐसें जाने॥ आपसाथ अपुने आनंद मो है॥ और आ
पसाथ अपुने खेलत है॥ और आपसाथ अपुने युक्त है॥ और भोग करते है
और आपसाथ अपुने स्वाद लेत है॥ और आप ही राजा स्वर्ग को है॥ और व
ही आप ही संपूरण काम संसार के करत है॥ जो कोउ या भांत प्रतीत न करे॥
और आपको ऐसें ना जाने॥ वांको राजा अवर है॥ ताते जो इस्थान मो वहि
जाते है नाश और परलोको प्राप्त होते है॥ और तिस इस्थान मो अपुने स्व
रूप को न ही प्राप्त होत॥ और जो कोउ संपूरण आपको ही देखत है॥ और निश्चैक

रतहै॥ अरज्ञानतहै॥ वाहीकेज्ञात्मासेंप्राणकीउतपत्रभईहै॥ अरवाहीकेज्ञा
त्मासोंचाहकीअनप्राप्तहै॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंप्रिसनरनहै॥ अरवाहीकेज्ञा
त्मासोंआकाश॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंअग्नि॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंअप॥ अ
रवाहीकेज्ञात्मासोंप्रगट अरपृथ्वी॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंअंन॥ अरवाहीके
ज्ञात्मासोंबल॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंध्यान॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंवेदोक्त
ज्ञान॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंचित्त॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंसंकल्प॥ अरवाहीके
ज्ञात्मासोंमन॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंवाकइंद्री॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंवेद॥ अर
वाहीकेज्ञात्मासोंसंपूरनकर्मोंके॥ अरवाहीकेज्ञात्मासोंसर्वसंसारउतपत्रहो
तहै॥ जोकोउयात्मांतदेखतहैमृतकोनहींदेखता॥ अररोगकोनहींदेखता॥ या
तेज्ञावानेसर्वकोदेखाहै॥ अरसर्वकोदेखतहै॥ अरसंपूर्नमारगोंसोंसर्वपदार्थों

कोप्राप्तहोतहै॥वहीएकहोतहैवहीतीनहोतहै॥वहीपंचहोतहैवहीनवहोतहै॥पुनःवहीदस
अरसहस्रअसंख्यअनंतसहस्रहोतहै॥अरएकएकहीहै॥अर्थयाहिजअकारहीअपारहोतहै
अरपुनःएकहीहै॥सूक्ष्मअहंकारसोंअररोकनेइंद्रीयोकेसोंअरसबकरनेविषयोकेसों
अंतःकरनसूक्ष्महोतहै॥अरजबअंतःकरनसुद्धभया॥सदाज्ञानभवरूपअरआत्म
प्रकाशीभया॥अरगांठमनवांकेकीखुलजातहै॥सनतकुमारनेयाउपदेससेअ
नेकप्रकारकीस्तुतिअरअज्ञानतासोंजोमलसमानहै॥मननारदकेसोधोइ
करअंधकारअज्ञानताकेसोंस्याधअतप्रकाशज्ञानस्वरूपअपुनेकेप्राप्तकरत
भये॥अथवर्ननचिदाकाश॥जोकेवलअसंगहीहै॥अरमहाआकाशरूपीनगर
केवरनीयतहै॥अरयाहिशरीरनगरआत्माकोहै॥वांकेमध्यजीतस्वच्छमंदरक
मलवतहै॥ताकेमध्यस्वच्छआकाशहै॥जाकोचिदाकाशकहीयतहै॥जाकछम

द्रवाचिदाकाशमें है॥ सो तूं आपको जान॥ जो कोऊ यामें प्रवेश करे॥ मद्रूयानग
र आत्मा के जो कमलवत सूक्ष्म मंदिर है॥ तामें गिरया है॥ जो वाको चाहीये तो
जो और चाहीये जान॥ ताको उत्र याहि है॥ जे तो आकाश वाह्य है॥ ते ताहि आ
काश मद्रवाचिदाकाश के है॥ जो आतिसूक्ष्म कहीयत है॥ और याहि आकाश और
पृथ्वी दोनो वामें स्थित है॥ और अग्नि और पवन और दिवाकर और अग्नि
शाकर और विद्युत और नक्षत्र जो कछु या आकाश में है॥ और नहीं॥ संपू
र्ण वाचिदाकाश सूक्ष्म में है॥ जो कोऊ प्रवेश करे या सूक्ष्म मो को मांत ए ते प
दो थैं ने ठवर दृस्थि की पाई है॥ जो याहि संपूर्ण पदार्थ वामें है॥ और सं
पूर्ण चाहा या में है॥ और नगर आत्मा का जो याहि शरीर है॥ सो याहि जराको

प्राप्त होत है अरु नाश होत है ॥ या सो पाखंडी के पार रहत है ॥ वाको या भांत चाहीये कहा ॥ जु जराभाव
के प्राप्त होने या शरीर के सो वा स्वदन आत्मा का श जरा को नही प्राप्त होता ॥ अरु घात करने या श
रीर के सों वाहि घात नहीं होता ॥ वही सत्त्व है ॥ अरु याहि न गरु आत्मा का आत्मा ही है ॥ जो
संपूर्न पदार्थोंने वामो ठवर पाई है ॥ अरु वाहि आत्मा जो संपूर्न नीकष्ट पदार्थों सो
परा है ॥ जरा अरु मरत अरु रोग अरु शोक अरु भ्रम तृ एक अरनकी अरु पान करनकी
चाहन नहीं राषता ॥ सत्त्व नहीं है चाहनांकी अरु सत्त्व नहीं है धारनांकी ॥ जैसे जो लोक उ
टहल का दूरी करत है ॥ अरु जो कछु वासो चाहत है ॥ पृथ्वी सो आदि लेकर न
गर का देस इत्यादिक वा टहल के फल सो पावत है ॥ तोहू साध वाके सदा नही
रहत ॥ तैसे ही जो लोक उत्तम कर्म करत है ॥ फलु को का पावते है ॥ पुनः एक काल
मो वा फल हू का अंत होत है ॥ अरु यहि टहल के तुल्य जैसे सर्व को प्राप्त होत है ॥

तैसे कर्म हू के तुल्य ईश्वर जो को पावत है ॥ और जो कोऊ अपुने स्वरूप आत्मा को नहीं
पहिचानत ॥ अरु अज्ञान संयुक्त शरीर का त्याग्य करत हैं ॥ मनुष्य सर्व लोको के जहां ग
मन करत है ॥ तहां हू अपुने आपकी प्राप्ति सो निर्हफल रहत है ॥ और वाहि जो या
ही ठौर में अपुने आत्मा को पहिचान कर जात है ॥ काहू इस्थान में अपुने आ
प को अज्ञाता नहीं होत ॥ जो आत्मज्ञाता के फल का अंत नहीं ॥ जो आत्मज्ञाता पि
तर लोक की प्राप्ति को चाहै चाहत ही मात्र वाही इस्थान में संपूर्ण समग्री वाले लोक
की देखत है ॥ और सो या पितर हु के आनंद को प्राप्ति होत है ॥ और जब मातले
क को चाहत है ॥ चाह मात्र ही वा लोक को प्राप्ति होत है ॥ और माता परमाता इत्या
दिक को देखत है ॥ और सो या वाके आनंद को प्राप्ति होत है ॥ और जब भ्रात लोक
को चाहत है ॥ चाहत ही मात्र भ्रात लोक को पावत है ॥ और भ्रातों को देखत है ॥

औरसाथआत्माकेआनंदकोपावतहै॥ औरजवसुसालोककोचाहै॥ चाहहीमात्रवालोकको
पावतहै॥ औरसुसाकेसबहकोदेषतहै॥ औरसाथवांकेआनंदसोविराजतहै॥ और
जवसृष्टिद्वलोककोचाहै॥ चाहहीमात्रवाइस्यानकोसृष्टिदेवसहतदेषतहै॥ औरपि
तरहसेआनंदकरतहै॥ औरजवसुगंधादिकजेहै पुशपचंदनलोकताकोचाहै॥ चा
हहीमात्रवालोककोसुगंधसहतदेषतहै॥ साथवासुगंधकेआनंदसोविलासक
रतहै॥ औरजवअंनपानलोककोचाहै॥ चाहहीमात्रवालोककोअंनपानसहतदे
षतहै॥ औरअनेकप्रकारकेअंनपानसोरसलेतहै॥ औरजवअजगधेनलोककोचाहै
चाहहीमात्रवाइस्यानकोपावतहै॥ अरुअजगधेनकारनहारेवेदकेप्रगट होतहै॥ और
साथवांकेआनंदकोपावतहै॥ औरजवइस्त्रीलोककोचाहै॥ चाहहीमात्रवालोक
कोपावतहै॥ औरइस्त्रीयोंसीतसुंदरसोआनंदकोजीतप्राप्तहोतहै॥ औरयासोमिं

नहूंयापदार्थकीचाहकरे॥ वाइस्थानऽऔरवापदार्थकीप्राप्तसोंऽआनंदकोपावतहै॥ऽऔरऽअतिकठ
नहूंयाचाहवांकीपूर्णहोतहै॥ऽऔरयाहिसंपूर्णचाहऽऔरपदार्थमिथ्याहै॥ भिंनयासोंसत्त
हीजुहैवहीसत्तहै॥ जामेंयाहिमिथ्यानहीं॥ तथापियाहिमिथ्यावामेंनहीं॥ तोहूयाऽअवि
द्याऽऔरऽअज्ञानतासोंजोमिथ्याहैऽआछादनभयाहै॥ऽऔरजोलोऊयालोकसोंवालोककी
प्राप्तकोंचाहतहै॥ऽऔरजानतहैऽअविद्याजानेसत्तकोंऽआछादनकीयाहै॥ सोताकोंखेंच
करूआपमेंलीनकरतहै॥ऽऔरजोऽअविद्यासोंऽअलिप्तहै॥ तथापियाहिसंपूर्णपदार्थन
श्वरदेवाकेहै॥ तोहूवाहिइनकीचाहनहीकरत॥ऽऔरयाकोंप्राप्तनहीहोत॥ऽऔरयाइ
स्थानेकोंनहीपावत॥ यातेजोऽआछादनऽअविद्याऽऔरऽअज्ञानताकोहूदेवांकेसोना
शभयाहै॥ऽऔरवाहिकेवलचिदाकाशहीरह्योहै॥ वाकोंसंपूर्णठवरकोऽऔरइस्थानेमें
ऽऔरचाहैसोत्रिप्तहै॥ यातेजोसर्वप्राप्तहैवांकों॥ जैसेभंडारस्वर्णकामद्रष्टपृथ्वीकेहोइ
ऽऔरऽअज्ञानतावांकोंतापृथ्वीपरगमनऽऔरऽआगमनकीयाकरे॥ऽऔरस्वर्णकोंनही

पावता॥ तैसेंही संपूर्न मानुष्य सुषुपत अवस्थामों सदा ब्रह्मलोकमों जातहै॥ अरु सो यह वि
द्याकाशके एक होतहै॥ नहीं जानत जो कहां हैं हम॥ अरु सो यह कवनके एक ताको प्राप्त भ
येहै॥ अंतर पर अविद्याको॥ अरु अज्ञान ताको तासों बलसों खैंचकर वा स्वकों ल्यावतहै
पीछे वहि आत्मा जो मनद्धथातीके है वही सत्त है॥ अरु हृदा जो है थाती ताको थाती यातेक
हीयतहै॥ जो इस्थानहै वाको॥ या भांत जो कोऊ आत्माको पछानतहै॥ वहि सदा ब्रह्म
लोकमों जातहै॥ अरु वहि ज्ञानी शरीरका त्याग करकर केवल प्रकाशरूप होकर अपु
ने आत्मप्रकाशको पावतहै॥ अरु केवल आत्मा आपही होतहै॥ अरु वा आत्माको या
प्रकार कहतहै॥ जो अविनाशीहै॥ अभयहै॥ ब्रह्महै॥ अरु नाम या ब्रह्मका सती है॥
अरु सतीके सकार तकार यकार यहि तीन अक्षर है॥ सकारको अमिरत कहीयतहै॥
अरु तकार मिरतको कहतहै॥ अरु यादोनो जो एक अविनाशी अरु एक विनाशीहै॥
ताका अधिष्टाता यकार है॥ अरु यकार स्फुरनरूप है॥ जो उन दोनोको स्फुरनता

वहीदेतहै॥ अवरअर यथयाहि जोसकार ईश्वरपदहै॥ अर तकार जीवपदहै॥ अर यकार ब्र
ह्मपदहै॥ अर्थयाहि जु जीव अर ईश्वर ब्रह्महीहै॥ जो कोऊ अर्थ स्मृती के या प्रकार स
मझकर उपासना करै॥ ब्रह्मलोक को जात है॥ आत्मा सेतवत है॥ जैसे सेत के लोक
युक्त सें सेत पर इस्थित होत है॥ अर गमन करत है॥ अर भयी मिरत के सें एक ठवरी मे
स्थित नहीं होत॥ तैसे ही आत्मा संपूर्न वर्ण आश्रम को मिश्रत होन नहीं देत॥ जो मि
श्रत होने सें धर्म का नाश होत है॥ अर धर्म का नाश मिरत है॥ अर आत्मा जैसा से
त है॥ जो दिवस क अर रैन क अर काल वां के अंत को नहीं शक्त प्राप्त होइ॥ जरा अर मिरत
वा आत्मा को नहीं शक्त स्पर्श होइ॥ अर शोक अर पाप अर पुन्य वां को प्राप्त होत न
हीं॥ वहि सर्व निषिद्ध पदार्थों सें सुद्ध है॥ अर ब्रह्मलोक वहि आत्मा ही है॥ अर जो
कोऊ प्राप्त होइ वां को॥ जो अंध है तो सचक्षु होइ॥ अर जो अप्रसंन है तो प्रसंन होइ॥

अरु जो घाइक होइ तो घाउ सों रहित होइ॥ अरु जो रोगी होइ तो अन रोगी रोगी होइ॥ जो
कोऊ यासेतको जो आत्मा है पावै॥ निशा वाको दिवस होइ॥ अर्थ यहि है जो अंधकार
वाको प्रकाशरूप होइ॥ इसते जो वहि सदा प्रकाशरूप है॥ अर्थ यहि है प्रगट अरु प्र
सिद्ध है॥ यौ ही प्रगट ता अरु प्रसिद्ध तावांकी ब्रह्मलोक है॥ याब्रह्मलोक को जो कोऊ चा
है जो प्राप्त होइ॥ ताको चाहीयत है जो त्याग इस्त्री को अरु अवर संपूर्ण रसों का के॥
अरु जब वाको प्राप्त भई॥ जो ठवर में जिसमांत चाहै तिसमांत रहै॥ ताको वाधक नही
कछु॥ अरु त्यागु करना सर्व रसों का सच है॥ जो त्यागु करने संपूर्ण रसों के सो अरु पुन
यज्ञादिके सें अरु तप सें॥ अरु रहा करने जीवो के सें॥ अरु तमगुण जो है निद्रा आदि
कता सो आपको रहा करणी॥ अरु मनन करना मद्य वचनो सत ठौर के अरु त्यागु कर
ना अंजन का इत्यादिक पदार्थों मो प्रवर्त्तने सो ब्रह्मलोक जो है त्रितीय स्वर्ग अरु राते

सो के मध्य है ॥ अंमृत सर ताको प्राप्त होइ जीयत है ॥ और वा स्वर्ग मो दो जल कूल गंभीर समुद्र के सदृश
गमन करत है ॥ और वा अंमृत सर के अंमृत को जो कोउ पान करत है ॥ सीत पुंज अन्न तासो
मद पान की न्याई मगन होत है ॥ और वा स्वर्ग मो कल्पतरु वृक्ष दीव है जासो अंमृत स्रवता है
और अपराजता नगर है ॥ वा स्वर्ग मो अपराजता अर्थ यहि जो अजीत है ॥ और वहि नग
र ब्रह्मा का है ॥ और वा नगर मो एक गृह स्वर्ग का ब्रह्मा ने आप बनाया है ॥ और या संपूर्न
पदार्थों को वहि प्राप्त होता है ॥ जाने सर्व रसादि को का त्याग कीया होता है ॥ और वहि मध्य
संपूर्न लोकों के मनोरथों को पावत है ॥ और यहि स्वर्ग और जो कछु मध्य स्वर्ग के है ॥ संपूर
न या शरीर मानुष्य के मो प्रगट और प्रसिद्ध इस्थित देखीयत है ॥ और मध्य हिरदे के जो कमल
ब रूप खोह है तासो नाडीयों के संबूह खैंचत है ॥ और सूछम जल अंनके सो परनै है ॥ और व
हि जल पांच रूप राखत है ॥ एक रूह द्वतीय पीत त्रतीय स्वेत चतुर्थ हरया पंचम सूछ
दमर रूप ॥ और इहि पांच रूप सूर्य हूं राखत है ॥ और वहि रूप जल के जो मध्य नाडी का

केहैं॥ स्सूर्यकीयां रस्मो सो रूप धारा हैं॥ जैसे मार्ग गंभीर हुयनगरको जात हैं॥ तैसे
हीरस्मा सूर्यकीयां साथाई है पृथवीपर वसनहारयो के बचत हैं॥ चमतकार सू
र्यका सूर्य सो सायवानाडीयो के अभंत्र मे आगमन करत हैं॥ अरु वा नाडीयो सें
सूर्य मे बचत हैं॥ अरु जब मानुष्य निद्रा मे गमन करत हैं॥ अरु स्वप्न को नही देषत
जाके सुषप्त होयत हैं॥ तब वही चमतकार सूर्यका मार्ग नाडीयो के सो हृदे आकाश मे
बचत होत हैं॥ इसीते वाकाल मे ताको कछु निषिद्धता नही प्राप्त होत॥ याते वा पुरुष सुषो
पत इस्थित ताकाल सो मन वा नाडीयो के साथ चमतकार सूर्य के एकता को प्राप्त भया है
अरु केवल प्रकाश ही मयो हैं॥ तिसीते वाकाल मे ताको निषिद्धता नही प्राप्त होत॥ मानु
ष्यका जब वाग्रत काल मे वल बीण होत है॥ तब वाके जो निकर है हैं लोक सो तासे
पूछत हैं॥ जो हम को पछानत हैं॥ जब लग प्राण ने शरीर को नही त्याग कीया॥ त
वलग सर्व को पछानत हैं॥ अरु जब प्राणों ने शरीर का त्याग कीया॥ वीह ज पीयार

स्याप्रकाश्यसूर्यकेकीयांजोआत्मभावनामेअथवापवनकेअभ्याससेजोजिसहीकालमेशरीरसोजीवा
त्माभिंनमयाब्रह्मरंध्रसोताकोखैंचकरऊर्ध्वकोमार्गप्रकाशसूर्यकेसोमनकेवेगवतजाति
शीघ्रतासोंमध्यदिवाकरकेजोपवित्रब्रह्मलोककाहै॥प्राप्तकरतहै॥पुनःवहिमनोबस्तुजे
केमध्यसोहोकरभिंन॥ब्रह्मलोकमोप्राप्तहोतहै॥अरजोकोउमूढअरअज्ञानीहै॥अर
ममोषनहीं॥जबवहिशरीरकात्यागकरतहै॥ब्रह्मरंध्रसोप्राणवाकेनहीगमनकरता॥अर
सूर्यलोककोनहीप्राप्तहोत॥तातेब्रह्मलोकमोवाकीप्राप्तकहाहै॥अरमध्ययाहीसंसारकेनिषि
ध्जोहैकर्मताकेफलकोप्राप्तहोतसंतिभ्रमतहै॥एकसतअर एकनाडजोसाधमनकेबच
तहै॥मध्यवांकेएकनाडीसुखमनाहै॥जोब्रह्मरंध्रकोप्राप्तभईहै॥वाकेमार्गसोसूर्यअरसूर्ज
केलोककोभेदकरब्रह्मलोकमोगमनकरतहै॥तातेजोकोउवामार्गसोजातहै॥सद
अमरहोतहै॥अरजीवात्माअज्ञानीअरमूढकोजाकोअध्यासकेवलशरीरहीसो
है॥वासषमनाकेमार्गगमननहीकरत॥मार्गअवरनाहीयोकेजाताकेकर्मों

५३ केअनकूलहै॥निकसतहै॥तांतेवाआत्माकोजोअविद्या।अरजर।अरमिरत।अरशोक
अरअभुक्ताबाभषणकी।अरपानकरनेकीनहीराषत॥अरसत्तचाहीहै॥अरस
त्तधारनाहै॥अरसत्तसंकल्पहै॥चाहीयेबोजा।अरचाहीयेजाना॥अरवाको
अपुनेआपमें।चाहीयेजाना॥जोकोऊवाआत्माकोयाभांतजाने॥ऊपरसंपूर्न
अभ्यासोकेअरचाहोकेजीतपावे॥याप्रकारप्रजापतिनेउपदेसुकीया॥संपूर्नने
पदेसप्रजापतिसायंइंद्रअरवेरोचनदोऊ॥देवतेअरदैतयावचनप्रजापतिकाश्रव॥अयउ
णकरअरचाहतमयेजुहमवाकोबोजें।अरजानें॥जोबाकीप्राप्तसोसंपूर्नचाहे
कीपूर्नेताहोइ।अरसंपूर्नलोकोपरजीतपावेंहम॥इंद्रराजादेवत्याका।अर
विरोचनराजादैतोंका॥दोनोएकठवरहोकर।अरसंपूर्नईश्वर्जअपुनेकोधो
ठकर।अरसेवकभावकोअंगीकारकरकेरनिकटप्रजापतिकेगमनकरतमये॥
अरत्याछसंपूर्नरसोंकाकरकरीतेरसअरबत्तीसवरषप्रयंततहलकरतमये॥अरत

पस्याबैंचतभये॥इसतेजोअहंकारराजाकामद्धशरीरदोनोकेषचतया॥तिसीतेए
तेवरषोमेप्रजापतिउनकोउपदेसनकरतभया॥जबतिंसअरहृयवर्षवादोनो
कोटहलअरतपस्याकरतेवतीतभये॥तवएकदिवप्रजापतिवासेप्रश्नकरतभ
या॥जोयाठवरतुमारेइस्थितहोनेकाक्यापुयोजनहै॥अरकीकयाचाहतहो॥इं
द्रतथावरोचनोवाच॥वीहआत्माजोअसर्वनाषिद्रपदार्थौसेंअसम्बद्धअसंलिप्तहै॥
अरजराअरमिरतअरशोकअररोगअरचाहभषणकरनकीअरपानकरनकी
नहीराषत॥अरसत्तहैचाहअरधारनावांकीताकोषोजतहैं॥अरजानाचाहतहैं
अरजिसनेवाकोषोजाहै॥अरजानाहै॥वीहिसंपूर्णअभ्यासोंकोअरचाहोंकोप्रा
प्तभयाहै॥अरवाआत्माकीतुमोनेअतिउस्तुतिकरीहै॥तुमहीसोश्रवणकरकर
साधचाहप्राप्तहोनेवाआत्माकेयाठवरमोइस्थितभयेहैं॥प्रजापतिइंद्रतथावरोच
नप्रतोवाच॥जोपुरषुमद्धनेत्रहुकेदृष्टिहैवहीसर्वकोदेषतहै॥वहीआत्माहै॥अर

वहीअविनाशीहै॥अरुवहीनित्यहै॥अरुवहीअभयहै॥अरुवहीब्रह्महै॥वहिदोनोयेंसम
झतभये॥प्रतिबिंबजोमनुष्यनेत्रहुवेंहैयहीआत्माहै॥अरुयाहीकोप्रजापतिहमकोआत
माकहाहै॥वहिदोनोप्रजापतिकोकहतभये॥जैसेप्रतिबिंबनेत्रहुमोदेषीयतहै॥तै
सेहीमनुष्यजलकेअरुदर्पणकेअरुअवरपदार्थहूजोप्रकाशवतहै॥ताहूमोदेषीय
तहै॥मनुष्यइनसंपूर्णोकेआत्माकवनसाहै॥प्रजापतिवासेंतपरीक्षाबुद्धउनकोके
हाजोयहिसर्वपदार्थहीएकआत्माहै॥अरुमनुष्यस्थूलवासनमिश्रितकाकेजलको
प्रवेशकरकरआपकोवामोदेषो॥अरुवामोदेषनेसोजोकछुसमझो॥कहूपयप्रग
टकरो॥तवदोनोवासनमिश्रितकाकेमोजलकेप्रवेशकरकरआपकोवामोदेष
करनिकटप्रजापतिकेआगमनकरतभये॥प्रजापतोवाच॥कियादेषतभये॥इंद्र
तथाविरोचनोवाच॥हेनमस्कारकेयोग्यहमनषसिषप्रयंतआपकोमनुष्यवाजलके
देषतभये॥प्रजापतिउवाच॥केसअरुनषदूरकरकरअरुवस्त्रपहरकरआपकोमं

षनादिकोसोंवनायकरपुनःमघवाजलकेआपकोदेषकरअरुसमुझकरमुझपयप्रग
टकरो॥वोहदोनोगमनुकरतभये॥अरुवस्त्रकेअरुभूषनपहरकर॥अरुकेसअरुन
षदूरकरकेवामघजलकेदेषतभये॥प्रजापतोवाच॥कियादेषतभयेहो॥इंद्रतथाविरोच
नोवाच॥जैसेआपकोवनायकरमघजलकेदेषतभये॥तैसेहीजलमोदेषाआपको
प्रजापतोवाच॥यहीआत्माहै॥अरुयहीअविनाशीहै॥अरुयहीअभयहै॥अरुय
हीव्रह्महै॥दोनोअतिप्रसंनहोकरजातभये॥इंद्रनेप्रीतिविंवहीकोआत्मासमझा॥
अरुविरोचननेशरीरको॥अरुप्रजापतिवीचारतभया॥जोइनदूनेआत्माकोनही
समझा॥शरीरजुहैविंवअरुप्रतिविंवजोहैयाका॥यहिदोनोयाहीकोआत्मासमझक
रगमनुकरतभयेहै॥जोकोउजैसेआपसमझतहै॥तैसेहीआपनाजोकोउहोत
तहैतिसेउपदेसतहै॥वोहदोनोमार्गअरुज्ञानकेमोप्राप्तहोहगे॥अरुमार्गसत्तकेसो
दूरपरैंगे॥विरोचनजोराजादैतोकाहै॥अतिप्रसंनहोयकरअरुशरीरहीआपनेकोआ

त्रासमर्फकरिनिकटप्रजाअपुनीकेगमनकरतभया॥अरयहीवचनजुशरीरआत्माहै॥सोय
प्रजाकेउपदेसकरतभया॥अरकहतभयाजोअघुहैयहिशरीरहै॥याशरीरअपुनेकोसजे
अरयाहीकीउपासनाकरे॥जोकोउशरीरहीकोसजे॥अरयाहीकीउपासनाकरे॥यालो
कपरलोकपरजीतपावे॥अरआत्माभिनशरीरसोनाही॥तातेअवहूमध्यमानुषोंकेजे
कोउशरीरकोसजतहै॥अरशरीरकीउपासनाकरतहै॥अरशुभकरमजोवेरागसंयुक्त
है॥सोनहीकरत॥शरीरहीकेपालनेअरभोगोंमेमगनहै॥अरजानतहैजुआत्मायहि
शरीरहीहै॥मानुष्यवांकोकहतहैजुयाहिदेतहै॥अरयहीउनकीसरधनउपासनाहै
अरदेतोकायहीज्ञानहै॥जैसेचितककोवासतेदगधकरनेकेजवबहिसोनिकासत
है॥अरवस्त्रादिकोसेशोभावंतकरतहै॥तेसेहीदेतहूचितकसमानजोहेशरीरतां
कोपालनेकेअरसुखदेएमोअतिआनंदमोप्राप्तहोतहै॥अरजवयामिरतककोशो
भावंतदेखतहै॥जानतहैजोपरमलोकहूपरहमारीजीतहोइगी॥इंद्रराजादेवतोंको
निकटप्रजाअपुनीकेनजातभया॥अरमध्यमार्गहीकेअपुनेआपसोवीचारतभया

जोप्रतिबिंबशरीरकाकोभांतअज्ञात्मअवस्थाकोप्राप्तहोइआसक्तहै॥ यांतेजानीयतहैजोशो
भावंतकरनेशरीरकेसोप्रतिबिंबहूकोशोभावंतदेषीयतहै॥ केसअरुनषदूरकरवा
वनेसैंप्रतिबिंबहूकोकेसोअरुनषहूसोरहतदेषीयतहै॥ अरुवस्त्रअरुभूषनपह
रावणेशरीरकेसो॥ प्रतिबिंबहूकोवस्त्रअरुभूषनपहरेहूयेदेषीयतहै॥ अरुजोश
रीरअंधअरुघवाएकोषहो॥ प्रतिबिंबहूअंधअरुघवाएककोषदेषीयतहै॥ अरुजो
शरीरकाकरअरुपादछिंनहोइ॥ तोप्रतिबिंबहूकाकरअरुपादछिंनदेषीयतहै॥
अरुप्रगटजानीयतहै॥ जबशरीरकानाशहोतहै॥ तबप्रतिबिंबहूकानाशहोतहै
सेप्रतिबिंबहूकोआत्माजाननेमोशुभताअरुपुनीनहीदेषता॥ याभांतवीचारकर
केपुनःसेवकभावकोआरोपकर॥ अरुरसोकोत्यागकरनिकटप्रजापतिकेगमनु
करतमया॥ प्रजापतोवाच॥ तूप्रशंनअरुआनंदसंयुक्तहोकरसाधवरोचनकेगम
नकरतमया॥ प्या॥ अववीकियाचाहतहै॥ जोपुनःआगमनुकरतमयाहै॥ इंद्रोवाच

हे नमस्कार को योग मैं प्रतिबिंब शरीर अपुने को कों भांत आत्मा जानें जो जैसा शरीर को
बनाईयत है ॥ तैसा ही प्रतिबिंब का दिषाई देत है ॥ अरु केस नष बहुत बढ़े नें सो प्रति
बिंब हू को केस नष सोई दीन देषीयत है ॥ अरु वस्त्र पहिराव नें शरीर के सो प्रतिबिंब हू
को वस्त्र पहिरे देषीयत है ॥ अरु जो अंध होइ अथवा एक आंष होइ ॥ अथवा कर पाद सो
छिन होइ तैसे ही प्रतिबिंब हू अंध अथवा एक आंष अथवा कर पाद सो छिन देषीयत है ॥ अ
रु जब यह शरीर नाश होत है ॥ प्रतिबिंब हू का नाश होत है ॥ इसी तें प्रतिबिंब हू को आ
त्मा जानने में शुभता अपुनी नहीं देषत ॥ प्रजापतेोवाच ॥ भो इंद्र जैसें तें नें समुझा है ॥
तैसे ही है ॥ त्रिसत्र अरु द्वय वर्ष अवर इस्थित है ॥ एवं वत जो तुम दोनो रसो का त्याग
या अरु समदम कीं धा ॥ तैसे ही अवर हू प्रवर्तत करो ॥ तव मुझ को उपदेस लीजीयो
पुनः एवं वत इंद्र त्रिसत्र अरु द्वय वरष तप करत भया ॥ तव प्रजापति उपदेस करत
भया ॥ प्रजापतेोवाच ॥ जो पुरुष सुषुपत अवस्था मों इस्थल इंद्रय सो रहत संपूर्न रसो

अरपदार्थकोस्पर्शकियाकोपावतहै॥अरसंपूर्नकामोकोकलपतहै॥वहीआत्माहैवहीअ
विनाशीहै॥वहीअभयहैवहीब्रह्महै॥इंद्रअरविरोचनेयावचनोप्रजापतिकेसो
ंसीतप्रशंनहेअरगमनकरतभया॥इंद्रदेवलोकमोनपायाप्राप्तभया॥जोमब्र
मार्गहीकेवीचारतभया॥तथापिएकोखहोनेयाशरीरकेवहिएकोखनहीहोत
अरसाघअंधहोनेयाशरीरकेवहिअंधनहीहोत॥अरसाघनहतनयाशरीरके
वाकोन्हतनतानहीहोत॥अरहाअरअरपादकाटनेयाशरीरकेवाकाकहाअर
पादनहीकाटीयत॥तोहूकवहूयामातदेषीयतहै॥जोकोऊयाकोउंडतहै॥अर
रकवहूकोऊवाकोलदनुकरावतहै॥अरभगावतहै॥अरवीरभयसोलदनुक
रतहै॥अरभागतहै॥तातेमैंयाकोआत्माजाननेमोशुभमतअपुनीनहीदेषत

पुनः सेवकभाव को आरोप कर संपूर्ण रसो का त्याग कर कर निकट प्रजापति के आगमन कर
त भया॥ प्रजापतेोवाच॥ हे इंद्र तूं जो अशांति प्रशंन्नता सो आगमन करत भया था॥ अब अ
व जो पुनः आगमन करत भया है॥ सो कीक्या चाहता हैं॥ इंद्र ने जो कछु मार्ग मे वी
चार कीया था सो प्रगट करत भया॥ प्रजापतेोवाच॥ जो मांत तैने कहा तिस मीमां
त है॥ सो अकाल या ठवर पुनः इस्थित है॥ तव उपदेस करें॥ इंद्र पुनः त्रिंस अ
द्वय वर्ष अवर रसो का त्याग कर तप करत भया॥ प्रजापतेोवाच इंद्र प्रति॥ यहि जो
पुरुष सुषपति अवस्था मे जो निद्रा मे मगन होता है॥ अरु संपूर्ण इंद्रियों के एकठ
वर होता है॥ अरु आति सकुंआर रसो स्वप्न नही देषता॥ वही आत्मा है॥ वही अविना
शी है॥ वही अभय है॥ वही ब्रह्म है॥ इंद्र श्रवण करने या वचन प्रजापति के सो अति
ति प्रसंन भया॥ अति प्रसंन होकर गमन करत भया॥ जो मद्र मार गही के वीचा

रतभया॥ यद्यपि जो कछु प्रजापति ने आज्ञा करी है॥ तिसी भांत है॥ तोहूं एता है जो मद्र
स्वपति के आपहूं को न ही जानता॥ अरु आवरहू को न ही जानता॥ मानो न ही हूं
कछु॥ तिस ते या पुरुष हूं को आत्मा जानने मे सो मै कल्याण अरु पुनः नहीं देषता॥ पुनः
निकट प्रजापति के आगमन करकर जो कछु मार्ग मो वीचारा था सो संपूर्न
प्रगट करता भया॥ प्रजापतोवाच॥ जा भांत तूं कहता है तैसे ही है॥ को ऊ काल अप्र
वर इस्पट वर इस्थित है॥ तब तुझे उपदेसो मै॥ पुनः इंद्र ने पंच वरष अरु वर संपू
र्नेर सो काल त्याग कीया॥ अरु तपस्या मो रहा॥ ऋषीस्वर कहते है जब इंद्र ने संपूर्न
एकसत एक वरष तप कीया॥ रसो काल त्याग करकर निकट प्रजापति के सेवकभा
व सो इस्थित होता भया॥ तब पाछे या के प्रजापति ने उपदेसा॥ अरु इंद्र आपुने
प्रोजन को प्राप्त भया॥ प्रजापतोवाच॥ भो इंद्र यह ही शरीर विनासी है॥ अरु मर

तनेयाकोदृढगह्याहै॥ औरआत्माअविनाशीहै॥ औरशरीरसोंभिंनऔरसूक्ष्महै॥ और
यहिशरीरवाआत्माहीकाइस्थानहै॥ जबशरीरसोंएकहोतहैतबरसोंकोंअंगी
कारकूंकरतहै॥ औरदुःखकूंपावतहै॥ औरजबयाकेसंगकात्यागकरतहै॥ तबन
रसकूंलेतहैऔरनदुःखकूंपावतहै॥ एकआत्माहीहै॥ जाकोशरीरकेसंगसोंजी
वात्मानामराषतहै॥ पवनशरीरसोंरहतहै॥ मेघशवदसहतशरीरसोंही
नहै॥ मेघशवदसोंहीनशरीरसोंरहतहै॥ विद्युतशरीरसोंहीनहै॥ यहि
संपूर्नशरीरसोंरहतहै॥ जैसेयहिआकाशसोंउतपतहोकरसाथप्रकाश
सूर्यकोंमिलकरमंडलकूंआपुनेकोंअंगीकारकरतहै॥ तैसेहीजीवात्मा
हूंजबशरीरकोंत्यागकरतहै॥ औरउनकीन्याईशरीरसोंहीनहोतहै॥ त
वचेतनआकाशसोंजोउतपतमयाथा॥ पुनःताहूंआत्मप्रकाशसोंजोव्या

पकै है एक है ओंकार केवल मल लक्ष्य पुनारूप होत है। और या पुरुष कौ उत्तम पुरुष कहत
है। या ते जो बाहिर सर्व को आत्मा है। और रसं पर्न रस सो सो पर्न है। संपर्न वही भए
करत है। और सर्वज्ञानंद को वही पावत है। और संपर्न रस ईस्त्री यों के वही अंगी
कार करत है। और सर्व रस को वही लेत है। और समरस जो है व्यापक रसु ताको प्रा
प्त वही है। और साध्य संपर्न कुल और कुटंब के प्रसंन वही रहत है। और शरीर
जो मन ताकौ रीप तासो उत्पन्न भया या॥ ताको सिमरन वही नहीं करत। और
बाहिर सब जोर घको षैंचत है प्रानरूप होकर शरीर को स्फुर्न देत है॥ प्रकाश
ने बहुत का बाहिर आत्मा ही है। अंगीकार करना गंध को मारग घ्राण के बाहिर आ
त्मा ही है॥ जब बाहिर आत्मा चाहत है॥ जब चन करै॥ तब वही वाक इंद्री होत है॥
बह जब चाहत है जो देषों तब वही चक्षु इंद्री होत है॥ और बाहिर आत्मा जब चा

हतहैजुगंधकोग्राहीकहोत्रवहीघ्राणइंद्रीहोतहै॥अरुवीहजवचाहतहैजोश्र
वणकरोतवआपहीश्रवणइंद्रीहोतहै॥अरुआत्माजवचाहतहैजोवीचारक
रोंतवआपहीमनहोतहै॥वाआत्माकोसंपूर्णदेवतासाधनेत्रमनकेदेवतहै
याहीतेमनकोनेत्रदेवत्योकाकहीयतहै॥अरुमनहूसोसर्वकोउसंपूर्नर
सोकोआनंदीकारकरकेआनंदआनंदीविलाससंयुक्तहोतहै॥अरुवीहआत
मासंपूर्नरसोकोमहाआपुनेआपहीसोपावतहै॥इसीतेआत्माकोदेवताउ
पासतहै॥अरुदेवतासंपूर्नचाहोकोआत्माउपासनासोप्राप्तहोतहै॥अरुमह
संपूर्नलोकोकेकामनावानहोतहै॥जोकोउआत्माकोयामातसमुझेअरु
जाणेसंपूर्नचाहोकोपावे॥अरुमहासंपूर्नलोकोकेकामनावानहो॥या
भांतप्रजापतसाधइंद्रकेउपदेसकरतभया॥ संपूर्नमानुषबहुकोचाही

यतहै॥जोयामांतधारें॥वहिब्रह्मजोमध्यमनकेहै॥अरवहीसर्वव्यापकहै॥ब्र
ह्मभावनासोताकोप्राप्तहै॥अरहमवाठवरसोंगिरकेइससंसारमेंआ
गमनुकरतभयेहै॥अरहमवहीजोऐसोकेवलवहीहै॥हमजाठवरसोंभिं
नमयेहैपुनःकेवलवहीहै॥जैसेतुरंगजोजलसोंनिकसकरपृथ्वीपरइस्थि
तहोकरभिन्नकाशरीर॥अरपुनेसोलिप्तकरतहै॥अरपुनःजवउठतहै वाभिन्न
का॥अरजलकैसेहीशरीरसोजारतहै॥जोदोनोशरीरसोंभिंनहोतहै॥तैसे
हीब्रह्मज्ञानसोसंपूर्णनकैमोक्षम॥अरमोक्षमकोधारकरचंद्रवत॥अरसूर्य
वतजोराहु॥अरकेतसोंमसेहूयेउज्जल॥अरप्रकाशरूपनिकसतहै॥तैसेही
हमहूसर्वपदार्थशरीरादिकयाकोत्यागकरब्रह्मजोसदासत्तरूपहैताकोप्रा
पतहोवैहमा॥अरवहीहोवैहमा॥अरयामांतचाहीयेजाना॥जोआकाशना

मध्यात्माकाहै।। संपूर्णनामअरुरूपवाआकाशसें उतपन्नभयेहै।। अरुमहाआकाश
केहै।। अरुआकाशहीमोलीनभयेहै।। अरुसतचितआनंदब्रह्महै।। अरुनामरूप
संसारहै।। ब्रह्मनिरगुणनिराकारहै।। मायासरगुनसाकारहै।। अरुजोवाछुवच
नगम्यहै संपूर्णमायाहै।। अरुसर्वपदार्थयापंचहीमोहै।। जोतीनरूपब्रह्मके।।
अरुद्वैतरूपअविद्यात्मकसंसारहै।। दृष्टपरतहै।। अरुपुनःनाशवंतहै।। यही
नामरूपअविद्याहै।। अरुयहिनामरूपहूजोमहाब्रह्मकेहैतासोयहिहूब्रह्महै।।
अरुवीहब्रह्मअविनाशीहै।। अरुजीवात्माहै।। अरुयीहहूचाहीयेजानाजोमें
ब्रह्मअवस्थामेअरुब्रह्मइस्थानमोप्राप्तहैं।। अरुआत्माराजयोकाअरुसंन्यासी
योकाअरुसंपूर्णसंसारकामैहीहैं।। अरुजीवोकाजीवमैहीहैं।। अरुबामुक्तकोप्रा
प्तहै।। पुनःनामरूपजोहैशरीरताकेबंधनसोमुक्तहैं।। अरुधैर्ययहिजोपुनःशरीर

कोंनाधारें॥ यहि उपनिषद छांदूकजो पूर्ण भई॥ ब्रह्मनें साधकरूप करषीस्वरकें कही॥
अरु रूपनें साधराजा मनकें॥ अरु वानें साधसंप्रदायसिष्यकें कही॥ अरु या उपनिषद
कों कोंमांत चाही ये उचारनीया॥ अरु चाही ये समझ॥ प्रथम मंनिकट सतगुरकें जो
सर्वका ज्ञाता है॥ मन अरु बुद्धकों एकाग्र करकर वासों उचार करे॥ अरु समुझें॥ अरु
टहल गुरकी मन अरु शरीरसों करे॥ अरु गुरकी प्रसंनतासें आज्ञा लेंन करे॥ जव लग
आपुनी आज्ञा सों उचार कररवावें॥ तव ही लग करे॥ अरु जव लग निकट गुरकें रहे
तव लग ब्रह्मचर्ज सें रहे॥ पुनः गुरकी आज्ञा सों ग्रहस्त धर्म कों अंगीकार करे॥ अरु
या उपनिषद कों पवित्र ठवर इस्थित होकर अरु ज्ञाति एकाग्र चित्तसों उचारे॥ अरु जाकों
गायत्री का अधिकार न होइ ताकें सनमुष ना उचारे॥ अरु संप्रदायनें सतनाकों अरु रीम
त्रोकों अरु सेवकों कों प्रीछादे षकर उपदेस करे॥ अरु जो मांत आज्ञा वेदकी है ताहू मां

नप्रवरते॥अरसंपूर्नइंद्रिआमंत्रकेअरवाह्यकेमद्धआत्माकेराषे॥अर्थयहिजोसर्वठवरअ
रसर्वकालमेआत्मभावनाहीमेरहे॥अरभिनआज्ञाशास्त्रकीकाहूकाघातुनकरे॥
अरकाहूकोनादुषावे॥अरजोकोउसंपूर्नआउप्रयंतयामांतकरे॥वहिमुक्तसरू
पहै॥पुनःजन्मुनहीपावता॥अरजोकोउयाउपनिषधकोश्रवणहूकरे॥ताहूके
पापोकानाशहै॥नमस्कारज्ञानीयोको॥नमस्कारज्ञानीयोको॥सर्वकोआनंद
हो॥इतिछांदूकउपनिषदसामवेदभाषासमाप्तम्॥१॥ ॥ॐ॥ ऋगवेद॥२॥
युयरवेद॥११॥ सामवेद॥१॥ जुमला॥१६॥ ॐ॥ॐ॥ॐ॥ॐ॥

श्रीपरमात्मनेनमः॥जोकालमेउतपत्तब्रह्मलकोहुजीनयीभई॥एकअद्वैतनार
यणहीथा॥वानारायणकेआपुनेआपमेमगनहे॥ऐसेप्रथमजोउतपत्तभ
ई॥सोयामहोउपनिषदमेप्रगटकरीहै॥उपनिषदमहो॥उपनिषदअथर्वण

कीजा को कहत है सोयही है ॥ ॐ ॥ एकु नारायण ही था ॥ न विष्णु था न ब्रह्मा था न महादेव था ॥ अ
रु न आप था न पवन था अरु न अग्नि था न आकाश था ॥ न पृथवी थी अरु न निशाकर था अ
रु न कोऊ नक्षत्र था अरु न दिनकर था ॥ वहि एकु ही नारायण था ॥ अते व जो लीला के सुख
को न प्राप्त भया ॥ अरु आप मो अद्वैतता देखत भया ॥ ता ते या ही ते चाहत भया जु सो अपु
ने विलास करों ॥ जब अपु ने आप मो मगन भया ॥ अरु वा मगनता मो जब अपु ने आप मे
चर्चा संयुक्त भया ॥ तब ब्रह्माण्ड अरु वेद अरु कर्म वेदो के प्रगट भये ॥ पुनः कर्म सो च
तुर्दस पुरुष अरु एकादस इन्द्री उतपन्न भये ॥ अथ चतुर्दस पुरुष ॥ श्रवण घ्राण चक्षु रसना त्वचा
इति ज्ञान इंद्री ॥ वाक पाण पाद पायु उपस्थ ॥ इति कर्म इंद्री ॥ प्रकृत अहंकार प्राण बुद्ध ॥ इति
इन्द्री ॥ १४ ॥ अरु पांच स्थूल तन्मात्रा ॥ अरु पांच सूक्ष्म तन्मात्रा ॥ दस यो हि उतपन भये ॥ ४ ॥ संपूर्न इ
न पच्चीं वस तमो मल इन कों जो वहि नारायण विष्णु तुपहै ॥ सोसा अपरूप जीव के पंच

॰विसतमोप्रवेशकरतभया॥अरुषट्विंशतनामधारतभया॥पुनः प्रथमहीप्राविष्टहोनेवा
केसोकालकीउत्पतिभई॥यद्यपिवापुरषमद्धशरीरकेउत्पतिभया॥अरुकालहूकी
प्रगटताभई॥तेंहूंसपर्णप्रविरतसंसारकेमोअसक्तभया॥अर्थयाहिजोजीवात्मामो
सर्वब्रह्मंउवेप्रवर्तनेकीसमर्थतानभई॥पुनः वानारायणावास्तेअवरउतपतके
अपुनेआपमोमगनभया॥वामगनतासोमसतकनारायणकेसोपुलषप्रगटभया॥
जोतीनवेवराघताया॥अरुवाकेस्वरमोत्रिसलया॥भूः भुवः स्वः यहितीनरूपजोके
वलज्ञानअरुचेतनहै॥वहीहैरूपवांका॥अरुअवरस्वरूपतीनसोसवात्रिसल
केकात्रिगणप्रकृतहै॥अरुशरीरवापुरषकाअतिउज्वलअरुप्रकाशरूपथा॥
अरुमद्धवापुरषकेकेवलसत्वता॥अरुरसोकान्याअरुतपुअरुरअसगताथी॥
अरुसंपूर्णचाहा॥अरुमनकेसंकल्पवांकीआज्ञामोथे॥अर्थयाहिजोसतसं

कलपथा॥ अरद्वितीय नाम जो प्रणव है॥ अर ऋगवेद अर युजुरवेद अर सामवेद
अर अथर्वणवेद अर गायत्री आदिक जो छंद वेदों के हैं॥ सो संपूर्ण शरीरवो
ध के सो प्रगट भये॥ यद्यपि पूर्व मैं विराटरूप जीवात्मा जो षेत्रज्ञ है ताकी उतपतम
ई॥ पुनः ईश्वर जो है महादेव ताकी उतपतम ई॥ अर रुद्र सो आवरण नेकपदा
र्थ प्रगट भये॥ तो हू नारायण को पूर्ण पुरसंनता न प्राप्त भई॥ ताते पुनः अपने आ
प मे अति मगन भये॥ तब मस्तक नारायण के सो पधारा सूवत भया॥ पुनः
वही जलरूप प्रगट भया॥ अर मद्वा अपने अंश उतपत भया॥ जो अति प्रका
शरूप था॥ अर मद्वा अंश छै के ब्रह्मा जो चतुर्मुख राषत है सो प्रगट भया॥ अर
वीह ब्रह्मा मद्व ब्रह्म के लयसे पुत्र के होकर वीह मषु जो पूर्वै ओर राषत है॥ ता
सो प्रथम आनंदार प्रणव का अर ऋगवेद जो छंद जाको गायत्री है सो उचरत

मया॥ अर मुख जो पश्चम द्वार राषत है ता सो द्वितीय अक्षर प्रणव का॥ अर यजुरवेद जो छंद जाका त्रि
ष्टुप है सो उचरत भया॥ अर मुख जो उतर द्वार राषत है ता सो त्रितीय अक्षर प्रणव का॥ अर
साम वेद छंद जाका जगती छंद है सो उचरत भया॥ अर मुख जो दक्षण द्वार राषत है
ता सो अर्धमात्रा जो चतुर्थ विंद शबद ब्रह्म है॥ अर वाक इंद्री सो उचार वाका नही हो
ता॥ अर्थ यही है जो मनन ही सो अभ्यास वाका होता है॥ अर अथर्वण वेद जो छंद जाका अ
नुष्टुप छंद है सो उचरत भया॥ या भांत चतुर वेद के उचारने सो ब्रह्म की उपासना कर
त भया॥ जो वाहि ब्रह्म सो सब ज्ञापार राषत है॥ अर नेत्र ज्ञापार राषत है॥ अर केवल प्रका
श है॥ अर उतपत्र करता सर्व को है॥ अर परा संपर्न रूपो सो है॥ अर सर्व रूप वही है
अर सेपर्नौ स्विष्म ब्रुवाही के है॥ अर संघार करता सर्व का वही है॥ जो कछु है वही
है॥ अर सर्व वाही सो जीवत है॥ अर मह सर्व के पर्णी है॥ अर केवल चेतन है॥

ओर धनी संसार को है॥ जैसे नारायण को मद्रकमलरूप मंदर मनके जो अगम भागवान कमल
का अधार है को है॥ ओर मखुवा कमल की कलीवत सर्व ओर सें भिन्न तहै॥ ओर वोह मन रू
प कमल अनेक रंग राजत है॥ यद्यपि द्रिष्ट मे वोह कमल सूक्ष्म है॥ तो हूं समुद्र गं
भीर सो हूं अति इस्थूल है॥ ओर मद्रवा के गंभीर प्रकाश है॥ ओर वोह प्रकाश संपूर्ने
दिशा को पूर रहा है॥ ओर मद्र जैसे प्रकाश के आवरण को है॥ जो दीपकी लाटवत ऊर्ध
को गमन है जो का॥ मद्रवा लाट के वोह पुरुष है जो सर्व ठौर पूर्न है॥ ओर नाम वांका
परमात्मा है॥ वही ब्रह्मा ओर विष्नु ओर महादेव ओर इंद्र है॥ ओर वही अचल है॥ अ
र गंभीर है॥ ओर वोह अपुन आपही द्रिष्टा है॥ ब्रह्मा ने या भांत उपासना साध
ब्रह्म के करी॥ इति ब्रह्म उपासना॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अथ फल वरननं॥ ॥ ॥ ॥
जो ब्राह्मण ने वेद अध्येनन कीया होइ॥ ओर वेद के अर्थ का आज्ञाता होइ॥

अरु यज्ञोपवीत न राखत होइ ॥ या मैं हो उपनिषद के एकवार उचारने सों नानों वाने संपूर्न
वेदो को अर्थों संयुक्त उचार कीया है ॥ अरु यज्ञोपवीत पहिरा है ॥ अरु जैसे कंचन अग्नि
सें सुद्ध होत है ॥ तैसे ही उचार कर न होता या उपनिषद को संपूर्न पापो सें सुद्ध होत है
अरु साध्य सर्व यज्ञो के फल को प्राप्त होत है ॥ अरु साय फल कर्म योग के हू प्राप्त होत है ॥ अरु
पवन को सुद्ध करत है ॥ अरु सतता अरु दिवाकर अरु निशाकर संपूर्न देवता अधि
ष्ठातावा को सुद्ध करत है ॥ अरु अनेक प्रकार के कर्मवा को सुद्ध करत है ॥ अरु सुभ कर्मो
के फल हू को प्राप्त होत है ॥ अरु वहि संपूर्न तत्व रूप होत है ॥ अरु संपूर्न देवता वा पे प्र
शंन होत है ॥ अरु सर्व देवतावा के ज्ञाता होत है ॥ अरु संपूर्न तीर्थों की प्रदक्षिणा के
फल को प्राप्त होत है ॥ अरु सर्व शास्त्रों के उचार का फल पावत है ॥ अरु जो फल स
ठ सहस्त्र जाप गायत्री के सो प्राप्त होत है ॥ से फल एकवार उचार करने या उपनि

षट्के सों प्राप्त होत है ॥ अरु शतरुद्री जो शतनाम रुद्र को है ताके लाष जाप के फल को प्रा
प्त होत है ॥ अरु दस सहस्र जाप प्रणव के को फल पावत है ॥ अरु वहि जा सभा मो स्थित
भया होइ ॥ अरु वा सभा मो जा की ओर दृष्टि करे वा को हू पाप सो मुक्त करे ॥ अरु सप्त कुल जु व
तीत भये है अरु सप्त कुल जो आगे होयगी वा संपूर्न अरु पुनी कुल को उत्तार्थ करे ॥ या
भांत की आज्ञा के पाछे पुनः हिरंनगर्भो वाच ॥ जो को उ या महा उपनिषद को सदा पा
ठ कीया करे सो अविनाशी अरु मुक्त होइ ॥ इति महा उपनिषद अथर्वण वेद समाप्तम् ॥
॥१६॥ जुमला ॥१७॥ ओं ॥ ओं ॥ ओं ॥ ओं ॥ ओं ॥ ॥ ॥ अथ नारायण उपनिषद अथर्व
ण वेद ॥ ॥ भेद वा निरंकार का जो संपूर्न जीवो मो पूर्न है ॥ अरु सर्व जीव वा मो पूर्न है
जा मो ग्य है सो उपनिषद कहीयत है ॥ वहि अद्वैत चाहत भया जो मैं स्पष्ट हो म सों इ
स्थल हो ॥ तब प्रथम ही वा की चाह सों एकोहं बहुस्यामि यहि शबद उतपन्न भया ॥ पुनः

शवदसोप्रथमहीप्राणउतपन्नभये॥पुनःमनउतपन्नभया॥अरकर्मइंद्रे॥अरज्ञानइंद्रेउ
तपन्नभये॥अरअस्ताकाशउतपन्नभया॥अरपवनप्रगटभया॥अरअग्निप्रगटभया
अरअपकीउतपतभई॥अरपृथवीजोसंपूर्नपदार्थोकोधारतहैसोउतपतभई॥
अरवाजलरूपनारायणसोविष्नु॥अरहिरंनगर्भजोगुणउतपत्नकाहैप्रगटभया॥
अरइंद्रउतपतभया॥अरमहादेवजोगुणसंघारकाहैसोउतपन्नभया॥प्रजापतिजो
अधिष्टातासृष्टिकाहैसोप्रगटभया॥अरवर्षजोद्वादसमासहैसोउतपन्नभया
अरएकादसरुद्रउतपतभये॥अरअष्टवसप्रगटभये॥अरअर्थयहिजोसंपूर्नदे
वताजीवधारीवाहूसोप्रगटभये॥अरपुनःवाहूमोलीनहोतहै॥अरवहिना
रायणजासोयहिसर्वउतपन्नभयेहै॥सोअद्वैतएकहीहै॥अरसदाअपुनेआ
पमोअचलहै॥अरवहीनारायणब्रह्माहै॥अरवहीनारायणविष्नु॥अरमहा

देव है ॥ अरु वही नारायण इंद्र अरु प्रजापति है ॥ अरु वही नारायण द्वादस मास संपर्न
वर्ष है ॥ अरु वही नारायण एकादस रुद्र अरु अष्ट वसु है ॥ अरु वही नारायण अश्व
नीकुमार है ॥ अरु वही नारायण संपर्न अरु बीज अरु अरु संपर्न देवता है ॥ अरु वही
नारायण काल भगवान है ॥ अरु वही नारायण दिशा अरु विदिशा है ॥ ऊर्ध नारायण
है अधहि नारायण है ॥ पूर्व नारायण है पश्चिम नारायण है ॥ दक्षण नारायण है वा
म नारायण है ॥ नारायण अभित्र नारायण बाह्य जो कछु है सर्व नारायण ही है ॥ अ
रु वहि नारायण विभाग नहीं भया ॥ अरु नहीं होत ॥ अरु वहि नारायण युक्ति अरु वी
चार मो नहीं आवत ॥ अरु वहि नारायण प्रणाम को नहीं प्राप्त होत ॥ अरु अरु रूप उदे
नहीं राषत ॥ अर्थ यहि है जो एकरस है ॥ अरु स्वादी अरु शुद्ध है ॥ अरु प्रकाश है ॥ अरु अ
द्वैत ही है ॥ अरु जो को उवाको अद्वैती जाने वीह हू अद्वैतीय है ॥ अरु जो को उस री

रअपुनेकोरथुजानेअरआत्मज्ञानकोरथवाहीजाने॥अरमनअपुनेकोवारज
समानजानेजासोरथकेअश्वोकोखैंचीयतहै॥अरइंद्रेकोवासतेखैंचनेरथके
अश्वोसमानजाने॥अरजीवात्माकोवारथपरअरूढजाने॥अरवीहआपको
आत्मइस्थानमोजोवीहआत्माअंततहैसंपूर्नमनोर्थोका॥अरविहमप्रतिपा
लकअविनाशीहै॥अरअनंतासोरहतेहै॥अर्थयहिजुसर्वपदार्थोकाधनीहै
प्राप्तकरतेहै॥अथफलवर्ननं॥यानारायणउपनिषदकोजोकोउउचारकरेगा
अरसमझेगा॥संपूर्नवाधकोसंसारकियासो॥अरसर्वपासोसिउअरसका
मकर्मकरनेकाजोहैपापतासोमुक्तहोहुगा॥अरयाकोसमझणहाराकेवलीव
हमरूपहोइकरविहमहीहोयगा॥यहिउपनिषदअथर्वणकातत्वहै॥अर
जोकोउप्रातःकालकोपाठकरे॥सोसंपूर्नरैनकेपापोसोमुक्तहोय॥अरजो

कोउसायंकालकोपाठकरे॥ सोदिवसकेसर्वपापोसेंमुक्तहोइ॥ अरजोकोउद्वैकालही
पाठकीयाकरे॥ वाकेमद्यकोउपापप्रवेशनकरसके॥ अरजोस्वइछतहूंपापकी
याहोइतोवीहिहूसपर्सनकरे॥ अरजोमध्यान्हकालकोसनमुखसूर्जकेठाढा
होकरयांकापाठकरे॥ तोयहिजोपांचमहापापमानुषकोबाधकहैं ताहूसोमुक्तहोइ
प्रथमब्राह्मण॥ अरसंन्यासीकाघातुकरता॥ द्वतीयब्राह्मणजोमदपानकरे॥ तृती
ब्राह्मणजोतोलेस्वर्णसोअधिकचोरीकरे॥ चतुर्थजोकोउसायगुरपतनीकेकाम
चेष्टाकरे॥ पंचमजोकोउसायकैंनेसपततोकेनिततसंगकरे॥ इतिपंचपातका॥ अर
जानेवनेअपुनेकात्यागकरकरअवरवर्णकोअंगीकारकीयाहोइ॥ वाहिहूयापापो
सोमुक्तहोइ॥ अरवापापसोहूजुवेदविरुद्धस्वइछतपदार्थकोअंगीकारकीयाहोइ
मुक्तहोइ॥ अरजोकोइइछाउपजेजोसंपूर्णवेदकोअध्येनकरौं अरवाअध्येनकेफल

दो

कोप्राप्तहोइ॥ अरु माहूप्रीतवंधसोंवीहैं अधेनमोनप्रवर्तस्सके जोएकवारयाउपनिषदकापाठ
करे॥ तोसर्ववेदोंकेपाठकाफलुप्राप्तहोइ॥ वांको॥ अरुजोकोउचाहैजोसंसारकेसाउनिर्दोष
मोंजोंअरुसाउकेअंतमाणमोसुभमकरमकरें॥ वांकोहूंचाहीयतहैजुयाउपनिषदकापाठक
रे॥ जोमहासंसारकेधनादिकविभूतकोप्राप्तहोइ अरुयघ्याइघ्यतज्ञानकोअरुसाउकेअंतमा
गमोप्राप्तहोइ॥ अरुथियहिजन्मविनाशीहोइ॥ इतिनारायणउपनिषदअथर्वणवेदसमाप्तं
२॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ अथगर्भोउपनिषदवर्ननं॥ ॥ ॥
ब्रह्मविद्याजोहै अद्वैतआत्मज्ञानसोयाशरीरकेज्ञानसोंप्राप्तहोतहै॥ अरुभिनभिनतत्त्वज्ञानसों
अवरकारनमुक्तकोनहीं॥ तातेयाउपनिषदमोंशरीरकाज्ञानुवर्ननकरीयतहै॥ यघ्या
याशरीरकाआकारपंचपदार्थकीमिलौनीसोंभयाहै॥ अरुसदामहापांचकेइस्थितहै॥ यांकी
अरुषटपदार्थधारनहारेहैंयांको॥ अरुसाषबहरजबकेवद्धभयाहै॥ अरुसप्तप्रकारकारस

लघुअरुअनद्धहै याके ॥ अरु तीन गुन वा मो है ॥ अरु उभय अस्थान सो उतपन्न है याकी ॥ अरु च
तुर्प्रकार का भद्द ए राषत है ॥ यहि पदार्थ मद्ध शरीर संपूर्ण जीव धारी यो के है ॥ अर्थ विस्तार ॥
वा पंच पदार्थ के मिश्रत है ॥ ने सो जु या शरीर का आकार भयो है ॥ सो अप तेज पवन पृथ
वी आकाश यहि पांच तत्व हैं ॥ अरु शंका ॥ या शरीर मो अप कवन सो है ॥ तेज कवन सो है ॥
पृथवी कवन सी है ॥ पवन कवन सो है ॥ आकाश कवन सो है ॥ उत्तर ॥ जो द्रवत है सो अ
प है ॥ अरु जा सो उष्मता है सो तेज है ॥ अरु जा सो स्फुरनता है सो पवन है ॥ अरु शरीर मो ज
कठनता राषत है सो पृथवी है ॥ अरु संपूर्ण शरीर मो जो स्तद्मता अरु इस्थूलता अवका
है सो आकाश है ॥ अरु मद्ध वा पांच के जो शरीर इस्थित है ॥ प्रथम पृथवी जा सो शरीर देषने
को योग्य भया है ॥ अरु या को धारा है ॥ द्वितीय पवन जु पांच प्रकार हो कर शरीर को इस्फुरन
ता देत है ॥ अरु धारत है ॥ तृतीय अप जु शरीर को हरिया वल राषत है ॥ अरु प्रफुलत कर

तहै ॥ अरु चतुर्थ तेज जो शरीर को प्रकाश रूप करत है ॥ अरु पकावत है ॥ पंचम आकाश जाने इन
चतुर्थ ही को मद्ध शरीर के ठवर दई है ॥ अरु देत है ॥ जैसे मद्ध चक्र के कलस को बनावनहा
रा ॥ युक्ति नाल के सो स्वास पवन को पूर्ण करत है ॥ अरु वासो रूपवंत कलस उतपन्न होत है
अरु आकाश मद्ध वा के पसारत है ॥ अर्थ याहि जु स्वास कलस के बनावनहारे का ही पव
नु भया है ॥ याने कलस को इस्थूलता को प्राप्त कीया ॥ अरु वाहि नाल जो सो वाने स्वास अ
पु नाम मद्ध गर्भ कलस के इस्थूलता को प्राप्त कीया ॥ सो अकाश समान है ॥ जाने पवन
को मद्ध आपु ने ठवर दई ॥ अरु वाही अकाश ने वास ते श्रवण करने शब्द के श्रवण इन्द्री
को मद्ध करन के ठवर दई ॥ अरु वास ते स्परस के तुचा इन्द्री को ठवर दई ॥ अरु अग्नि ते वस्प
र्श तुचा सो होत है ॥ अरु वास ते देषणे रूप के मद्ध नेत्रा के चक्षु इन्द्री को ठवर दई ॥ अरु वा
स ते गंध लेणे मद्ध नासका के घ्राण इन्द्री को ठवर दई ॥ अरु वास ते चाहें हो के मन को म

की फूटके ठवरदई ॥ अरवासते ब्रह्मादीक होणेर सको लिंग इंद्री को ठवरदई ॥ अरवासते मैलत्या
गणेके गुदा इंद्री को ठवरदई ॥ अरवासते निश्चै आत्मकवीचारके बुधको ठवरदई ॥ अर
वासते वचन उचारके वाक इंद्री को ठवरदई ॥ अरषट पदार्थ जाने शरीर को धारते
अर इही षट रजु है ॥ जा सो शरीर बांधा हूया है ॥ सो षट अंगने है ॥ एक मध ॥ द्वितीय कम
मल ॥ त्रितीय लवण ॥ चतुर्थ तिक्त ॥ पंचम षकाय ॥ षष्ट मकर ॥ इति षट ही सो शरीर दृ
ढ रहते है ॥ अर तीन गुण यहि है ॥ एक हरष ॥ द्वितीय शोक ॥ त्रतीय संपूर्न पदार्थो के ना
मो की कल्पना करनी ॥ अर अब रस सत प्रकार का सूक्ष्म ब्रह्म शरीर के है ॥ सत रस जु है
सप्त सूक्ष्म सों वांका रूप या प्रकार मद्ध शरीर के है ॥ एक सुकल ॥ द्वितीय रक्तम ॥ त्रतीय रक्त
चतुर्थ पीत ॥ पंचम स्वर्णकार क्त ॥ षष्ट मचंदन का रूप ॥ सप्तम हरया ॥ मद्ध शरीर के पास प्र
म रूप सो सूक्ष्म इस्थित है ॥ सो सूक्ष्म रूप रस ज्ञान के मध्य एसो उतपन होत है ॥ अर्थ यहि

जुप्रथमसंपूर्णअंन्नसोंततत्वरसउतपतहोतहै॥पुनःवारससोरक्तकीउतपतहोतहै॥अउर
वारससोंमांसहोतहै॥अउरमांससोंचरबीहोतहै॥अउरचरबीसोंपयहोतहै॥जासोंम
ज्जाकहतहै॥अउरपयसेअस्थिहोतहैहाडसोहोतहै॥अउरहाडसोंमिषहोतहै॥अउरमि
षसोमलजुदेसर्वकाशुक्रसोहोतहै॥जोकालमोइस्त्रीरितसोंमृदुहोतहै॥अउरसब
मसीरक्तवाकेयोनइस्थानमोरहतहै॥पुनःजवपुरषुवीरजदानुकरतहै॥तवशुक्र
पुरषकासाथवारतकेषचतहोतहै॥साथकलत्रआत्मकीअउरअग्निकामकीसोंअउर
१ अग्निन्द्रिदेकीसोंअउरशुक्रप्राणवनकीसोयहिवेरतेअउरशुक्रअंन्योअंनप्रपक्कहो
तहै॥वापकहीहोनेसोइस्त्रीकोअधानकीप्रगटताहोतहै॥वाउभयइस्थानसों
उतपतयाकीयामांतरहतहै॥पुनःजवएकदिवसकअउरेनयहीवीरजअउररतंअंत
न्योअंनपकहोतहै॥तवजैसेमित्रितकाअउरजलकेसंयोगसोंसहदमहुमसीकलपीयत

है ॥ तदवत तादृका आकार प्रगट होत है ॥ अरु प्रथम सप्त दिवस अरु रैन तांई वरके जव यहि अधिक प
कात है ॥ तव वुदवुदे की न्याई वहि सत दिन जो आकार था सो उरध होत है ॥ अरु प्रथम अवर एक पष
के मास को मलसा होत है ॥ अरु प्रथम एक मास के वहि मास कछुक कठोरता को प्राप्त होत है ॥
द्वितीय मास मो वा मास सो सीस उतपत होत है ॥ अरु तृतीय मास मो कर अरु पद उतपत
होत है ॥ अरु चतुर्थ मास मो करो अरु पादों की संपर्न अंगुरी अरु जठर अरु प्रिष्ट होकर
प्राण वा मो प्रवेश करत है ॥ अरु वही प्राण पंच प्रकार होकर इस्फुरण ता मो प्रवर्तत है ॥
अरु प्रथम मास पंचम के मेरदंड जो नस प्रिष्ट के आसा है सो कठोरता अरु दृड ताको
प्राप्त होत है ॥ अरु षष्टम मास मो इस्थान इंद्रीयों के दृड होत है ॥ अरु सप्तम मास मो
वुद्ध उतपत होत है ॥ अरु प्रथम अष्टम मास के संपूर्न अंग शरीर के अरु वाकीयां शक्ता
संपूर्न होत है ॥ जो स्त्रुक पुरष का रितवंती इस्त्री की रज सो संभोग काल मो अधिक प्रवे

शमया होत तब सुत की उतपत होत है ॥ अरु जो रज नारि तका शुक्र पुरष के सो अधिक होत तब सु
ता की उतपत होत है ॥ अरु जो शुक्र अरु रज द्वय ही सम होइ है नपुंसक उतपत होत है ॥
अरु जो मद्य भोग काल के इस्त्री अरु पुरष इन द्वय ही सो कोउ अप्रशंन होइ ॥ अरु रम
न वा का शोक संयुक्त होइ ॥ अथवा सुत अथवा सुता जो कछु उतपत होइ सो अंगही
न होइ ॥ वा अंध होइ ॥ वा अब एक इंद्री सों हीन होइ ॥ वा एकांष होइ ॥ वा कुबजा होइ
वा लघु शरीर होइ ॥ अथवा अवर दोषों शरीर रक्तियां सो कोउ दोष राषत होइ ॥ अरु जो
मद्य काल प्रवेश शुक्र के योन इस्त्री की मो वल अपान को अधिक होइ ॥ तब वाहि अप
पान वायु शुक्र को द्वय भाग करत है ॥ ताते वा गरभ सों उभय तात उतपत होत है ॥ जो
को जोड़ा प्रगट कहत है ॥ अरु मद्य अष्ट मास के जु संपरन इंद्रीयां शक्त संयुक्त होत
है ॥ अरु रस अंग सिस के पूरन ता को प्राप्त होत है ॥ वा काल मो वाहि सिसु उपासना प्र

णव सो करत है ॥ अरु समुझत है जु उतपत मे री या चतुर्विंशत सो भई है ॥ तद्यथा ॥ एक अ
हं न जानामि ॥ यहि जो अविद्या है ॥ द्वितीय एकोहं बहुस्यामि ॥ अरु यहि जो महद्तत्व
अहंकार बुद्धि है ॥ त्रितीय अहंकार जु आपसों अवर को न जानत ॥ अरु पंच मसूषम भू
त ॥ अरु पंच इस्थूल भूत ॥ अरु पंच कर्मेंद्रीया ॥ अरु पंच ज्ञानेंद्रीया ॥ अरु एक मन ॥ अ
रु अवर यहि हूं जानत है ॥ जु मैं जीवात्मा हैं ॥ अरु यहि चतुर्विंशत पदार्थ जो वर्नन
भये ॥ तासो भिंन है ॥ अरु महद्व्याके प्रवेश कीया है मेने ॥ अरु जो अष्ठमाता वांकी भष
ण करत है ॥ सूषम रसु वाना नामके मार्ग सों वासिस को प्राप्त होत है ॥ अरु वहीं अंन
वां का होकर कारन वलवां के का होत है ॥ अरु महद्वन व मासके जु संपूर्न पूर्न ताको
प्राप्त होत है ॥ वा अहंकारादि महद्तत्व के सों जु स्थूल फअ पुनि सों भिंन्न सा होकर महद्व पंच भू
तात्मक स्त्रिष्टि के भवत है ॥ तव सर्व योंनो वाको सिमर्न होत है ॥ अरु स्नुभ अस्नुभ कर्मों

७१ कोंसमझतहैं॥अरजानतहैं॥जन्मशोकअरअज्ञानरूपसमुद्रकेंअनेकवारप्रा
प्तभयाहैं॥अरजन्मगरभरूपनरककोंकेभ्रमतहैं॥अरवकीवारजुमानताकेगरभसों
वाहरनिकसेंसोंमैं॥तोसदास्वरूपसोंमगननहीरहेंगामें॥अरअभ्याससतस्वरूप
केज्ञानहीकाकरेंगा॥जन्मकेहोंणशुभअरुअशुभकर्मोंकेपाससोंभिन्नज्ञानसोंनहीं॥याते
जोकारनमुक्तकाकेवलज्ञानहीहै॥तातेमैंहूंइसीमारगसोंमनकुवाआत्माकेसंबंधसंसारजा
सोंइस्थितहैं॥प्राप्तहैं॥अरवीहआत्माराजासर्वकाहै॥अरधनीअरश्रेष्ठतासर्वपरराषत
है॥वीहीमैंसुइत्यादिकअहंताससेंतोनिकसनेगरभसोंधारतहै॥याकालमेंयोनइस्थान
केमारगसोंनिकसैंनेसोंप्रवर्ततहै॥अरतेवजुवीहमारगअनिसत्तदायहै॥तातेवाकोंअतं
तकष्टकीप्राप्तहोतहै॥इसीसोंवाकालमेंमलदुःखकरतहै॥अरवाधारनाजन्मगरभके
धारताथा॥सोसंपूर्णवाकष्टकीअधिकतासोंविसमरणकरतहै॥अरपुनःजववा

आरग्गसो बाहर आगमन करत है ॥ तब अविद्यावरन करि विक्षेप यों हृदय तकपर्श विद्याके संप्र
र्श संसारमो व्यापक है ॥ सो वाको प्राप्त होत है ॥ और वामो आवेश करत है ॥ अतेव जो वा
अविद्याका वल अधिक है ॥ पुरुषका उचार प्रगट वमपदार्थोका ज्ञान जो कल्पना या
वा सर्वको विस्मरण करत है ॥ और शुभ अशुभ कर्मो मो अज्ञीत प्रेयसो प्रवर्तत है ॥ औ
र वहि कर ता शुभ कर्मो के करने सो अपुकोष ताछ जाचता है ॥ और न ही जानत जु
यहि कर ताथं ता ही कारन जनमका है ॥ और रज सत तम इन तीन गुनो के पास
सो बद्ध है ॥ अर्थ याहि जु प्रथम उत्पन्न होत है ॥ पुनः या शरीर मो को उ काल आउप्र
यंत इस्थित होत है ॥ पाछे वाके जायो रसो गमन करत मया याघा वाही और को पु
नः गमन करत है ॥ और पिताके लिंग सो जो वीरज रूप तंका प्रक्षेप पिताकी मो या
सो मद्व गर्भ माताके मो प्रवेश करकर पहुने ता शरीरकी को प्राप्त करत है ॥ और याश

रीरकोशरीरअतेवकहतहैजुतीनअग्नियामोरहतहे॥एकज्ञानअग्निजाकोआत्मप्रका
शकहतहे॥द्वतीनेत्रअग्निजाकोनेत्रहूकाप्रकाशकहतहे॥त्रतीयजठराग्निजांको
विश्वानरकहतहे॥अरयातीनहीअग्निसोजठराग्निचतुर्प्रकारकेअंनकोभस्म
करतहे॥एकभक्ष्यद्वतीयभोज त्रतीयचेफचतुर्थलेह्य॥अरनेत्रहुकीजोतद्रिष्टरूपोकी
हे॥अरज्ञानअग्निशुभअशुभकर्मोकोदग्धकरतहे॥अरज्ञानअग्निकेप्रकाशभ
येकोउकर्मनहीरहत॥अथयज्ञानयज्ञ॥द्वययज्ञकेकरतापुरषुअरएकइस्त्रीजुयहि
तीनयज्ञकेकरताहे॥तद्यथा॥एककानामयजमानहे॥जोकर्मकाकरताहे॥द्वतीयब्र
ह्मनामराखतहे॥जुयज्ञकोयज्ञयजमानसेंकरावतहे॥त्रतीययजमानकीइस्त्रीज
समग्रीयज्ञकीकोसिद्धकरतहे॥अरयज्ञहूइस्त्रीसेंरहतअंगहीननहोतहे॥मद्धश
रीरकेबीचहृदयजीवात्माहीयजमानइस्थानहे॥अरमनुब्रह्माइस्थानजुयज्ञकर

बावतहै॥ औरबुद्धयजमानकीइस्त्रीइस्थानहै॥ जुसदाजीवात्माकेसाथरहतहै॥ पंचवाहवइं
द्रियायज्ञमोपंचवासनजुयज्ञमोअवश्यहोतहैसोहैं॥ औरशब्दस्पर्शरूपरसगंधयाहि जो
पांचविषैहै॥ सोसमधीहैहवनकी॥ जोमद्धअग्निकेहवनकोयोगहै॥ औरचाहअरीत्रहमा
औरकोधुयाहीयायज्ञमोपशोंसमानहै॥ जुवलुचाहीयेकीया॥ औरकेशयाशरीरकेमानो
कुशाइस्थानहैं॥ औरसीसमानोवहिवासनहै॥ जोयामोसमधीहवनकीपकावकरअ
रराधकरहवनकरीयतहै॥ औरमरवुहीअग्निइस्थानहै॥ जामोसमधीहवनकीकरी
यतहै॥ औरयायज्ञमोशांतहीदछणासमानहै॥ जोकोउयाभांतकायज्ञजानेअरकरे
ताकोफलुसंपूर्णयज्ञोकाप्राप्तहोय॥ औरकर्मोकेपाशसोछुटेहोय॥ इतिअध्यात्मय
ज्ञ॥ ॥अथशरीरकेअंतरपदार्थोकीवर्नता॥ ॥यामानुष्यकेसिरकेचतुर्थपरहै॥
जुएकहद्दतीसोंमिश्रतभयेहै॥ औरषोडसअस्थानद्वदोनोभागछातीकेराषतहै॥

२३ अष्टदशअणडोरअरुअष्टवामडोर॥अरुद्वयत्रिंसदंतराषतहै॥षोडसऊर्धषोडसअध
है॥अरुएकशतअरुसप्तसंधइस्थानराषतहै॥अरुजोवाइस्थानमोमोस्तदमहूंसेछं
उप्राप्तहेतोवहचोरअरुत्यंतदुःखकोप्राप्तकरतहै॥अरुरोमितप्रयंतप्राप्तकरतहैं॥अरुए
कशतअरुअसीजोड़राषतहै॥अरुनवसतपेराषतहै॥जोवहिजोड़पैहीसोछिद्रहै
अरुसप्तशतनाड़काराषतहै॥जुमार्गगमनकरनेअंनकेरसकाअरुरक्तकाउ
नहीसोंहै॥अरुत्रिंशतअरुसाठअस्तराषतहै॥अरुत्रैकोटअरुपंचलाषरोमराष
तहै॥अरुतोलुमंभसमनलपकमलकाजोछिद्रइस्थानमोहैषोडसपेसेभरहै॥अरु
रतोलुजिह्वाकाचतुर्विंशतपेसेभरहै॥अरुतोलमलद्वारइस्थानकाजन्मद्व
शरीरकेहै॥अरुताकोस्फुराकहतहै॥द्वयत्रिंसपेसेभरहै॥अरुतोलुकफकाजोम
द्वशरीरमानुषकेहैएकशतअरुअष्टविंशतपेसेभरहै॥अरुतोलमज्जकाजन्मद्व

२०८ संधि जोड़
९८० नाड़ी
७०० ३५० आस्थि-

साढ़े ती-न करोड़ रोम-

शरीरके हैं॥ अरु रूपसे मरहै॥ अरु तोलमानुषके शरीरकी चरवीका चौसठपसे मरहै॥ अरु संपूर्ण तोलजो इन्द्रियें वर्णन भये॥ सो नरोगीशरीरके वर्णन भये हैं॥ अरु तो लुलघवी अरु गुदाकी मलनताका निश्चै नहीं कह्यो॥ अतेव जो अधक भषण करे अरु वशेष जलपान करे तो मलीनता अरु लघवी हूं वशेष उतपन्न होत है॥ अरु जो इनका भषण न्यून करे तो इनकी उतपत हूं न्यून होय॥ तपलाद ऋषीश्वरोवाच॥ जब या भांत उतपन्न स्त्रिए अरु शरीरकीका ज्ञान भया॥ जइन पदार्थोसें उतपन्न है याकी॥ अरु अंत मो नाश है॥ तवयांको मिथ्या निश्चै सो ज्ञान एमहीकारन मुक्तिका होत है॥ अरु याका सत्य अध्यास ही कारन बंधका है॥ इति गरभ उपनिषद् अथर्वणवेद समाप्तम्॥ ३॥ १६॥ १९॥ वक्ता अरु श्रोता को ज्ञान अवश्य प्राप्त होइ॥ नमस्कार ज्ञानीयों को अरु सर्वको आनंद होय॥

ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ अथ षटवली उपनिषद् अथर्वणवेद॥ ॥ ॥

७४ वाजश्रवस —

वाजस्रवसो नाम ऋषीस्वर था॥ वाने ते प्राप्त फल के निर्यज्ञ कौ चित्त मो धार करी निकट असपुने धन अरस
मग्री राषत था॥ वा समय न्रपने समग्री को वेच कर अरु गोयें को मोल ले कर ब्राह्मणों को देत भया॥ अर
यहि गौ यो जो ब्राह्मणों को देत भया॥ सो वृद्धता को प्राप्त भई थी॥ अरु इहाँ ऋषीस्वर नाते गषता या
जु बा नचिकेता था नाम जाका॥ यद्यपि अर्द्ध मो कनिष्ट था॥ अरु सिसु था॥ तो हू बुद्ध उत्तम राष
ता था॥ अरु वा सिसु ने जब देषा जु पिता मेरे ने या भांत की यां गऊ यां जु जन ने हू सो रही हैं
ब्राह्मणों को दई॥ तब चित्त मो बीचार त भया॥ जु पिता ने उत्तम का मुख्य पुन न कीया॥ अ
रु उत्तम फल को चाहते हैं॥ अब सा ये देए या गऊ के वा लोक को प्राप्त होगा॥ जु वा ठवर मो
उत्तम गति अरु आनंद को न पावे॥ अरु पुनः या भांत चित्त मो बीचार करत निकट पिता
के आगमन करत भया॥ जो पिता के निकट जो कछु था सो देषत भया॥ अरु मुझे हूं जो
दान करे अथवा शुभ फल को प्राप्त है॥ पिता प्रति सिसु उवाच॥ हे पिता मुझे कौ को देह

गा॥जबपितातूह्मीरहाअरनाकहाकछु॥तबनाचकेतपुनःपुनःतैबारयहीवचनकहा
अतेबपितानेअतिषोभसोकहा॥काजमसरोवाम्च॥तुझैनिकटजमकेपठौं॥गा॥जबयामां
तपितानेकहा॥तबनाचकेतवीचारतभया॥जैसेसंपरनेसुतेअरसेवकोपिताकि
यांसेंस्नेहहोवेअविज्ञामृत्युसोंकवनसीभईहैजुपितानेयामांतअज्ञाज्ञाकरी॥अ
रमृतकोजमपेपठऐसेंवांकोकवनसास्वारथुहोगा॥यीहवचनजोऋषिनेक्रोधके
वस्यसोकहा॥अरपुनःपश्चाताबतभया॥यामांतनाचकेतनेपिताकोशोकसं
युक्तदेषकरकहा॥हेपितातुमअपुनेवडयोकीओरदृष्टिकरोजोजोकछुवानेक
हाथावाहूपरदृष्टिधरहेयो॥अवहूमारगमारगउत्तममनानुवहुकायहीहै॥जोकछु
उतपत्रभयाहैनाकाएककालमेनाशहोगा॥अरहोतहै॥जैसेअंनजोउतपत
होतहैअरकालटलीजीयतहै॥अरपुनःअफहोतहै॥तैसेहीवरतनयासंसार

नशांवंतकाजमलसोंहीनहैं॥ ताते जो कछु आज्ञा करत भयेहो॥ जु तुऊ यमपथपठोगा॥ अनेकअवश्य
मुऊ यमपथपठो॥ अरु आपकोमिथ्यावादीमतकरो॥ राजसरोवाच॥ तुऊ नि करयमराजकेपठा
सो घआज्ञापिताकीजाकोनाचकेतकहतहैंसोनिकरयमराजकेगमनकरतभया॥ जबवाके
गृहमोप्रवेशकरतभया॥ तबदेषतभया जु यमराजग्रहमोनही॥ अरु काहूठवरगाछतभया
है॥ नाचकेतद्वैदिवसगृहवाकेमोइस्थितहोकरनिराहारअरुनिर्जलरहे॥ जबयमराज
गृहमोआगमनकरतभया॥ तबइस्त्रीवाकीनेवासोकहा॥ अग्नि घृत ब्राह्मण जु काहूके
गृहमोप्रवेशकरतहै॥ अग्निवतहै॥ आदरलूपजलसोवाकोचाहीयेइस्थितकीया॥ ता
तेतुमवाकीपदारघआदिकरजाकरो॥ अरुसाथवाकेदयाकरो॥ वाकेगृहमोजोनिवु
द्धि अरु मूढहै ब्राह्मण आगमन करतहै॥ अरु वहिवांपयदयानहीकरत॥ ताते संपूर्ण
वाकेमनोरथोकानाशहोतहै॥ अरु प्राप्तवाकीहूअनप्राप्तहोजातहै॥ अरुसाथसंग

तसोंनिह्फलहोतहै॥ अरु जो आपहूउत्तमवचनकहै॥ तो वचनवाकाकाहूलेष्टिदेमो
षचतनहीहोत॥ अरुफलयज्ञअरुदानकेहूसोनिह्फलहोतहै॥ अरुधनअरुसं
तानहूसोनिष्टनहोतहै॥ अर्थयाहिजुइत्यादिकअनेकअशुभपदार्थोंकोप्राप्तहोतहै
यमराजनेजवयाहिसंप्रश्नवचनश्रवणकीयेतवनिकटनाचकेतकेआगमन
करतभया॥ अरुवासोंकहतभया॥ अरुपदार्थआदिकसोआदरकरतभया॥ यमराजो
वाच॥ हेब्राह्मणनमस्कारकोयोगअरुहैअपर्वदरसनश्रेष्ठअहैवजोतैंदिवसम
ध्यहमेरेकेक्षुधावंतअरुरात्रिवावंतरहाहैतूं॥ मेरीयाअविज्ञाकोदूरकरअरुषोम
सेयुक्तमनतहो॥ तातेमेरीनमस्कारहैतुझे॥ ब्राह्मितामेरउभाकानाशहो॥ अरुप्र
संनताप्राप्तहो॥ यातेजोतैंयादिवसअरुरैनमध्यहमेरेकेक्षुधावंतरहाहैतूं॥
तातेतीनपदार्थजाकीतूंअतअतिचाहकरतहैसोमुजसौंमांग्य॥ नाचकेतावाच

मेरे आगमन करनेसों निकट तुमारे पिताकों जो दुःख प्राप्त होगा सो दुःख ताका नवर्त्त
होय ॥ और अतिप्रसंनताको प्राप्त होइ ॥ और मेरे पर जो षोभवंत भयो है ताका विहषोभ
हू मुझसो नवर्त्त होइ ॥ और जब मुझे पिता पयपठे तब पिता मुझे जैसे जाने जयाने
निकट तुमारे गमनु नहीकीया ॥ और मारणहो सो पुनः याउौर आगमनकर
तभया है ॥ और जाने जो तुमो हीने पुनः याको निकट मेरे पठा है ॥ इ यमराज प्र
थमकामनायहिराषतहै मै ॥ यमराजोवाच ॥ पिता तेरा यावचनरूप वरमेरेसों
जैसे आदिमों तुझपै प्रसंनथा ॥ अवहू तैसेही प्रसंन होइगा ॥ और अतिआनं
दसों दुःखकी नवर्त्तिको प्राप्त होकर निंद्रामो मगन होगा ॥ और षोभवाका निवर्त्त
होगा ॥ और आगमन करना तेरा याउौर कोसतू न जानेगा ॥ और तुझे जमुषमित्र
तकेसो मृत्युकहू यादेषेगा ॥ और तप्रसंनताको प्राप्त होगा ॥ यहि वासते प्रसनता प्रथम

कामना तेरी के वर दीया मैंने ॥ नाचकेतोवाच ॥ वहि स्वर्ग जु जामे भय नहीं कछु अरु तेव जु तुम वा
ठ वर प्रवेस नहीं करत ॥ अरु बाढ वर मो जरा सो भय नहीं ॥ अरु वस नहारे वाइस्या न के षुधा
अरु त्रिष्णा सों मुक्त को प्राप्त होय कर अरु सदा मह आनंद के रहत हैं ॥ वहि यज्ञ जाके कर
ने सो जैसे स्वर्ग मे प्राप्त हू जीयत है ॥ अरु तुम वा यज्ञ को जानत हो ॥ सो मुझे उपदे
स करो ॥ जो मैं तुम पयप्रतीत पूर्न राषत हों ॥ अरु जो कोऊ वा स्वर्ग मे प्राप्त होत है ॥ देवता
होकर अमर पद को प्राप्त होत है ॥ द्वितीय कामना याहि राषत हों मैं ॥ यमराज उवाच ॥ सुण
अरु समझ या यज्ञ सों वेकुंठ लोक मे प्राप्त हू जीयत है ॥ ताको मैं तुझे उपदेस करत हों
तद्यथा ॥ देवता वा यज्ञ का संपूर्न संसार का रूप राषत है ॥ अरु वहि देवता सर्व सो प्रथम
ही भया है ॥ अरु मह ब्रह्म न बुद्धवाने के जो ज्ञात्त ज्ञाता है ॥ वसत है ॥ अरु यहि जो आ
त्म ज्ञाता है सो आपको प्रजापत जानत है ॥ अरु मार गकर्म वा यज्ञ के का जैसे वेद मो

कह्यो है तैसे ही वाको उपदेस कीया॥ नाचकेतने संपूर्न वा यज्ञ कों कंठ कर कर निकट यमराज के उचा
र कीया॥ यमराज अति प्रसंन भया॥ जु जो कछु मैंने उपदेस कीया था सो याने दृढ कीया॥ अर
कहत भया॥ अतेव जु मैं तुम सों प्रसंन भयो हों॥ तातें और वर कछु तुझे वर हूं अर पदार्थ हूं देत
हों॥ अर जो कछु कहत हू हो जब या भांत आज्ञा करत भया॥ तब एक माला जामें अनिक
एघे सो देत भया॥ अर और वर भी देत भया॥ जो यह यज्ञ तेरे नाम सों जगत में प्रगट हो
गा॥ अर नाम या यज्ञ को नाचकेत वाजकेत होगा॥ अर कहत भया॥ जो कोउ त्रैवार
या यज्ञ कों उचरे॥ अर सम जे अर करे॥ अर पिता अर माता अर गुर कों प्रसंन राखे॥
अर यांह तीन उत्तम कर्म॥ एक दान द्वितीय यज्ञ तृतीय वेदाध्येन॥ इन कों निहकाम
करे॥ सो पुनः नीचलो कों में न गिरे॥ अर मित्र के पास सो मुक्त होवे॥ देवता जु रू
पु संसार का राषत है॥ सो साथ या यज्ञ की अग्नि के एक है॥ अर वा ब्रह्म सों जु केवल

दान
यज्ञ
वेदाध्ययन

हिरंनगर्भ है उतपतभयाहै॥ जाकोस्त्रिष्टरूपप्रजापतिकहीयतहै। अरयहिदेवताज्ञातासर्वकोहै॥
अरप्रकाशहीहै॥ अरउस्तुतिअरनमस्कारकोयोगहै॥ ताकोवेदसोंबूझकरअरद्विइनिश्चे
वामोल्यायकरस्वरूपचाहीयेभया॥ जोवहिस्वरूवर्ननमेंनहींआवत॥ अरइसीनाच
केताकाजकेतायज्ञकोउचरकरअरसमझकरयाकेकर्मकोकरकरअरसर्वसमग्रीयायस
कीकोमद्रव्यअपुनेहीबीचारकरपासअमुभकमेंकेसों अरचाहअरक्रोधअरअवरकी
विस्मृतदेवऐमोजोअसहननताउपजतहै॥ इत्यादिकपदार्थोंमोजु वद्रहै तासोंअरशो
कसोमुक्तहोकरस्वर्गमेंगमनकरतहै॥ अरवाठवरमोनित्रमद्रआनंदकेइस्थित
होतहै॥ अरयहियज्ञजोद्वतीयकामनामोमुऊसोचाहतभयायातं॥ अरप्रापकरनहा
रास्वर्गमोहै॥ सोसदायहियज्ञतेरेहीनामसोप्रगटहोगा॥ अरवहित्रीयपदार्थ ती
कीजकामनाराषतहैसोमुऊसोमांग॥ नाचकेतोवाच॥ कामनात्रितीययहिराषत

१८ तद्यथा॥ॐ॥ सिद्ध्यजो वित्तको प्राप्त होत है॥ ताकी गतिमो मानुष्य अनेक संदेह उपजावत
है॥ कोऊ एक कहत है जु कछु था॥ याही शरीर ही था॥ पाछे याके त्याग के अवर नहीं कछु॥ अव
र जीवात्मा को शरीर सो भिन्न नहीं जानत॥ और साधनाश होए शरीर के वाको हूं नाश
वंत जानत है॥ अरु कोऊ एक कहत है जीवात्मा शरीर और बुद्ध और मनु और सर्व इंद्री
या सो भिन्न है॥ पाछे नाश होए या शरीर के जीवात्मा गति लोक मो जु याके कर्म अनुसार है गमन
करत है॥ अब मे चाहत हो जो तुम मुझ यथार्थ या भेद को उपदेस करो॥ जो या तु भेमार्ग सो
मिथ्या कवन सा है॥ और सत्य कवन सा है॥ यमराजोवाच॥ या वीचार मो देवता हू को संदेह भ
या है॥ अतेव जु यहि प्रश्न अति कठन है॥ मझ समझके नहीं आवत॥ ताते कछु अवर म
झ सो मांग॥ उत्तर या प्रश्न का मझ सो मत चाहु॥ नाचकेतोवाच॥ तुम आप ही आज्ञा क
रत भये हो॥ जु यहि प्रश्न अति कठन है॥ देवता हू या संदेह संयुक्त भये है॥ और सुगमता

सोसमझनहींसकते॥ताते मैं तुमसौंग्यरकहा सो प्राप्त करो॥ जो मुझे उपदेस करो॥ अरु जो मैं नि
संदेह होवौं॥ स्वेष्ट कामना मेरी यही है॥ याके तुल्य अवर कामना नहीं राषत मैं॥ यमराज
केवासते प्रीद्वास नचाहवां कीवे कहा॥ यमराजोवाच॥ वशेषता सं ता न वांकी अरु की
मुझसौं मांगु॥ जु एक सत सत वर्ष पूर्न जीवत रहै॥ अरु विभूत अरु धन अरु रहसौ अ
रतु रंग अरु रस्व वर्ण अरु राज संपूर्न पृथ्वी का मुझसौं मांगु॥ अरु विस्तार अरु आउ अरु पुनी
काजे ताकु चाहत है सो मांगु॥ अरु इत्यादिक जो कछु चाहत है सो मांगु॥ मिंन वाली तीय
कामना सौं जो प्रश्न कीया तैने॥ जो कछु चाहै सो मैं तुझे देत हौं॥ अरु जो पदार्थ मनु
संसार के पाईयत है सो मुझसौं मांगु॥ अरु संदेह मत ल्याउ॥ जो कछु चाहैगा सो मैं
तुझसौं देवोंगा॥ यहि हि चामर अरु रथादिक जो अनेक अलंकृत ताके पदार्थ है॥ अरु वजंत्रो
के जो अनेक भेद है अरु अनेक स्त्रीओं के वक्ता जो कि स्त्रमान पृथ्वी को यहि पदार्थ प्राप्त न

हो॥ सो सर्व निवर्त करि मेरे प्राप्त है॥ वाहि मुझसें अंगीकार करो॥ और अवर टहल जु अपनी कछु आ
ज्ञा करो॥ या प्रश्न मैं जो पाछै मृतक मानुष की गति क्रिया होत है॥ सो जन रहु॥ अनंते वजु
प्रश्न मृतक को काहू किसू ने न ही कीया॥ नाचिकेत उवाच॥ हे यमराज या सर्व पदार्थ जु वर्न
न करत भये हो और आज्ञा करत हो॥ जो तू याको अंगीकार करि॥ यहि संपूर्न है नाश
वंत है॥ और न ही जानीयत जु यहि एक दिवस हू रहे अथवा न रहे॥ और कीया होगा॥ औ
र जो कोउ इनको चाहत है वासते सब अपुने के चाहत है॥ और यहि भोग नाश करता
इंद्रीयों की शक्ति को है॥ इनसें क्रिया सुख है॥ और तुम जो कहत हो दीर्घता आउ की मं
गो॥ अनंते वजु अनंत मो शरीर त्याग होत ही है॥ ताते दीर्घता आउ की सो क्रिया प्राप्त है॥ या
ते विभूत संसार की जु धन और तुरंग और स्वर्ग और दीर्घता आउ की और वाजंत्री अ
रु स्त्रीन के अधीन करता इत्यादि वस्त मगी जु तुम राखत हो सो तुम ही को योग है॥

अरवासतेतप्रहेहाऐसेसंतानअरधनादिकमुझेदेतहे॥ यातेजोसमगीसंसारकीकेवलस्व
प्नवतभ्रमहै॥ अरकोउहूयासेंआपुनेमहलकोनप्राप्तभया॥ अरसंतानअरधनसेंक
दाचितकोउत्रिप्तनभया॥ यातेमैयाभ्रमकेपदार्थोंकोतुछसोनहीचाहत॥ तुमारीप्रा
प्तजमुझेभईहै॥ मानोसंपूर्नपदार्थमुझेप्राप्तभयेहै॥ नाशकरतासर्वकेतुमहीहो
जवतुमारीप्रसंनामुझपयहोगी॥ तवमैसदाअमरहीहोउगा॥ अरइहीचाहतहोमें
जोवाप्रहमकाउतरमुझेउपदेसहै॥ अवरकछुकामनानहीराषतमै॥ प्रजटहै
जुदेवत्योंकेजराअरमृतनहीअरसेवहै॥ तातेऐसावनमंडहैजानिकरतुम
सेदेवत्योकेआगमनुकरकरअरतुमकोसाष्यातपायकरयासंसारकेतुछपदार्थों
कीचाहकरे॥ मैमनोर्थयहिराषतहोजराअरमृतसोजोभयकरतहैअरमृतमंडल
मोरहतहै॥ वापदार्थकोउपदेसकरोजुमैहूजराअरमृतसोंछुटो॥ तातेमोयमराजइही

मुझेउपदेसकरो॥ जुपाछेशरीरत्यागकेकियागतहोतहैं॥ औरपुरातननिषिद्ध मद्धयाप्रथमकेसं
देहसंयुक्तभयेहैं॥ औरज्ञानयाप्रथमकापाछेशरीरत्यागकेउत्तमगतकोप्राप्तकरतहैं॥ मैंन
तुमसोऔवरनहीकोउजोमेरीयाकामनाकोपूर्नकरे॥ जोयहिप्रश्नकाज्ञातिकठनहै॥ और
मैंहूनाम्वकेतहैं॥॥ मैंनयाकामनाकेतुझसोंऔवरपदार्थकोनहीचाहता॥ इतिप्रसंगप्र
थमषटवली॥ अथउपदेसयमराज॥ यमराजोवाच॥ मद्धसंसारकेउभेपदार्थहैं॥ एक
याहिधनऔरसंतानादिकपदार्थोकीविभूतम॥ द्वतीययाहिउत्तमोस्वर्गादिकसुषोंकी
प्राप्त॥ याद्वयलोककीविभूतहीयांकोमनुष्यपुनेवंधकरतहैं॥ औरइनद्वयसोजोको
उविभूतउत्तमकीकोचाहतहैवाहिउत्तमहै॥ औरजोकोउविभूतसंसारकीकोचाहतहैं॥
सोअंतकेसुभपदार्थोकोनहीप्राप्तहोत॥ ताते जोकोउबुद्धवानहैयाद्वयपदार्थोंसो
अंतकेपदार्थकोअंगीकारकरतहैं॥ औरचाहतहैं॥ जोकोउअज्ञानीहैऔरबुद्धसो

रूनहै॥वहिशुभतायासंसारकीकोचाहतहै॥अर्थयहिजोकछुप्राप्तकरनाहैताकोत्यागतहै
औरजोत्यागकेयोगहैताकाग्राहीनहोतहै॥अनेवजुयांकेसंपूर्नपदार्थकेवलभ्रमऔर
नाशवंतहै॥हेनाचकेतजानामेनेकछुपदार्थसंसारकाजोनाशवंतहैमुझसोवा
सतेअपुनेनमांगा॥औरचाहअपुनीनउतपतकारतमयातूं॥औरमहूपकएकेज
यहिसंसारडूबतहै॥तूंवमैंनपडा॥औरबूझतेनेयद्यपियालोकऔरवालोगदोनोयथा
र्थज्ञानमोकेवलभ्रमसिद्धहोतहै॥तोहूमद्धइनउभेकेभेदअतिविशेषहै॥औरबुद्धवा
नोनेजानाहैजुमद्धयाउभयकेभेदाविसअरेनकाहै॥हेनाचकेतबूझमेनेजुतूं
केवलप्राप्तआत्मज्ञानहीकीचाहतहै॥यातेजुमिंनज्ञानसोअवरअनेकपदार्थजुतु
झेउपदेसकीयामेनेकाकाअंगीकारनकीया॥कैसीधीयोऔरबुद्धवानोकेसंबूहहै
जेसाधकारनअवरनऔरवडेपकेआपकोकमैकाकरताऔरबुद्धवानजानत

है॥ अरु चाह संसार के पदार्थों की करत है॥ अरु कुमार्ग को अंगीकार करत है॥ अरु दुःख को प्राप्त होत
है॥ जैसे अंध पाछे अंध के गमन करे॥ अरु दुःख को प्राप्त होत है॥ तैसे ही कर्मों के करता स
कामी जो लोक है॥ भेद या संसार के को या अज्ञान बुद्धि सों जु सिसुवत है नहीं समझत अ
रु जानत है जो कछु है यही संसार है॥ अरु परलोक नहीं है को॥ अर्थ यहि वहि जो या भांत
बूझत है॥ सो मद्ध पाश अज्ञान जामें लीके बंध है॥ अरु मे जु यमराज हैं तिनको पुनः पुनः म
द्ध करवीभृत के डारत हैं॥ अरु तत्वज्ञान वोह पदार्थ है जो या के श्रोता हू अति दुर्ज्ञेय है॥ अ
र अन्य वाको उ श्रवण हू करत है तो समझत नहीं॥ अरु ज्ञाता अरु वकता याका कोउ अ
नेको मो है॥ अरु याको प्राप्त या तत्वज्ञान की है सो कोटि हु मद्ध कोउ है॥ अरु अर्थ यहि जु प्राप्त
या की अति कठन है॥ जो कोउ अति तीव्र समझ राखे होय वहि या वचन ज्ञान के को पा
वे॥ अरु समझे॥ अरु जो व्यर्थ रहनै न होय॥ अरु यज्ञासी बुद्धि तीव्र राखत है वहि हू ज्ञान को

नहीप्राप्तहोसकत॥वोहज्ञानीजुआत्मासोएकताकोप्राप्तभयाहै॥सोयावचनकोसत्तहैसमझ
आतेवजुवोहआत्माअतिसूछमदनहै॥अरसूछमसोसूछमतरहै॥अरइंद्रियांनसायवाकेनही
प्राप्तहोत॥अरसाधायकिसईंद्रीकेनहीपाइसकीयत॥चाहीयतहैजुउपदेससुरतेकेको
साधयुक्तोबुद्धकीयाकेवासतेद्रिढकरनेज्ञानकेअरपुनेआपनोवीचार॥अरवचनक
रे॥हेनाचकेतामित्रमेरेजानेअरपुनेस्वरूपकोवेदसोनिश्चेकीयाहै॥अरसमझाहै॥व
हिअवरकोउत्तममंत्रसोसमझायसकतहै॥अरतेनेवाकोसमझाहै॥अरवोहपुरुषद
हीसमझतहैजुतैनेसमझाहै॥जोसंसारनाशवंतहै॥अरजोगमनवंधनेकेन
ही॥अरतुझेप्रतीतद्रिढहै॥अरतुझसेयज्ञासीदुर्लभहै॥मैहूंचाहतहौजुतुझसा
यज्ञासीप्राप्तहो॥अरमुझसोकछुप्रश्नकरे॥अरसंपूरनकोरकर्मकियाकोअर
वाकेफलकोनाशवंतजाने॥अतेवजुवोहिनाशवंतहै॥साधयाकेआत्माअवि

नाशीकोकोमांतसवीयेप्राप्तहे॥हेनाचकेतमैहूंउयाकामयज्ञकेकोकरतमयाहैं॥सायकारन
वाहीकेअवलंगमह्रपासस्वर्गकेवांधाहैं॥जुचाहकर्मकीनकरतामैं॥अरकेवलयज्ञास जिरासा
आतमाहीकीरावतामैं॥केवलआतमाहीहोकरजोकछुप्राप्तकरनेकोयोगयातांकोप्राप्तक
रतामैं॥अरसायवाकेएकहोतामै॥अरसायुतुमनकेप्राप्तहोता॥अरपुरषार्थतुमको
त ईहालगहैजोऊँद्रिष्टहिरंनगर्भहूकेपदपरनहीं॥जोवीहपदमसमासंपूर्नलोकोंकाहै
अरदिष्टज्ञानीकीवापदपरहै॥जोवापदसोपूर्नताहै॥संपूर्नचाहोअररसोकी॥अ
रवीहइस्थानहिरंनगरभकाफलहै॥अरफलुहैसर्वलोकोंका॥अरफलहैसर्वयज्ञो
का॥अरकर्मोका॥अरअतिगंभीरपदहै॥अरस्तेएतरहै॥उभयइस्थानोसेंसायसं
पूर्णअभपदार्थोकेशोभावंतहै॥अरउत्पतिकोयोगहै॥अरसर्वइस्थानअरतेजो
केसंवूहपूर्णमुनीस्वरोकेवामोहै॥अरमारगवांकाअतिअवकासरायतहै॥मह

जैसे समस्त लोक के यद्यपि तूं जानत है जु न हीं सकीयत प्राप्त होय॥ सो याहि तें बुद्धि के अरु शरी
र जड़ के ज्ञानी सर्व का ज्ञाता जैसी ठवर को वासते एक ता प्राप्त होय ऐ वा आत्मा सें जो यां
को जानत कठन तासों प्राप्त हूजीयत है॥ त्या अवर कवहूं कदांचित का ठवर की डोराद्रि
ष्ट नहीं करत॥ अरु तैने हूं वा डोरा द्रिष्ट नहीं करी॥ अरु वां को कछु पदार्थ न हीं बूझ॥
अरु वासते प्राप्त आत्मा के जु यां का त्याग कीया तैने॥ सो वा आत्मा को अति कठन तासों प्रा न
प्त हूजीयत है॥ जु वहि आत्मा मद्ध गद्य सें गुह्य इस्थान के है॥ अरु बुद्धि के प्रकाश सों
वा को सकीयत है प्राप्त होय॥ अरु तेव जु मद्ध वे शुल प्रकाश बुद्धि ही के ठवर है वां को॥ अरु
स हस्त ही पदार्थ वां की प्राप्त नो वाधक है॥ वहि आपुने स्वरूप में गाड़ि उहै॥ बुद्धवान
काम इंद्रीयों को जु वाहू ज भु ववरत त है अभित्र को षेंच कर अरु मद्ध मन के गवर आभ्यंतर
र अरु मन को सापज़ी वात्मा के एक कर कर अरु एक जान कर॥ अरु वा ठां भी

र प्रकाश कों समझकर और हरष और शोक कों त्याग करे॥ और गुरु एक्नै सो आत्मा कों श्रवण कर
कर निश्चे करते हैं॥ जो वोहि आत्मा है नहीं है॥ और या शरीर को जु नाश होवत है॥ आत्मा न
हीं जानत॥ और शरीर और इंद्रीयां और मनु सो वोहि आत्मा अतिसूक्ष्म है॥ और मह
इन संपूर्ण के जो आनंद है उसी का है॥ या भांत कों को प्राप्त होकर और रामें न जानकर
सदा आत्मानंद रहते हैं॥ हे नाचकेत मैं जानत हों जो द्वार वा ब्रह्म का तुजे खुला है॥
नाचकेतोवाच॥ वोहि आत्मा जो शुभ कर्मों के फल कों और अशुभ कर्मों के फल सो
और शुभ अशुभ कर्मों के सो भिन है॥ और सृष्टि के उतपन करने और मिथ्या न हो
णे सो शुद्ध है॥ और भूत भविष्य वर्तमान इन तीन कालों मो प्रगट है॥ ऐसे सत् आ
त्मा कों जो तुम जानते हो सो ता कों मुझे उपदेश करो॥ यमराज उवाच॥
हे नाचकेत आत्मा जु तत्त्व संपूर्ण वेदों का है॥ और वेद के बल वासते वो के जा

नने के हैं॥ अरु सर्व तपस्या अरु त्याग रसो का॥ अरु समदम वास ते वां की प्राप्त होहे॥ वाको मद्र एक स्वग
म अक्षर के मह त हैं॥ जु वाहि आत्मा केवल सो है॥ ॐ है अरु इही अक्षर ब्रह्म है॥ अरु परास
र्व सो है॥ जो शिव को चाहत है तो ज्ञान इसी गंभीर नाम के सो है॥ सो या शिव के जु सर्व काम मांहे
प्राप्त होगा॥ अरु सत्को जु सरगुण रूप ब्रह्म है चाहत है सो यह सत्को प्राप्त होगा॥ याहि नाम
गंभीर निरगुण हूं है॥ अरु सरगुण हू है॥ अरु वास ते प्राप्त आत्मा के अन्त गंभीर पद है॥ अ
र या की न्याई अवर कार वा की प्राप्त का नाहीं कछु॥ जो को उ याही को आत्मा की प्राप्त का
कारन ज्ञान त है॥ वाहि के बल आत्मा रूप होकर वा आत्म आनंद मो जो सदीव है प्रा
प्त होत है॥ अरु वाहि आत्मा न उतपत होत है अरु न श्चित को प्राप्त होत है॥ अरु ज्ञाता
सर्व का है॥ अरु वाहि न किस पदार्थ सो उतपत भया॥ अरु न को उ पदार्थ वा सो
उतपत भया है॥ अरु कारन उतपत वां की का नहीं कछु॥ अरु अपु ने आप ही

मोदृढ है॥ अरु पुरातन है अरु अविनाशी है॥ अरु सदा है॥ अरु सो यघात शरीर के होइ घा
त नहीं होत॥ अरु जो कोऊ अपुना घात समुझतै है अरु अयवा घात करनहारा जान
तै है॥ यों है दुयही प्रकार का ज्ञानी न ध्यो है॥ न कोऊ जीव को को घात कर सकत है॥ अरु न जी
व घात होत है॥ अरु ते वजु काटन अरु नाश होना शरीर पर है॥ न जीव पर है॥ जु आतमा है वह
संपूर्न लघु सो लघु है॥ अरु सर्व दीर्घ सो दीर्घ है॥ अरु वीह आतमा मुद्र मनन सर्वी स्व
रूप है॥ तो तू भिंनता सो जो चाहत सो रहत है॥ अरु विषया सो मन वां छित है॥ अरु
कर्मों के फलों दुरूप सो नहीं राषत॥ अरु शोक सों हीन भया है॥ अरु तिन है ऊपर तासो
मनन आपुने को सुद्ध कीया है॥ अरु तां को नहीं देषत॥ अरु जे से वर्नन कीया जो को
ऊ या भांत है वो हि आपुने आप की स्वरूप ता को आप ही देषत है॥ आतमा केवल आ
नंद ही है॥ अरु अचल है अरु संपूर्न इस्फुरन ता वा की है॥ अरु केवल मद्रा नं
ही

ਜੀਵ ਨਸ਼ਟ ਨਹਿੰ ਹੋਤਾ ਸਥੂਲ ਦੇਹ ਹੋਇ।

कूंकेसर्वठवरगमनकरताहीकोहै॥यद्यपिकेवलआनंदहीहै॥तोहूआनंदसोपरोहै॥आ
त्माजुकेवलमननहीहैभिंनजैसेमनसोजुबर्नेनभयाहैअवनुवाकोसमझतहैसमझ॥अ
रमद्धकेवलनिद्राकेजाकोसुषपतकहतहै॥मनहूमद्धकआत्माआनंदकेमहरघामे
मगनहोतहै॥याहीसोमद्धजाग्रतअवस्थाकेवाआनंदकोज्ञानुनहीराषत॥
अर्थयहिजुवाअवस्थाकोनहीवरननकरसकत॥तातेआत्माआपकोआपही
समझतहै॥अरआत्माकेवलप्रकाशहीहै॥अरशरीरसोरहतहै॥अरआनेकप्रका
रकेजोहैशरीरतामेव्यापकहै॥अरगंभीरहै॥अरसर्नहै॥जोकोउयामेंतआपने
निष्कामता स्वरूपआत्माकोजानतभया॥वीहअशेषकआरनिधारकहै॥अरआत्माकोभिंन
नेहकमताकेअरत्यागकरनेरसोकेसोकेवलसाधयुक्तोआरद्विष्टंतोकेवाको
नहीसकीयतप्राप्तहो॥अरसाधकेवलअधेनशास्त्रोकेअरयुक्तीवेदकीयाके
अध्ययन

अरसाधवृद्धकेअरअनेककर्मोकेअरगंभीरघनकेवाकोनहीसकीयतप्राप्तहै॥ जानेसु
द्रमनअपुनेकोसाधवांकेषचनकीयाहै॥ अरवांकीऊारहूसोषैचाहै॥ वहिसाध
आत्माकेआपकोपावतहै॥ अरआत्माआपरूपवांकोप्रगटकरतहै॥ अरजोकोउ
अशुभकर्मोकाजइस्त्रीआदिकभोगोंकीअभिलाष॥ अरतिहमादर्वकीअरक्रोधा द्रव्य
दिकजुविकारहै॥ त्यागुनकरै॥ अरमनकीएकागतानभईहै॥ अरसमदमन
कीयाहै॥ अरनकरैवहिआत्माकोनहीपावत॥ त्यागसंगवांकेकाचाहीयेकीया
अतेवजोवहिपुरषुअशुद्धहै॥ साधवांकेज्ञानचरचानचाहीयेकरी॥ जुज्ञा
नकरनहारावासोआत्माकीप्राप्तसोवेमुषरहतहै॥ अरजानेसमदमनकीया
वहिसाधकारनकेवलज्ञानकेआत्माकोपावतहै॥ अरसर्वसंसारचावलइ
स्थानअनहै॥ आत्माका॥ अररसजुसाधचावलोकेभषणकरतहैसोवाकी

ठवरीम्रतहै॥ऐसेआत्माआपुनेस्वरूपकोजांनितआरसर्वसंसारभयप्तहैवाकोचाहि
येसमुभाजुकवनसीठवरहै॥इतिद्वतीयप्रसंगाष्टवली॥ ॥ ॥शरीरमोमध्यम
नके जोछिद्रहैतामोवुद्धिहै॥वामोएकजीवात्माआरएकपरमात्मायहिद्वयरस
अंगीकारकरनहारेकर्मोकेफलेनाकेहै॥आरयथार्थतामोजीवात्मारसअंगी
कारकरनेहाराकर्मोकेफलेनाकाहै॥आरपरमात्माद्रष्टाकौंतककाहै॥यातेजोयहि
दोनोएकहीहै॥तातेकहतसकीयतहेजुयहिद्वयहीरसकोलेतहै॥आरब्रह्मके
मुमुक्षु ज्ञाताआरममोक्षआरआपकोपंचाग्निनहारेआरवुद्धवानआपसमोइनदो
नोकेनद्वप्रकाशकाप्रतिविंवएताहीभेदवीचारकरतहै॥आपर्येयहिजुपरमा
त्माप्रकाशइस्थानहै॥आरजीवात्मावांकाप्रतिविंवहै॥एनाचकेतआछिनयज्ञ
नाचकेतवाजकेतकेकीसेतवतहै॥जोयाकर्मकेकरताकोसंसाररूपसमुद्रसो

परमात्मा का प्रतिबिंब जीवात्मा है।

तीरपरप्राप्तकरतहै॥अरुवोहहैजोचाहमुक्तकीयासंसारसोराषतहै॥अरुलीनहोएामध्ययां
प्रकारआत्माकेराषतहै॥जुपरंब्रह्महै॥अरुउतपतकाकारनगंभीरहै॥अरुअभयहै
अरुअनन्तासोरहतहै॥वासतेउनकेमैयाकर्मगंभीरकोजानतहै॥अरुआगेकहा
यायायज्ञकोमध्यशरीरकेचाहीयेकीया॥सोताकावीचारमध्यशरीरकेयाभांतअवक
हतहै॥तत्व॥याकर्मसोपरमात्माकोप्राप्तहूजीयतहै॥याशरीरकोरथजानो अरुइं
द्रीयाकोतुरंगोइस्थानजोरथकोषैंचतहै॥अरुमैकोवारजुजाए जासोतुरंगकोषैं लगाम
आरूढ चीयतहै॥अरुबुद्धकोपलनहारीरथकीजाए॥अरुरथनीरथकाजीवात्माहै॥अरुवो
पयअसवारहै॥अरुविषेइंद्रीयोकेरथकोमारगपरवरतावतहै॥अरुइसीसोजीवा
त्माकोजोयारथपयअसवारहैरसलेनहाराकर्मोकेफलोकाकहतहै॥जोकीबुद्ध
प्रेरकरथकीहै॥जोप्रेरनेरथकेमोद्रिढकेलागावतहै॥अरुजोषैंचनहारेरथकेको

जमनहैइंद्रिउग्राहीकहोकरगमनकरावतहैं॥तौतुरंगवांकीआज्ञामोप्रवर्तेगे॥अरथ
नीरथकेकोजोवांपयअरूढहै॥अतिगंभीरइस्थानकोप्राप्तकरैंगे॥जुपुनःवाइस्थान
सोनगिरैं॥अरवहिइस्थानवहिपदहै॥जुकेवलउतपतकारनगंभीरआत्माहै॥अररअं
तपदोकावहीहै॥अरगंभीरसोंगंभीरहै॥अरजोबुद्धकेप्रेरकरथकीआज्ञानसोवाछिप्रहै
तुरंगवांकीआज्ञामोनहोहूगे॥अरवाआत्माइस्थानअपुनेमोजीवात्मानप्राप्तक
रैगे॥अरमहनाषिष्ठवरोकेडारैगे॥जोगभोदिकनरकहै॥अरप्राप्तहोएमहगंभी
रआत्मपदकेअतिकठनहै॥अरस्रूषमतरहै॥प्रथमअंतरालवापदकीप्राप्तकोइंद्री
याहै॥अरदुतीयअंतरालपंचमहतहै॥जुजासोइंद्रेउतपतभयेहै॥अरवासोस्त्रेष्ठत
अंतरालमनुहै॥अरमनसोअधकतरअंतरालबुद्धहै॥अरबुद्धसोअधकतरअं
तरालहीरंनगरभहै॥जुजाकोपंचमहतस्रदमेकहतहै॥अरवासेंअधकतरअंतराल

निकृष्ट

१ इन्द्रियें
२ पंच भूत
३ मन
४ बुद्धि
५ हिरण्यगर्भ
६ प्रकृति
७ परमात्मा

छीजतहै॥ जाकोत्रिगुणमायाकहतहै॥ औरवासोपरमात्माहै॥ जोसर्वठवरव्यापकहै॥ औ
रहीकाबंधहै॥ संपूर्णपदवीऔरपराइस्थानजो मोक्षप्राप्तहै॥ ऐकाइहीहै॥ औरवासो
अधकतरअवरनहीं॥ इहीआत्मामहसंपूर्णमतोकै॥ औरजीवधारीयोकेहीरनग
मंसोआदित्रिगुणप्रयंतगुप्तहै॥ औरस्वरूपवांतापुगटनहीं॥ वोहिजतीन्द्रिइ औ
औरतीव्रसमझरावतहै॥ कैवलस्वाधीनरीवकल्पीसिद्धातवे वांकोदेषतहै॥ तच्चया
प्रथमइंद्रेआपुनेकोएकाग्रकरकरमह मनकेलीनकरतहै॥ औरमनकोमहत
हकेऔरबुद्धकोमहजीवात्माके॥ औरजीवात्माकोमहएकजीवके॥ एकजीवकोमहआ
त्माकेलीनकरतहै॥ यमराजोवाच॥ वोहिजोमहीनंद्रआत्मावर्णऔरविदोफऔरआ
ज्ञानताकेलीनमयेहै॥ सोइहैताकोचाहीयतहै जुजागे॥ औरउद्यमकरकरनिक
रपूर्णसतगुरकेजुआत्मज्ञानहै॥ मनकरकरआत्माकोसमझे॥ जुप्रवेशकरना

कुशाग्र

वार आत्मा के मो अति उठन है॥ अतेव जु अग्र छुरका के सोहं अनसन दन तरै है॥ अर शीघ्रता
सो वांपे चरन न हीं सकीयत राष॥ बुद्धवान अर ज्ञानी या भांत वा मारग को आवरन न क
रत है॥ अर या मारग सो प्राप्त होय आत्मा को है॥ जु बाहि आत्मा अशब्द है॥ अर ध यहि
जु मद्र असद्वार के अर शब्द के अर स्पर्श के अर रूप के न होय आवता॥ अर अनंता सो रह
त है॥ अर शुद्ध सो शुद्ध है॥ अरीनन्न है॥ अर गंध न होत षत॥ अर अनादि सो अर अंत
सो रहत है॥ अर बुद्ध सो परा है॥ अर अचल है॥ जो उवां को निश्चे सो उन्न मुभांत अपु
ना आपु समझे॥ वाहि मरबीम्र तके सो मुक्त है॥ यीह उन्नर अमे जु सा धनाच के त
के प मरा जनेकी या है॥ सदा ही रहेगा॥ अर कवहूं ना सु न होगा॥ यां का॥ अर यहीं उ
पासना चाहीये करी॥ अर जो को उबुद्धमान यां को व कता॥ अर श्रोता है॥ वा हू को ब्रह्म
लोक की प्राप्त है॥ अर सदा आनंद मो रहे॥ अर जो को अभिंतर अर बाह्य अपुने के

आभ्यंतर

जिज्ञासु

ऋद्धकर करउत्तम काल में ज्ञात्म यज्ञासी यो को यहि है॥ अभेद श्रवण करवा के॥ वहि है अपार
फल को प्राप्त है॥ इति तृतीय प्रसंग षटवली उपनिषद् समाप्तम॥ आतमा को जो सर्व
कोउ नहीं देषत कारन वा को यहि है है॥ जु आत्मा ही ने इंद्रै उनके को अपुनी भोग सो बे
बाह्य मुष कीया है॥ अरु मन बुद्धि वा का बाह्य जे और कीया है॥ ताते बाह्य ज ही के विषयो को देषत
त है॥ अरु आत्मा जु अभ्यंतर वै है ताको नहीं देषत॥ अते वज एक वही है॥ जो कछु चाहे
सो करे॥ अरु करत है॥ कोउ कोउ कोट हु सो एक ऐसे साहोत है॥ अरु ऐसे सी बुद्धि अरु
ऐसो धीरज राषत है॥ जु वासते चाहत ने मुक्त के इंद्री अपुनी यो को बाह्य ज सों अ
भिंत्र मोल्याइकर आत्मा को देषत है॥ अरु अज्ञानी मन्द बुद्धि जु सिद्धवत है सो मन
पास बाह्य जो विषयो के मोहत है॥ अते वन मन मरव माहि हि चित को जु संस्पर्श उवरो मे
इन को मषण करत है॥ परत है॥ अरु बाह्य जनि कसने कोसकत नहीं राषत॥ इसी

सो बुद्धवान वा पदार्थों की उत्पत नाशी है। अर अचल है॥ अरु उनको आपु जान करि चाहै नाशवंत पदा
र्थों की नहीं करत॥ अर वहि है जो मद्ध शरीर के आधिष्ठाता मन से आदि संपूर्ण इंद्रियों का है॥ अर
ग्राहीक सवद स्पर्श रूप रस गंध अर रमै घन आदिक रस का है॥ सो जीवात्मा है॥ अर जो इंद्र
है सो केवल को आपु नाही करत है॥ काम अर वर मान ही सब को करि॥ इसी सें जान्या जात है
जे आत्मा शरीर सौं भिंन है॥ अर आत्मा का प्रवर्तक मन द्रसर्व वे है॥ अर इही जीवात्मा ही आ
त्मा है॥ अर मद्धिवस्थ अर ते उसके वही द्रिष्टा है॥ अर गंभीर है॥ अर व्यापक है॥ अर बुद्ध
वान वां को यथार्थ जान करि शोक ते रहत होत है॥ अर जो कोउ या जीवात्मा को जानि
करि तरै है अर अंगीकार करि नहा राकै सो के फलों का है॥ धनी मत भविष्यत वर्तमान का
जानै तिसी काल मो भय मित के सों अर सर्व भयों सो निरभय होता॥ अर जीवत वां के जीवा
त्मा सो दूर है॥ जब या ने जान्या उयहि जीवात्मा ही आत्मा है॥ अर वही उतपत करता है॥

हिरण्य गर्भ
मनमें रहता है
आत्मा श्रुति मे -

जु प्रथम ही वासो हिरंन गर्भ उतपत भयो है॥ अरु मंत्र धिष्ठ मनन सर्व जीवधारीयो के वसते है॥
अरु साधकारन रूप धारने पंच भूतो के दृश भयो है॥ ताते यहि दृश हू वही आत्मा है॥ अ
र वही इस्वजे केवल हिरंन गरभ होकर संपूर्ण स्त्रष्ट भयो है॥ अरु सर्व देवता अरु आधि
ष्टाताई दैके महका के है॥ अरु अंगीकार करनहारा संपूर्ण विषयो का है॥ अरु मंत्र धिष्ठ मनके
विराजत है॥ अरु केवल संपूर्ण पंचभूत होरहा है॥ सो यहि हूवही आत्मा है॥ अरु अग्नि जो
महल करी के पूज्य है॥ अरु देवत्यो के संवूह वा को अधिष्टाता आत्मा है वनका जानकर
साधक अतर था के वा की रदावर त है॥ अरु गर्भवती इस्त्री की न्याई जो गर्भ वा के जठर
मो पुष्य है॥ अरु ताकी वीहि ज्ञानी रषा सोर दाकर ते है॥ अरु त्रसयो के संवूह जु शास्त्र
के ज्ञाता है॥ अरु सदा अग्नि होत्र के काल मो जो अष्टम मंत्र वा के डारते है॥ उ स्तुति वा अग्नि
की या भांत करते है॥ जो वीहि अग्नि वही आत्मा है॥ अरु सा घस्तूर्य के ज देवत्यो के संवूह

यही आत्मा पंच का प्रतिबिंब तेज का भास जीवात्मा (हिरण्य गर्भ) है और यही अधिष्ठाता है

स्याधवांकेषचतहै॥जैसेनामवहीयेरषकेअनेवलवरीषचतहै॥अरहिनवजाइस्यान
सोउदेहोतहै॥अरवाइस्यानसोकोईअगेनहीशत्रुगमनुकरै॥सोवीहइस्यानवही
आत्माहै॥जीवात्मानब्रइस्यानकेहै॥वहीआत्माहै॥अरकेवलवहीसतहै॥अरकेवल
आनंदहै॥इहीआत्माजुमनब्रमननेहै जोकोउमनब्रजीवात्माअरपरमात्माकेद्वैतदे
षतहै॥अरभेदआरोपतहै॥वीहजालोकनोजातहै॥अरमित्रतकेसोमुक्तिकोनहीप्राप्तहो
ता॥चाहीयतहैजुसदीवमनब्रमननकेइहीउपासनाकरे॥मेवहीहों॥जोजीवात्माहूंहो
अरपरमात्माहूंहों॥अरइनमैंद्वैतनहीकछु॥अरपुनःपुनःवेदआज्ञाहै॥जोको
उमनब्रआपुनेअरजीवात्माअरपरमात्माकेभेदकोचाहेगाजान्या॥अरवाकागम
नजोलोकनोहोगा॥अरमित्रतकेसोमुक्तिकोनप्राप्तहोगा॥अरजोकोउवाप्रकाशको
जोमनब्रमननकेअगुणप्रमानधनीमृतभीवषतवर्तमानकाजानेवीहसर्वमयोसो

अभयहोतहै॥अरजीवमैजीवकोभयनहीरहत॥अरयौंहजीवात्माजोअंगुष्टप्रमानहैया
हीकोकरतापुरषकहतहैं॥अरप्रकाशवांकाजैसेअग्निधूयेंसोरहतहोतध्रुवतहै॥अरध
नीभूतभविषतावर्तमानतीनहीकालकाहै॥अरसदाएकरसहै इहीआत्माहै॥अर
जैसेमेघजोउपरपर्वतकेवर्षतहै॥अरसंपूर्णउोरतेवापर्वतकेसोजलप्रथवीप
रआगमनकरतहै॥तैसेहीसर्वस्वरूपजोमायाएकवाआत्माकीहै वासोप्रगट
होतहै॥जोकोउचाहवतमायाकोहोवेमायाकेगुणमोवंधरहतहै॥जैसेशुद्ध
जलजोविलोरसुद्धवासनमोशुद्धहीदषाईदेतहै॥तैसेहीवाहआत्मामनुमन
शुद्धकेशुद्धदिषाईदेतहै॥अरमनुमनकाशुद्धकेअशुद्ध॥ इतिचतुर्थप्रसंग
षटवल्ली॥उपनिषद॥जीवात्माउतपतनहीभया॥अरप्रकाशवाकासर्वठवरसम
है॥अरमनुगाहिकेविराजतहै॥जोवाहगाहिन्वद्वाररावतहै॥जोकोउवाआत्मा

कीउपासनाकरैसोकरमैं॥औरचाहसोरहतहै॥करमकेकोप्राप्तहोय॥औरयाहिवहीआतमाहै॥जोना
शकरतासर्वकाहै॥औरमद्रस्तैर्यकेविराजतहै॥औरप्रतिपालकसर्वकाहै॥औरस्वायत्तरूपपवनके
स्फुरनदेनहारासर्वकाहै॥औरमद्रअंतरघकेप्रेरनेहै॥औरस्वायत्तरूपअग्निकेहोकरमद्रपृथवी
केरहतहै॥औरअंमृततत्वरूपसोमद्रपाताकेजांकोसोमकहतहै॥तातपर्ययाहिजोत्रिणआदिकोमें
अंमृततत्वपहै॥मद्रमानुषहुकेऔरस्तरोकेऔरयज्ञोकेअस्सत्वकेऔरअन्नताकाशकेरहतहै
औरसर्वजलकेपदार्थजोजलसोउतपतभयेहै॥मद्रजलकेवाहिरहतहै॥औरजोक
छुपृथवीसोउतपतभयाहै॥औरजोकछुसमग्रीयज्ञाकीहै॥औरजोकछुमद्रपर्व
तोकेउतपतभयाहैसंपूर्णवहीहै॥औरआत्मासत्वहै॥औरवेअंतहै॥औरगंभीरहै॥
औरवहीहैप्रेरकप्राणपवनकाऊर्धको॥औरवहीहैप्रेरकप्राणपवनकाअधेको॥औ
रसंपूर्णअधिष्ठाताइंद्रकोउपासनावाहीकीकरतहै॥औरवाहिमद्रमनकेरहतहै

४१ अरु उपासना को याग वही है ॥ अरु पाछे शरीर त्याग के अरु राम नाम भिन्न होए इंद्रि के जो अधु
पाछे रहत है ॥ सो वही आत्मा है ॥ जब लग प्राण अरु अपान की गांठि दृढ है तब ही लग मा
नुष जीवत है ॥ अरु जब इनों ने इस्थान कूं अपुना त्याग कीया वाही को मृतक कहत है ॥
अरु प्राण अरु अपान जा सों जीवत है सो वही आत्मा है ॥ यमराज उवाच ॥ हे नाचकेत ब
ह्म जो पुरातन है अरु गुह्य है ताको मैं तुम सें कहत हैं ॥ अरु यहि हू कहत हों जु पाछे
मृतक को क्या होता है ॥ तथा ॥ जसो जीव सत ने जिस भांत के कर्म कीये है ॥ अरु जैसी चाहता
थी है ॥ शरीर त्याग के काल मों ॥ वाही के मों ॥ अरु चाह के अनुसार शरीर धारत है ॥ अरु वा
लोक मों जु याके कर्मों ॥ अरु चाह अनुसार है ता मों गमन अनुसरत है ॥ अरु कोउ मनुष्य
पश याही संसार में बंधे रहत हैं ॥ अरु जिन हु ने ज्ञान सों शुभ अशुभ कर्मों को दग्ध
कीया है ॥ अरु जिन वीस्म है ॥ सो व्यापक रूप आत्मा जु है सो होत है ॥ ताको गमन अगम

नन्हीं कछु॥ तैजस अवस्था मों जु संपूर्ण इंद्रै मन मों लीन होत है॥ अरु केवल जीवात्मा ही
चैतन्न रहत है॥ सो वहि जीवात्मा मन को साथ लेकर अपुनी चाह अनुसार वा अवस्था
मों अनेक पदार्थों को उतपत्त करत है॥ वही शुद्ध है अरु वही अविनाशी है॥ अरु वही ब्रह्म
है॥ अरु सर्व संसार का भ्रमा वही है॥ अरु कोउ वा सो उलंघत नहीं है सकै॥ अरु कहा
ग मनु करे जो इही एकु आत्मा सर्वव्यापन है॥ जैसे अगिन जो कछु लोहादिक मं
ध्यों के इस्थित भया सो अगिन हूं को रूपु अंगीकार करत है॥ अरु जब लग अगिन आवा
हर है तब लग अपुनां मूल रूप ही धारत है॥ तैसे ही एकु आत्मा मद्ध सर्व संसार के जो
अगिन वत् माया है॥ अगमन करकर सा घरूप संसार के दिखाई देत है॥ अरु जैसे
एक पवन जो मद्ध शरीर के प्राणादिक भेद को प्राप्त भया है॥ अरु बाहर अपुनां मूल रू
प ही धारत है॥ तैसे ही यहि एक आत्मा जो जीवात्मा होकर अरु मद्ध एक एक शरीर के

९९

आगमअनुकरकरअनेकरूपकोअंगीकारकरतेहै॥ अरबाहेरमोसाथमरलअपुनेकेहै॥ अर
याभांतहूकहतेहैजोआत्माअभिनवतेहै॥ सोयासोघरतहै॥ जोअभिनवतसर्वकेअभिंतर
१ यांकेहै॥ अरसर्वकोआपमोलीनकरतहै॥ जैसेएकसूर्यकेबलप्रकाशकरसर्वनेत्रोंको
है॥ अरदुःखजोसाधनेत्रोंकेप्राप्तहोतहै॥ बीहीदिनकरकोअन्नतोकोप्राप्तनहीकरत॥
अरसूर्यजोअपअनअशुभपदार्थोंकेजोचरकीनतादिकहै॥ प्रकाशतहै॥ बीनेकिएचरकीन
ताबाकोनहीप्राप्तहोत॥ तैसेहीएकआत्मामद्धसर्वकेहै॥ अररोगअरकेएअरअशुद्धता
इत्यादिकवाकोनहीप्राप्तहोत॥ अरवीहिआतिशुद्धहैसर्वसोभिंनहै॥ अरअद्वतीहै॥
अरसर्वबाहीकीआज्ञामोहै॥ अरवीहिआज्ञाकाहूकीमोनही॥ अरवीहमद्धसर्वकेहै॥ अ
रएकरूपअपुनेकोविस्तारकरतहै॥ ज्ञानवानजैसेंसेआत्माकोमद्धअपुनेदेषतहै
सदीकआनंदउनहीकोहै॥ अवरकोनही॥ वहिआत्माआदसर्वकोहै॥ अरपुरातनो

सोपुरातन है॥ अरु संसर्ग नि चैतंन्य सो चैतंन्य न तर है॥ अरु वाहि अद्वैत ही सर्न करनहारा चाहे॥ अ
आ५॥ रु आसो सर्व का है॥ ज्ञानवान अरु अपुने स्वरूप के पछाननहारे देषे वा के सो न अ
पुने सदा आनंद मो रहत है॥ अरु अनवर कौ याहि सुष कहा है॥ अरु जानत है जु आत्मा
केवल आनंद गंभीर है॥ मद्ध वर्नन न के नहीं आवत॥ ताते मै वा आत्मा आनंद कौ तु
झें किस भांत कहें॥ वर्नन सो विलछन है॥ नाचकेतो वाच॥ जो तुम वा कौ वा इंद्री मो न स्वरूप
हीं सकत ल्याइ॥ तौ तुझें वा का ज्ञान किस भांत कहे॥ यमराज उवाच॥ ज्ञानवान काइ ही है॥
जो अघु देषीयत है॥ सर्व वही है॥ अरु प्रकाश दिनकर का अरु प्रकाश निशाकर का अ
रु प्रकाश नछत्रों का अरु प्रकाश विद्युत का याहि सर्व प्रकाश वा के प्रकाश सो समता कौ
नहीं प्राप्त होता॥ अरु प्रकाश अग्नि का वा के प्रकाश मो न्यूनता मो प्राप्त होत है॥ अरु इन
के प्रकाश सो वा कौ नहीं सकीयत देष॥ प्रकाश पुरातन वा के सो याहि सर्व प्रकाश है॥ ६

शाखा

तिपु संज्ञा पंचम षट वल्ली ॥ ॥ संसार वृक्ष है ॥ जो मूल ऊर्ध को है ॥ अर तास वांके अधो है को है ॥ अर नाम
याविद्वत का अश्वत्थ है ॥ अश्वत्थ याहि जो विनाशी है ॥ अर परलोके मध्य नहीं रहत ॥ अर पात वांके
सदा मध्य उतपत नाश ही के रहत है ॥ अर याहि संसार एक रस पर नहीं नाशवंत है ॥ अरस्य
हू संसार रूप वृक्ष मध्य यानि कट ताके उतपत न ही भया ॥ पुरातन है ॥ मूल या वृक्ष का ब्रह्म
है ॥ अर शुभ्र है ॥ अर वांको अविनाशी कहत है ॥ संपूर्ण संसार सो यवाही की सत्तताके है ॥
को ऊ वासो परातन नहीं है ॥ सत्त ॥ इहीं ज्ञानमा है ॥ सर्व संसार वा ब्रह्म ही सो उतपत भया है ॥ अ
र ब्रह्म ही सो विचरत है ॥ अर ब्रह्म अपार है ॥ अर पुरुष विलास मोश ॥ अर पुनि को जा
न जान षट उगवत है ॥ मध्य अरके राषत है ॥ अर चतुर्द स लोक वा सो भय मान होत
है ॥ अर जिन्हूने वांको या भांत समुझा है ॥ अविनाशी भये है ॥ अग्नि वांके भय सो द
ग्ध करने मो प्रवर्तत है ॥ सूर्य वाही की शंका के भय सो चमकत है ॥ अर भ्रमत है ॥ अर

ई इहु और पवन कुं और पंचमाभूत वाही के भय सो आपुने आपु के कामो मो प्रवर्त्तत है॥ जाका
हू के शरीर त्याग सो प्रथम वा धनी या शत्रु के को आत्मा न सम मजा वाहि मध्य पाप सो अव
र लोक के वद्ध भया॥ ताते चाहीयत है जो प्रथम ही मित सो आत्मा को जानै॥ जैसे को
उ मध्य दरपण के मध्य आपुने को देषत है॥ तैसे ही चाहीयत है जु मध्य दर्पण के बुद्धिम
ध्य आपुने के आत्मा को प्रगट देषे॥ और वाहि जो मध्य दर्पण बुद्धि आपुनी के प्रगटन
स के देषे॥ और मध्य पितृलोक के गमन के॥ वा ठवर मो स्वप्न के पदार्थों की न्याई
देषत है॥ और जो कोउ मध्य देवलोक के गमन करत है॥ जैसे मुष को मध्य वा जल
के जो आप चलन हो देषत है॥ तद्वत वा ठवर मो आत्मा को देषत है॥ और जो कोउ म
ध्य ब्रह्मलोक के प्राप्त होत है॥ वा ठवर मो वाहि आत्मा को प्रकाशवत और जगत को छी

मुखको दर्पणकी तरह आत्मा को शुद्ध बुद्धि में देखे - [illegible]

उवतदेषतहै॥देषनाआदिकोअरुअंतकोउत्तमहै॥वाद्वयसोंजोमनह्वयाकेवर्ननमये॥देषना
अरदिकोदेषनाअरुविस्वरूपलोककोहै॥याकेआत्माअरहतहै॥जोमनप्रभुव्हवुस्वदर्पणअरुपुने
मेदेषतहै॥अरुदेषनाद्वितीयअरुतृतीयकोदेषनाअर्नअर्थीयोकोहै॥अरुदेषनाअंत
कोदेषनायोगप्रेरोअरुमुमोषकोहै॥ज्ञानीकारनउतपतहै॥एएकएकइंद्रकोजोआ
त्मासोभिन्नहै॥अरुलीनहै॥एइनकोमहआत्माकेजाने॥अरुतीनहीअवस्थामोयदि
अन्नभवराषतहै॥जोयाभांतआत्माहीसोउतपतहैतहै॥अरुपुनःआत्माहीमोली
नहोतहै॥वीहज्ञानीनिरसंदेहशोकसोंरहतहोतहै॥अरुजोकोउजानेजोकारन
इंद्रकोमनहै॥अरुकारनमनकोसंबूहवुध्रोकीएकवृद्धजोआकाशहै॥अरुकारनआ
काशकोहीरिनगर्भहै॥अरुकारनाहिरंनगरभकोत्रिगुणप्रकृतहै॥अरुकारनवा
प्रकृतकोआत्माहै॥जोमनप्रसर्वकेपरनेहै॥अरुव्यापकहै॥अरुवोजसोरहतहै॥अ

तेवजुञ्ञापसा॥अरुवसनहीराषत॥वीहज्ञातायामेदअात्माकेकाजीवनमुक्तहोतहै॥अरुजो
कालमेंशरीरकात्यागकरतहै॥अविनाशीअरुवदेहमुक्तहोतहै॥अरुधैर्यहेजोकेवल
आत्माहीकरिनिसंबंधिकेकोप्राप्तहोतहै॥अरुवाअात्माकोसाधनइंद्रिकेनहींसकीयतप्राप्त
है॥अरुसाधनेइंद्रिकेनहींसकीयतदेष॥जोउसाधनइंद्रिअरुअपुनीकोनिकेपचा
होअपुनीयोकानाशकरे॥अरुदृश्यअरुअसमपदार्थमोसंदेहसंयुक्तनहो॥अरुयुक्तो
अरुवीचारोसोआत्मज्ञहै॥अपुनास्वरूपजिसकोजानेवीहमुक्तहोतहै॥अरयाका
लमोपंचइंद्रिअपन्योकोमनवुद्धिसहितविष्यासोजोकारननाशकाहै॥फेरकर
महजीवात्माकेजो॥अविनाशीअरुअचलहैइंद्रिउरावे॥वाइंद्रिउरावनेहीकोगमी
रपदकहतहै॥अरुयोगजानतहै॥उपासकयामांतकाअनतचेतनहै॥अरुधैर्यहेजु
वीहअपुनेस्वरूपसोंमिलतनहीं॥अरुतमुजोहेआलसअज्ञानताकोजीततहै॥

ऽरुऽज्ञानताऽनभवकाशत्रुहै॥ तातेचाहीयतहैजुउद्यमुकरे॥ ऽनभवजोहैसाक्षा
तकारताकानाशुनहोइ॥ ऽरुऽज्ञानताजोहैमलवाहमार्गनपावे॥ ऽतेवजोऽभ्या
साकोभिंनऽनभवकेकेवलसाधऽभ्येनसेवेवोकेऽरनेत्रोकेमहीसकीयतप्राप्त
है॥ ऽरमारगप्राप्तवांकीकेवलाद्विठऽभ्यासभावनाहीहै॥ वाकेसाक्षातकारकोऽवर
माऽनही॥ संपूर्णतत्ववेतायाहीभावनासोवात्वतमेप्राप्तभयेहै॥ ऽरद्वयमा
र्गसोंवामोप्राप्तहूजीयतहै॥ एकविधमुखुजोहैकेवलासिद्धांततासें॥ ऽरद्वतीय
निबधमुखसें॥ निबधयाहिजोवामेऽरोपणऽसावर्णावदोपइत्यादिकऽजीवृचा
केपदार्थोकानउरण॥ ऽर्थयाहिजोपुथमनबधमोइस्थितहोकरपुनःविधिमु
खमो॥ जोवामोकेवलऽपुनेऽपऽसापदकोसाक्षातकारहैलीनहे॥ इतिबह
मपुसंगाषटवलीसमाप्तम्॥ मोक्षजोमरनधर्मीहै॥ जोकालमोचाहामनकी
नु

अध्ययन

यां मुक्ति होय सी संसार मोक्ष अमर पद को प्राप्त होय कर मुक्ति होत है ॥ अरु मनुष्य या संसार ही के ब्रह्म
कौ पावत है ॥ अरु जब गांठ आवर्ण अरु रीव देप की जु मनुष्य मन को दृढ वांदी है ॥ श्लोक ॥ तब
भ्रित सो मुक्ति होत अरु अविनाशी है ॥ अरु याही को निह कामकहत है ॥ अरु उत्तम उपदे
स इह ही है ॥ अथ अनवरमांतउपदेस ॥ एक समै अरु एक नाडका सो घञ्जन के बचत भई
है ॥ वा संपूर्ण मो मनुष्य एक नाडका सुखमना है ॥ जो ब्रह्मरंध्र को प्राप्त भई है ॥ भ्रित का
ल मो जाका जीवात्मा सुषमना के मार्ग सो ब्रह्मरंध्र सो बाहर को गमन करै ॥ वीह अ
विनाशी इस्थान जु है सत्य लोक ताको प्राप्त होत है ॥ अरु जीवात्मा जाका जो अनुवर ना
उ का के मारग सो गमन करै ॥ तो उन लोकों मो जावा नाडी यो के अनकूल है ॥ प्राप्त
होत है ॥ अरु वीह पुरुष जो मनुष्य सर्व मनो के इस्थित है प्रकाश वाका दीप की लाट
वत अंगुष्ट समान है ॥ अरु सर्व का जीवात्मा वही है ॥ वा शरीर अरु पुने सो स्यायवु

वहारीकीसीख

द्रिकेयाभांतजाने॥ जैसेत्रिणकामनअग्याधारनकेभिंनरहतहैं॥ वासोंनिकाशलेतहैं॥ तै
सेहीजीवात्माकोशरीरसोंभिंनजाने॥ अरवाहीजीवात्माकोअमृअरअविनाशीजा
ने॥ यहितत्वज्ञानअरआत्मउपासनाजोनाचकेतनेयमराजसोप्राप्तकीयाथा
अरयमराजनेसंपूर्नवांकोउपदेसकीया॥ वहियथार्थनिश्चेसोसमझकरब्र
ह्मलीनभया॥ अरीमृतसोंअरआवागमनशरीरकेसोंअरशुभअशुभकर्मों
केफलोंसोंमुक्तहोकरमृततेअविनाशीहोकरकेवलआत्माभया॥ जोकोउ
नाचकेतकीन्याईयाज्ञानशास्त्रअरयाकर्मकोंनिश्चेसोरदेमोषचतकरे॥
अरइहीउपासनाराखे॥ वहिहूकेवलआत्माहै॥ पुनः यमराजनेयहिआसी
रवाददीयाअरवरदीया॥ तद्यथा॥ मैंअरतूंजोदवयश्चेताअरवकतायाकेहैं॥ अर
अवरजोकोऊहोईश्वरवांकोअपुनीरदामोराखे॥ अरज्ञानजोयासोप्राप्तभयाहै

वाज्ञानकोमध्रमेरेअरतेरेमनविदृढराखे॥अरज्ञानशक्तजुयासोउतपतभईहै॥ताहूकोदृढ
राखे॥अरज्ञानसोजुतैनेअरमैनेवीचारकीया॥अरहमारेप्रकाशकोप्राप्तहो॥अरहमा
रेअरतुमारेविरुद्धनउपजे॥पुनः यमराजप्रणवकोउचारकरवाकहंद्रीसोकहतभया॥
जुसर्वकोसुखहो॥सर्वकोसुखहो॥अरब्रह्मज्ञानीयोकोनमस्कार॥आदिअरअंत
संपूर्णउपनिषदोंकेयाअशीरवादकोचाहीयेउचार॥संपूर्नबल्लीप्रसंगसोसह
त॥६॥११॥३॥२०॥इतिउपनिषदषटवल्लीअथर्वणवेदभाषासमाप्तम्॥आनंद
॥ ॥ ॥ आनंद॥ ॐ॥ ॐ॥ आनंद॥ ॐ॥ अथउपनिषदमुंड
कोअथर्वणवेदभाषालिख्यते॥॥ॐ॥आनंदआनंद॥गुह्यभेदअकरताअविना
शीकाज्ञानहोतांकोउपनिषदकहतहै॥अरमुंडकउपनिषदप्राणकेहै॥अरअथ
र्वणऋषिकेअंतकाहै॥प्रथमसर्वदेवतोसोब्रह्माप्रगटभया॥कथंमरतंतवाब्रह्माजोक

र तासंसार को है॥ अरु चतुर्दस लोक को धारत है॥ अरु संपूर्ण पदार्थ जगत के याको पाया योग
परवर ताव तमया॥ अरु सर्व वर्ण आश्रम को अपुने अपुने धर्म को राषत भया॥ वा ब्रह्मा
ने ब्रह्मविद्या को जाको सिधांत वह त है॥ अरु सर्व शास्त्रां मो अति गंभीर मार्ग है॥ अरु संपू
र्ण शास्त्र वाही मो है॥ सोय अथर्वा ता को अपुने के जो सर्व मो गंभीर अरु जे श्रेष्ठ तु है उ
पदेस कीया॥ अरु वा शास्त्र को जो ब्रह्मा ने सोय अथर्वा के उपदेस कीया था॥ सो वा ने
सोय अंगिरा ऋषीस्वर के उपदेस कीया॥ अरु अंगिरा ऋषीस्वर ने सोय भारद्वाज के
अरु भारद्वाज ने सोय सतवाहा के॥ अरु सतवाहा ने सोय अंगिरस के जो संतान भा
रद्वाज कीया॥ अरु याही विद्या वाही विद्या है॥ जो वडयो सो लर के उपदेस लेते आये है
शौनक नाम ऋषीस्वर ने जो घना उ था॥ त्याग्यइ स्त्री को अरु संपूर्न रसो का कर
करु अरु सेवक भाव आरोप करि न कर अंगिरस ऋषीस्वर के गमन कर कर प्रश्न

कीया॥ शौनकोवाच॥ प्रश्न॥ हे नमस्कार कोयेग ज्ञानकथनसे एक पदार्थ जेसो सर्वपदार्थों
का ज्ञान होता है॥ अंगिरसोवाच॥ उत्तर॥ ब्रह्मज्ञानी कहते हैं द्वय विद्या है॥ जो कोई चाहीये जा
ना॥ एक प्रवृत्ति शास्त्र जो कनिष्ठ अपरा विद्या है॥ द्वितीय निवृत्ति शास्त्र जो अंभीअक्षर श्रे
ष्ठ परा विद्या है॥ अपर वीह जो प्रवृत्ति शास्त्र है सो यह है॥ तथा॥ रिगवेद युजुर्वेद सामवेद
अथर्वणवेद॥ अरु वेदों के षट् अंग॥ एक सिषा॥ द्वितीय कालप॥ तृतीय व्याकरन॥ चतुर्थ
निरुकार॥ पंचम ज्योतक॥ षष्ठम छंदो व तइ इतिहास पुराण मीमांसा॥ इति प्रथम कनिष्ठ
शास्त्र॥ अथ द्वितीय निवृत्ति शास्त्र परा विद्या॥ निवृत्ति शास्त्र जो याते अंभीअक्ष
र होता है॥ जाते मोक्ष लक्षण ज्ञान यथार्थ प्रकाशता है॥ सो वीह अखंड ज्ञान ब्रह्मविद्या या मां
ते हैं॥ तथा॥ अक्षर तो जो अविनाशी अक्षर अचल है॥ अरु अरूप है॥ ताको साधि वि
नाशी अभिमन्न अरु बाहर इंद्रेन नही सकीयत प्राप्त होता॥ अरु वीह अखंड सो आदि स्वपदा

थेसोउतपतननहीभया॥अरवोहअजेहै॥अरगणअतीतहै॥पाणअरपादोकीन्याई
वाकोपाणअरपादनही॥अरनेत्रोकीन्याईवाकोनेत्रनही॥अरकरनोकीन्याई
वाकोकरननही॥अरवोहनित्तहै अरस्वप्रकाशहै॥अरवोहआपहीसर्वहो
तहै॥अरवोहब्रह्मासोआदिलेणपुर्यंतमद्रसर्वकेप्रनहै॥यद्यपिमद्रसर्व
केपरणहैतोहूजैसाअसदसदहै॥ताकोनहीसकीयतप्राप्तहै॥अरएतीउतपतजोवा
सोभईहै॥अरहोतहै॥वाकीदर्शणतामेकछुन्यूनतानहीहोत॥अरवोहउतप
तइस्थानसर्वमेंतोकाहै॥अरवोहजोज्ञानवानबुद्धमानहैवाकोयाभांत
जानतहै॥जैसेलूताजोतारकोउतपतकरताहै॥अरपुनःमद्रआपुनेली
नकरतहै॥अरजैसेपृथवीजोसंपर्णउतभुजऔखधकोआपसोउतपतक
रतहै॥अरजैसेजीवतेमानुखसोकेसस्त्रदेखअरदीर्घप्रगटहोतहै॥तैसे

ही वा आत्मा आत्मा अविनाशी है सर्वं सर्व व्याप्त है उ उतपत होता है॥ अरु वही आत्मा जब वासना ते एक सो अने
क होता है के अपुने आप सो मगन होता है॥ तब ब्रह्म ही अन्न प्रगट होता है॥ अरु पाछे वा सों प्रा
ण प्रगट होता है॥ पुनः मन होता है॥ पाछे मन सों सब होता है अरु पांच तत्व होता है॥ अरु पाछे पां
च तत्व सों संपूर्ण संसार उतपत होता है॥ अरु पाछे संसार के कर्म प्रगट होता है॥ अरु पाछे क
र्मों सों कर्मों का फल होता है॥ याही उतपत को शंकराचार्य ने ऐसे लिखा है॥ तथा॥ आत्मा काए
क सों अनेक होना यहि अर्धमात्र चेतन शक्ति अपुनी मों मगन होता है॥ अरु अन्न की उतपत
यहि जो त्रिगुण प्रकृत माया प्रगट होता है जो अं संपूर्ण प्रपंच का उतपत इस्थान है॥ अरु प्राण की पं
उतपत यहि जो संपूर्ण जीवों का एक जीवन है॥ अरु मन की उतपत यहि संपूर्ण मनों का ए
क मन॥ जो कारन चाहता अरु उतपत का वही है॥ अरु पंच महत इस्थान प्रजापति ज्ञात
व्य है॥ इति शंकराचार्य वचनात॥ ॥ तें॥ वही आत्मा ज्ञाता सर्व का है॥ अरु यहि उतपत शक

जो आत्मा मे है ॥ अवर को तपस्या अरु यतन सो रहत प्राप्त नहीं होत ॥ अरु आत्मा मे यहि इस्वर्य
तपस्या अरु यतन सों रहत प्राप्त है ॥ अर्थ यहि जो वा ने वाम्हते पापदके कछु तपस्या नहीं करी ॥
अरु वा आत्मा अविनाशी सो हरिंनगर्भ जो है अंन सो होत है ॥ अरु वासो नाम अरु रूप उ
तपत होत है ॥ अरु याको सत्त ज्ञाए ॥ इति प्रथम मंडक ॥ कर्म जो ज्ञाता वेद कियों ने मध्रीर
चारो वेद की यांके देखे है ॥ अरु वहि कर्म मे मद्रती नहीं वेदो के पसर रहे है ॥ जो कोउ वाकर्मो
को सदा करत रहै ॥ वहि याकर्मो सों अपुने मनोर्थ को प्राप्त होत है ॥ अरु मद्र्या संसार के
जो कर्म अग्नी है ताको हवन समान अवर मार्ग पुंन को नहीं ॥ अरु या भांत हवन चाहीये की
या ॥ तथ्या ॥ जो काल मे अगीत तीव्र अगिन होय ॥ अरु अग्र षम भाषे निकसते होइ ॥ अरु वसे
बधुंया न होय ॥ मद्र मे मभाखे अरु लाटा निकसती होइ ॥ वा काल मे हवन करे ॥ अरु सदा
करत रहे ॥ अरु या भांत वेद मे कहा है ताही भांत करे ॥ अरु जो वा भांत वेदोक्त न करे वा को क

हूलोककेऊर्ध्वकेमोइस्थाननहीप्राप्तहोता॥चाहीयततहेजोवलवेशदेवऔरपंचअहूतजोअ ग्निमोहे॥औरहंतकारऔरपंचअहूतजोमुखमोप्राणिकोहेताकोजगवशकहे॥औरजो श्रद्धासोयामोनप्रवर्त्तेतोअग्निसप्तलोककोकेदग्धकरतहै॥औरअग्निसप्तजिह्वा राखतहै॥यथवेदोक्तवाकीजिह्वामोहवनचाहीयेकीया॥औरकालजवजिह्वावाकी वामंडलमोनहोतवहहवननकरे॥औरवीहिहवनजोवेदोक्तहैसोवाकर्मअर्थीकोमन्त्र प्रकारसूर्यकेप्राप्तकरतहै॥औरवाठवरसोपुनःस्वर्गलोकमोजहादेवत्योकाराजाइन्द्र बसतहैतहाकरतहैप्राप्त॥औरवाठवरकेभोठोकोवहिपुरुषतहाभोगताहै॥औरयथ हिजुवहिइक्षाहुतवाठवरमोयाकाआदरबहुतकरतहै॥यद्यपिइत्यादिकवमतकोवा ठवरमोप्राप्तहोतहै॥तोहूयाकर्मरूपनौकाकेमार्गसोजोप्राप्तस्वर्गकीहोतहै॥सोअंत मोयहिनौकाटूटतहै॥यातेनाविस्नौकाहै॥औरसंपूर्नजोमद्रयायज्ञकर्मकेअए

दस प्रकार के हैं ॥ ता सर्व को अंत में नाश होत है ॥ अरु जो कोउ या जग में कोनि हकाम करै ॥ अर्थ याहि
जु केवल वास ते साक्षात नारायन ही को करै ॥ वो ह कर्म वाके पापो का नाश करत है ॥ अरु जो
कोउ या जग में को नारायण परायण न करै ॥ अरु जानत है जु याहि कर्म ही कार नु मकार
मारी को है ॥ वो ह अज्ञानी है अरु कुबुद्धि है ॥ अरु वाको सदा जरा अरु रोग व्रित त्रास तहै ॥ अ
रु सदा नष्ट गड है ॥ अविद्या अरु रावि द्वेष अरु अविद्या के पडे है ॥ अरु आप को ज्ञानी अरु बुद्धिमा
न जानत है ॥ अरु आध व्याध आदिक रोग जु है ॥ व्रत रूप सो तिन को अंत मार्ग नाश के
ले जाते है ॥ कर्म है अंध है ॥ अरु जड है ॥ अरु कर्मों के करन हारे हूं अंधे है ॥ अरु जड है ॥ जै
से एक अंध अनवर अंध का कर गह कर वाको मार्ग ले जावे ॥ अरु दोनो नष्ट रूप को गिरें ॥
तैसे सकाम कर्मों के करन हारे नष्ट गर्भ रूप कूप में गिरत है ॥ अरु यद्यपि वो ह या भांत
कर्मों के फलों को जानत है ॥ तो हूं वांको अज्ञान ता अरु कुबुद्धि ने ऐसा अंध सा है ॥ जान

तहै जो ह मोनें करनो थो सो कीयो है॥ याही सों सिसु है और मूढ है॥ और जिन को आत्मज्ञान की
प्राप्ति नहीं भई॥ और जानत है जु साधन कारन या कर्मों के उत्तम भोगन को प्राप्त होवोंगा॥ वो ह वा
ही कर्मों के फलों को प्राप्त होकर पुनः जब वाहि कर्मों के फल खर्च होत हैं॥ तब मृत्यु कष्ट के और
दुःख के और गर्भ ल्प नरक कों गिरत है॥ कर्म दो भांत है॥ जां के फलों सो उत्तम भोगों को
प्राप्त हू जीयत है॥ एक यज्ञ द्वितीय दान॥ जाने इन दोनों मों अपुने अर्थ और माया की
उत्तमता बूझी है॥ और ज्ञान को कारन मुक्त अपुनी को नहीं जानत॥ याही सों अति अ
ज्ञानी है॥ अतेव जो मनुष्यों का साथ इस्त्री के और तात के और धन के और संसार के भगन
और खर्च तभया है॥ नहीं जानत जो वा धन क पदार्थ है॥ आत्मज्ञान को इही॥ वाहि जो क
र्म करत है तामो चाह इन पदार्थों ही की राषत है॥ और द्रिष्टवों की वा पदार्थों की प्राप्त
ही सो षचत है॥ वहि निष्काम करके लोकन मन नु कर कर वा ठ वर मो शुभ कर्मों के फ

लोकोप्राप्तहोकरपुनःमनुष्यगर्भरूपनरककेप्रवेशकरतहै॥अरुवहिजोयोगअरुतपस्याक
रतहै॥अरुरनिश्चैआत्मबुद्धराखतहै॥अरुमनुष्यनोंकेउपासनाकरतहै॥अरुअभिक्षा
सोआउबीतावतहै॥अरुइस्त्रीअरुतातनहीराखतअथवाइस्त्रीतातराखतेहूंहै॥
अरुयज्ञासीज्ञानकेहैअथवासंन्यासकअंगीकारकरतभयेहै॥वहिपाछेशरीरत्याग
केसूर्यकेमार्गसोजोकेवलतेजमयहैप्राप्तहोकरअरुसूर्यकेमंडलसोनिकसक
रवाठवरप्राप्तहोतहैजहांआनंतरूपआत्माअविनाशीहै॥पुनःपुनर्गर्भसूद
ममरुताकेअधिष्टाताकोकहीयतहै॥३॥अरुतेजसजीवजोस्वप्नमोहैताकोप्र
काशतहै॥अरुमार्गसोसंपूर्णकर्ममोगोकेजुहैतोताकोदेखतजातहै॥अ
रजोकोउचाहेब्रह्मज्ञानहोवोअरुयथार्थअपुनेस्वरूपकोजाने॥वाकोचा
हीयतहैयाभांतजाने॥तथाच॥संपूर्णकर्मोंकेफलोंकोविनाशीनिश्चैजानकर

ताका त्याग करे॥ अरु इनके करनेकी चाह हू मनसों दूर करे॥ अरु यासों हू कर्मों को अवि
नाशी जानै॥ जो उतपन्न कारन जो कर्म तातें हू विनाशी है॥ अरु वीहि अपुनाश
पुन्य स्मा जो असद्रूप है॥ स्वरूपतासों सर्व कर्मविशिष्ट अरु अनित्य है॥ अरु उतपन्न
ही भया॥ अरु जो उपजत है सो विनाशी है॥ तातें वासते प्राप्तवा की कौ विनाशी जो है क
र्मै सो नही चाहीयत॥ मार्ग प्राप्तवां की का भिन्न ज्ञान अरु ब्रह्मभावना सो अवर
नही॥ अरु साक्षात कार याही सो है॥ चाहीयत है या भांत यज्ञासी को निकट गुर
के गमन करना कहा है॥ तामां तीन कट गुरु के गमन करे॥ अरु वो हि श्रुर वेद का ज्ञाता
अरु ब्रह्मनेष्ठ हो॥ तब वा गुरु को चाहीयत है॥ जब देखे जो सेवक यज्ञासा दृढ उराबत है॥ अरु
सर्व इंद्रेवा की अज्ञा ज्ञामो है॥ अरु दृकार तपस्या को अरु यज्ञासा का न हीराषत॥ केवल
वासते प्राप्त आत्मज्ञान के अगमन करीया है पाने॥ तब वा को ब्रह्मविद्या जासो वा

आत्मा अविनाशी को प्राप्त होजीयत है॥ आरनि धरके आरनि सं देह यथार्थ उपदेसु करे
मारग सत्तइहीहै मारग सत्तइहीहै॥ इतिकंछ छ अद्वितीयसमाप्तम॥ जैसे अग्नि जो अग्नि
निप्रज्वलत भई है॥ वासों सहस्त्र होमम आषे अरचिन जाते निकसत है॥ अरु वोहि सं
पर्न प्रकाश अरु रूप वा अग्नि ही को राखत है॥ तैसे ही एनु मोद वा आत्मा आवर्न
सों अर्थ यहि है जो ह्रदय सो रहत है॥ यहि सं बूहजी वो के प्रगट होत है॥ अरु वहि आत्मा
केवल प्रकाश ही है॥ अरु वहि आत्मा आरूप है॥ अरु वहि आत्मा पर्न है॥ सर्व के
आभंत्र है॥ अरु सर्व के बाहर है॥ अरु वहि आत्मा पुरातन है॥ उतपत्र नहीमया॥
अरु बाहर के इंद्रै गोचर नही॥ अरु वहि आत्मा अब्रह्म अरु स्वदमु है॥ कारुअ मन नहे
अरु अप्राण है॥ अरु वहि आत्मा माया सो हू जाने सं पर्न पदार्थो को उतपत की
या है पर है॥ अरु सर्व सो गंभीर अरु स्त्रेष्ठ है॥ अरु दस इंद्रै अरु चतुष्ठ अंतहक

रन अरु पांच तत्त्व अरु पवन जो आधार सर्व सृष्टि को है। अरु अवर सर्व पदार्थहू वाही
सो प्रगट भये हैं। अरु संपूर्ण सृष्टि वाही को रूप है॥ अथ वैराग स्वरूप॥ सप्तम लोक
जो सर्व सो उर्ध्व है॥ सो वाको सिर है। अरु रवि अरु ससि दोउ वाके नेत्र हैं। अरु सर्व दिशा
वाके कान हैं। अरु वेद जासो संपूर्ण पदार्थों को ज्ञान होत है। सो वाकी वाक इंद्री
है। अरु पवन वाको प्राण है। अरु संसार मनु है वाको॥ जा कोउ देइ स्यान करत
है। याही सो संसार सुषपत अवस्था मो नहीं रहत॥ जो सुषपत सो केवल जी
वा वाको होत है। मन इंद्रि सहित मो लीन होत है। अरु सप्त लोक अधर के वाके
चर्ण है। अरु वहि आत्मा सर्व को जीव है॥ अरु अंतर आत्मा जीव को जीव है॥
अतेव या संसार को वाको वैराग स्वरूप कहत है। जो यहि वैराग पुरुष याही सो
प्रगट भया है। अरु या पांच अग्नि सो जो जीव उतपत होत है। सो यहि अग्नि

वाहीसें प्रगट भई है॥ प्रथमे स्वर्गरूप अग्नि जामेअमेत्रथी जीव उतपत होत है॥ द्वि
तीय मेघरूपी अग्नि त्रतीय प्रथ्वीरूप अग्नि॥ जामें अंनरूप उतपत वा जीवो की हो
त है॥ चतुर्थ मानुषरूप अग्नि जामें शुक्ररूप वा जीवो के धारन होती है॥ प्रथमे स्व
र्गरूप अग्नि मो सूर्यलक्षरीइस्थान है॥ सो वाहीसें प्रगट भयो है॥ और मेघो के संयोग
सो जो प्रथ्वी मो उतभुज ब्रिछ उतपत होत है॥ सो वाहीसे होत है॥ और पुरषु जो
धारनहारा शुक्र का है और इस्त्री जो अंगीकार करनहारी वीरज की है॥ सो वा
हीसे प्रगट भये है॥ और संपूर्न उतपन्न वाहीसे प्रगट भई है॥ और चतुर्वेद वा
हीसे प्रगट भये है॥ और इस्त्री पुरष का संयोग जो वेदोक्त है॥ सो वाहीसे प्रगट भ
या है॥ और महायज्ञो और वलो के संवूह और लघु यज्ञो के संवूह और दक्षणा॥ और सं
वतसर और करता यज्ञो का और वा यज्ञो के और भंडारो के संवूह और गमनागमन

तपस्याके कालेका अरु मरन हारे वा पदार्थोके वही सो प्रगट भये हैं॥ अरु कर्मोके फल
जो सो स्वर्गको गमन करते हैं सो वाही सो प्रगट भये हैं॥ अरु रीक अरु सस वोकी
आज्ञा जो मोक्षमत हैं॥ अरु वाही मो रहत हैं॥ अरु अनेक प्रकारके संवूह जो कोसा
धदेवताक रहत हैं॥ अरु अनेक प्रकारके मानवहु के संवूह॥ अरु अनेक प्रकारके
चतुर्पादोके संवूह॥ अरु अनेक प्रकारके पंषीयोके संवूह॥ अरु पवनके भेद जो प्राण
अपान व्यान उदान समान॥ अरु पंच अवर जो भेद हैं॥ सो सर्व वाही सो प्रगट भये हैं
अरु अनेक प्रकारके धान जवादिक अंन॥ अरु अनेक प्रकारके तप अरु अनेक प्रका
रके प्रतीत अरु धर्मोके संवूह॥ अरु सत्रता अरु त्याग अरु संगता अरु आज्ञा देवोकी
अरु सप्त मारग प्राणके युग्म नेत्र युग्म करन अरु युग्म नासिकाके छिद्र अरु एक छिद्र
मुखका॥ यहि पदार्थ वाही सो प्रगट भये हैं॥ अरु या सप्तलोक सप्त स्थान हैं वाही सो प्रग

टभई है॥ अरु वहि सब पदार्थ जासों या सब प्रकाश होको ज्ञान प्रगट होत है॥ अरु वहि सब पदा
र्थ यासों या सब प्रकाश होको अग्राहीक हू जीयत है॥ अरु इस्थित इस्थान या सब प्रका जो ब्रह्म स
र्व जीव धारीयोके है वाहीसो प्रगट भया है॥ अरु इंद्रै सो जो पदार्थ इंद्रै कौ विषै है ताको
वाहीसों ग्राहीक होसके है॥ अरु वा इंद्रै कौ स होको सो वाको ग्राहीक नही होसकी
त॥ अरु सब लोक॥ स्वर्गादिक ऊर्धके जासो उत्तम कर्मोके फल प्राप्त होत है॥ सो
वाहीसो प्रगट भये है॥ प्राण अरु बुद्धि जाको ग्रह है तामे जो इस्थित है॥ यहि संपू
र्ण पदार्थ अरु संपूर्ण प्रवर्त्त वाहीसो प्रगट भये है॥ अरु सर्व उत्तम जाप्रिय मो जो र
सु है सो वाहीसो प्रगट भये है॥ याहीसो जाना जात है जो यहि सर्व पदार्थ वाही
सो उतपत भये है॥ ताते वहीके वल यहि संपूर्न भये है॥ निश्चै यहि सर्व संसार
वही पुरष है॥ जो ब्रह्म सर्व के परे नहे है॥ अरु संपूर्न कर्म अरु संपूर्ण तपस्या स

वेवसी है ॥ जो केवल ब्रह्म है ॥ अर वहि ब्रह्म सर्व सो गंभीर है ॥ अर पद परा है ॥ अर अनंत है
॥ सो ब्रह्म को जो को ऊ या भांत समुझै सो वहि मद्ध कमल रूप मन के विराजत है ॥ वहि
सम्पूर्न अज्ञान अर आवर्ण अर विक्षेप रूप गांठ अपनी यों को खोलत है ॥ इति त्रि
तीय मंडल समाप्तम् ॥ है मुमोद वहि प्रगट है अर अतिनि करत रहे ॥ मद्ध मनन रूप मं
दर के इस्थित है ॥ अर स्व इछित विराजत है ॥ अर ब्रह्म सो परापद गंभीर न ही को
ऊ ॥ सम्पूर्न संसार वाही सो स्फुरत है ॥ अर जीवत है ॥ अर सर्व शरीर मो चेतन्न वही है ॥ अ
र अलख संसार वाही सो नेत्र हु को खोलत है ॥ अर ढांपत है ॥ वा को सर्व सो गंभीर स्वाही
ये जान ॥ अर बुद्ध जो सर्व पदार्थों को ग्राही कहेत है ॥ ताहू सों परा है ॥ सर्व काम मां है
अर केवल प्रकाश है ॥ अर अति सूक्ष्म सो सूक्ष्मतर है ॥ सम्पूर्न संसार अर जो कछ म
द्ध संसार के है सर्व मद्धवां के है ॥ अर ब्रह्म है अविनाशी है ॥ अर प्राण है अर वाक इंद्री है ॥

अरु मन है॥ अरु सत्य है अरु अमृत सो रहत है॥ याको निश्चै चाही ये जानो॥ अथ अध्यात्म उपासना
ॐ॥ हे मुनि अब वही जो मध्य मन के केवल मन ही है॥ ताको तू वूझकर अरु मन अपुने को सरव
रो॥ अरु उपनिषदों की ज्योरि चांवां की या केवल सिधांत ही मे प्रवर्तत है॥ धन षकर॥
अरु याही की उपासना वान करो॥ सो अब वा धन षके संयुक्त करो॥ सो अथ शक्त एकाग्रता
मन की के जो द्रिढ यज्ञ सी वाही को है॥ वा सर को षैंच कर वा आत्मा अविनाशी मे जो
वेझ मन नते रेको है प्राप्त करो॥ अवरमंत॥ हे मुनि अब ब्रणव को धनुष करो॥ अरु जीवात्मा को स
रकर॥ अरु ब्रह्म ही को ताको वेझ करो॥ अति द्रिढ ता अरु एकाग्रता सो मद्र वावे के जीव रूप सर
को लीन करो॥ अरु मग्न मन तकरो॥ जो यावे के मे अथवा वान प्रवेश न करहो॥ अते व जो यहि
वेझ लक्षमन न हो॥ वहि वेझ जो सर्व ठवर पूर्न है॥ अरु वाए जो है जीवात्मा से तैसे सो वाए
है सर्व ठौर भरपुर है वांको॥ अरु सर्व ठौर सो वा वेके मोक्ष को है प्राप्त हो॥ अर्थ याहि ज्या सर

कोवावेजेपरअरुनेमोहीलमनतकरु॥अरुअरुनहारातुहीसर्वंऽवरद्नहै॥तातेयामोसंदेह
नउतपन्नकरु॥जहांयामांतकाधनुषअरुयामांतआवाणअरुयामांतकावेज॥अरुऐसा
वानकाउरनहाराहे॥किसूमांतननहीज्ञवेजेमोवानुनप्रवेशकरे॥आश्चर्यहिजोकरेही
अवरमांत॥ॐ॥रिगवेदकाधनुषकर॥अरुसामवेदकीतातीकर॥अरुयुयुरवेदकावान
कर॥अरुधुनसामवेदकीसोटंकारकर॥वाब्रह्मकोजोकेवलवेदमयहै॥अरुकेवलब्र
काशअरुशुद्धहै॥सदावेजकरे॥जेसेएकसूतमोसंबूहमोतीयोकेपरोईयतहै॥ते
सेहीसूतमांविषअरुमनइंद्रेसहितएकसूतवतजानकरअवरसर्वकात्यागक
रे॥जोभिनयाज्ञानसोअवरसर्ववाकविलासवेआश्चर्यहै॥अरुवहिआत्मावासेत
मकेवेसेतहै॥जेसेनाभपहीयेरथकेकीजोसंपूर्णलकरीवासोद्विढहै॥तेसेनाड
काजोसाधमननरूपकमलकेषचतहै॥वानाडकासोअवरसर्वनाडकामिसूतहै॥

मद्धयामननकेआत्मायामांतचाहतहै स्वइछतीविराजतेहै॥ वाआत्माकोश्रणवजानकरउ
पासनाकरे॥ जोवोहैतुमकोवासेतेपारकरनेसलताअज्ञानकीसोआतउतमहै॥ वोहै
ज्ञातासर्वकाहै॥ आरवोहैसर्वमोपरनेहै॥ आरवाहीकीशक्तिमद्धपघवीआरआकाशवे
है॥ आरमद्धयाशरीरमानुषकेजाकोब्रह्मपुरीकहीयतहैवोविराजतेहै॥ आरबुद्धसोज्ञा
नप्रकाशराषतहै॥ आरछिद्रजोमद्धमननकेहै तामोप्रकाशतहै॥ आरवसतहै॥ साध
वाकेउपासनाकरे॥ जोवोहैआत्मासाधमननकेकेवलमननरूपमयाहै॥ आरस्फुर
नतादेनहाराशरीरआरइंद्रेकोवहीहै॥ शरीरकोमद्धमननकेजोकेवलअंनरूपदे
निकटताराषतहै॥ आरमनकोअंनरूपयासोकहाहै जोसंपूर्णउतपन्नमननहीसो
मईहै॥ जोउतपन्नमईहै वोकामघणहै॥ आर्धयाहैजुवामोलीनहोतहै॥ वोहैबुद्धमा
नाजिननेसमदमनकीयाहैसोवाकोप्रकाशसाधबुद्धकेदेषतहै॥ आरवोहैआत्माके

बलआनंद ही है॥ अर अविनाशी है॥ अर प्रकाश है॥ वाके देषणे सो गांठ मन की षुलत है॥
अर्थ्य याहि जो मनरूपी कमल जो अधोंहि कों है॥ सो ऊर्ध्व को होत है॥ अर संपूर्न जो सं
बूह अशेष काके है ताका नाश होत है॥ अर सर्व शुभकर्म वा आत्मप्रकाश के तेजसो द
ग्ध होत है॥ म द्र सर्व ज्ञाता के सर्वज्ञाता सो सर्वगत है॥ अर मद्र अल्पगत के अल
पगता सो अलपगतर है॥ अर अहंबुद्धि के मो प्रकाशत है॥ वहि ब्रह्म अलिप्त अर
शुद्ध है॥ अर षंड उषंड नहीं भया॥ अर जैसा प्रकाशरूप है॥ जो प्रकाश को प्रकाश
है॥ अर जैसा चमतकाररूप है जो चमतकार को चमतकार है॥ वहि जो आत्म
ज्ञाता है॥ सो जीवात्मा अर आत्मा को एक जानत है॥ अर जानत है जो प्रकाशरू
पि अरु सबका अरु नक्षत्रो का अरु विद्युत का अरु अग्नि का वाके प्रकाश को नहीं
प्राप्त हो सकत॥ अतेव जो वहि वाके प्रकाश सो प्रकाशत है॥ अर सर्व प्रकाशवाही

१० सोहै॥ दिनकरअरुअगनिशशिकरअरुपवनवाकोनहींप्राप्तहोसकें॥ अरुसंपूर्णस्वरूवाकोनहींप्राप्त
होसकें॥ इंद्रियमार्गसोवाकोनहींप्राप्तहोसकीयत॥ केवलमार्गआत्मभावनाकेजोईसकाल
मोएकरस्याहेप्राप्तहूजीयतहै॥ अरुभिन्नयासोअवरसंपूर्णउपासनासकामहै॥ अरु
प्रगटहैजोअवरउपासनामोभगातरूपजोहैदीनताअरुकर्मरूपजोहैउपासनासो
मुक्तिनहींहोत॥ अरुवहिआत्माउपादानसर्वत्रहोताहै॥ अरुअपुनेप्रकाशसो
आपहीप्रकाशतहै॥ अरुअस्पर्शअरुरूपहै॥ जोकछुदेखीयतहैसर्ववहीब्र
ह्महीहै॥ अरुवहिब्रह्मअविनाशीहै॥ पूर्वओरवहीहै॥ पश्चिमओरवहीहै॥ दक्षणओ
रवहीहै॥ वामओरवहीहै॥ सर्वठवरवहीहै॥ जोकछुदेखीयतहैसर्ववहीहै॥ ब्रह्म
गंभीरहीहै॥ इतिचतुर्थमुंडकउपनिषदसमाप्तम॥ इयपंचीजातिउत्तमहै॥
और आपसमोसदाएकठेहीरहतेहै॥ अरुएकद्वितीयसोनिरखतहै॥ अरुएक

ब्रिछमोरहतहै॥एकवासोवाब्रिछकेफलोंकोमिष्टजानकेभषणकरतहै॥अरदूती
यकछुभषणनहीकरत॥अरदृष्टाहीहै॥वहिजोदूयपंषीवरननकीयेजुएकभष
णकरतदूतीयदृष्टाहै॥भषणनहीकरत॥वहिजोभक्षणकरतहैसोजीवात्माहै॥अर
वहिजोनहीकरतअरदृष्टाहीहैसोपरमात्माहै॥अरवहिजोब्रिछहैसोयहिश
रीरहै॥अरवहिजोफलयाब्रिछकेहै॥जाकोजीवात्मामिष्टजानकरभष
णकरतहै॥सोकर्मभोगहै॥अतेवजोआपुनेस्वरूपकोनहीजानत॥याही
अज्ञानसोवाफलोंकोभोगताहै॥अर्थयहिजोसदामग्नहरषअरशोककै
आउकोवीतावतहै॥अरजववाद्वितीयपंषीकेभेदकाज्ञाताभया॥जोयहिको
रूपदार्थकाभोगतानही॥केवलकौतकहीदेषतहै॥तववाहिहूसर्वभोगोंसो
रहतहोतहै॥अरतदवतहोतहै॥अर्थयहिजोपाशकर्मोकेसोमुक्तहोतहै॥

औरनिरसंदेहऔर हरषशोकसोरहतहोतहै॥औरजीवात्माजवयाभांतकेज्ञानको
प्राप्तहोतहै॥तवऐसेस्वरूपआपुनेआत्माकोदेषतहै॥जोवहिआत्मास्वप्रकाश
सोप्रकाशतहै॥औरउतपतकरनहारसर्वकोहै॥औरधनीसर्वकोहै॥औरसर्व
ठवरपूर्नहै॥जवयाभांतवाकोनिश्चेसोजानै॥तववहिआत्मज्ञसुभऔरअसु
भकर्मोकेफलोकोदूरकरकरसाधवाशुद्धआत्माकेएकहोतहै॥
औरवहिप्राणोकाप्राणहै॥औरवहिमद्धसर्वतत्वोकेप्रगटहै॥

जो कोउ वाको आपुना स्वरूप जानत है ॥ अरु वाही ज्ञानी आत्मरूहै ॥ अरु वहि आत्म जो कछु
स्वइछत उचरै ॥ वाके वचन मो यहि वीचार नहीं करतव्य ॥ जो यहि वचन उत्तम अथवा न्हन
कहत है ॥ जो कछु वासो शवद उचार होत है ॥ सो ब्रह्म ही सो होत है ॥ अतेव जो वहि केवल
ब्रह्म ही है ॥ अरु ब्रह्म सर्व सो गंभीर है ॥ अथ मस्तं वा ज्ञानी ॥ सदा आत्म आनंद ही सो
आनंद संयुक्त ही रहत है ॥ प्रगट जो आनंद इंद्रुके विषयो का विनाशी है ता मो दीन
नही होत ॥ अरु आपु ने आपही सो विलास करत है ॥ अरु आपु ने रस सो रस लेत है ॥ अ
र आपुना आपु ही मित्र है ॥ अथवा वहि योगादिक कर्म वा अजपा का अभ्यास हू क
रे ॥ तो हू ज्ञानवानो मे अरु तत्ववेत्तो मे अत गंभीर तर है ॥ अर्थ यहि जु वापाइ उंउ
काहू का नहीं ॥ स्वइछत वरतत है ॥ अरु मार्ग प्राप्त वा आत्मा का केवल सत्व ता अरु व
सो अभ्यास ही है ॥ अरु वाको त्याग करना विषयो के रसो का यतन सो नहीं ॥ अतेव

जोमनतेंहीवाकेंचित्तकीवृत्तयाविषयोंकेरसोंकीउचाटताकोंप्राप्तभईहै॥याकोंसत्तचाहीयेजान॥
अरसदामनद्रयाआपुनेशरीरहीकेवाआत्माकोजोमहद्प्रकाशहैदेखतेहै॥अरवहिजोसर्व
दोषोंअरपापोंसोंमुक्तभयेहैसोज्ञानवानहै॥अरज्ञानवानोंकोदेखतेहै॥जोकोउसत्तता
राखतेहैवहीजीतपावतेहै॥अरजेमकोउसत्तताअरअंतहकरनसुद्धनहीराखतवहिजी
तनहीपावत॥अरजोमार्गसोंवाकोंप्राप्तहूजीयतहै॥वहिमार्गहूसत्तहै॥अरजोज्ञानीयोंकोकोउचा
हनहीरही॥सोयामार्गमेंसत्तताकेसोवाकोंप्राप्तहोतहै॥अरवाठवरमोंप्राप्तहोतहै॥जहांभंडारहै
सत्तताको॥अरवाठवरमोंसत्तरूपजोहैआत्मासोपरनेहै॥अरवहिगंभीरहै॥अरआपुने
हीप्रकाशसोंप्रकाशतहै॥अररूपवांकामनद्रवीचारकेनहीआवत॥यद्यपिसर्वसूक्ष्म
पदार्थोंसोंसूक्ष्मतरहै॥अरसूक्ष्मदृष्टमोंनहीआवत॥वहिदृष्टमोंआवतहैदूरसें
दूरतरहै॥अर्थयहिजोअज्ञानीयोंकोदृष्टनहीआवत॥अरनिकटसेंनिकटतरहै

अरदूरसोदूरतरहै॥अरज्ञानीयोकोसर्वहीठौरउपरतहै॥अरनिकटसोनिकटतरहै॥अरवांको
मनबुधिकमलरूपमनकेदेषतहै॥वांकोसाधनेत्रोकेनहीसकीयतदेष॥अरवांकोसाधवा
कइंद्रीकेउस्तुतिनहीसकीयतकर॥अरवांकोसाधाविस्सइंद्रीकेउसोकोनहीसकीय
तप्राप्तहै॥अरवांकोविस्सतपस्याकेअरकर्मोकेनहीसकीयतप्राप्तहै॥वाकोकेवलशुद्धज्ञा
नहीसोप्राप्तहूजीयतहै॥अरमनुयाकेआत्मभावनासेअरसिद्धांतकीनिष्ठासोशुद्धअर
प्रकाशरूपभयेहै॥साधवामनोकेजोकालमोवहिभावनावाआत्माकीजोवंठतनहीभया
अरध्यानसोरहतहै॥अरज्ञातव्यहै॥करतहैसोवांकोदेषतहै॥अस्वाआत्मास्सूक्ष्मकोभिन्नसु
क्ष्मनकेनहीसकीयतप्राप्तहै॥अरनहीसकीयतजाण॥अरमनबुधमनशुद्धकेजेअस्तन्तर
हैं॥अरपंचप्राण॥जोप्राणअपानव्यानसमानउदानहै॥अरसर्वइंद्रीयांजेसेमणि
रीरहै॥अरपंचप्राण॥तेसेसंपूर्णस्सूक्ष्मशरीरमनबुधमनकेउस्सतवतहैपरोयाहूयाहै॥
यास्सतमोपरोईयतहै॥

जो कालमो मनसुद्ध भया॥ ताकालमो सर्वस्वरूप शरीर आत्मा भया॥ अरु जैसे सा शुद्ध मन जो
आत्मा है सो आपनी अवस्था को प्रगट करत है॥ अरु लक्षण जैसे शुद्ध मन का यहि है॥ चा
ह जो लोक की अरु परदार्थ की करत है तिसी कालमो वहि चाहनां की पूर्न होत है॥ ताते साध
आत्म भावना के आत्मा का है को न प्राप्त होत है॥ आत्मा अपुन स्वरूप ही है॥ अरु सर्व काम
ना का आत्मा भ्रमा है॥ जो कोउ अर्थ अरु परमार्थ दोनो को चाहे॥ वहि या भात के ज्ञान
वान को अतीत श्रद्धा सो देखे॥ इति पंचम मंत्र का समाप्तम्॥ अरु जो कोउ या शुद्ध मन को
ग्रह आत्मा जाने अरु ग्रह को केवल आत्मा ही जाने॥ अरु या ने जो संपूर्न चाह है अरु आ
सा अरु मनोर्थ सब या ग्रह ही के है॥ अरु सर्व लोक या ग्रह मो है॥ अरु वाके प्रकाश सो
सर्व लोक देषीयत है॥ अरु संपूर्न लोक प्रकाश वाके शुद्धके सो शुद्धिरूप परत है॥
या भांत जो कोउ साधवा आत्मा के निहकाम अरु सत्त्व चाह उपासना करे॥ तां सो श

रीरमें जो अध्यास द्दिढ है सो दूर है॥ अर जो कोउ सकाम वासते मनोर्थों के उपासना करे वाके सर्वम
नोर्थ सिद्ध होइ है॥ अर जो नें निःकाम उपासना करी है॥ संपूर्ण चाहनां वाकी या मद्ध आत्मा के
लीन होत है॥ अतेव जो वाकी चाह आत्मा है॥ तातें वामें चाह नहीं रही॥ अर वा आत्मा को भि
न ज्ञानी सिद्धांत के अत शास्त्र के अधेन से अर ईस्वर का हू उपासना॥ अर कर्मों सों नहीं सकी
यत प्राप्त है॥ अर भिंन वुद्धि सिद्धांत की सै अवर वुद्धि सों नहीं सकीयत प्राप्त है॥ अर्थ यहि ज
वल तव वुद्धि अवर पदार्थों याहीक होत है॥ तव लग या को ग्याहीक नहीं होत॥ अर भिंन अज्ञात
म ज्ञो के संग सों अवर संग सों वा को नहीं सकीयत प्राप्त है॥ न द्वम न नहीं के अपुने आपको
दिखावत है॥ अर मन जा का भिंना सिद्धांत सों अवर या पदार्थों में वचत है॥ अर्थ यहि सा
घसत अर इस्त्री अर धन अर इंद्री के जो विषै है अर या का संग है जो को॥ अर पूर्वि तें शास्त्र
ही को अधेन करते है॥ अर वाही को श्रवण करत है॥ अर वाही के कर्म करत है॥ [illegible] मार्गी

१२१ केकर्मोमो और ज्ञानमो और प्रणवके अभ्यासमो जाको ब्रह्मभावना कहीयत है॥ नही प्रवर्त्तत॥ अतेव
जो ऐसे अंतस होहीन है॥ ताते वोहि आत्माको नही प्राप्त होत॥ नही प्राप्त होत॥ और जाको ऐसे अंतअ
वस्था यथार्थ प्राप्त भई है॥ वोहि मनुष्य चिदाकाशरूप ब्रह्म के जो मननके है॥ और वोहि ब्रह्म
ही आत्मा है॥ आगमन करत है॥ और केवल वही जो है सो होत है॥ अर्थ यहि जो जीवात्मा
वाका परमात्मा होत है॥ संपूर्ण ज्ञानी और अभ्यासी जव वाको प्राप्त होत है॥ तव ऐसे अंत
और ज्ञान सो तृप्त होत है॥ और जानत है॥ और समजत है॥ जो हम सों कछु करतव
नही रहा॥ संपूर्ण कर रहे है॥ याही सो मन कर करत न कर कर प्रविर्त्ति संसार की को
त्याग करत भये है॥ और आलिप्त है॥ और सुखस्वरूप है॥ और वोहि ज्ञानवान आत्मा
को जो मनुस सर्व के आहीक होकर केवल सर्व ही होत है॥ और उपनिषदों सो मार्ग
ऐसे अंत के सो निश्चै कर कर दृढ करत भये है॥ जो आत्मा ही सत है॥ और भिंन आत्मा

सो जो ज्ञान है इहां मिथ्या है॥ अरु जिन्हुने संन्यास अरु त्याग रसो कारण कौं तिनके अंगीकार क
री है॥ अरु आपको साधन तपस्या के शुद्ध कीया है॥ अरु प्रणव सो उपासना राखत है॥ वोहि जो का
ल मो या संसार सो ब्रह्मलोक को गमन करत है॥ सो यह ब्रह्मलोक के या लोक मो इस्थित होकर जब ब्र
ह्मा सरगुण अवस्था विनाशी सो मुक्त को प्राप्त होत है॥ वोहि हूं सिद्धांत ज्ञान को पाइ कर मुक्त हो
त है॥ अरु जब ज्ञानी सिद्धांत इस्थित शरीर का त्याग करत है॥ तब पूर्ण इंद्र वां के इंद्रीया के विका
र जु है विषे॥ अरु वा उपासना सो मन्द अरु पुन्य आदि एता देवता के प्राप्त होत है॥ अरु शुभ कर्मों के
फल जो स्वर्ग को दिखावत है॥ अरु अशुभ कर्मों के फल जो नरक को दिखावत है॥ सो वा मोन
ही रहे॥ निर्विकल्प रूप अरु जिन मो दग्ध भये है॥ ताते जीवात्मा वां का साध परमात्मा अरु ते
ऊं भी अरु दोष के एक होत है॥ जैसे नदीयो के संबूह मार्ग के अंत को प्राप्त होकर अरु नाम
अरु रूप अरु पुन्य का त्याग कर कर ब्रह्म समुद्र के एकता को प्राप्त होत है॥ तैसे ही ज्ञानी अरु सि

ंतीनामअरूपअपुनेकोत्यागकरमहत्आत्मागंभीरकेप्राप्तहोतहैं॥अरवहिजोगंभीरहैसोयअ
पुनेप्रकाशकेप्रकाशतहैं॥अरव्यापकहैं॥अरसर्वठवरहैं॥जोकोउवाब्रह्मकोनिश्चैसोसमुझे
ब्रह्महीहो॥अरकंकीसंतानमोकोअअज्ञानीअरआत्मअज्ञातानहोइ॥अरवहिसल
ताशोकअरमोहअरदुःखअररोगकीस्यो॥अरसलताचाहाकीसोअरकर्मोकीसोपारहो
तेहैं॥अरथयहिजोआधअरव्याधवांकोप्राप्तनहीहोत॥अरवांकेमनकीगांठखुलजातहैं॥अ
रअविनाशीहोतेहैं॥वहिवचनउपनिषदकेवाकोउपदेसकरनेकोयोगहैं॥जानेनिहका
मकर्मजोहैवेदोक्तयोगादिकसोकीयेहैं॥अरब्रह्मनेप्रद्धहो॥अरसंदर्शनकर्मअपहीनोह
जिराध वनकीयेहैं॥अरवेदकेअर्थाकोसमझाहैं॥अरआत्मयज्ञासीहैं॥भिनयासोअवरको
नचाहीयेउपदेसकीया॥यहीसम्प्रांतविद्यायाभांतअंगिरसरिषीश्वरसायसेवकअपु
नेकेउपदेसकीया॥अरकहतभया॥जाकोनिश्चैवेदपरनहीताकोयहिउपदेसुनचाही

येकीया॥ नमस्कार ज्ञानीयोके श्रोता अरवक्ता को ज्ञानकी प्राप्त हो॥ और सर्व को आनं
द प्राप्त हो॥ इति मुंडक उपनिषद अथर्वण वेद भाषा समाप्तं॥ ५॥ २१॥ ॐ॥ ॐ॥
ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ अथ कठनो उपनिषद अथर्वण वेद॥
प्रजापति के सेवक प्रजापत प्रति प्रश्न करत भये॥ तद्यथा॥ मनसा यज्ञा ज्ञा अरचा
हि किसकी फुरत है॥ अर गमन करत है॥ अर प्राण जो सर्व को मूल है॥ जो सा यज्ञा ज्ञा
अरचाहि किसकी फुरत है॥ अर समनु करत है॥ अर वाक इंद्री सा यज्ञा ज्ञा अरचा
हि किसकी उचरत है॥ अर चक्षु इंद्री सा यज्ञा ज्ञा चाहि किसकी उचरत है॥ देषत
है॥ अर श्रवण इंद्री सा यचाह अर ज्ञा ज्ञा कों की श्रवण करत है॥ प्रजापता वाच॥
श्रवण इंद्री सा यज्ञा ज्ञा अर चाह श्रवण इंद्र को जो श्रवण इंद्र है श्रवण करत है॥
अर वाक इंद्री उचरत है॥ अर चक्षु इंद्री सा यज्ञा ज्ञा अर चक्षु इंद्रीयो की जो चक्षु इंद्री

हैदेषतहै॥ अरमनुसाक्षआज्ञा॥ अरचाहवामनकेजोमनकोमनुहै वीचारतहै॥
अरस्फुरतहै॥ अरगमनआगमनकरतहै॥ अरप्राणसाक्षआज्ञा॥ अरचाहवाप्रा
णकेजोप्राणेकाप्राणहैस्फुरतहै॥ अरगमनआगमनकरतहै॥ अरवादेवताजो
संपूर्णयादेवत्योकादेवताहै॥ अरप्रकाशोकाप्रकाशहै॥ जोकोउयामांतजानेवीहज्ञा
नीहुउ अरअचलहै॥ अरपाछेशरीरत्यागकेमनु अरउसीवनाशीहोतहै॥ अर
वीहआत्माहैजाकोचक्षुइंद्री अरवाकइंद्री अरमनुनहीप्राप्तहोत॥ जोवाकोसा
क्षमनकेनसमजसकीये॥ अरसाक्षआज्ञाशास्त्रकेनसकीयेप्राप्तहै॥ तोवां
कोकिसभांतसकीयेसमजे॥ अरवीहजाननेअरअनजाननेसोपराहै॥ अर
पुरातनरिषीश्वरोसोंयाभांतश्रवणकीयाहै॥ जोवाकइंद्रीवांकोनहीप्राप्तहोत
अरवीहवाकइंद्रीसोप्राप्तहोतहै॥ वाहीकोब्रह्मजान॥ वीहवेअंतहै॥ अरचक्षुइंद्री

इन्द्रियाँ सोती हैं आत्मा अ नतहै

वा को प्राप्त नहीं होत ॥ अउर वहि चक्षु इंद्री को प्राप्त होत है ॥ वाही को ब्रह्म जान ॥ जा को चक्षु
इंद्री ग्राहीक होत है ॥ सो ब्रह्म नहीं ॥ वहि केअंत है ॥ अउर जा को चक्षु इंद्री ग्राहीक होत
है ता को अंतु है ॥ अउर जा को अंत है सो ब्रह्मु नहीं ॥ अउर जा को श्रवण इंद्री नहीं ग्राही
क होत ता को ब्रह्म जान ॥ अउर जा को श्रवण इंद्री ग्राहीक होत है सो ब्रह्म नहीं ॥ वहि
केअंत है ॥ अउर जा को श्रवण इंद्री ग्राहीक होत ता को अंतु है ॥ अउर जा को अंत है सो
ब्रह्म नहीं ॥ अउर मनु जा को प्राप्त नहीं होत अउर वहि मन को प्राप्त होत है ॥ वाही को ब्र
ह्म जान ॥ अउर जा को मनु प्राप्त होत है सो ब्रह्म नहीं ॥ वहि केअंत है ॥ अउर जा को अं
त है मनु वां को ग्राहीक होत है ॥ अउर जा को अंतु है सो ब्रह्मु नहीं ॥ अउर जा को प्राण
स्फुरनता नहीं सकत करि ॥ वहि प्राण को स्फुरनता देत है ॥ ता को ब्रह्म जान ॥ अउर जा
को प्राण की स्फुरनता ग्राहीक होत है सो ब्रह्म नहीं ॥ वहि केअंत है ॥ अउर जा को अंतु है

जिज्ञासु

११४ सो ब्रह्म नहीं ॥ हे यज्ञासी जो तूं समझे जो मेरे गुरु ने ज्ञात उत्तम समझा है ॥ तो या समय ते
री विज्ञासी है ॥ यांते जो तै ने गुरु आपुने को अरु आपको अरु गुरु की समझ को अरु
आपुनी समझ को भिन्न समझा मूल समझ यहि है ॥ जो आपको ब्रह्म जान्या चाहि
ये ॥ जो ज्ञाता अरु ज्ञान अरु ज्ञेय को एक समझे ॥ जो या एकत्व ज्ञान सो ईश्वर परा न
हीं कछु ॥ अरु जो मद्ध सर्व देवत्यों के एक का हूं देवता सो ब्रह्म को आरोपे तो यहि हूं अ
ज्ञान ता है ॥ याते व जो वाहि मद्ध सर्व के पूर्न है ॥ जो तू या भांत बूझे जो यहि संपूर्न
एक मै ही है ॥ यहि सत्य है अरु इही ब्रह्म है ॥ गुरोवाच ॥ समझा तै ने ॥ सेवकोवा
च ॥ मै न हीं समझा ॥ पुनः गुरोवाच ॥ जो तू न समझता तू तो काहे को कहता जो मै ने
नहीं समझा ॥ ताते इसी वचन तेरे सो प्रगट होता है जो समझा है तै ने ॥ आपको
अव यहि वचन नहीं तेरा कहती यम या ॥ जो कहता है मै न हीं समझा ॥ ताते दृश्य पदार्थ

एक देवता से ब्रह्म नहीं सर्व देवतन में है।

ऐसे न कहि यम या कहते हैं

मैं और
अन समझ
ना के बीच
जो समझ
है वही
बोले है।

समुझैतैने एकआपको द्वितीयआपुनेआनसमझऐको ॥ यासोतुझमोतें मेसमझि द्वितीयमई ॥ और
इहीसमझ केवलब्रह्मलहै ॥ इसीकोब्रह्मसमुझाहै तैंने ॥ काहेकोकहतहै जोब्रह्मकोनहीसम
झामैंने ॥ मद्धयाइस्थानकेसमुझातैंने ॥ औरसमझऐकीसंधमोहमइस्थितमयेहै ॥ जोको
आपकोसमझतहै वहिकहतहै जुमैनेनहीसमझा ॥ वाहीनेसमुझाहै ॥ जोकोउकहतहै
जुमैनेसमुझाहै वानेनहीसमझा ॥ आतेववाकोसमझप्राप्तनहीमई ॥ और जानेसम
झवानेनसमुझा ॥ और जानेसमुझवानेवर्ननकीया ॥ और जानेसमुझावरनन
कीयावानेनसमुझा ॥ समझएकाआनसमझएगा ॥ वोकोसमझएगाहै ॥ और वचन
वामैंनहीं ॥ यामांतजानेसमुझवहि अविनाशीऔरमुक्तभया ॥ और आतेश्रेष्ठतमको
औरआत्मस्वरूपकोप्राप्तभया ॥ और यहिजोकहतहै कारनमुक्तकाज्ञानहीहै ॥ सोव
हैज्ञानइहीहै ॥ जोआपुनेआपकोपछानना आरइहीमुक्तहै ॥ जोआपुनेआपमोप्राप्त

होना॥ जो तैनै याभांत समझा तो इहीसत्त है॥ इहीसत्त है॥ अरजो याभांत न समझा तो उही
ना स्तरूप है॥ अर इही असत्त है जानै म ब्रह्म सर्व के वां को समुझ वा नै या संसार को त्याग
कीया॥ अर मुक्त अर अविनाशी भया॥ इति प्रथम ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म ए समाप्तम्॥ ॐ॥
अथ बृहल्लीला ब्रह्म ए॥ जा काल मो मम ब्रह्म सुरो अर असुरो सें विलद्ध भया॥ अर सुरो की जी
त भई॥ अर देवत्यो को यहि ज्ञान भया॥ जो जीत हम सो ही भई है॥ अर यहि जीत वां को स
दाशिव ने दई थी॥ अर सा घ सर्व के वही जीत दे त है॥ तब वा सदाशिव ने जो उतपत्त का
ने आत्मा है जाना॥ जो इनो ने अपुने मन मो हंकार उतपत्त भया है॥ तिसी काल मो ज
वयाभांत वा सदाशिव ने हिदे मो धारा॥ तब वा सर्व देवत्यो के एक द्वि ती मे विलद्ध उ
तपत्त भया॥ अर भिन्न भिन्न एक एक अपमो मम त्व जीत का आरोपत भये॥ तब वहि
आत्मा वा सते दूर करने विलद्ध अर हंकार देवत्यो के॥ वा ठव रसा घ आच जे रूप मा

नषके जो नमस्कार को योग्य था तगरभया ॥ अरु सुरों ने वां को न पधरावना ॥ अरु संसर्न देवता एकठ
वरहो करीन कर अग्नि देवता के जो प्रकाशक सर्व मानुषों के मारगों का है ॥ गमन करकर
कहत भये ॥ हे अग्नि मारगों के प्रकाशक तूं गमन करकर वूयु यहि प्रकाश जो उतपतम
या है सो गिलया है ॥ अग्नि कं जो जीकार करकर करीन कर वां के गमन करत भया ॥ अरु मयते जु
वा नमस्कार को योग के सो नसंक्रिया त्रहमकरा ॥ तब वाने आप सो पूछा तूं किया शक्त सर
वल राषत है ॥ अग्नि उवाच ॥ मैं अग्नि प्रकाशक हों ॥ अरु मैं जु पुने वल प्राक्रम सो सर्व
पदार्थों को भस्म करता हों दग्ध करूं ॥ वा नमस्कार योग ने त्रिण षोदा दूर्यो ॥ आगे वां के डारा ॥ अरु
कहा जो या को दग्ध करू ॥ अग्नि कष्ट कगन के जेताइक वलु अरु प्राक्रम था ते ताही वास
ते दग्ध करने वा त्रिण के करत भया ॥ तो हू वा त्रिण को न सका दग्ध करा ॥ लजुत भया ॥
अरु फिर करे देवत्यो के पुनः आगमन करकर साथ वां के कहत भया ॥ जो मैं या आचर्ज

रूपकोनहींसकताभ्समर्थ॥अरजान॥ततःसर्वदेवतानिकटपवनकेगमनकरतभये॥सुरो
वाच॥हेपवनगमनकरकरनिश्चैयाअज्ञाचजेतूपमानवकाकरा॥जोयहिकवनहै॥पवन
अंगीकारकरकरनिकटवानमस्कारकोयोगकेगमनकरतभया॥अरअधिकप्रकाशते
तेजवांकेसोकछुवासोनसकाप्रहमकर॥वानमस्कारकोयोगन्केआपहीसोसाथपवन
केअज्ञाकरीजोतूकवनहै॥पवनोवाच॥तें॥मैपवनहोंसंपूर्णब्रह्मंडमोगमनहैमे
रा॥सदाशिवउवाच॥तुऊमोकियाशक्तिअरपराक्रमहै॥पवनोवाच॥मैइस्थापनक
रनहाराअरउडावनहारासर्वकाहों॥वानमस्कारकोयोगनेपूर्ववतीतृणयाहूके
आगेराखा॥अरकहायाकोउठाउअरउडाउ॥पवनतेताकछुवलुपराक्रमुराषता
थावासतेउथापनकरनेअरउडावणेवातिसाकेप्रगटकरतभया॥अंतमोवातृ
णकोउठायअरउडायनसका॥पुनःदेवतानिकटइंद्रकेगमनकरतभये॥

सूतोवाच॥ इंद्र नमस्कार को योगराजा हमारे तुम गमन करे कर निश्चै या आज्ञा अरु जे रूप काके
जो यहि आज्ञा अरु जे मानुष नमस्कार को योग करवनु है॥ इंद्र अंगीकार करकर निकट वा
नमस्कार को योग के गमन कीया॥ तब ही इंद्र वा ठवर मो गमन करत भया॥ जो कष्ट प्र
दमन करे॥ एते मो वहि नमस्कार को योग दुर्लभ इंद्र की सो गुप्त भया॥ इंद्र वा ही ठवर आज्ञा
अरु जे मानुष की॥ उमा पार्वती को जो आनि संदरी देवी है देषत भया॥ अर वाहि देवी
महादेव शंभु की शक्ति अपर पराक्रम है॥ तब इंद्र ने वा देवी को प्रणाम कीया॥ इंद्र देवी
प्रतोवाच॥ यहि आज्ञा अरु जे रूप मानुष जो या ठवर था कहां अंतर ध्यान भया॥ उमा
इंद्र प्रतोवाच॥ यहि ब्रह्म था॥ अर जीत दैतो की जो तुम आप पर अरोपत हो अर प्रसं
न होत हो॥ सो वा जीत का देन हारा यही था॥ तब इंद्र को ज्ञान भया॥ जो यहि आज्ञा अरु
जे रूप मानुष नमस्कार को योग आत्मा था॥ आते व जो अग्नि अर पवन अर इं

इया तीन देवता को ब्रह्म का साक्षात्कार भया॥ ताते यहि देवता मो श्रेष्ठ भये॥ और इन मे
हूं इंद्र अति श्रेष्ठ भया॥ और देवी हू जो शक्ति शिव की है ब्रह्म वत नमस्कार को योग है॥ औ
र वेद हू नमस्कार को योग है॥ और तेव जो प्रथम भया ब्रह्म को इंद्र ने वेद सो श्रवण की
या था॥ जो या भांत ब्रह्म है॥ वही ब्रह्म विद्युतवत द्रिष्ट सो और तर ध्यान भया॥ और
वाही को सदाशिव कहत है॥ और वाही शिव को विष्णु और ब्रह्मा कहीयत है॥ और वा
ही मन सर्व इंद्रे के जीवात्मा रूप सो विराजत है॥ और री विद्युत के चमतकार वत
साक्षात रूप मानुष के प्रगट भया था॥ और मनुष्य शरीर मानुष के मन न रूप हो कर प्र
काशत है॥ और उत्पतकार न चाह का वही है॥ और वा की चाह के रूप को उमा
पारवती कहीयत है॥ और वाही चाह माया है॥ और वाही को लगन कहीयत है॥ और
वाही को प्रेम कहीयत है॥ और वही विद्या है॥ और अविद्या है॥ और इही मन जो

साथ जीवात्मा के एक है ॥ ताकों ब्रह्म जानकर जो कोऊ साधवां के उपाशना करे ॥ वहि मब्रह्मस
वे जीव धारीयो के श्रेय है ॥ अरु श्रेय ताको प्राप्त है ॥ या प्रकार जब इंद्र ने संपूर्ण देवत्यो को उप
देस कीया ॥ तब सर्व मद्रुगण वके उपशना केयतन कर तमये ॥ अरु वेदो के ब्रह्म की ज्ञा
न मे प्रवर्त्ते तमये ॥ अरु मद्र दमसम के अरु योगादि कीन ह का मकर्मो के साथ अर्थात द्रिउ
ताके उदत मये ॥ अरु सत्र को जो मूल सर्व का है अंगीकार करकर तमये ॥ अतेव जो यहि उपनि
षद सत्र के मारग को प्रकाशत है ॥ ताते जो कोऊ यां का ज्ञाता अरु वक्ता अरु श्रोता हो वे सर्व पा
पो सो छूटे है ॥ अरु ज्ञान का गाढी होवे है ॥ अरु उंमीर पद को प्राप्त है ॥ नमस्कार ज्ञानीयो के
सर्व को आनंद है ॥ नमस्कार प्रजापत को ॥ अरु वाके सेवकों को ॥ इति कठ नो उपनिष
द अथर्वण वेद भाषा समाप्त ॥ स ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अथ पैवल उपनिषद अ
थर्वण वेद आनंद ॥ अस लावणा रिषी प्रार निकट ब्रह्मा के जो नमस्कार को योग है ॥

गमनकरकरप्रश्नकरतभया॥असोलावणउवाच॥ब्रह्मविद्याकामैंउउपदेसकरो॥जोवीद्
ज्ञानअतिगंभीरहै॥अरबुधवानसदावाकाअभ्यासकरतहै॥अरज्ञानशास्त्रअतिगं
भीरहै॥गुह्यहै॥अरवाकेज्ञानसोमानुषसर्वदनहीकालमेंपापोंअपन्योकात्यागक
रकरसाधब्रह्मकेजोअतिगंभीरपदसोगंभीरपदहै॥प्राप्तहोतहै॥ब्रह्मअसलोवनप्रत
उवाच॥उउ॥सत्वप्रतीतसोअरगुरकीटहलसोअरब्रह्मभावनासोअररसमदमसोवा
ज्ञानकोप्राप्तहूजीयतहै॥रसोकेअंगीकारसोअरदानयज्ञकेकर्मसोअरधनकेसं
ग्रहकरनेसोअरपिञकर्मोंसोवाकोनहीप्राप्तहूजीयत॥अरनिहकामकर्मसोजोये
ज्ञादकहै॥अरजामेंशरीरकेकल्याणकाअभावहै॥धर्मकीवृद्धिहोतहै॥अरवाका
साक्षातकारकेवलत्यागहीसोहोतहै॥अरवासतेप्राप्तवाकीकेसर्वत्यागचाहीयत
है॥आत्माआनंदस्वरूपमध्रमननरूपमंदरकेजोचिदाकाशहै॥तामेंसाधरूपप्रका

रसास्वाद दान यज्ञ कर्म धनसंग्रह और पितृकर्म से ब्रह्मप्राप्ति नहीं होती

निष्काम

उस को हृदय प्रकाशे है।

शके प्रगट है॥ अर वाठवर मो संन्यासी साथ उपाशना के प्रवेश करत है॥ अर्थ यहि जो वाप्र
काश मो लीन होत है॥ अर वहि संन्यासी जो ततवेद को जान कर ज्ञान को प्राप्त भये है॥ अर
त्याग रसो के सो अर समद म सो अंतहकरन को शुद्ध करत भये है॥ सो पाछे शरीर त्याग के ब्रह्म
लोक को प्राप्त होकर साथ ब्रह्मा के मुक्त होत है॥ सेवक को चाहीयत है जो गुर को नमस्कार कर कर
अर वाकी आज्ञा लेकर एकांत मो सुषासन इस्थित होइ॥ आप को मलीनता अभंत्र अर वाहल्सी
सो शुद्ध राषे॥ अर सिर अर ग्रीवा अपुनी कोस्थे राषे॥ अर कोऊ शरीर अपुने को अंग स्फुरन
ता को न प्राप्त करे॥ अर सर्व भार गो का त्याग कर कर अर समद म कर कर भावना वासना ताकीजे
सर्व ठवर व्यापक अर पूर्न है॥ अर ध्यान मो न ही आवत॥ मध्य मन रूप कमल के करे॥ अर वह
आत्मा है जो हरष सो अर शोक सो शुद्ध है॥ अर केवल अपुना आप ग्रह्य पदार्थ है॥ अर साषे
अंतरूप है॥ वही प्रगट है॥ अर केवल नितआनंद है॥ अर केवल सुख है॥ अर अविनाशी है॥

शिवको बुद्ध पार्वतीको प्रकृति त्रिगुणात्मप्रकृतिको त्रिनेत्र जाने

अरहीरिनगर्भवाहीसोप्रगटभयाहै॥ अरवाकोआदिअरअंतअरमध्यनही॥ अरएकही
है॥ अरकेवलचैतनहै॥ अरकेवलआनंदहै॥ अरअरूपहै॥ अरआश्चर्जहै॥ वाआ
त्माकोजोमहादेवरूपहै॥ अर्थयाहैजोसर्वकाप्रकाशकहै॥ सोयपारवतीकेअभेद
जानकर अरत्रिगुणप्रकृतहीवाकेत्रिनेत्र जानकरयाभांत॥ जोकोउसाधवाधनीअं
भीरकेजोप्रगटकरनहारापंचतत्वोकाहै॥ अरवामेअविद्यारूपतमनहीपाईयत
अभ्यासकरनेसोवामेप्राप्तहै॥ वहीहैब्रह्मावहीहैमहादेवअरवहीहैइंद्रअर
वहीहैअविनासीअरवहीहैअर्धमात्रा॥ जोअनाहदस्वरूपशब्दब्रह्महैसोवही
है॥ अरवहीविष्णुहै॥ अरवहीकालअरवहीअग्निहै॥ अरवहीनिशाकरहै॥
जोकछुभयाहैअरजोकछुहोगावहीहै॥ जोकोउयाभांतजानेअविनाशीअर
मुक्तहै॥ अरभिनयासोमारगमुक्तकानही॥ वाहिआत्माजोमध्यसर्वतत्वोकेहै

जीवात्मा को जीव की लकडी तथा प्रणव को अध्यर की लकडी मान सान से घिस कर उत्पन्न अग्नि से पापो को जलावे

अरु सर्वतन्त्रमद्रवं खै है॥ जो कोऊ वाको मद्र सर्व के देखे॥ याही उपासना सो केवल वहि ब्रह्म गंभी
र है॥ अरु भिन्न यासे अरु वरकारन वासते प्राप्त वाकी के नही॥ ॐ॥ जीवात्मा को अरधारि की अरणि
लकरी जासो अग्नि निकसत है जानकर॥ अरु प्रणव को ऊर्ध की लकरी अरु ज्ञानसो
वा प्रणव को जो नाम गंभीर है स्फुरनता देकर॥ अरु यासे अग्नि निकासकर मुमोषको
चाहीयत है॥ सो साधवा अग्निने पापो अपन्यो को दग्ध करे॥ ॐ॥ वहि आत्मा जो जीया
मांत उत्पत्ति भई॥ जब साथ माया के जाको लग्न अरु प्रेम कहीयत है॥ एकता को प्रा
प्त होत है॥ तब शरीर को धारकर अरु जीवात्मा होकर संपूर्ण कामो करत है॥ अरु इस्त्री
के रस को अरु षान पान के रस को अरु अवर अनेक रसो को जाग्रत अवस्था मो
भोगी होत है॥ अरु मन स्वप्न अवस्था के संपूर्ण पदार्थो को आप सो उतपन्न कर
कर अरु आप ही वहि होकर वाइस्यान के रसो को जो हर्ष अरु शोक है प्राप्त होत है॥

आत्मा जब माया से लिप्त होकर जीवात्मा बनता है तब १.२.३ अवस्थाओं को ३ स्थूल के रसोंहि और हर्ष शोक को प्राप्त होता है

अरुजाकालमोसुषुपतअवस्थामोजेम्प्ररुइस्थानहै॥अरुसर्वोस्त्रिअवस्थामोलीनहो
तहैप्राप्तहोतहै॥तबवाइस्थानमोकेवलम्नरघतहोकरसुखकोप्राप्तहोतहै॥अरु
अतेवजोजीवात्माअध्यासजागतकेकर्मोकासाथलेगयाथा॥यासेपुनःस्वप्न
अवस्थाकेमार्गसेजागतअवस्थामोआगमनकरतहै॥अरुजीवात्माजागत
अवस्थामोस्थूलशरीरधारतहै॥अरुप्राणपुरषुनामराषतहै॥याभांतजोजी
वात्मातीनशरीरधारतहै॥मध्ययातीनहीशरीरकेविलासकरतहै॥अरुविच
रतहै॥अरुजबवापरमात्मामोजोउपादानकारनअरुप्रतिपालकअरुधारन
हारजगतकाहै॥अरुकेवलआनंदहै॥अरुअखंडहै॥याहितीनहीशरीरलीन
होतहै॥जबजीवात्मावाकोप्राप्तहोकरआत्माहोतहै॥अरुथियाहिजबलगती
नशरीरसोअलिप्तहोतनही॥अरुयाकात्यागनहीकरत॥तबलगअपुनेआक्रिय

स्वप्नमें जाग्रत और सुषुप्तिमें स्वप्नावस्था नहीं होतीहै यह तीनों अवस्था मिथ्याभ्रमहैं इनतीनोंसे मिलाकर जीवात्मा इसे कुछ और इससे तद्भिमानताहै -

जबतक जीवात्मा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनपुरी में को नहीं त्यागता तबतक अभिमान स्वरूपको नहीं पाता और मुक्तिको नहीं पाता।

स्वरूपकोनहीप्राप्तहोत॥अउरमुक्तिनहीपावत॥अउरप्राणअउरमनअउरइंद्रियाहीआत्मासोउतप
न्नहोतहै॥अउरआपतेजपृथ्वीपवनआकाशयाहीआत्मासोप्रगटहोतहै॥अउरपृथ्वीजो
सर्वपदार्थोंकोउतपतकरतहै॥सोवाहीसोउतपन्नहोतहै॥वहिप्रतिपालकगंभीरहै॥
वहिजीवहैसर्वका॥वहिआत्मासर्वलोकोंकाहै॥वहिसर्वसूक्ष्मसोसूक्ष्मतरहै॥वहि
सदाअचलहै॥अउरआपसोआपहै॥तूंवहीहै॥अउरवहितूंहीहै॥अउरजाग्रतस्व
प्नसुषोपत वाहितीनहीअवस्थाभ्रमासिद्धहै॥देषीतीहैअउरनहीकछु॥अउरया
हूसेभिघयाहै॥जोएकअवस्थामोद्वतीयअवस्थाकानाशहोतहै॥अउरसर्वका
लमोएकआत्माहीअचलदेषीयतहै॥अउरवहिब्रह्मजोसर्वकालमोदिषाईदे
तहै॥सोमैहीहों॥ऐसेजोकोउजानेवहिसर्वबाधकोअउरपापोंसोमुक्तहै॥अउर
जाग्रतस्वप्नसषुपतयहितीनहै॥यहजो॥यातीनहीअवस्थामोजोरसहैअउर

आत्मा इनतीनोंसे भिन्न है और इनतीन हीअवस्थाओंका साक्षीहै।

रसोकाआहीवेहै॥अरजाकोवारसोसोत्रिप्तहोतहै॥वहिआत्मानहीवहितीनहीसोभिं
नहै॥अरसादीइनतीनहीअवस्थाकोहै॥अरकेवलचेतनहै॥अरकेवलआनं
दहै॥चाहीयेजानाजोवहिमेहीहों॥अरसर्वसंसारमुझहीसोउतपतभयाहै॥अ
रमुझहीमोइस्थितहै॥अरमुझहीमोलीनहोगा॥वहिब्रह्मजोअद्वैतहैसोमैही
हों॥अरआत्मवतअतिलघोंसोलघुतरहों॥अरअतिदीर्घोसोदीर्घतरहों॥अरअ
नेकभांतोजोविस्वएभईहै॥सोमैहीहों॥अरमैपुरातनहों॥अरमहत्सर्वकेमैहीप
नहों॥अरअरूपतमैहीहों॥अरकेवलसंसारमैहीहों॥मैपाणिअरपादनहीराषत॥
अरमैऐसीशक्तराषतहों॥जोकाहूकेवीचारमोनहीआवत॥यातेजोअचक्षुस
र्वकोदेषतहों॥अरकरनोसोरहतसर्वपदार्थोकोश्रवणकरतहोंमै॥अरऐसा
प्रकाशरूपहोंमैजोमुझेकोउदेषतनही॥अरमैसर्वकोदेषतहों॥अरवहिआ

स्मीचितअरुआनंदरूपसदामैंहीहैं॥ अरुजोकछुवेदसोसमझनेकोयोगहै॥ वासर्वकाउत
पतकारनमैंहीहैं॥ अरुउतपतकरतावेदकाहूमैंहीहैं॥ अरुवेदकाज्ञातामैंहीहैं॥ अरु
नमुझेपापपुन्यरसकारतहैनपुन्य॥ अरुमैंउतपत्यअरुपरलोअरुशरीरअरुइंद्रेअरुबु
द्धइनसोंभिनहैं॥ अरुनमैंआपहैंअरुनमैंपृथवीहैं॥ अरुनमैंअग्निहैंअरुनमैं
पवनहैं॥ अरुनमैंआकाशहैं॥ जोकोउआत्माकोहृदेकमलमोंयाभांतजानेवोह
सर्वबंधकोसोंमुक्तहोइ॥ अरुजोउजानेजोवोहआत्माआबंधदैअरुअद्वैतहैअर
साक्षीहैअरुशुभअशुभपदार्थोंसोंशुद्धहै॥ वोहसाथअंभीरप्रकाशकेप्राप्तहैअरु
जोकोउउस्तीतम्रुकीउपनिषदकोसदावपाठकीयाकरे॥ जैसेमलीनस्वर्णअ
ग्निकेसंयोगसोंशुद्धहोइ॥ तैसेहीयहिहूशतरुद्रीतूफअग्निमोंबंधकोजोडारकर
शुद्धअरुमुक्तरूपहै॥ अरुब्राह्मणकोमदपानमोंप्रायश्चितहै॥ अरुजोब्राह्मणने

पाप पुण्य

प्रलय

मदपानकीयाहीहोइ॥ तौहूसाधउचारयानामोलदूकियांकेवाप्राश्चितहूंसोसुधुहोइ॥
अरजोब्राह्मणकोघातकीयाहोतोवाहूप्राश्चितसोअसुद्धहोइ॥ अरअवरजोसंप्रहने
प्राश्चितनकरनेकोयोगहैवहिहूंजोकीयेहोह॥ उचारकरनेशतनामलद्रकेसोता
हूसोमुक्तहोइ॥ अरअवरमुक्तनामजोबिनारसकोहै॥ अर्थयहिजोमुक्तइस्थान
है॥ अरमद्रशरीरकेवहीइस्थानत्रिकुटीमोहै॥ अरजोकोयाशतनलद्रकोनित्यपा
ठकरतहै॥ शरीरत्यागवैवांकेप्राणत्रिकुटीमोप्राप्तहोतहै॥ अरवाठवरमोसाधका
नबनदसदाशिवकेमुक्तपावतहै॥ अरजोकोउयाकेवलउपनिषदकोपाठक
रे॥ जैसेबनारसमोशरीरत्यागकीयेमुक्तहूजीयतहै॥ तैसेउचारकरनहाराया
उपनिषदकाज्ञानकोप्राप्तहोकरमुक्तपावतहै॥ अरसंसारकेवाधकोकीजोअदीव
लतहै॥ ताहूकोतेजयाउपनिषदकाअनुभवकरतहै॥ अरसाधवाज्ञानकेजोमद्र

याउपनिषदकेपढेंसायुज्यमुक्तिकोप्राप्तहोतहे ।। नमस्कारज्ञानीयोगीकोहे ताअरवक्ताकोज्ञानकी
प्राप्तहे ।। अरसर्वकोआनंददेहे ।। इतिकेवलउपनिषदअथर्वणवेदभाषासमाप्तं ।। ॐ ।। ॐ ।। ॐ
अथअमृतबिंदउपनिषदअथर्वणहि जोवेदहे अमृतकी ।। मनुदोयप्रकारहे एकशुद्धहे अ
रएकअशुद्धहे ।। जोमनमेंचाहहे सोअशुद्धहे ।। अरजामननिमेंचाहकीलैहे सोशु चाह
द्धहे ।। कारनबंधअरमुक्तिकामानुषकाइहीमनहे ।। मनकीचाहहीकारनबंधकाहे
अरचाहकीनिवृत्तकारनमुक्तिकाहे ।। जबलगमनुचाहेसोशुद्धनहीहोततबल मनमें चाह
गप्राप्तकीअक्षनहे ।। तातेजाकोमुक्तिकोचाहेवहिमनकीचाहकोदूरकरे ।। जबमनसोचा
निःस्पृह हकीनिवृत्तभईअरमनरूपकमलअपुनीअज्ञामेंभया ।। तबसबतेंहीयहिज्ञानउ
मनमें स्थित: तपतहोतहे ।। जोमेंब्रह्महों ।। अरपरापदजोसर्वसोश्रेष्ठहे ।। अरअंतहेसंदर्शनपदा यौंका
ही ज्ञानउप्तन्न होत है ताकोप्राप्तभयामें ।। अरअरोधनकरनासर्वमनकेसंकल्पोकातबलगहे ।। जबलगशुम

ल नु

अरु अस्तुमसर्वचाहेंकीनिविरतनहीभई॥यहीउपासनाहे॥अरुयहीयोगहे॥अरुयही
अंतहेज्ञानका॥अरुभिंनयासोजोकछुहेवेअर्थवचनविवादहे॥आत्मावीचारमोनही
आवत॥यातेजोवीचारवांकोग्राहीकनहीहेसकत॥वहिवीचारसोपराहे॥अरुयाभां
तहूनहीजोवीचारमोनहीआवत॥अतेवजोवहिकेवलसर्ववीचारकोरूपहीहे॥
अरुवहिवाकइंद्रीमोनहीआवत॥जोवाकइंद्रीवांकोग्राहीकनहीहेसकत॥वहिवा
कइंद्रीसोपराहे॥अरुयाभांतहूनहीजोवांकोवाकइंद्रीग्राहीकनहीहोत॥अतेवजोस
र्ववाकइंद्रीरूपकेवलवहीहे॥अरुवाआत्माकोयाभांतचाहीयेजाना॥जेसेमनुषश
रीरदसस्तह्मकेसमहे॥तेसेहीमनुषशरीरतुरंगकेसमहे॥जोकोउयाभांतनिश्चे
सोआत्माकोजाने॥जीवात्मावांकोआत्माहोइ॥वरननमारगप्राप्तहे॥ऐसेआत्माका
साध्यउपासनाप्रणवकीके॥यहिप्रणववांकोपरानामहे॥अरुगंभीरहे॥अरुसंपूर्न

प्रणव आत्मा
से एकता कराता है

नामोकारमाहे ॥ अरु आत्मा सो एकता होए को कारन है ॥ अरु अवस्या की उपासना सो
ना को प्राप्त हू जीयत है ॥ अर्थ यहि भिंन जु है या को उचारन करनहार सो साधवां के अभे
दता को प्राप्त होत है ॥ जहां अशब्द पद है अरु वा पद मो को ॐ नाम अरु गुण एन ही प्राप्त
होत ॥ संपूर्न वा मे लीन होत है ॥ अरु वहु आत्मा इ जो साधया नाम गंभीर के अभ्यास
करत भया है ॥ सो मद्रुसती च तआनंद के लीन भया है ॥ अर्थ यहि जो आप वाहि सत
चित आनंद रूप केवल भया है ॥ अरु वाहि आत्मा अखंड है ॥ अरु प्रणम को नही प्रा
प्त होत ॥ सदीव एक रस अचल है ॥ अरु सर्व सो असंग है ॥ जव निश्चै सो जाने जो तैसे
सात्र ह्म मे ही हो ॥ तव व्रह्म ही जो है सो होत है ॥ अथ वरनया का जो संपूर्न केवल एकआ
त्मा ही है ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ व्रह्म या भांत है जो गुणातीत है ॥ अरु अरूप है ॥ अर्थ यहि जो त्रिगुण
प्रकृत हूं वही है ॥ अरु सदा साथ अपुने ही अचल है ॥ अरु वे अंत है ॥ अरु दिष्टांत सो र

परिणाम

हतेहै॥इंद्रेवांकोनहीप्राप्नहोसकत॥अरुअनादिहै॥अरुउतपन्नसोंरहतहै॥अरुवांकेज्ञानसोंज्ञानी
अरुआत्मज्ञमुक्तकोप्राप्तहोतहै॥अरुयथार्थसिद्धांतयाहीकोकहीयतहै॥अरुरनिश्चे
सोचाहीयेजान॥जोनकोउउतपन्नहीभयाहै॥अरुनाकाहूपदार्थकोप्रलोहीहै॥अ
रुमूलमेउतपन्नअरुप्रलोयहिद्वयपदार्थहीनही॥अरुस्वर्गअरुनरकअरुतीनही
लोकममासिद्धहै॥यथार्थतामेनहीकछु॥अरुकोउवंधअरुमुमोषनही॥अरुवं
धमोषयहिद्वयपदार्थहीनही॥अरुकोउवांकाउपासकनही॥अरुमूलमेवाकी
उपासनाहीनही॥अतेवजोअद्वैतहै॥अकेवहीहै॥तातेयहिसंपूर्नपदार्थ
जोवरननभयेसोनहीवहीहै॥वरनतासिद्धांतकोअरुमारगसिद्धांतकोप्राप्तका
यहिहै॥अरुयहिअवस्थासमुझएअरुवरतएहीकोयोगहै॥वचनविलासन
ही॥इतिप्रथमकांडएअमृतावेदउपनिषदअथर्वणवेदभाषासमाप्तम्॥ॐ॥

चाहीयत है आत्मा को जोए करस है ॥ मद्र जाग्रत स्वप्न सुखपत के सम जाने ॥ अरु जिस्ह अवस
था के वस न होइ ॥ हरि अवस्था मो सम आत्म ज्ञान राखे ॥ अरु सुषपत अवस्था मो मूरछि
त न होइ ॥ जो कोऊ मद्ध तीन ही अवस्था के मूल ही स्वरूप आत्म ज्ञ अरु सुषपत अवस्था
मो मूरछित न न होइ ॥ जो कोऊ मद्ध तीन ही अवस्था के मूल स्वरूप अपुने को ज्ञाता र
हा ॥ वा ने या तीन ही अवस्था का त्याग कीया ॥ अरु तुरीया इस्थित भया ॥ अरु याही को स
वे त्याग करत है ॥ अर्थ यहि जो या अवस्था मो स्वर्ग अरु नरक इत्यादिक का हू पदार्थ
की वंध मो नही रहत ॥ अते व जो वा अवस्था मो कोऊ यहि पदार्थ नही ॥ ताते वा मो को
ऊ लोक मो गमन अरु आगमन नही ॥ यांते जो वा ने जाना जो मे ही ब्रह्म हों ॥
अरु सर्व ठवर पूर्न हों ॥ तव वहि कहां गमन अरु आगमन करे ॥ अरु जेहा वरनता
इन तीन ही अवस्था की है ॥ केवल भ्रम काल मो यहि तीन ही अवस्था दृष्ट परती

१२५

थी।।जवब्रह्म को नाना समय।।तवयाहि तीन ही अवस्था एक आत्मामय।।अरु मन बुद्धि सर्व शरी
रोसहित अरु स्थूल प्राणीयोंके वही एक आत्मा जीवरूप सो व्यापक है।।अरु वाहि एक आ
त्मा को मन बुद्धि नेक शरीरोंके षंड षंड दिषाई देते है।।सो दृष्टांत वांकी या मांत है।।जैसे
एक सस है अरु मन बुद्धि नेक वासनोंके जो अपसो पूर्न है।।अनेक दिषाई देत है।।अरु
जैसे मृताकाश जो व्यापक है।।अरु मन बुद्धि सर्व वासनोंके पूर्न है।।जा काल मो वासनो
को एक ठवर सो अवर ठवर ले जात है।।वहि मृताकाश एक ठवर सो अवर ठवर न
ही जात।।वा वासनो को ही ले जात है।।तैसे ही यहि सरीर अरु स्थूल शरीर मान
षहु के।।अपवा या लोकमो गमन करे वा परलोकमो गमन करे।।वहि आत्मा क
दाचित नही स्फुरत।।अरु नही गमन करत।।अतेव जो अचल है।।अरु सर्व ठ
वर पूर्न है।।अरु सर्व वही है।।अरु जैसे अनेक प्रकारके वासनोंमो मृताकाश

भिंनभिंननहीहोत॥अरषंडतकरनेवासनोकेसोअमृताकाशषंडतनहीहोत॥तैसेहीभिंन
होएअरषंडतहोएअनेकशरीरोकेसोआत्माकेसोंकछुभिंनताअरषंडतानहीहोत॥अ
थयहिनवीहीभिंनहोतहै॥अरनवीहीटूटतहै॥अरनवीहीमरतकोप्राप्तहोतहै॥अमृताका
शअरुआत्माकाएताहीभेदहै॥जोअमृताकाशजडहै॥अरुआत्माचेतनहै॥अरतीनही
लोककोजोनामअरुरूपहैकारनउतपतवोकीका।जोद्विसपदार्थप्रपंचहैसोआत्माकी
चाहमायाहै॥अरयहीसृष्टजोनामअरुरूपहैजोकासोअविद्याहै॥अरसर्वजोप्र
गटएआत्माहैसोवामेगुप्तभयोहै॥ततेयाएआत्मामेजोतीनलोककोंज्ञानहै को
यहीअपुनेआपकोअज्ञानहै॥अरयाहीअज्ञानकोतमरूपअविद्याकहीयत
है॥जोकालमेयातमरूपअविद्याकोजोअपुनेआपसोभूलनाहै॥ऐसायज्ञाना
ग्निकेदग्धकरे॥तबवाआनंदस्वरूपआत्माकोजोअपुनाआपहैदेखे॥जैसेप्रका

शदीपकाजोरैनकेअंधकारकोदूरकरतहै॥ तैसेहीप्रकाशज्ञानकाअज्ञानकेअंधकारको
दूरकरतहै॥ अरुसाचप्रकाशअपुनेहीकेआपकोदेषतहै॥ अरुमारगजब्रह्मसोएक
ताकेप्राप्तहोनेकाइहीएकमारगप्रणवकाहै॥ अरुवहियाकाअतिगंभीरनामहै॥ या
नामकोब्रह्मज्ञानकरसाधवांके उपासनाचाहीयेकरी॥ अरुजबयाकीअधकउ
पासनाकरतहै॥ तबवांकेअंदरोकेअर्थकोप्राप्तहोतहै॥ अरुजबयामांतबाकेअ
र्थकोप्राप्तभया॥ जोवहिब्रह्मस्वरूपमैहीहै॥ तबवहिब्रह्महीजुहैसोहोतहै॥ जब
उपासककीउपासनाकाअंतभया॥ तबवहिउपासकउपासहोतहै॥ अर्थय
हैजोऐसापकआत्माकेएकहोतहै॥ जोकोउचाहैजोमुक्तहों॥ अरुज्ञानकाआनंदको
प्राप्तहों॥ अरुसंपूर्णअधव्याधिरोगोकानासकरैं॥ तबवांकोउत्तममारगयही
है॥ यासोसेष्ठअवरमारगनहीं॥ अरुब्रह्मउपासनाकेएकउत्तमअरएककनिष्ठ

धीरद्वयमारगहै॥ तद्यथा॥ कोनिएमार्गयाहिहैजोउपासकअरउपासनाअरउपास्यइं
न्योऽन्यनइनमोभेदजाननकरउपासनाकरेजवमद्रमार्गकेपरंताकोप्राप्तहोतहै॥
तबबाह्यतीयउत्तममार्गकोपावतहै॥ अरवहिमार्गयाहिहै॥ तद्यथा॥ जोउपासकअरउ
पासनाअरउपास्यइनतीनहीकीएकताहोअरअन्योऽन्यनभेदताकोप्राप्तहो॥ अरकेव
लब्रह्महीरहेयाउत्तममार्गसोपरंब्रह्मकोप्राप्तहूजीयतहै॥ प्रथमचाहीयतहैवेदोका
तत्वजोउपनिषदहैताकोपुनःपुनःअधेनकरे॥ अतेवजोयामोभेदअज्ञात्माको
गुह्यहै॥ अरसाधतीव्रबुद्धकेवाकेरहस्यकोदेखे॥ अरसमझे॥ अरसाधवीचारे
अरयुक्तोकेनिश्चैसोंजाने॥ जोमेंब्रह्महीहों॥ अरसर्वब्रह्महीहै॥ यामेदकोजा
नकरअरयाज्ञानकोप्राप्तहोकरसंपूर्नशास्त्रोअरकर्मोकात्यागकरे॥ जैसेकअ
वरअनेकप्रकारकाअन्नउतपन्नहोतहै॥ अरकाटसेकोयोगहोतहै॥ तबवाको

उपासक
उपासना
उपासकको
उपासकको
एकतामें।

कारकर अरु त्रिगुणादिक वासो दूर करकर अरु अंगनको ग्राहीक होत है। अरु त्रिगुणादक को ग्रा
हीक होत है। अरु त्रिगुणादक को उधार देत है। अरु तैसे ही तत्व रहस्य संपर्न शास्त्रो अरु
वेदो का इह ही है। जो तत्वरूप आत्मा को ग्राहीक होकर वे अरु शास्त्रो का त्याग करे। य
द्यपि ज्ञान शास्त्र अरु मार्ग सिद्धांत के अनेक हैं। तो हू तातपर ज्वा सर्व मो यहि हर एक
ही है। जो आत्मा सो एकता है।। जैसे अनेक गऊ अनेक रूपों की होत है। वो के दुग्ध अरु
जीव का एक ही रूप है। अरु तैव जो एक ही है।। तैसे ही मुमोषो अरु ज्ञानीयो के संबूद है। अरु
अनेक भीं नीं भं न मारग ज्ञान के राबत है।। हे मुमोष जो म्चाहत है तू शोक संसार
के आप सो दूर करें।। जैसे मनुष्य दुग्ध के मथानी को उठार त है अरु मथकर घी को जोत
वें हैं निकास कर छाछ का त्याग करत है।। तैसे ही तु पेहू चाही यत हैं।। जो मनुष वेद
के अरु ज्ञान शास्त्र के अरु साधसंगत के जेय ही दुग्ध समान है।। मन अरु पुने को

मन मथानी से आत्मा का मन्थन करके द्वारा ब्रह्म जिज्ञासा मन्थन से आत्मा रूपी अपना स्वरूप निकालते हैं छाछ रूपी देह तथा आत्मा से प्रकाश निकाल कर एक ही देखे।

मथानीकरकें और साथ आत्मज्ञानरूपी रजके वांधकर और ब्रह्मजिज्ञाससों मथकर नामरू
प सो रहत जो वमो घी समान है आपुना स्वरूप जो है ताको निकास कर वा वेद और शास्त्र
रूप दधि सो छाछ भया ताको त्याग करे॥ जैसे देखकर सों मथकर अग्नि वासों निकास
लेत है॥ और काल करीका त्याग करत है॥ तैसेही तुंहूं चाहीयत है जो वेदसों और आत्मका
अध्याससों वा प्रकास को जो केवल स्वरूप ते रहे॥ और ब्रह्म है और आत्मा है॥ और अने
क ताके भेद कोन ही प्राप्त भया॥ और साथ आपु ने ही अचल है॥ और केवल आनं
द है॥ वाको प्रकाशरूप जानकर अंगीकार करे॥ जो यह जाने जु वह मै ही हों॥
और जाको यथार्थ ज्ञान की प्राप्त भई है॥ वाने आपुनी अनुभव सो आत्मा जाकर है॥ जो पां
च तत्व सो आदि लेकर संपूर्ण जो विश्व मन द्रव्याही के इस्थित है॥ और वह मन द्रव पांच
भूत आत्मक सर्व विश्व के परने है॥ और उत्पत्ति कारन सर्व का है॥ वह वासुदेव मैं

ही है॥ बाहिर धारन हारा सर्व को है॥ अरु मसान रे को है॥ सो बाहिर मे ही है॥ सो बीर मे ही है॥
नमस्कार ज्ञानीयो को नमस्कार ज्ञानीयो को॥ श्रोता अरु वक्ता को ज्ञान की प्राप्त हो
सर्व को आनंद हो॥ इति अमतीबंद उपानिषद अथर्व वेद भाषा समाप्तम॥
अथ अरचोउपानिषद अथर्वण वेद॥ ॐ॥ हे तेत्रेरिषी श्वर वासते ज्ञान चार चार के
कहतीय का अरु वाहर न करत भये॥ एक ठवर कर नारिषी श्वरो का आते व करत भये॥ जो
एक ठतीसो जीत पावै॥ अरु वासो आज्ञान आरोपन करे॥ वासते पुगट त वुभ आपुनी
के पुथन सर्वसो॥ विश्वामित्रो वाच॥ बाहिर जो नद्र प्रथवी अरु आकाश कर आस्फुरण
ता न ही रावत॥ अरु स्वइछत मद्र आपुने काहू का अवाहन न नहीं करत॥ अरु संपूर्न प
दार्थ आपसो आप मद्र बोठे आगमन न अरु गमन करत है॥ आकाशावत आपजो
स्फुरन सो रहत है॥ अरु सर्व पदार्थ स्व ते वासो आगमन न अरु गमन न करत है॥

अरु वहि इछा नहीं राषत॥ जो मनुष मो कों उआगम न करे॥ अरु स्वर्ग ते मेघ वा मोगर्जे न रे
अरु वि द्युत चमकत है॥ अरु पवन आदि कश्रवर जो पदार्थ है सो साध गंभीर भया न कवु श
वद कौं विचरत है॥ मनुष्य मनुष्य मेरी के इहीं वृसत है॥ अरु या वीचार सो हूं जानीयत है॥
नेष्य था॥ जो वाकों अग्नि सों दग्ध करै अरु आप सों आर्द्र करै अरु सो पवन जो चाम सों
सोषे अरु गांव दे है॥ अरु सो पवन अर लोहे सो नूटे॥ अरु गांके सी स्न सो षंडत करे अरु सो
लोहे की नेषो के वाकों दोकें॥ अरु गंभीर ने षो वा नो षचत करे॥ अरु लोहे के स्रयासो
वा मो छिद्र कर करे॥ अरु भीषर त न कवा मो लिप्त करे॥ अरु सो घते से के वाकों सीले॥ कदा
चित या हि संपूर्ण पदार्थ वा सो लिप्त न ही होत॥ अरु काहू की बंधनो नहीं आवत
अरु वा सों कोउ बांध नहीं सकत है॥ यमदग्नि रिषीश्वर ने या वचन वां के कों अं
गीकार न कीया॥ अतेव जो कछु मन प्रपंच अरु आकाश के है सो नाशवंत है॥

अरीमरजादानोंहै॥यमदग्नोवाच॥हेविस्वामित्रयाहैजोमनुष्यपृथ्वीअरआका
शकेहैसोअंतरदलोकहै॥अर्थयहिजोमायाविस्ततहैवाको॥नब्रह्महै॥चाही
यतहैजोयाअंतरदलोककोमनुष्यब्रह्मकेजानवेरअभ्याससाघब्रह्मकेवा
हीयेकीया॥अरजोकोउयाअंतरदलोककोहीब्रह्मजानतहै॥अरयहीउपा
योनियों
सनाकरतहैवहिसदामनुष्यमगएयोनोकोनित्तकोप्राप्तहोतहै॥अबरीरषीश्वर
यमदग्निप्रतिउवाच॥तूवाकेवनसेपदार्थकोजानतहै॥जोनित्यहैअविनासी
है॥यमदग्नउवाच॥वापुरुषनेजोअंतरिदलोककोमनुष्यअपुनेठवरदई
है॥अरनितराज्येहै॥अरकोउवाकोनहीसकतप्राप्तहै॥अरवासोनहीसक्ते
देख॥अरकोउवाकोकहतहैजोजलहीहै॥अरकोउकहतहैतमजोहैअंध
धकारसोवहिहै॥अरकोउकहतहैप्रकाशहीहै॥रूपवाका॥अरकोउकहै

तहैजोउजलहै॥अरकोऊकहतहैजोप्राणहै॥अरकोऊकहतहैजोआकाशहै॥अ
रकोऊकहतहैजोजीवात्माहै॥अरभाँजरिषीस्वरनेयोंकोअंगीकारनकीया॥अ
रकह्या॥भारद्वाजउवाच॥यहिसर्वैपदार्थजोवरननभये॥इनसोंकाहूकोजोआ
त्माजानतहै॥वानेहूतत्वस्वरूपआत्माकेकोनहींसमझ्या॥अरजोकछुतैनेसम
झ्यौहिहूंनासवंतहै॥अतेवजोहिमताकाशजोसंपूर्णलोकोंपरव्यापकहै॥अरते
नेयाहीकोआत्मासमझ्याहै॥जोउपासकआपुनेकोमुक्तकरनेकोअसमर्थन
हीं॥अरमह्वआपुनेहीराषतहै॥आपसोंबाहरहोनदेतनहीं॥तांतेमैंया
कोहूमायआत्मकीजानतहौं॥याहीकोब्रह्मनहींजानत॥तातेजोयहिमह्व
वाकेहै॥जोकोऊयाकोमह्वआपुनेजानकरउपासनावाकीकरै॥आकाशवत
वीहहूमह्वताकेलीनहो॥अरजोकोऊयामहताकाशकोब्रह्मजानकरउपासना

वहिस्वांतिदुर्गतकोप्राप्तहो॥ अरु सदा गर्भरूप नरक को को प्राप्त हो अरु रत्रितकोपा
वतरहे॥ अरु रजाको ज्ञानस्वरूपके जानताहे तासों अरु जाउकी त्रिकह्होतहै॥ अ
रसंपूर्णविश्वकोवसमोकरतहै॥ अवरिषीश्वरभारद्वाजप्रतिउवाच॥ स्व
वनसेपदार्थकोजानतहे॥ जोनित्यहै अरु अविनाशीहै॥ भारद्वाजउवाच॥
वहिपुरुषजोमनद्वमेंउलसतयेके संपूर्णदिशादिवाकरपदार्थीमोभ्रम
तहे॥ अरु अग्निवतप्रकाशतहे॥ अरु अतितेजराषतहै॥ अरु सर्वपदा
र्थोकेआपुमोलीनकरतहै॥ मेरे जानने मो वही ब्रह्म है॥ अरु यावी
चारमोहू जान्या जातहै॥ जोसदाएकभांतहै॥ अरु दूर अरु निकट सोए
कसाद्दिषाईदेतहै॥ अरु सर्वयोरसो वहिप्रकाशसनमुषहै॥ अरु जेता
इककोउबासतेप्राप्तवांकीवेचाहे॥ अरु शीघ्रतिस अरु चातुर्यताकरे॥

अंत नो प्राप्त वा की कठिन है ॥ अर्थ यहि जु नहीं पावत ॥ अरु निकट अरु दूर सो वा आदि ऐहै
अरु वाके तेज सों को उ अंधकार नहीं होय सकत ॥ गौतम रिषीश्वर ने या वचन वा का अंगी
कार न कीया ॥ अरु कहत भया या का नाश है ॥ अर्थ यहि प्रकाश जो मद्ध मंडल सूर्य के
देषीअत है ॥ वा प्रकाश को ज्ञानी अरु अज्ञानी अरु बुद्धहीन अरु वहि जो मद्ध परव
तो के अरु वनों के अरु नद्द ईंकं तठवरो के जो इस्थित है ॥ अरु जा को उपानषदो
कनु अंधेर न नहीं भया ॥ वहि है सूर्य की उरि दृष्टा चढ़ी वा प्रकाश को देषत है ॥
अरु प्रकाश ब्रह्म का या भांत न है ॥ जो भिंन ज्ञानी यो सो अरु शुद्ध स्वरूप के पछान न
हारयो सें अवर को उ वा को स्पर्श के देष ॥ ताते प्रकाश दिवाकर को मै माया ब्रह्म की जानत हो
वाही को ब्रह्म नहीं जानत ॥ अरु जो कोउ प्रकाश सूर्य के को माया ब्रह्म की जान कर सा
धवा के उपासना करत है ॥ वहि पुरषु जो मद्ध मंडल सूर्य के है ॥ अरु केवल प्रकाश ही

है॥ अरु साधरूपस्वर्णके सर्व्वठवरप्रकाशआपुनाराधतहै॥ अरु नषासिधप्रयंतकेवल
प्रकाशहीहै॥ याभांतकाउपाशक नक्षस्त्रसे पूर्न जीवधारीयोंके तेजस्वीहोवकर आवइ
स्थानवंकाहोतहै॥ अरु दीर्घआउकोपावतहै॥ अरु सर्व्वसोभ्य॥ अरु सर्व्वका
रतकहोतहै॥ अरु जानतहै॥ सूर्यजो उदेहोतहै सो सत्कब्रह्महीकीसोहोतहै॥
अरु मायाशक्तब्रह्मकीसो उलंघतनहीशक्तहै॥ वाहीकीआज्ञामो उदेहोतहै॥
अरु जोकोउ सूर्यकोयाभांतजानतहै॥ जोआपुनीहीइछ्यासो उदेहोतहै॥ अ
रुधनीशक्तकाहै॥ याउपासनासो अतिनीचगतकोप्राप्तहोतहै॥ अरु सदाम
ध्यमहागतिकेप्राप्तहोतहै॥ अरु गरभरूपनरकोमोभ्रमतहै॥ अरु याभांतका
उपाशकजोमनक्षस्त्रसूर्यकेप्रकाशआत्माकाहीजानतहै॥ सोयासंसारकेवंध
नसोमुक्तपावतहै॥ अरु मद्दिवाकरलोककोगमनकरकरपुनःवाइस्थान

सो ब्रह्मलोक को प्राप्त होत है॥ अवर रिषीश्वर गौतम प्रति उवाच॥ तूं कवन से पदार्थ
को जानत है॥ जो नित्य है अरु अविनाशी है॥ गौतम उवाच॥ विद्युत जो चमकत
है॥ अरु मध्य आकाश के अति चातुर्यता अरु शीघ्रता सो विचरत है॥ अरु दूर हूं
सो निकट देखीयत है॥ अरु निकट सो दूर॥ अरु या ते जो मध्य सूक्ष्म है एक अरु प्र
गट है एक अति शीघ्रता राषत है॥ ताते कोउ वा को प्राप्त नही होय सकत॥ मध्य जा
न एक मेरे के वही ब्रह्म है॥ वासिष्ठ उवाच॥ मै या वचन को अंगीकार नही करत॥
अते व जब मेघ काज आगमन होत है॥ अरु मेघ गाजत है॥ अरु वा काल मो वि
द्युत हू चमकत है॥ अरु प्रगट होत है॥ अरु पाछे बरषा के न विद्युत ही रहत है॥
अरु न गर्जे ही रहत है॥ अरु मेघ काल मो ज्ञानी अरु अज्ञानी संपूर्न को दिषा
ई देत है॥ अरु प्रकाश ब्रह्म का या भांत नही॥ जो भिन ज्ञानी यो सों वा को कोउ

सवेदेष॥ अरु जिनहुने त्याग रसें अरति क्षमा काकीया है॥ अरु तत्वके ज्ञाता हैं॥ अरु रसा
थरुअपुनेशरीरके ममत्वनही राषत॥ वहि ब्रह्मप्रकाशसें सायमन लपने त्रोवे
देषत है॥ तातें मैंयाविद्युतको माया ब्रह्मकी जानत है॥ याहीकोवस्तु नहीं जानत
अरु जोकोउब्रह्ममाया विद्युतको ज्ञानकर सायवांके उपासनाकरे॥ अरु जाने जो
सायकसाज्ञावाहीकोवेचमकत है॥ ज्ञाताया मांतकासायस्रेष्टताकेप्राप्तहोकरदीर्घ
आउकोपावत है॥ अरु संवूहाम्मिष्टवांकोआस्रतहैहोत है॥ अरु जोको औविद्युतको
यों जानत है जो स्वतेतही प्रकाशत है॥ वहि कृतपतातिहै॥ अरु महाविनसंसा
रकोनोभ्रमत है॥ अववरिरिषीस्वरवसिष्टप्रतिउवाच॥ ॐ॥ तूं कवनस्यपदार्थको
नितअरुअविनाशीजानत है॥ वसिष्टनेहृदेमेविचारकरकहा॥ वसिष्ट
उवाच॥ वांकोयहिअरु वाहनहीसकीयतकोहि॥ सदाजो अचलसो ब्रह्म है॥

अरु वही आत्मा है ॥ अंत नहीं राषत ॥ जरा सों रहत है ॥ अरु वा को अंभंतर अरु बाहर न
हीं वह सकीयत ॥ अरु सर्वग है ॥ अरु केवल प्रकाश है ॥ अरु दुधा अरु पिपासा न
हीं राषत ॥ अरु अज्ञान रूप सलता सों पार करन हारा है ॥ अरु नद्रमन के प्रका
श वाही को है ॥ अरु सर्व संसार वाही मों लीन होत है ॥ अरु सर्व पर अज्ञा ज्ञा वाही
की है ॥ अरु सर्व का राजा है ॥ अरु सर्व का इस्थित इस्थान अस्मा है ॥ कोऊ पदार्थ
वा सों अप्रथ लीन नहीं ॥ अनादि अरु अंत सर्व के वही है ॥ अरु उत्पति को योग है
अरु संपूर्न संसार को आप मों धार रहा है ॥ संतान कुवकार बीस्वर को वास
ते प्राप्त आत्मा के उपासना सों घ विस्वान अग्न के करत भये ॥ अरु मद्र से
प्रनैयज्ञ को के इहीं विस्वान र आत्मा को इंद्र जानत है ॥ अरु वहि इंद्र जो गंभी
र सेना का धारन हारा है अरु युद्ध का करता है ॥ अरु अति गंभीर है ॥ अ

श्रुतिया

रवासतेरक्षाजगतकीकेअंगीकारकरनहारायज्ञोकाहै।।अरसर्वसोअज्ञादिना
मवाहीप्रकाअंगीकारकरतहै।।अरवेदकीश्रुतोसोंवाहीकीउस्तुतिकरतहै।।अरसं
सारकाभेदारहै।।अरनाशकरतादेतोकोहै।।अरयहिसंपर्णनामवोकेएकना
ममोलीनहै।।अरवहिइंद्रसमुद्रवतव्यापकहै।।अरसाघशक्तअग्नपुनीकेस
र्वकोशक्तदायकहै।।अरनिराकारहैनामवोका।।संपूर्णीरबीश्वरयावच
नवसिष्ठकेअंगीकारकरतभये।।अरजानतभयेजोब्रह्मयाहीकोकहतहै
अरयाहीकोब्रह्मचाहीयेजाना।।तवसर्वनमस्कारकरकस्येवकमावअरोपतभये।।अ
ग्नकोनमस्कार।।प्रजापतिकोनमस्कार।।इंद्रकोनमस्कार।।वसिष्ठकोनमस्कार।।
ज्ञानीयोकोनमस्कार।।सर्वकोआनंददहे।।श्रोताअरवक्ताकोज्ञानकीप्राप्तहे।।
इतिअरघीउपनिषदअर्थर्वएवेदभाषासमाप्तम।।२५।। ॐ।।ॐ।।ॐ।।ॐ।।ॐ।।

अथप्रश्नउपनिषददयाउपनिषदकोंरिषीश्वरोंकेप्रश्नोंकेउत्तरपिपलादनेवर्नन
कीयेहैं॥ ॐ॥ सुखुसंतानभारद्वाजकीसोंसतकाम॥ सूरज्ञानमनीकुसल॥ वेदरबी॥
कबंधीयेहिसंपूर्नरिषीश्वरब्रह्मकोंसर्वकाकारनअरभ्रमाजानकरवास्तेप्राप्तवों
कीकेजोसदावामेंलीनरहैं॥ अतिश्रेयसोंसेवकोंकीन्याईजोभांतसेवकीनकर
गुरोंकेगमनकरतहैं॥ यवोहिहूतदवतीनकरपिपलादरिषीश्वरकेजोतिलहोवा
आहारजोंकागमनकरतभये॥ अरवीचारतभये॥ जोयहिगंभीरपुनबुहैं॥ अर
ज्ञानमोंअछतीहैं॥ अरसर्वज्ञाताहैं॥ जोवछुहमयासोंप्रश्नकरेंगे॥ तांकेउत्त
रदेंगेकोंयहिसमर्थहैं॥ तातेअवश्यहमरासमाधानयासोंहोयगा॥ पिपलादोवाच
जोसंपूर्नतुमयज्ञासिअरतपकाअंगीकारकरो॥ अरसर्वरसोंकात्यागकरो॥ अर
रआतिश्रद्धपतीतसोवर्षप्रयंतनिरंतरमेरेइस्थितहोवो॥ तांकेउपरांतयाभांतज्ञा

नकीप्राप्तहैमुझेसोसंपूर्णनेतुमारेब्रह्मोकेउत्तरमेउपदेसकरेंगा॥जवयाभांतीरिषनेआज्ञाक
रीयी॥ताहीभांतवर्षवीतावतभये॥तवसर्वसोब्रह्मनकंधीनामरिषीस्वरनेब्रह्मसुकीया॥कंधी
नामरिषीस्वरोवाच॥हेनमस्कारकोयोगयासंसारकेवनठवरसोंउतपतभयाहै॥पिपलादोवा
च॥प्रजापतिजोउंपतकारनजगतकाहै॥चाहतभयाजोजगतकीउतपतकरें॥वासतेयाके
एकाग्रतामनकीसोंघोरतपकरतभया॥पाछेतपकेप्रथमहीजोकर्मप्रभुनेवीचारसोउतपत्र
करतभया॥सोएकसोमजाओंसम्प्रकहतेहैं॥अउरकेवलअन्नतहीसोपूर्णहै॥द्वितीयप्राणजो
सूर्यअग्निवाणोहै॥अउरजानतभयाजोइनदोनोकीउतपत्रसोंसभवरसंपूर्णनेउतपत्र
होवेगी॥अउर्थ्यीहेजोआवीसवएउतपत्रकरनेकोयाहिदयहीसमर्थहोहूगें॥तातेप्रग
टताप्राणकीसोजोमहवांकेसूर्यरूपबुध्याकाईस्यतहै॥सोप्रगटभया॥अउरतेज
सूर्यकेसोसर्वभवएकरनहारेजोबुधारूपपदार्थहैसोउतपत्रभये॥अउरमहस

सूर्य प्राण भोक्ता –
चंद्र अन्न भोजन –

सकेजोअग्नतत्त्वरूपहै॥ तासोअंनअरसंपर्नहीसदनअस्थूलपदार्थजोअंनरूपहैसोउत
पन्नभयो॥ अतेवभक्षणकरनेहारासर्वकादिनकरतहैं॥ अरअंनवोकासरसहै॥ अरयासोप्रगट
है॥ जबदिवाकरपूर्वदिशासोउदैहोतहै॥ तबसंपर्नवादिशाकेजीवधारीयोकोकिरनोकेमार
गसोंआपमोलीनकरतहैं॥ अरजबदक्षणदिशाकीओरप्रवेशकरतहैं॥ तबवाओरकेजीवधा
रीयोकोमारगकिरनोकेआपमोलीनकरतहैं॥ अरजबपश्चमदिशाकीओरगमनकरत
तहैं॥ तबवाओरकेजीवधारीयोकोकिरनोकेमारगसोंआपुनेमोलीनकरतहैं॥ अरज
बउत्तरदिशाकीओरआगमनकरतहैं॥ तबवाओरकेजीवधारीयोकोकिरनोकेमार
गसोआपुनेमोलीनकरतहैं॥ जबपृथवीकीओरअधोहदिशाकोगमनकरत
हैं॥ तबवाओरकेजीवधारीयोकोकिरनोकेमारगसोआपुनेमोलीनकरतहैं॥ अ
रजबआकाशकीओरऊर्ध्वदिशाकेमारगसोगमनकरतहैं तबवाओरकेजीवधा

रीयोकोंकिरनोंकेनारगसेआपुनेमेंलीनकरतेहैं॥अरमनुजोजागिदशाकेजवजवगम
नकरतेहैं॥अरजोजाठवरमोतेजुवांकाप्राप्तहोतेहैं॥नवसंपरनैवाइस्यानोंकेजीवधा
रीयोकोंकिरनोंकेनारगसोआपुमेंलीनकरतेहैं॥तातेसमअंगनवांकेभयषएकाभया
अरयाहीसोवांकोंविस्वानरअगिनहूकहतेहैं॥जोमयषएअरनहारासर्वकायहीहैं॥
अरविस्वतपहींदिनकरकोंकहतेहैं॥अतेवजोसर्वसंसारनेरूपकाअंगीकारवाही
सोकीयाहै॥अरप्राणहूवहीहै॥अरअगिनहीरूपसोऊर्धकोंगमनकरतेहैं॥अरअ
गिनहीरूपसोअधहिकोगमनकरतेहैं॥अर्थयाहिजोऊर्धअरअधहिसोप्रकाश
वाहीकाहै॥अरीतस्मीपरवेदकीश्रुतिकेअर्थहैं॥तथथा॥सूर्यविस्वरूपहै॥अरीह
रेनगर्भहूहै॥अर्थयाहिजोसर्वकोकिरनोंसोआपुनीओरषैंचतेहैं॥अरजातपात
वहीहै॥अर्थयाहिकारनज्ञानअरसमजसर्वपदार्थांकावहीहै॥अरमनमासर्वका

वही है ॥ अरु अदिति [या] जो तव वही है ॥ अरु वही है प्रकाश ॥ अरु वही है सहस्रकिरन ॥ अरु सत
धा तव वही है ॥ अरु वहि है जो उदे होत है ॥ मानो जीव सर्व जीवधारीयों का वही है ॥ अरु सं
पूर्न वर्ष वही है ॥ अतेव जो वाही सो है रैन अरु दिवस वही है प्रजापति ॥ अर्थ य
है जो वर्ष अरु मास अरु दिवस अरु रमिती संपूर्न वाही सो उतपन्न भया है ॥ अरु होत
है ॥ वर्नन दिन करके मार्गों का ॥ षट् मास दिन कर उत्तरायण दिशा मो भ्रमत है ॥ अरु
षट् मास दक्षिणायण दिशा मो ॥ जो को उ साधु तपस्या शुभ कर्मों के अरु दान के
गो उन्ह पुनीत वितावत है ॥ सो पाछे शरीर त्याग के दक्षिणायण दिशा के मारग सो निशा
कर के लोक नो प्राप्त होत है ॥ अरु मुक्ति को नहीं प्राप्त होत ॥ जब शुभ कर्मों के फल वा के अंत
को प्राप्त होत है ॥ पुनः मृत्यु संसार के गर्भ रूप अपने बंध निषिष्ट नर को मो वासते प्राप्त क निकृष्ट
शुभ कर्मों की फलों की प्रवेश करत है ॥ यह मारग के वलवा का है जो चाह संतान की

धनकी अरु विभूतकी राषत हैं ॥ अरु शुभकर्मनि अरु दानु करत हैं ॥ अतेव चंद्रमा को अन
सर्व सर्व का कहत हैं ॥ अरु वास्ते याहीके अंन स्नान जो है कर्मों के फल ताकी प्रा
प्तिको या मार्ग सो प्राप्त होत है ॥ इति दक्षणायन मारग ॥ ३ ॥ अरु जो कोऊ तपस्या जो
है इंद्रियनि को रोधन अरु त्याग संपन्न रसो का ॥ अरु रागन्ह का न तन अरु केवल ज्ञान ही
मो दृढ प्रतीत सो अभ्यास करना या भांत जो वर्तत है ॥ सो केवल आत्मा भयो है ॥ व
हि उत्तरायण दिशा के मारग सो सूर्य को प्राप्त होत है ॥ अतेव सूर्य जो केवल आ
त्मा है ॥ अरु व्याप्त है ॥ सर्व जीवों का ॥ अरु अविनाशी है ॥ अरु अभय है ॥ अरु
इस स्थान को अत्यंत गंभीर है ॥ ताते पुनः स्थितमंडल सो गारभ रूप नर को मो
आगमन नहीं करत ॥ अरु अज्ञानी वा मोक्ष प्राप्त नहीं होत ॥ अरु या पर श्रु
ति वाक के अर्थ है ॥ तद्यथा ॥ वहीदिन कर जो वर्ष रूप है ॥ सो पंचचत्र नराष

षट् ऋतु

तहै॥ यद्यपि वरषषष्टीरितराषतहै॥ अरु छयमासकीएकाठितहोतहै॥ अरु तेवजोसीतका
लमोचतुर्मासकीएकाठितहोतहै॥ तातेपंचपादहीनिहचैभये॥ अरु द्वादसभाग
राषतहै॥ जोकोद्वादसमासकहतहै॥ जवमध्यदक्षणायनीदसाकीहोतहै॥ तवजल
वरषाकरतहै॥ मध्यपृथवीतीनमासके मेघवर्षाकरतहै॥ पुनः जोअवरतीनमा
सहैतामोकुहीउद्धारतहै॥ अरु जवमध्यउत्तरायणादिसाकेगमनकरतहै॥ तव
सूर्यकोचेतनकरतहै॥ अर्थयाहि जोज्ञातासर्वका॥ तातेजाकोउमध्यउतरा
यणादिसाकेशरीरत्यागकरतहै॥ सोज्ञातासर्वज्ञाहोतहै॥ इतिउत्तरायणमारगा
॥ अरुमध्यषष्ठमासकेजोसूर्यदक्षणायनीदसामोहोतहै॥ सोएकमैरैनदेवलोकीहै॥
अरुअवरषष्ठमासमासमोजोउत्तरायणमोहोतहै॥ सोएकदिवसदेवलोकोहै॥ अरुमा
सहूलपुप्रजापतकाहै॥ अरुतेवजोकाहूसोपितरलोककादिवसअरुरजनीप्रगटहोतहै

और
छै मासदक्षिणा
यके देवतोंकी
रात्री है और
छमास उत्त.
रायणके देवतो
को दिन है

कृष्णपक्ष पितृलोकका दिन शुक्ल रात्री है — अत: कृष्ण पक्षमें श्राद्धादि पितृकर्म करते हैं —

सपक्षसेसुक्लपक्षपितरलोककीएकरजनीहै॥ अरुकृष्णपक्षवालोककादिवसहै॥ कृ
ष्णपक्षमोमुखचंद्रमाकापितरलोककीओरहोतहै॥ अरुतेवयाभुवःलोकमोनिशाकर
काप्रतापनरहनताकोप्राप्तहोतहै॥ अरुशुक्लपक्षमोजोमुखचंद्रमाकायाभुवःलोक
मोहोतहै॥ याहीसोप्रकाशनिशाकरकाविशेषहोतहै॥ तातेकृष्णपक्षजोहैपितर
लोककादिवसतामोश्राद्धादिकपितरकर्मकेकरनेकाफलअधिकहै॥ अरुतेवपितरो
अर्थवहींपितरपक्षमोचाहीयेदानादिककीया॥ अरुइहीदिवसअरुरजनीनिशा
कररूपप्रजापतहै॥ अरुसर्वएकप्रजापतहीहै॥ अरुदिवसजोभयएस्वरूप
प्राणहै॥ अरुप्राणहीकेवलदिनकरहै॥ अरुरैनजोकेवलअन्नहीहै॥ अरुअं
नकेवलनिशाकरहै॥ तातेजोकोऊदिनकोमैथुनकरतहै॥ सोप्राणकोअपु
नेभक्षकरतहै॥ तोहूमानोवाकर्मकोमसराघवेहवनकरतहै॥ अरुजोको

ऊरै नमोसाय इस्त्रीकेमैथुनकरतहै ॥ मानोवानेमैथुनकीयाही नही ॥ जोवामैथुन
सोउत्पन्नता शरीरस्थी नहीहोत ॥ वलुआर शोभा शरीरकइस्थितरहतहै ॥ आरयाहिकेसन
हूप्रजापतहै ॥ जोयासोवीर्यउतपन्नहोतहै ॥ आरवीर्यसोसंतानउतपतहोतहै ॥ आ
रयाहिसर्वथ्रिरूप अक्रेतरूपहीहै ॥ आरजोऊदिवसमोमैथुनको त्यागकरते ॥ कारनिश्या
कोवीर्यकीउत्पन्नतानहीहोत ॥ ताहीमोमैथुनकरतहै ॥ वाकेपुत्रकेसोसुतआयवा
सुताआज्ञाकारीआरधर्मरायउतपतिहोतहै ॥ आरनिशाकरकोलोकजोपितरलो
कहै ॥ तामोगमनकरतहै ॥ आरयापितरलोककोकर्मीउत्तमलोककहतहै ॥ आरवा
सतेयाहीकीप्राप्तकेपितरकर्मीमोप्रवर्ततहै ॥ आरवाहिकोऊजोपाछेचतुर्दसके व
इस्त्रीकोरितुसोउत्पन्नताहोतहै ॥ पंचदसदिवसपर्यंतजोदिनामोजोपुत्रकेइस्त्री
केयोनइस्थानमोइस्थितहो ॥ तेआवशगर्भरहतहै ॥ मासमासमोएकएक

१३८ वारयथाशास्त्रोक्तमैथुनविवहारमोपरवर्त्ततहै॥यहिकर्मंहू ब्रह्मचर्यसमानहै
औरतपस्याहै॥औतेवजोवाहिवासतेरसकोविषेभोगइस्त्रीकानहीकरत॥वेदोक्त
त आज्ञामानकरवासतेउपन्नसंतानकेयानिमित्तविवहारमोप्रवर्त्ततहै॥औरजोग्रह
स्थाश्रममोहै॥औरमहूयादिनोकेएकवारहूसंपर्ननमासमोनहीप्रवर्त्तत॥तोवाकोब्रह्म
हत्याकीप्राप्तहोतहै॥औरऋतघातकीहत्यावाकोहोतहै॥औरअवरऋतिवारकेअवर्षयामो
तहै॥तथाच॥जवइस्त्रीरितवंतहोतहैताकोव्यादिसोजोषष्टमरेनऋआगमनकरतहै॥ता
रैनकोवंशआथवाअष्टमकोअथवादसमकोअथवाचतुर्दसकोअथवाषोडसकोजो
याकेयुग्मनिशाकहतहै॥इन(पुत्र)संपर्ननिशाकोजोमनुएककाहूनिशाकेइस्त्रीसेमैथुन
विवहारकरतहै तोनअवशतातकीउतपतिहोतहै॥औरजोपंचमरेनमोअथवासप्तमरे
नमोअथवानवममोवाइकादसमोवात्रैदसमोवापंचदसमोमैथुनविवहार

पुरुष चिकना खावे -
स्त्री अल्पाहार करे -

सो पुर्वे तें ॥ तो सुता की उतपति है ॥ न कहे वेद की आज्ञा है ॥ या मे भेद नही कछु ॥ अरु मद्र
वा दिनो के जो उतपति ता की होत है ॥ चाहीयत है जो इस्त्री जा दिवस निकट पुरु
ष के गमन करे ॥ वा दिवस अंन्न नांन लेहार अरु पुनि सों न्हून भषण करे ॥ अरु पुरु
ष सचिकना भषण करे ॥ अरु तेव जो अस्त्र दन आहार सो उतपति सुक्र हू को सहज होत
त है ॥ अरु सुक्र पुरुष को अधिक चाहीयत है ॥ ता ते जो इस्त्री को न्हून सुक्र होय ॥ अरु पु
रुष को अधिक होय ॥ तो इन दोनो के संयोग सो तात उतपति होत है ॥ अरु जो वारे न मो
जो उतपति सुत की है ॥ इस्त्री के अधिक भषण कीया होय ॥ याको रज सों रज इस्त्री को
पुरुष के सुक्र सो अधिक मिश्रत होत है ॥ अरु ता सो जो तात उतपति होत है ॥ तो ह्न फल
र सुभाव इस्त्री को राषत है ॥ अरु जो मद्र वारे न के जो उतपति कारन सुता को है ॥ पुर
ष सुक्र को अधिकार जो है और जइ स्त्री को ता सो है ॥ तो वा सो जो उतपति सुता की

समरात्री को यदि स्त्री अधिक खावे स्त्री के स्वभाव वाला पुत्र हो यदि विषम रात्री को स्त्री अधिक खावे तो स्त्री जैसे स्वभाव वाली पुत्री हो -

होत है॥ अरु स्वरूप अर सुभाव पुरष को राषत है॥ अर जो दोनो ऋतु कु समान है॥ तौ वासो
नपुंसक उतपन्न होत है॥ सो पुरष को रूप राषत है॥ अर मद्र वा विषम रैनो के जामे
सुता की उतपन्न है॥ जो नपुंसक उतपन्न भया है। वहि रूप इस्त्री को राषत है॥ अर जो
इस्त्री वा सम रैन मो वा विषम रैन मो कदाचित् पुने भरता सो स्वप्न अवस्था मो
मैथुन विवहार मो प्रवर्ते॥ अर पुने बीज पात को देषे अर प्रगट मे मैथुन कीया है।
अर वा स्वप्न अवस्था मो गरभ रह्या होइ॥ तौ वा गरभ सो स्व दस मास जीव
सो रहत उतपन्न होत है। अर जो वहि मास गरभ सो पातन होइ॥ अर मद्र गरभ
ही के रहे॥ तौ गरभ इस्थल ताको प्राप्त होत है॥ जब लग वहि स्व दस मास गर
भ सो वा मैथुन होइ॥ तब लग गरभ वधत रहत है॥ अर वा वर संतान उतप
त नही होत॥ अर जो कोउ संपूर्न मास मो जैसे वेद मो निश्चै कीया है॥

१ सगाई संबंधमें
२ निक्षेप॥ मृत्युमें
३ धनीके [illegible] धनापहारीके
४ संतानार्थ स्त्रीकी प्रसन्नता मैथुनमें
५ गुरु और विप्र के प्राणान्त कष्ट में
झूठ बोलना पाप नहीं.

एकहीवारसाधइस्त्रीजाउनीवेमेंघनकरतहै॥वाहिहूतपसीऔरब्रह्मचारीजीगतकोप्रा
प्तहोतहै॥औरसदामनुस्मृतिविवहारोकेसतकोअंगीकारकीयेरहै॥औरभिंनपंचठवर
सोमिथ्यानकहै॥जोवाहिमिथ्यामसतइस्यानहै॥एकयहिजोकाहूकीसगाईसनवं
धजोयाकेमिथ्याउचारनसोहोतहै॥तोयामोउत्तमहूकेरे॥औरमिथ्याहूकहै॥द्वि
तीयजोकाहूकोनिहप्रायनोत्रितकोप्राप्तकरीयतहै॥औरयहियथार्थनहीजानत
जोयाकोनिहप्रयोयनोत्रितमेप्राप्तकरतहै॥अथवाकष्टप्रयोयनरावतहै॥तोवा
ठवरमोहूजोवाहियाकेमिथ्याउचारनेसोमितसोमुतकोहोतहै॥तोमिथ्याकहै॥तती
यजोधनकाहूकाकाहूनेहिरयाहै॥औरयहिजानतहै॥जोयाकाधनुयानेहिरया
है॥तोवाठवरमोहूजोयाकेमिथ्याउचारनेसोधनधनीकोप्राप्तहोतहै॥तौमिथ्याक
है॥चतुर्थवासतेउतपतरसतानकेजकजपुनीइस्त्रीसोमेथुनविवहारमोप्रवर्ते॥

वासेतेप्रवेशनतावोवीकेतववाठवरमोहूंनिथ्याउचरे।। पंचमनवासेतेसतग्यअरुजव
ब्रह्मणकोप्राप्तनतकष्टप्राप्तहै।। तबवहतोहानेब्राह्मणकेवाकष्टमोअरजबतौकेप्राप्त
करंग्रतहोतहै।। तौवासतेरहावाकीवेहूंथाठवरमोहूंनिथ्यावेहे।। अरवाहिकोउसदासत
मोहूंप्रवर्ततहे।। अरअपरअरवेरभावकाहूंमोनहीरावत।। अरजोवस्तुकाजानछत
प्राप्तहे।। ताहीपरप्रवेशनरहै।। अरयहिहैजोअनउत्तमसहजसोसपहनेपदार्थोकीप्राप्त
गानप्राप्तमेप्रवर्ते।। अरसर्वकोअपसादेषे।। अरसदाप्रवेशनहीरहै।। अबहुशोकसयु
केनहोइ।। अरसाधुज्ञानीयोकेहीसंगकराषे।। अरवाहिपुरुषकोगावशब्दस्पर्शलोकमो
जोसुखअरमुक्तोइस्थानहै।। प्राप्तहोतहै।। अरवासतेप्राप्तअरदुःखकेमेकेपुनःग
र्भरूपनरकमोप्रवेशनहीकरत।। इतिप्रथमगंधीरिषीश्वर।। अथप्रथमवेदरथीरि
षीश्वर।। हेतपलादनमस्कारकोयोगवावनसेदेवतारतकशरीरकेहै।। अरवत

पिपलाद

न सेंदे वता शरीर को प्रकाशतै है॥ अरु मध्व इन संपर्ने देवतो वे श्रेष्ठ एक वचन सो है॥ तपलादोवा
चा॥ आप तेज पवन प्रथवी आकाश यहि रहव है॥ अरु मन अरु चछु इंद्री अरु श्रवण इंद्रि
यादिक यह प्रकाशक है॥ अरु मध्व इन के प्राण श्रेष्ठ है॥ अरु इन मो व्यापक है॥ एक का
ल मो मध्व इन संपर्ने के शरीर मो विवाद प्रगट भया॥ आरोभिमान भिमान एक एक कहे
त भये॥ जो अरु हम ही करि प्रकाशक शरीर का मैं ही हैं॥ तब प्राण जो श्रेष्ठ है तिन ने सोय उ
नो के कहा॥ तथ्यथा॥ तुम संपर्ने विवाद विरुध्य करत है॥ केवल मैं ही पंच तत्व रू
प सों रहत शरीर को है॥ अरु पंच इंद्रिय रूप सो मैं ही शरीर मो प्रकाशक हूं॥ अरु मे
री ही व्यापकता ई सो संपर्न ने तुम अज्ञानि छ तो भिमान भिमान अपुने कामो मो प्रवर्तते है
मैं जा काल मो अपुनी प्रवर्ते का त्याग करत हैं॥ तब तुम सो हूं अपुनी संपर्न प्रवर्ते
का त्याग होत है॥ जैसे राजा की आज्ञा सर्व प्रवर्तत है॥ तद्वत मैं हूं सर्व शरीर का रा

नेकोप्रवर्त

१८१ जाहैं॥ जबयामें तज्ञाज्ञाप्राणकीपरउनकोप्रतीतनभई॥ तबप्राणषोभसंयुक्तहोकर
चाहतभये॥ जेशरीरकात्यागकरें॥ जबविनस्येसोप्राणशरीरसोगमनकरतभये॥ तब
वाहहूंज्ञानिष्ठतत्पुन्केम्पुनेइस्थानेसोत्यागमेप्रवर्ततभये॥ औरजबप्राणइ
स्थितभये॥ तबवाहहूंइस्थितभये॥ दृष्टांतमाष्याका॥ जेसेमाष्याकेमषोकाराजा
जोगिरदेमाष्याकेसोजबगमनकरतहै॥ तबसंपूर्णऔरमषहूंज्ञानिष्ठतपाछे
वांकेगमनकरतहै॥ औरजबलगराजामाष्याकासाथमाष्याकेहै॥ औरवसंपूर्ण
मषहूंनिकटमाष्याकेभ्रमतहैं॥ तैसेहीषोभसंयुक्तहोएप्राणहेसोसर्वसमग्री
शरीरकीमनादिकदेखतभये॥ तबसंपूर्णभिंनभिंनचक्षुइंद्रीऔरवाकइंद्री
औरश्रवणइंद्रीऔरगंधइंद्रीऔरमनइंद्रीइत्यादिकउत्पत्तिप्राणकीमेप्रवर्त
तभये॥ तथ्या॥ अग्नितेजरूपप्राणहै॥ सूर्यप्रकाशरूपप्राणहै॥ मेघजोवर्षत

है सो प्राण है॥ और पवन जो स्पर्श है सो प्राण है॥ और पृथ्वी प्राण है॥ और अन्न
प्राण है॥ और जो कछु है सो प्राण है॥ और इंद्र जो देवलोक का राजा है सो प्राण है॥
और उत्पन्न जो स्वरूप प्राण है॥ और प्रकाशक सर्व का प्राण है॥ और अविनाशी
प्राण है॥ जैसे संपूर्ण लकडी रथ के पहीये की॥ नाभ के विषे है॥ तैसे ही सर्व इहे
सो प्राण के विषे है॥ और ऋगवेद यजुरवेद और सामवेद और सर्व देवता॥
और सर्व यज्ञ और सर्व क्षत्री और सर्व राजा और सर्व ब्राह्मण संपूर्ण एक
प्राण ही है॥ हे प्राण प्रजापति तू ही है॥ और मनुष्ययोनि इस स्थान के मध्य के तोसा
पररूप पिता और माता के प्रगट करनेहारा तू ही है॥ सो यह रूप तात के हू तू ही
है॥ और वाक इंद्री और गंध इंद्री और श्रवण इंद्री और चक्षु इंद्री॥ और त्व

वरजोहमनसंपर्सनेहै॥ सोवासतेतेरे अंजनल्यावतहै॥ अर्थयाहियेयोपदार्थको
ग्रहीकहेहोतहै॥ सोवासंपर्सनेरससोकोतुहि अंगीकारकरतहै॥ हेप्रभुएसायाइंद्र
केतूंसंपर्सनेकालभिद्यतहीरहतहै॥ अरइनसंपर्सनेकाप्रेरकतूंहीहै॥ अरप्रा
प्रकरनहारा अंजनकासाथसर्वअधिष्टातासरीरके अरवांकेदेवत्योकेतूंही
है॥ अरअंजनप्राप्रकरनहारापितरलोकमोतूंहीहै॥ अरअंजनसर्वकातूंही
है॥ अरपालनहारा अरधारनहारासंपर्सनेइंद्रुकामहूशरीरकेतूंहीहै॥ इंद्र
हेतूंहीहै॥ अरविष्णुरूपप्रतिपालकतूंहीहै॥ अररुद्रशरीरकेतत्वहूंतुंही
है॥ अरशोभकालमोरुद्ररूपतुंहीहै॥ अरमहूअंतरिक्षलोककेसत्यरूप
सोभ्रमततुंहीहै॥ अरसर्वमोस्फुरनरूपतुंहीहै॥ अरप्रकासोकाप्रकास

तूही है ॥ अरु राजवेत्ता राजा तूही है ॥ अरु जब तूं मेघरूप सो वर्षा करत है ॥ तब सर्व
जीवधारी जीवित रहत है ॥ अरु पुशंनतम सो जानत है जो अंजेन वासते हम मारे
उतपन्न होगा ॥ अरु तूं माता अरु पिता सो रहत है ॥ अरु तूं सर्व कर्मों सो अछूत है ॥
अरोगवान अरु अग्निरूप से प्रलै संसार मो तूंही है ॥ अरु भगण अरु नक्षत्र सर्व
का तूंही है ॥ अरु राजा सम तूंही है ॥ सेप्र नेउंसेन हमारा अनंत तेरा ही है ॥ अरु ध्ये
यहि जो लोक हम गनाही लोक होत है सो तूंही है ॥ अरु मोह जो पिता अरु माता सुत सो
राखत है ॥ सो वाहि मोहरूप मो तूंही है ॥ अरु माता अरु पिता तूंही है ॥ अरु वाहि श
कहूं तूंही है ॥ जो मद्ववा रु इंद्री के अरु चवदा इंद्री अरु श्रवण इंद्री अरु घ्राण इं
द्री अरु मन ये है ॥ अरु शक्ति तेरी जो मद्ववां के है ॥ तो ते तुम सदा इन सो इं
द्रिस्थत है ॥ अरु इसो वाहजगम नमत करे ॥ अरु सर्व शक्ति प्राण ही है ॥

न वा स्य

औरजोअष्टमर्त्यतीनलोककेहै॥ सोसंपूर्णमहद्ब्राह्मणमेंहै॥ हेब्राह्मणजैसेमाता
कृपालहोकररक्षासुतआदिकोकीकरतहै॥ तैसेहीतुमहूहमकोरक्षामोराखो॥
औरज्ञानरूपजोहैचैतन्यताइहीहमकोधनुलपकरो॥ जेएताब्राह्मणकीया
मांतइंदुयोनेवर्णनकरी॥ औरजोवनवानऔरपुरातनहैसोउत्पातिकर
तहीहै॥ तातेवाब्राह्मणकोनमस्कारहै॥ इतितृतीयब्राह्मणंबृहमवेदरयी॥ वी
अथप्रश्नमलसरिषीषार॥ ॐ॥ हेतपलादिनमस्कारकोयोगउत्पत्ति
तिप्राणकीजोयामांतवर्णनकरीतुमसोकहो॥ सोप्राणकवनठवरसोउतप
त्रभयाहै॥ औरयाशरीरमोकोमांतआगमनकरतहै॥ औरपंचप्रकार
याशरीरमोकोमांतइस्थतरहतहै॥ औरकोप्रकारवाहजगमनकरत
है॥ औरवाहजकोमांतहै॥ औरअमंतकोमांतहै॥ अथयाहजोमद्रदे

प्रारा॥ आत्मा का प्रतिबिम्ब है

वत्तो के अर पंचभूत ताके अर अवरसाधसंपूर्न पदार्थों के को भासतहैं॥ मद्र शरीर के सा
धइंद्रे के को प्रयोजन राषतहै॥ तपल्लाहोवाच॥ प्रथम जातिगंभीर पछ्या तैने॥ या
का उत्तर साधसर्व काहू के प्रगट करने को योगु नहीं॥ अज्ञतेवजो तुझे ब्रसतयज्ञासी
॥ दुडे देषतहों तो ते तुझे उपदेसु करतहौं॥ तथ्यथा॥ अनादि मो प्राणकी उतपत्ति आ
त्मासो भई है॥ जैसे प्रतिबिंब पुरुष का पुरुषसों उतपन्न होतहै॥ तैसे ही प्राण म
ब्रह्मआत्मा के जो एकता को प्राप्त है॥ सो प्रगट भये है॥ और तिन से है॥ जो प्रतिबिं
मद्र बंसे पूर्न पदार्थों के वचतहै॥ और साधवाह मन वांकी के मद्र शरीर के प्र
वेश करत भया है॥ और करतहै॥ और जैसे राजा जो अपुने एक देस का अधि
कार काहू को देतहै॥ और आज्ञा करतहै जो या देस का रतनक तुझे कीया मैं ने॥
और ताकी आज्ञा मोरदा करतनहै॥ तैसे ही प्राण साधआज्ञा आत्मा की जो

राजयोकाराजाहै॥याशरीररूपदेसमेजोइंद्रीआदिकपदार्थहैसोप्रजाहै॥ज्ञा
नकरकरयादेसकाअधिकारीअरस्वतंत्रभयाहै॥अरसंपूर्णयादेसकेवरत
नेमेवहीप्रवर्ततहै॥अरवहीप्राणअपाननामसोमलगुदाइंद्रीअरलिं
गइंद्रीकेइस्थितहै॥अरमध्यचक्षुइंद्रीकेअरश्रवणइंद्रीकेअरमुषके॥
अरनासकाकेप्राणनामसोआपइस्थितहै॥अरहृदेदेस्थानमेवहीस
माननामसोइस्थितहै॥अरवहीअंनकोभस्मकरकरसाथसर्वशरीर
केसमप्राप्तकरतहै॥याहीसोहैनामवांकासमान॥अरअंनपचकरसंपूर्
नेअंगोकोप्राप्तहोतहै॥अरसप्तधातरमोषकरदेतहै॥अरप्रकाशकरहत
है॥अरव्यानपवनमध्ययुगमनेत्रोकेअरयुग्मकरनेके॥अरयुग्मघ्रि
ष्टुनासकाकेअरमस्तकेअरमध्यसर्वशरीकेअरसब्दउतपत्तिमध्यम

अरएक

नलूपकेमनलकेजोएकसतैंनाडुकासाथवांकेनिकसतहै। औरसाथएककएककेवासनऔरएक

नाडुकाकेसतसतनाडुकाअवरनिकसतहै। औरवासाथएकएकनाडुकाकेअवरना

डुकाहूंनिकसतहै। संपूर्णवीहवहत्वसहंस्त्रनाडुकाहोतहै। तासंपूर्णमेवहीव्या

नव्यापकहै। औरभ्रमतहै। औरवाएकसतऔरएकनाडुकासोजोसाथमनके

निकसतहै। एकनाडुकाकेएकवासोजाकोसुषमनाकहतहै। सोकंठसोऊर्धकोगम

नकरकरब्रह्मरंध्रुसोप्राप्तभईहै। प्राणजोअपानवहीहै। औरकंठइस्थानमोउ

दानकहावतहै। सोउदानजोमार्गसुषमनाकेसोब्रह्मरंध्रकोप्राप्तहोकरशरी

रत्यागकेकालमोवाद्वारसोवाहजगमनुकरे। तोवीहब्रह्मलोककोप्राप्तहोतहै॥

औरजोमारणमुखकेसोवानासकाकेसोवानेत्रोकेसोजगमनुकरे॥ औरवांनेक

मेसुभकीयेहै॥ तोउत्तमलोककोप्राप्तहोतहै। औरजोअसुभअसुभकर्मसमानकी

थेहैं तोपुनः व्याहरूपहोकर मनुष्यसंतान अपुकीके पोत्रादिकरूपसो उत्पतहोतहैं॥ जब
लगशुभकर्मनयोगादिकवासेप्रगटनहे॥ तबलगवर्तीकेपापसोमुक्तनहीहो
त॥ याहीसोपाछेवाकेजोसंतानहे॥ औरशुभपत्रकर्मवेदोक्तकरे॥ तोवाकर्मनि
सोंस्वर्गकीप्राप्तवाकोहोतहै॥ औरजोअशापहूशुभकर्मनहींकीयेहें॥ औरपाछेअ
पुनेधर्मसंतानहूनराषतहे॥ तोमनुष्यासंसारहीकेभ्रमतहै॥ औरर्थयांहैजोम
नुष्यपशुरूपसंसारकेवंधरहतेहै॥ प्राणवाहजजोसूर्यहै और वहीप्राणजोअम
तमयचन्द्रइडेहै॥ औरतेवजोप्रकाशस्वरूपकाआधकहै॥ तातेआधिष्टाताचन्द्र
इडेकोसूर्यहै॥ औरअपानवाहजमेपृथ्वीरूपअधिष्टातापृथ्वीकाहै॥ औरवही
अमृतमयऔरगुदाअरलिंगइंद्रीकेइस्थतहै॥ औरलघुदीर्घमेलकावहीप्रेरक
है॥ औरसंपूर्णकेआभंतरकोधारतहै॥ औररक्षाकरतहै॥ औरआतेवजोपृथ्वीअ

धिकहै॥ तातेअधिष्टातायायुग्मइंद्रकोपवधीकहीयतहै॥ अरसमानवायुजमोआका
शरूपअधिष्टाताआकाशकोहै॥ अरवहीसमानअनाभिमेअंनकोपचावकरतअं
गंनकामधुरसंपर्नेशरीरकेप्राप्तकरतहै॥ जासोशरीरकोवलुहोतहै॥ अरमधूना
भकेइस्थितहै॥ अतेवजोआकाशअधिकहै॥ तातेअधिष्टातावाकाकहीयतहै॥ अ
रव्यानवायुजमोइहीपवनरूपअधिष्टातापवनकोहै॥ जोवायुजभ्रमतहै॥ अरअभंत
रमोवहीव्यानसंपर्नेशरीरमोभ्रमतहै॥ अरअपुनीतसोअभंतरकोधारतहै॥ अ २१
ररक्षाकरतहै॥ अरअतेवजोपवनवायुजकोअधिकहै॥ तातेवाहिअधिष्टाताकही
यतहै॥ अरउदानपवनजोवायुजमोअग्निरूपअधिष्टाताअग्निकोहै॥ अरअ
भंतरकंठइस्थानमोइस्थितहै॥ अररक्षासंपर्नेअभंतरकीकरतहै॥ अरवही
उदानशरीरत्यागबेकालमोजववायुजकोनिकसनेमोप्रवर्ततहै॥ तवजठरअ

गिनन्तनताकोप्राप्तहोतहै॥ अतेवजोवाकालमेसोसंपूर्नइंद्रीकियांस्वदनशक्ततोअ
पुनेइस्थानोकोत्यागकरमद्धमनकोनकरजीवात्माकेएकठवरहोतहै॥ अरवा
ठवरमोमनसोमननकीचाहहोतहै॥ अरयथाप्रमअग्रमप्रमवाचाहकेजोकर्मवासो
भयेहै॥ अरताकेअनकूलजोल्लोकहै॥ वासतेप्राप्तकर्मोकेसूक्ष्मशरीरसहतजी
वात्माकोमद्धगम्पुनेलीनकरकरवालोकनोप्राप्तकरतहै॥ अरशरीरकोअंगीकार
करतहै॥ अर्थयहिहैजोएकहीप्राणपांचभांतभयोहै॥ अरसमानरूपसोजीवात
माहूप्राणहीहै॥ अरउदानरूपसोयाप्रकारजीवात्माकोकर्मोकेभोगकेलोकमो
हूंप्राप्तकरनहारावहीहै॥ जोकोउयाभांतप्राणकोजाननेनभयासमुझे॥ संतान
गाकीकवहूंनतनताकोनप्राप्तहै॥ अरआपअविनाशीहै॥ अरयापैयाभांतश्रु
तवाकेकेअर्थहै॥ जोकोउयाभांतएकप्राणकोपंचप्रकारव्यापकसमझे॥ अरपु

गर ताप्राण की अरु आगमन करना प्राण कामय शरीर के अरु इस्थित होत प्राण काम
य शरीर के अरु या भांत प्राण इंद्रु को अपु ने मों लीन करत है ॥ अरु आत्मा का जो प्रा
ण प्रीति विवै है ॥ अरु या संपूर्न पदार्थ को भिंन भिंन समझै ॥ तो वाहि अविनाशी
है ॥ अरु वर प्राप्त शरीर त्याग के काल की याहि है ॥ शब्द जो अरु रोध न कर नोषिद पु
ग महीकर नो सो श्रवण करीयत है ॥ अरु वाहि शब्द दुवाहि है ॥ अंतन के पहु हो ने सो हृ
दे मों होत है ॥ अरु श्रवण करीयत है ॥ सो शब्द सप्त दिव समप्र यम हीं भ्रांत सो न
हीं श्रवण होत ॥ इति तृतीय प्रश्न समाप्त कुशल रिषीश्वर ॥ अथ प्रथम सार जा
मुनी ॥ हे तपलाद रिषीश्वर नमस्कार कोयो वहि कवन पदार्थ है ॥ जो मनुष्य शरीर को नि
द्रा मों मग्न होत है ॥ अरु वाहि कवनु है जो को निद्रा नहीं वस करत ॥ अरु वहु इन मो
कौन पुरष कवन है ॥ जो स्वप्न का द्रष्टा है ॥ अरु प्रशंनता कवन को होत है ॥ अरु इ

नसंपूर्नेकाइस्थितइस्थानभूमाकौवतनैहै॥ तपलादोवात्वा॥ हेस्वरजामीजांकाल
मोसूर्यकाअस्तहोतहै॥ संपूर्नेकिरनांवांकीयांमंडलवांकैमोलीनहोतहै॥ अरुर
पुनःजवसूर्यउदैहोतहै॥ तववोहलांटांअरुरोकैरणामंडसूर्यकैलीनभईथी
८ सोपुनःविस्त्रांतकोप्राप्तहोतहै॥ तैंवतमंडसुषपतकेसंपूर्नेइंद्रेमद्रुमनके
जोरषीकैहैलीनहोतहै॥ अरुररषीकैमनडजीवात्माकै॥ अरुतेववाकालमोय
हिपुरषुस्रवणांअछुनहीकरता॥ अरुरदेषतननहीअछु॥ अरुरंगंधअछुनहीले
ता॥ अरुरअछुस्वादुरसनासोंअंगीकारनहीकरता॥ अरुरअछुसपर्सनहीकर
ता॥ अरुरअछुवचननहीउचरता॥ अरुरअछुकरसोंनहीग्राहीकहोता॥ अरुर
अछुमैथुनमोनहीप्रवर्तता॥ अरुरलघवीअरुरदीर्घमैलकोनहीडारता॥ अरु
रजोअपुनेस्वरूपकोप्राप्तभयाहै॥ अरुरस्वपनामधारतहै॥ अरुर्थयरिसेजो

इंद्रेकोअगुनीअग्नानामोवसकीयाहै॥ इतिउक्तप्रथमप्रश्न॥ अर्थयाहिवहिपदार्थजोअनि
द्रारूपसरद्यामोमगनहोतहै॥ सोइंद्रेहै॥ अथद्वतीयप्रश्न॥ मद्रयाशरीरकेइहीपंच
प्राणजोप्रकाशरूपहै॥ सोसदाजागतअवस्थाहीमोरहतहै॥ अरइहीपंचअग्निनत
पमयेहै॥ एकअपानअग्निद्वतीयव्यानअग्नि॥ त्रतीयप्रानअग्नि॥ चतुर्थस
मानअग्नि॥ पंचमउदानअग्नि॥ प्राणअग्निसंपूर्नअग्निमोश्रेष्ठहै॥ अरस
मानवहिअग्निहैजोमोजोकछुडारीयतहैताकोभस्मकरतहै॥ अर्थयहिजो
पचावनहारीअग्निनकीवहीहै॥ अरमनजोजगकाकरताहै॥ अरगमनअग्नि
मनप्रानकोजोइहीयायज्ञमोआहुतहै॥ अर्थयहीहेजोइंद्रेकोसबपतकाल
मोमनआपमोलीनकरकरप्रानद्वाराआत्मामोहवनकरतहै॥ अरयाय
ज्ञकेफलकोप्राप्तकरनहारामनकोउदानपवनहै॥ अरवहिफलयाहिहै॥ जो

सदाअद्भुस्वपनकेमनसोअलमोप्राप्तकरतहै॥ इतिउतवतीप्रश्नः॥ अर्थयाहिव
हिपदार्थजोसदाजागतहीरहतहै॥ सोप्राणहै॥ इतितृतीयप्रश्नमवर्णनं॥ वापुरु
षकाजोस्वप्नकाद्रष्टाहै॥ वहिपुरषुजोमद्भमनमेंहैसोजीवात्माहै॥ अररतेज
सअवस्थामेअपुनीअपुनीविभूतकाद्रष्टाहै॥ अरवाकालमोजोकछुचा
हतहैताकोउतपतकरतहै॥ अरकछुमद्भजाग्रतअवस्थाकेदेषतभयाहै॥
सोसपर्नमद्भस्वप्नकेदेषतहै॥ अरजोकछुजागतमोश्रवणकरतभयाहै॥
तासपर्नकोमद्भस्वप्नकेश्रवणकरतहै॥ अरजोकछुमद्भसपर्ननगरोंके
अरठवरकेदेषतभयाहै॥ अरजोनिश्चैकरतभयाहै॥ वांकोपुनःदेषतहै॥ अ
रदेषयाअनदेषया अरसुनयाअनसुनया अरानुभ्याअनुभ्यासपर
नअपहीयातपधारकरसर्वकोदेषतहै॥ अरप्रशंनताकोप्राप्तहोतहै॥

जीवात्मा स्वप्न का द्रष्टा है।

तृतीय प्रश्न॥ अर्थ याहि जो पदार्थ स्वप्न का द्रष्टा है॥ और प्रश्नोत्तर ताको ज्ञात हो
तहै सो जीवात्मा है॥ अथ चतुर्थ प्रश्न वर्ननं॥ वा पुरुष का जो सर्व का इस्थि
त इस्थान भ्रमा है॥ वहि आत्मा जो असं प्रश्न काम करत है॥ और उतपत कारन
सर्व का है॥ और सत है॥ यद्यपि यहि जीवात्मा परमात्मा सों भिन्न सा देषीयत
है॥ तौ हूं मन स्वप्न के जो संप्रश्न निस्रिष्ट प्रगट करत है॥ तातें निश्चै है जो वहि
आपुने मूल सुभाव को त्यागत नहीं भया॥ जो जा पुरुष ने संसार को उत
पन्न कीया है॥ सो वही पुरष है जो मद्ध तेजस अवस्था के अवर संसार कों उ
लपत है॥ अथ वर्ननं सुषपत॥ मद्धु निंद्रा के जब स्वप्न के मारग नहीं सो सुषप
त का आगमन न होत है॥ तौ या भांत होत है॥ नाउ का जो विप्रीत नाम राषत है
और वाहू सो मूल द्वार का इस्थान उतपत भया है॥ तव मन वा सो आगमन के

रतहैं॥तबवहिनाडुकामारगचिवरकीनताकारोकतहैं॥याहीसोवाँचिवरकीन
ताशिरतनहीं॥औरवाकालमोजीवात्माकछुस्वप्ननहींदेषत॥ऐसेतेवमन
वन्नाडुकाकोजोमारगचाहकाहैवाकालमोरोकतहैं॥जबवहिमारगचा
हकारका॥तवस्वप्नदृष्टिनहींपरत॥कारनस्वप्नकाकेवलचाहहीहै॥और
जीवात्मामद्धशरीरकेवाकालमोकेवलआत्माजोआनंदस्वरूपहैं॥सोहो
तहैं॥हेमुमोषजैसेसंवूहपंषीयोंकेशिषरवृक्षकेपरवासतेसुषकोप्रा
प्तकेसदाइस्थितहोतहैं॥तैसेहीयहिसंपूर्नप्राणीमद्धपरमात्माकेजोन्ग्र
पुन्आपजीवोंकाजीवहैं॥आत्ममननकरकरसुषकोप्राप्तहोतहैं॥पृथ
वीसेगंधअरइस्थूलअरआपसेरसअरइस्थूल॥अरअग्निसेरूपअ
रइस्थूल॥अरपवनसेस्पर्शअरइस्थूल॥अरआकाशसेशब्दइस्थ

ला ॥ अरु अर्थ याहि है जो सब्द में आकाश द्वि देखा आकाश मस्तक आकाश अरु चक्षु इंद्रै अरु
रूप अरु श्रवण इंद्रै अरु शब्द ॥ घ्राण इंद्रै अरु गंध ॥ अरु रसना अरु रस ॥
अरु त्वचा अरु स्पर्श ॥ अरु वाक इंद्रै अरु जो कछु उच्चरत है ॥ अरु पाणि अरु जो
कछु ग्राहीवकू जीयत है ॥ अरु पाद अरु याठवर वासो गमन कीजीयत है ॥ अरु
मल र पायु अरु जो कछु वासो भिर कीनता त्यागीयत है ॥ अरु उपस्थ अरु जो कछु
वासो मैथुन कीजीयत है ॥ अरु मन अरु चाह अरु बुद्धि अरु निश्चै अरु अहंकार
का अरु अभिमानी अरु चित्तु ॥ अरु चिंतवनी अरु प्रकाशक अरु प्रकाश अरु रस
नादिक संपूर्ण ॥ इंद्रै की शक्ति अरु प्रविरत सक्तीकौ ॥ याहि संपूर्ण पदार्थ सुषु
पत काल मो मध्य आत्मा गंभीर के सुख को प्राप्त होत है ॥ अरु वाहि आत्मा गंभी
र भूमा सर्व को है ॥ अरु वाहि आत्मा गंभीर दृष्टा सर्व को है ॥ अरु सर्व को सप

रसवहीकरताहै॥ अरु शब्दकाग्राहीक अरु गंधकाउ ग्राहीक अरु रसकाग्राहीक
अंतः करण वहीहै॥ अरु अंतःकरनकाप्रवरतकवहीहै॥ अरु करताहै॥ अरु चेतनहै॥ अरु
पुरुषहै॥ पुनः कथंभूतं वा आत्मा॥ प्रतिबिंबनहीराषत॥ अरु रूपहै॥ अरु शु
द्धहै॥ अरु स्वच्छनहै॥ अरु अलिप्तहै॥ अरु सर्वरूपवाहीकाहै॥ अरु मद्धसर्वके
है॥ अरु ऋतमोयोंवरनाहै॥ जोआत्माकेवलचेतनहै॥ अरु सर्वकाजीवात
माहै॥ अरु संपूर्णईश्वर अरु इंद्रीयोकेदेवता अरु पंचभूत॥ अरु सर्वइत्यादि
कपदार्थमध्यआत्माहीकेलीनहोतहै॥ हेमुमोषजोकोउ वाआत्माकोया
भांतजाने॥ वहिसर्वज्ञाताहोइ॥ अरु केवलसंपूर्णवहीहोइ॥ अरु वसीहै
इतिचतुर्थब्राह्मणप्रथमस्तरजामनी॥ अथप्रथमसतकामारबीध्यरा॥ स
तकामतपलादप्रतिउवाच॥ हेनमस्कारकोयोग्यवाहिकोउ जोसंपूर्णआ

ईश्वररूप ब्रह्म है
जीवरूप माया है

उअंतकालमोकेस्वासपरयंतउपासनासाथप्रणवकेकरे॥वाउपासनासे
भवनसेलोकनकोपावतहै॥तपलोकेवाचाहेसतकामपरंब्रह्मअर्थयहिजो
जीवअरुईश्वरइहीनामहै॥जोकोउज्ञातायानामकोअरुउपासनयाना
मकाहै॥वोहिईश्वररूपजोहैब्रह्म॥अरुजीवरूपजोहैमायाउभैकोप्राप्तहोत
है॥अरुयहिनामसार्धत्रिमात्राराषतहै॥जोकोउसाथप्रथममात्राके
जोअकारहैउपासनाकरै॥साथशब्दकोरिगवेदकीवासोत्याहारसोलाहोत
है॥अरुतपस्याअरुश्रद्धाइसकरप्रतीतवाकोप्राप्तहै॥अरुमनुष्यसंपन्नमनुष
हुकेअधिकविभूतिकोपावतहै॥अरुब्रह्माकीप्रसंनताकोप्राप्तहोतहै॥अरु
रजोकोउसाथद्वितीयमात्राकेजोउकारहै॥अरुप्रथममात्राहूमद्रवांके
लीनहोतहै॥उपासनाकरै॥वांकोयजुर्वेदअपुनीशक्तिसोअंतरिक्ष

यजुर्वेद

लोकसोनिकाशकरनिशाकरकेलोकमोप्राप्तकरतहै॥अरवालोकमोवि
भ्रतकोप्राप्तहोकरपुनःवालोकसोअवरउत्तमलोकमोंप्राप्तहोतहै॥अ
रविहनकीप्रसंननताकोपावतहै॥अरजोकोऊसाधततीयमात्रामकारके
ओंकारउकारयहिद्वयमात्रावामोलीनहैउपासनाकरे॥वांकोसा
मवेदसाधशाकअपुनीकेसूर्यलोकमोप्राप्तकरकरपुनःवालोकसोअ
वरउत्तमलोककोप्राप्तकरतहै॥अरमहादेववांपयप्रशंनहोतहै॥अ
रजोकोऊसाधसंपूर्नमात्राकेजोसार्धत्रिमात्राहै॥संपूर्ननामप्रण
वहै॥उपासनाकरे॥वहिगंभीरप्रकाशकोपावतहै॥अरजैसेसर्पकुं
चरीअपुनीकोछाडकरवासोंभिंनविराजतहै॥तैसेहीउपाशकया
नामकापापोसोंभिंनआनंदसंयुक्तरहतहै॥अरआथर्वणवेदवां

कोहिरंन्नगर्भकेलोकमोप्राप्तकरतहै॥ अरवाउवरमोजोजीवोकाजीवहै
अरमद्वसंपूर्नशरीरोकेपूर्नहै ताकोपावतहै॥ अरदेखतहै॥ अर्थयहि
जोईश्वरहोतहै॥ अरजोकोऊशिवशक्तिकहतहै॥ तामोलीनहोतहै॥
अरवांपयश्रुतिवेदकीयामांतसाखदेतहै॥ तथ्यथा॥ उपासकयानाम
केकोजोसार्धत्रिमात्राहूंहै॥ अरएकएकमात्राहूंहैमिरतअपुनेवसमो
नहीकरत॥ अरशक्ति॥ उपासनायामांतकीयानामकीउपमांतहै॥
तथ्यथा॥ एकयहिजोगंभीरशबदवाकइंद्रीसोउचरना सोयहिन्तन
उपासनाकहीयतहै॥ द्वतीयशबदस्पन्दनवाकइंद्रीसोउचरना॥ जोव
हिशबदअपसोंभिंनअवरलोनभ्रवणहे॥ सोयहिमद्धमउपासना
कहीयतहै॥ तृतीयजोमननहीसोउचरेजिहवाकीस्फुरनतानहोइ॥

याकेसर्वसोउत्तमउपासनाकहीयतहै॥जोकोऊज्ञातायाउपासनाकाहै॥अरुसदासं
पूर्नकालमोइहीअभ्यासुकरतहै॥वीहउपासकसायुज्यमुक्तियाउपासनाकीकेदृढ
अवस्थाकोप्राप्तहोतहै॥अरुरिगवेदमंत्रयासंसारकेवींकोश्रेष्ठताकोप्राप्तकरतहै
अरुयजुर्वेदवाकोंतिनशाकरकेलोकमोश्रेष्ठतादेतहै॥अरुसामवेदवाकोंसूर्यके
लोकमोश्रेष्ठतादेतहै॥अरुयाप्रकारज्ञानवानोंअरुअपुनेस्वरूपकेज्ञानीउ
नेकहाहै॥जोकोऊसायुज्यसार्धत्रिमात्राकेपूर्नयानामअंगीकारकेअभ्यासुकरै॥
वीहउपाशकहिरंनगर्भकेलोककोप्राप्तहोकरअरुज्ञानजोअंतहैसंपूर्नपदा
र्थोंकाताकोपहुंचकरवाठवरमोप्राप्तहोतहै॥जहांमृत्युअरुजरानहीं॥अरुना
सअरुभयनहीं॥वहीहैपरअरुवहीहैअपर॥अरुअर्थयाहैजोवहीहैशिवअरुव
हीहैशकत॥इतिप्रश्नसतकामपंचमप्रश्न॥अथषष्टमप्रश्नसुकेशाभारद्वाजु

मद्रवर्जनवापुरुषकेजोषोडसकलाराषतहै॥प्रस्नसुकेषा॥हेतपलादनमस्कारनो
षोडहरनाथनामसुतराजेकुशलकानिकटमेरेज्ञागमनकरकरप्रस्नकर
तभया॥हेसुतानमारद्वाजकीवहिपुरुषजोजामोषोडसकलाहै॥तूवापुरुषकोजा
नतहै॥मैवाकोउत्तरदेतभया॥जोमैवापुरषकोनहीजानता॥जोवापुरषकाज्ञा
नराषतामैतोतुझेकाहेकोनउपदेसता॥पुरातनऋषीश्वरोनेकहाहै॥जोको
ऊमिथ्याकहतहैसमूलकसुनेकोउषारतहै॥अस्तेवमैतुझसोमिथ्याकिसभांतक
हो॥जवमैनेराजकवरकोयाभांतकहा॥तववहितूस्नीभया॥अरुरथपरज्ञातु
रहोकरगमनकरतभया॥हेतपलादअववमैतुझसोप्रस्नकरतहो॥जोवहिपु
रुषकहाहै॥तपलादसुषाप्रीतउवाच॥हेमनोषवहिपुरुषमद्धयाशरीरकेविरा
जतहै॥अरुवहिपुरषुजोषोडसकलाराषतहै॥सोन्याहतभया॥जोकवचसीक

प्राणहि हिरन्यगर्भ से

लासोमद्रशरीरकेआगमनकरोमै॥अरुकवनसीकलासोपुनःआगमनकरो॥
तातेप्रथमहीवानेप्राणकोउतपतकीया॥जोहिरंनगर्भज्ञातवहै॥अरुप्राणसोस
त्रप्रतीतअरुसत्रप्रतीतसोआकाशअरुवासोपवन॥अरुपवनसोवहनअरुव
हनसोअप॥अरुअपसोपृथवीअरुपृथवीसोसंपर्नइंद्रे॥अरुइंद्रेसोमनअ
अरुमनसोअंन॥अरुअंनसोशुक्र॥अरुशुक्रकीधारनासोतप॥अरुतपसो
कर्मअरुकर्मोसोनाम॥अरुरूपप्रगटभये॥जैसेसर्वसरितासमुद्रगंभीरसो
प्रगटहोकरनामअरुरूपकोअंगीकारकरतहै॥अरुपुनःनामअरुरूपकोत्या
गकरमद्रसमुद्रकेलीनहोतहै॥अरुगंभीरसमुद्रकहलावतहै॥तैसेहीजी
वात्मासोजोद्रिष्टासर्वकाहै॥यौंहीषोडसकलाप्रगटहोकरवाहीमोइस्थित
है॥अरुवाहीमोपाछेप्रवर्तअरुपुनीकेलीनहोतहै॥अरुसुषकोपावतहै॥

ज्ञानी वह है जो एक आत्मा को ही सर्वत्र देखता है।

षोडश कला
५ कर्मेन्द्रिये
५ ज्ञानेन्द्रिये
५ तत्व
१ मन
यह है।
यही जीवात्मा
का बंधन है।

औरजाकालमोलीनहोतहै॥नामअरूपवांकानहीरहत॥औरवाकालमो
जीवात्मापुरषुकहलावतहै॥औरजाकालमोयहिजीवात्मासोपूर्नहोतहै॥
तबवहीपरमात्माहोतहै॥औरषोडसकलायाकोकहततहै॥पंचकर्मइंद्रेपं
चज्ञानइंद्रेपंचतत्त्रएकमन॥यहिसंपूर्नषोडसभागजबलगमनद्वजीवा
त्माकेहै॥तबलगजीवात्मायाकीबंधसोमुक्तनहीहोत॥औरवाकोविदेह
मुक्तनहीकहीयत॥औरविदेहमुक्ततबहीकहतहै॥जबशरीरकोत्याग
तहै॥औरसबपतमोहूविदेहमुक्तकहीयत॥औरज्ञानवानजोसोयज्ञा
नकेआत्माकोसर्वठवरएकहीपूर्नदेषतहै॥यद्यपिवहिशरीरहूंराष
तहै॥तौहूजीवनमुक्तहै॥औरयहिजोमद्ययासंसारहीकेमुक्तनिततो

कौकोप्राप्तभयाहै॥अरयहिवेदकीश्रुतियाभांतसादीहै॥तथ्था॥जैसेसं
सर्पलकरीपहीयेरथकेकीसाथपहीयेकीनाभकेबिषेलुउहै॥तैसेहीयाहिकी
उसकलासायपुरषजीवात्माकेजोपरमात्माहीहैविषुउहै॥जोयाभांतजोव
हिपुरषज्ञातवहैतमतूजानो॥तोपासम्रितकेसोमकोहो॥अरजोकोउया
भांतविषुउप्रतीतसोजानेवहिहूंपासम्रितकेसोमकेहो॥याभांतसेसर्प्पने
वारिषीश्वरोकोतपलाद्रिषजुवांकेसेवकाच्ये उपदेसकरकरपुनःआ
ज्ञाकरतभया॥तपलादोवाच॥मेब्रह्मनंभीरकोएताहीजानतहें॥यासें।
अधिकज्ञाननही॥अरकात्मांभीरसमनुहै॥अरसर्ववाहिसेवकाश्र
वणकरयोयावचनतपलादकेज्ञानसोप्राप्तहोकरपुनःपुनःनमस

मृत्युपाश

कार तपलाद कों करत भये ॥ अरु कहत भये अतेव जो तैं ने हम कों आवरन अर
विक्षेपरूप समुद्र अज्ञान ताके सों पार कीया है ॥ ताते तु हीं हमारा पिता पितामा
है ॥ अरु गुरु है ॥ सर्व सें हमारा तुहीं है ॥ जो ता अरु वक्ता या उपनिषद के कों ज्ञान
की प्राप्त हो ॥ अरु संपूर्न पदार्थ सिद्ध हो ॥ अरु सर्व कों आनंद हो ॥ नमस्कार
तपलाद कों अरु नमस्कार ज्ञानीयों कों ॥ इति ब्रह्म उपनिषद अथर्वण वेद
भाषा समाप्तम् ॥ २६ ॥ ओं ॥ अथ अथर्वशिरो उपनिषद अथर्वण वेद ॥
अथर्वशिरोः
अथरवसिर अर्थ यहि जो (सीस है ॥ अथर्वण को) ॥ संपूर्न देवता स्वर्ग के निक
ट रुद्र के जो संघार करता स भी सृष्टि का है ॥ जा मनुष्य कर कर पुनः पुनः नमस्का
र कर कर ब्रह्म करत भये ॥ सुरो वाच ॥ तुम कौन हो ॥ रुद्रो वाच ॥ वर्त्तन स्वरू
रुद्र का ॥ जो मुज सों भिन्न दूसरा घ हो तो कहूं ॥ जो मैं यहि हूं ॥ ताते कियाक

हैं॥ जो मै कवन हों॥ नित ही या मे॥ अरु नित ही हों मै॥ अरु नित ही हों इ॥३॥ति
यन ही कछु॥ याते कहों जो यहि हों॥ वहि यहि हों॥ वहि याहि मै भिन्यासो भि
न्यातर है॥ व्यापक सर्व दिसा मो मै ही हों॥ जो कछु है मै ही हों॥ अरु जो कछु न
ही सो मै ही हों॥ ब्रह्मा मै ही हों॥ अरु ब्रह्म मै ही हों॥ अरु कारन कार्य मै ही हों
कछु पूर्व दिसा मो है सो मै ही हों॥ अरु जो कछु पश्चम दिसा मो है सो मै ही हों
अरु जो कछु दक्षण दिशा मो है सो मै ही हों॥ अरु जो कछु उत्तर दिसा मो है
सो मै ही हों॥ अरु जो कछु आधारि पृथवी के है सो मै ही हों॥ अरु जो कछु ऊ
र्ध आकाश के है सो मै ही हों॥ अरु जो कछु विदिसा मो है सो मै ही हों॥ पुरखु
अरु स्त्री अरु नपुंसक मै ही हों॥ अरु गायत्री आदिक सपतो छंद मै ही
हों॥ अरु त्रयअग्नि एक अग्नि यहि जो प्रगट है॥ द्वितीय सूर्य जो वहि स्व

रूप है ॥ त्रतीय विस्थान त्रअग्नि मे ही हैं ॥ अरु सत असत मे ही हैं ॥ अरु साध्य सर्व
जीव धारीयो के मे ही हैं ॥ सर्व थी पुरातन मे ही हैं ॥ राजयो का राजा मे ही हैं
अरु साध्य सर्व गुणो के मे ही हैं ॥ गुण निधान मे ही हैं ॥ अप मे ही हैं ॥ वह
न मे ही हैं ॥ रिगवेद मे ही हैं ॥ यजुरवेद मे ही हैं ॥ सामवेद मे ही हैं ॥ अथर्व
णवेद मे ही हैं ॥ निराकार जो है शिव सो मे ही हैं ॥ साकार जो है राम सो मे
ही हैं ॥ पुराण अरु गाथ मे ही हैं ॥ पुहकर तीर्थ सो आदि सर्व तीर्थ मे ही हैं ॥
सपूर्ण पदार्थ मे ही हैं ॥ पर्व मे ही हैं ॥ मख मे ही हैं ॥ पाठ मे ही हैं ॥ वार
ज मे ही हैं ॥ अरु मंत्र मे ही हैं ॥ प्रकाश मे ही हैं ॥ अतेव जो एक मे ही हैं ॥ जां
ने मुझे जाना तां ने सर्व सुरो को जाना ॥ अरु सर्व शास्त्रो को जाना ॥ अरु
सर्व शास्त्रो की आज्ञा को जाना ॥ अरु जाने वेद को जान्या तां ने माया को

जान्न॥ अरुमायाजीवतहै॥ अरुचतुर्वेदहीचतुरइस्तानेहैवांको॥ जानेभेदजो
केकोजाना॥ वानेभेदकर्मअरुथीब्राह्मणकाजाना॥ अरुजानेभेदब्राह्मण
केसोभेदयज्ञका॥ अरुसमग्रीजोयज्ञकीहैताकोजाना॥ वानेभेदज्ञान
उकाजाना॥ अरुवानेसतोंकोजाना॥ अरुजानेसतोकोजानावानेशु
भकर्मोंकोजाना॥ अरुसर्वज्ञातयोशुभकर्मोंकोकीउत्रिब्रअरुसबमेही टाकी
देतहैं॥ लछ्मनेजवयहिसंपूर्णवचनदेवत्योकोआज्ञाकीये॥ तवपोछ
वांकेअरुपुनेप्रकाशमोगुप्तभये॥ तवसंपूर्णदेवताऊर्ध्ववाहूहोकरअ
रध्यानवाहीलछ्मकेप्रकाशकामननमोधारकरसायज्ञातिदीनताकेअ
रदासतबकेमनमधउस्तुतिलछ्मीकेप्रवर्तनभये॥ अरुवीहस्तुतियहिहै॥
तथ्यथा॥ वहिलछ्मजोसंघारकरतासर्वकाहै॥ अरुनमस्कारकोयोगहै

अरु ब्रह्मा रूप होकर उतपन्न कार न जगत का वही है ॥ तावां को नमस्कार है ॥ अरु वही विष्णु रूप होक
र प्रतिपालक है तावां को नमस्कार ॥ अरु देव देव है तावां को नमस्कार ॥ अरु वही रुद्र है अरु वही
विष्णु है ॥ तावां को नमस्कार ॥ अरु वार रुद्र को जो महादेव है ॥ अरु नमस्कार को योग है नमस्
कार ॥ अरु वार रुद्र को जो नमस्कार को योग है अरु पारवती है रूप वां का ॥ अरु घियादि जो शक्ति वां
की के वल्लव ही है ॥ नमस्कार नमस्कार ॥ अरु वार रुद्र को जो नमस्कार को योग है ॥ अरु श्वेतता
देनहारा है नमस्कार ॥ अरु वार रुद्र को जो नमस्कार ॥ अरु वार रुद्र को जो नमस्कार को योग है
चर व्यापक है ॥ अरु मुक्ति देनहारा है ॥ अरु नाश करनहारा है वा पदार्थों का जो ज्ञानवा
धक है नमस्कार ॥ अरु वार रुद्र को जो नमस्कार को योग है ॥ अरु इंद्र रूप है ॥ अरु घियादि
जो सर्व सुरों का राजा है ॥ नमस्कार ॥ अरु वार रुद्र को जो नमस्कार को योग है ॥ अरु
र संपत्ति अग्नि को रूप वही है ॥ नमस्कार ॥ वाको ॥ अरु वार रुद्र को जो योग है न

मस्कारको॥ ॐ आकाशहै नमस्कार॥ ॐ वालद्रुकोजो नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ आप
है नमस्कार॥ ॐ वालद्रुको नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ पृथ्वीहै नमस्कार॥ ॐ
वालद्रुको नमस्कारकोजोयोगहै॥ ॐ अधोदिव स्वर्गकेलोकवहीहै॥ नमस्का
र॥ ॐ वाहिलद्रुजो नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ सूर्यहै तांवाको नमस्कार॥ ॐ व
हिलद्रुजो नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ रोनिशाकरहै तावाको नमस्कार॥ ॐ वाहिल
द्रुजो नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ स्पंदनै नक्षत्रहै ताकोनमस्कार॥ ॐ वाहिलद्रु
जो नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ अष्टगहै स्थूल वहीहै॥ प्रथम स्वासका वाहजको
गमन॥ द्वतीय रसना॥ त्रितीय वाकइंद्री॥ चतुर्थ चक्षइंद्री॥ पंचम श्रवणइं
द्री॥ षष्ठम मन॥ सप्तम प्राण॥ ॐ अष्टम तुचा॥ इति स्थूल पुरीयष्टका॥ तांवाकोन
मस्कार॥ ॐ वाहिरद्रुजो नमस्कारकोयोगहै॥ ॐ पुरीयष्टकासूक्ष्म जाकोल

नासा

सुक्षमअष्टगढकहीयतहै॥ सोवहीहै॥ प्रथमआगमनकरनास्वासकोअभंतरेको
द्वतीयरस॥ त्रतीयअधार॥ चतुर्थरूप॥ पंचमशब्द॥ षष्टमचाह॥ सप्तमघ्रा
णइंद्रेकाविषेपदार्थ॥ अष्टमस्पर्शजोत्वचाकाविषेहै॥ इतिपुरीयष्टसूक्षमजो
पुरयिष्टस्थूलकाविषेहै॥ ताकोनमस्कार॥ अरुवहिहरुद्रजोनमस्कारकोयोगहै
अरुप्राणहैताकोनमस्कार॥ अरुवहिहरुद्रहैजोनमस्कारकोयोगहै॥ अरुकाल
भगवानहैताकोनमस्कार॥ अरुवहिहरुद्रहैजोनमस्कारकोयोगहै॥ अ
रयमराजहैतावोंकोनमस्कार॥ अरुवहिहरुद्रहैजोनमस्कारकोयोगहै
अरुमित्रहैतावोंकोनमस्कार॥ अरुवहिहरुद्रहैजोनमस्कारकोयोगहै॥ अरु
भूतभविष्यतवर्तमानवहीहै॥ तावाकोनमस्कार॥ अरुवहिहरुद्रजोनमस
कारकोयोगहै॥ अरुसर्वचतुर्दसलोकवहीहैतावाकोनमस्कार॥ अरुव

सूक्ष्म अष्ट गढ़
१ स्वास का अंदर आना
२ रस
३ अधार
४ रूप
५ शब्द
६ इच्छा
७ घ्राण
८ स्पर्श
यह हैं
जो स्थूल गढ़ हैं
से हैं।

हिरदुहैजोनमस्कारकोयोगहै॥ अरुस्थूलहैतावाकोनमस्कारहै॥ अरुवाहिरदुहै
जोनमस्कारकोयोगहै॥ अरुसूक्षमहै अरुसर्वहैतावाकोनमस्कार॥ अरुवाहि
रदुहै अरुनमस्कारकोयोगहै॥ अरुस्वेतहै अरुधीयरिहैजोदिनहैवाकोनमस्का
र॥ अरुवाहिरदुहैजोनमस्कारकोयोगहै॥ अरुरक्तमस्तपहै अरुधीयरिहैजुरैन
हैतावांकोनमस्कारहै॥ इतिप्रथमब्राह्मणसमाप्तम्॥ हेरुद्रपृथ्वीचरनतुमारे
है॥ अरुअंतरिक्षलोकपेट अरुजठरतुमाराहै॥ अरुस्वर्गलोकसीसतुमारा
२ है॥ अरुसंपूर्नसीसतरूपतुमाराहै॥ ब्रह्मतुमहीहो॥ तुमअद्वैतहो॥ अरुसाथ
कारनमायाकेजोएककालमें अात्मासोंउतपत्रभईहै॥ अरुपाछेसाक्षात
कारकेनहीरहत॥ अरुलक्षनजोहैप्रेमइहीहैरूपवांको॥ अरुविद्या अरुअवि
द्याद्वैभांतवहीदेषीयतहै॥ अरुसापवित्रगुणकेजुवहीमायाहै॥ उतपत्रइस्थ

नसंघारयात्रिभांत तुमही देषाईदेत हो ॥ अरु नाशकरता अभ अरु अभुम र्मो
केतुमही हो ॥ अरु निरसं देह ताके देनहारे तुमही हो ॥ अरु सर्वयज्ञा के कर्मन
पतुमही हो ॥ अरु जगत अरु जो कछु सरब जगत के असमंत ॥ अरु वाहू जे है सोतु
मही हो ॥ देनहारे अरु ज्ञान देनहारे तुमही हो ॥ अरु करता अरु अकरतातु
मही हो ॥ अरु लघु अरु दीर्घ तुमही हो ॥ अरु इस्थान अरु भरना सर्व केतुम
ही हो ॥ जो हम वांको पान करके अमर होत है ॥ अरु प्रकाशरूप अरु गंभीर प्र
काश अपुने केतुमही हो ॥ अरु वहि प्रकाश जु जाके देषने सो अरु वरको उप
काशा द्रिष्ट मोन ही आवत ॥ वहि प्रकाश तुमही हो ॥ अरु जाको वा गंभीर प्र
काश प्राप्त होत है ॥ शत्रु गंभीर जो अज्ञान अरु आलस अरु समीरत अरु
विषयाभोग है ॥ सो वाको वस मोन ही कर सकत ॥ अरु हम जो सरन तुम

गी है॥ को शत्रु वाशत्रो सो हमकों नहीं सकत जीत॥ अरु दुखदायक नहीं होत॥
अरु साक्षात जो देषा तुमकों तास्सो अविनाशी भये हम॥ अरु भयानि तिके सों
अभय भये॥ अरु वह मानुं रतिके वस नहीं होत॥ अरु तुम अजर अमर हो॥ अरु शुद्ध
हो॥ अरु स्वछंद हो॥ अरु वा नाम को जो ब्रह्मा ने वासते नासकर ने शोक संसा
र के मंत्र वेद के प्रगट कीया है॥ सो वाहि नाम प्रणव तुम ही हो॥ अरु अधर्मा
त्रा जो मंत्र प्रणव के हैं॥ अरु अतिसूक्ष्म ताराषते हैं॥ वौ हहू तुमही हो॥ अ
रु अतेव जो तुमसो स्वछंदतर हो॥ ताते तुमकों शीघ्र तास्सो नहीं सकीयत
प्राप्त हो॥ अरु याते सा यकारन प्रणव के तुमकों प्राप्त हू जीयत है॥ जु वाहि हू
अतस्वछंद सो स्वछंदतर है॥ अरु सकल रूप तुम्हारो है॥ ताते वाही की उपासना
तुमकों सकीयत है प्राप्त हो॥ अरु तुमके वल अस्त पद हो॥ ताते तुमकों नास

नपदसोतुहीसकीयतप्राप्तहो॥अरुजोतेवप्रणवसोप्राप्तहूजीयतहै॥जोवहिहूकेव
लज्ञानपदहै॥अरुतिनकेहैजोज्ञानपदसोप्राप्तहूजीयतहै॥अरुस्वदमसोस्वद
मकौ॥अरुअर्थकोअवतारसोसकीयतहैप्राप्तहो॥अरुजोवधुदिष्टपदार्थहैसर्व
कौतुमसाधतेअरुपुनेकेमहापरलोमोमध्यअरुपुनेग्रासससमानजानकरलीन
करतहो॥याहीसोतुमकोअनतमहात्माहाराकहतहै॥अरुतुमगहागंभीरहो॥अरु
तुमजोधनीइत्यादिकपदार्थकेहो॥याहीसोतुमकोज्ञानवानअरुमनकेवसक
रनहारेनमस्कारनमस्कारकरतहै॥अरुहाटगरहतुमहीहो॥अरुअधिष्ठाता
देवत्ताभनोकेतुमहीहो॥अरुमध्यसर्वजीवधारीयोकेप्राणतुमहीहो॥अरुतेवजु
वहिप्राणमध्यमनकेहोतहै॥अरुइस्थानसर्वदेवत्योकामध्यप्राणकेहै॥अरुम
ध्यमनसर्वकाहूकेसाधरूपीत्रिमात्राप्रणवकीकेविराजतहो॥अरुअर्धमात्रा

प्रणव का चतुर्थ अक्षर तुरीया है मूल सर्व का। अर श्रेष्ठता सर्व श्रेष्ठ पदार्थों की है। अ
र सर्व के ऊर्ध्व विराजते है। अर आनंद स्वरूप है। सो वहि तुम ही हो। अर्थ यहि है जो
निरगुण अर सरगुण तुम ही हो। अर मनो हमारे योमे इस्थान है तुमारा। अर
सीस तुमारा उत्तर दिशा की ओर है। अर पाद तुमारे दक्षिण दिशा की ओर है। अर सिस
र तुमारा जो उत्तरायण दिशा की ओर है वही प्रणव है। अर वही प्रणव सर्व व्यापी है
अर्थ यहि है जु सर्व ठवर पूर्न है। अर वही व्यापक अर वे अंत है। अर वही वे अंत
तार है। अर्थ यहि है जो तीर पर प्राप्त करन हारा। अर वहि तार ही सूक्षम है। अर व
हि सूक्षम ही शुद्ध है। अर वहि शुद्ध ही विद्युत रूप प्रकाशत है। अर वहि विद्युत
ही प्रकाश है। अर वही पार ब्रह्म अद्वैत है। अर वहि अद्वैत ही रुद्र है। अर व
हि रुद्र ही तीन लोक है। अर वही ईशान है। अर्थ यहि है जो धनी सर्व का है॥

अरु वही ईशान भगवान है ॥ अर्थ यह है जो नमस्कार को योग है ॥ अरु वहि भगवान नहीं जो है म
हेश्वर है ॥ अर्थ यह है जो राज योका राजा है ॥ अरु वही महेश्वर महादेव है ॥ अर्थ यह है जो
देवो का देव है ॥ अरु सर्व देवतो पर स्वरूपा करन हारा है ॥ तातें हम संपूर्ण वाकी ओर निरंत्र
नमस्कार रोमो प्रवर्तत है ॥ इति तृतीय व्याख्यान ॥ अथर्वशिरस समाप्तम् ॥ अथ वर्नन प्रणव
के नामो का ॥ वाकहू को प्रणव या सो कहत है ॥ जो एकबार उचरने या गंभीर नामन कौ रिग
वेद अरु यजुर्वेद ॥ अरु साम वेद अरु अथर्वण वेद अरु सर्व शास्त्र ॥ अरु सर्व कर्मने
बाब्राह्मण प्रणव के उचरन हारे को नमस्कार करकर सीस जो झुकावत है ॥ ताही
सो प्रणव नाम सो प्रगट है ॥ अर्थ यह है जो तीन ही लोक का प्रणम इस्थान है ॥ अरु
वां ब्रांस्लेणां को ॥ अरु वा प्रणव को सर्वव्यापी या सो कहत है ॥ जो एकबार उचरणया
नाम गंभीर के यहि नाम सर्व नामो अरु गएण अरु लोकों को मन अपुने खैंचन

जैसे दूध में घृत
घृत मे दूध व्यापक है एवमेव
प्रणव अपने में और उपासक में
व्यापक है।

रसोपसर्वकेव्यापकहोतहैं॥जैसेघीउमध्यपयकेहै॥अरपयमध्यघीउव्यापकहै॥
तैसेहीप्रणवव्यापकमध्यउपासककेअपुनेकेअरउपासककेकेवलप्रणवहीहै॥अर
याहीसोंवाकोसर्वव्यापीकहतहैं॥अरवाकोअनंतअर्थयहिजोवेअंतयासो
कहतहैं॥जोयहिनामउचारहीमात्रअपुनेउपासककोसंपूर्णदिशामोवेअंत
करतहैं॥इसीसोअनंतहैनामवाका॥अरतारअर्थयहिहैतीरपरप्राप्तकरनहा
रा॥अनंतेवकहतहैजोयहिनामउचारनहीमात्रअपुनेउपासककोसलतासो
कअरदुःखअरअज्ञानताअररोगअरजराअरमृत्युअरएकइस्थानसोअ
वरइस्थानमोगिरना॥अरअनेकभयोसोंपारकरकरतीरपरप्राप्तकरतहै॥या
सोतारहैनामवाका॥अरस्वसंवेदनयासोकहतहैं॥जोउचारनहीमात्रअपुनेउपास
ककोऐसेसास्वसंवेदनकरतहैं॥जोमध्यसंपूर्णशरीरकेसाक्षीतासोअनुवेशकरकरव

हिउपासकपरनेतासोविराजतहै॥अरुतेवजोसत्कहैनामवांका॥अरशुकलअर्थयाहि
जेउज्वलयासोकहतहै॥जोउच्चारनहीमात्रमनवाउचारकरनहारेकात्रिगुणप्रव
तेकोविकारसोउज्वलहोतहै॥अरशुद्धहोतहै॥अरकेवलसतगुणहीरहतहै॥अर्थ
यहिजोरजअरतमअरचाहअरषठोरताइत्यादिकपदार्थगाकेमनसोदूरहोतहै॥अरके
वलताहीरहतहै॥इसीसोशुक्लतहैनामवांका॥अरविद्युतयासोकहतहै॥जुर्याहिनामम
नअपुनेउपासककोकेवलउचरनहीमात्रतमअज्ञानवाहजअरअभंत्रकेसोरदाक
रअरप्रकाशकरतहै॥इसीसोविद्युतहैनामवांका॥अरपारब्रह्मउतपत्रकारनगंभीर
यासोकहतहै॥अरजोयहिनामपुणवकासंपरनैइ ह्वै अपुनेउपासककेउचरनही
मात्रशुद्धकरकरआपमोलीनकरतहै॥अर्थयाहिजोवांकोहूउतपत्रकारन
गंभीरआपमाकरतहै॥इसीसोपरब्रह्महैनामवांका॥अरवांकोअद्वैतया

सोकहतैहै॥ जोसंपूर्नपदार्थांकोआपहीसोउतपन्नकरतैहै॥ आपहीमोलीनक
रतैहै॥ औररुद्रनाशकरतासर्वकायासोंकहतैहै॥ जोनाशकरतासर्वपाषोंका
औरअहंकारआदिकपदार्थांका॥ औरगरवजुज्ञानकीअप्राप्तकाहै॥ ताहूकाज
मघज्ञानीयोऔरमुमोषोकेहै॥ ऐसेतेवरुद्रहैनमस्कारा॥ औरईशानकहीयतह
है जोधनीसर्वकायासोकहतैहै॥ जुसायज्ञपुनीहीप्रकाशतकेसर्वकाधनीहै॥
औरसर्वपरअचलहै॥ पुनःसूतउवाच॥ हेरुद्रपरंब्रह्मस्वरूपपरजोतुमश्रेष्ठहो
तातुमकोहमसंपूर्नपुनःपुनःनमस्कारकरतैहै॥ औरनिकटतेरेजोवेनती
करतैहैहम॥ जैसेजाउदुग्धसोहीनआशकततादुग्धकीसोवछरेकोचाट
तीहै ऐसेब्रह्मविहैजोतदवतहमहूमेरतुमारीसोआशकहै॥ औरयोजगतुमारेको
अपदार्थनहीराषत॥ औरहमसोनहीकछुहोतऐसेरतूकरनाीनधिहै॥

प्रणव का
अर्थ नमस्कार
के योग्य
प्रकट किसे

अरु साधु केवल रूप करि दृढ़ अपुनीके पालन हमारो करत हो॥ अरु तूं ध्वनी सर्व
और जगत को उजाउ तमु जो स्वरूप को है॥ हे राज देव हे राजा देवत्यो के तूं केवल चैतन
है॥ याही सो तुम्है ईशान कहत है॥ अरु प्रणव को भगवान॥ अर्थ यो हि जो नम
स्कार को योग या सो कहत है॥ जो उपासक अपुने को अविद्या के आवरण अ
रीं द्वैप सो मुक्त करि करि॥ साधु ज्ञान अरु पछान आत्मा की के प्राप्त करत है॥
और महेश्वर अर्थ यो हि जु राजयो को राजा या सो कहत है॥ जु अपुने उपासक
को साथ अनंत गंभीरता के प्राप्त करत है॥ अरु या भांत की श्रेष्टता वहि उपासक
चाहे वहीं वा को देत है॥ याही सो महेश्वर है नाम वा को॥ अरु महादेव अर्थ य
हि जो देवत्यो मो श्रेष्ट या सो कहत है॥ जु अपुने उपासक को सर्व चाह सों
मुक्त करि करि केवल आत्म स्वरूप करत है॥ या भांत एक रुद्र ही प्रणव रूप सों

अनेक ब्रह्मांड धारन कर के जो वरन की ये विराजत हैं ॥ पुनः सर्व देवतन
के द्वितीय को उच्चारत भये ॥ इहां तें उजात प्रकाशक हैं ॥ अरु मंत्र वाह्य ज
सर्व दिशाओं के पति हैं ॥ अरु याहि चतुर ही दिशा सु ये सो उत्पन्न भये हैं ॥ अर
वो हि सुर्यं हू सो जगे का है ॥ अरु आमंत्र सर्व के वही हैं ॥ अरु भूत भविष
त वही हैं ॥ अरु सर्व सत्य सो निरगुण अरु जगत है सो हू वही हैं ॥ वो हि पि
ण अरु पारस न ही राषत ॥ अरु वो हि सर्व ठौर सुन्न मे बसे हैं ॥ अरु सर्व
मस्तक मस्तु वा ही का है ॥ अरु सर्व नेत्र नेत्र वा ही के हैं ॥ अरु सर्व पाद ए
क वा ही का है ॥ अरु वो हि उपासक अपुने को सो पाप पाद सों रपाए
अपुने के अपुनी ठौर रहें चत है ॥ अरु आकाश अरु पृथ्वी अरु जो
मध्य मद्ध आकाश अरु पृथ्वी के है ॥ सर्व को वो जानै दे तन ने ज्ञो के व

बलप्रकाशताहीहै उतपत्तीकीयाहै ।। अरु मन सर्वपदार्थोंकेवही एकलदुहै
जोप्रगटदेषीयतहै ।। अरु दैवतसोहीनहोतहै ।। अरु जो कछुदृष्टपरतहै
प्रकाशवाहीकाहै ।। जो कोउ ईश्वर आपको सर्वकाज्ञान करै ईश्वरत्व आपने
कोआपहीसों देषे ।। अरु तीन भ्रमसों जाने जो सर्वकोदृष्टा मैंहीहों ।। अरु स
र्वकाकरतामैंहीहों ।। जैसे राजा जोदुउ अरु रूपमयहोतहै ।। सो संपूर्णका
मराज आपुनेके आवरकी सहायसों रहत आपुनेही प्रतापसों करतहै
अरु जो आपुने मंत्रीयोंके आधीन होतहै तौ कोउ काम आपुने धीरज
अरु बलसोनहीसकतकरि ।। अरु वीह मंत्री जिसभांत चाहतहैं तिसीभां
तकरतहैं ।। तैसे यहि है जो शरीररूप नगरका राजा है ।। अरु संपूर्णोंमें एका

काईश्वरहै॥जेआपुनेस्वरूपकोपषानकरइंद्रमोवसम्भोगावै॥अरव
हियांकीआज्ञामोवर्तै॥अरवौहीआपसदाप्रज्ञाअरवलगावैं॥जैसे
निरवलराजाअपुनीआज्ञामंत्रीयोकेअधीकरतैहै॥तैसेनवकेरे॥अर्थ
यहिजुमनादिकइंद्रसभीननहै॥अरवाकीआज्ञामोचप्रवर्तैं॥वौहीनि
रसंदेहईश्वरहोतहै॥अरजवजानेजोवौहीआत्माकेवलआनंदघनहै
अरकरतासर्वकामनोकाआपसोआपहै॥तवौहीसापरदुकेप्राप्तहोतक
रआपरदुहोतहै॥अरमद्रुसर्वठवरोकेअरसर्वइंद्रकेसाक्तवहीकी
वापकहै॥अरइंद्रजोकेवलवाआनंदस्वरूपकोनहीप्राप्तहोत॥का
रनताकाइहिहै॥जोवाहजीवबयोमोषचतमयेहै॥जवआमंत्रकेपद

थैकोजाहीघटहोतहैतबवाकेहुस्वरूपकआपनेआपस्वरूपकोपावतहै॥ अरवाहिमल्लुजोउतप
नेकोअरजससर्वकाहै॥ पालबत्मअरस्थाधारमहूवहीहै॥ अरपुनःआपमेंलीनहूवहीक
रतहै॥ अरवाहिजोज्ञानवानआत्मापधानराषतहै॥ अैसासाधकैसेमलहुकेउपास
नाकरतहै॥ अरवाप्रकारकेरवावहूहै॥ जुभिंनउपाशनानलहुकी॥ अरलइस्थानवा
काउत्तरकीओरहै॥ जाकोउतरायणकहतहै॥ सोस्वरूपकोनहीस्पकीयतप्राप्तहै॥
अरसाधयाहीउपाशनानलहुकीवेसंपर्नदेवतेअरमानुषकुसरीपतरमारगउ
तरायणकेसोजोमारगप्रकाशकाहैसूर्यकेलोकमोप्राप्तहै॥ पुनःब्रह्मलोक
मोप्रवेशकरतहै॥ अरवाउवरमोज्ञानकोअरआत्मपधानप्राप्तहोकरमुक
तअरनिरभयहोतहै॥ वहिआत्माजोसाधकसततसतदनेवेहै अरसतदनसोसतदा
है॥ अरवेसकेअगअहूसोअसतसतदनेहै॥ अरमद्रमनससर्वजीवधारीयोकीव

राजत है॥ अर वासते पिछान लेवे वाही के संपर्न वेद शास्त्र उतपन्न भये है॥ अर वाहि मस्ता सर्व
ता है॥ अर आत्मा कोयं को अधर्म निवृत भया है सो मनुष्य अर पुने ही देषत है॥ अर इही सदा अर
ने द अर प्रशंनन ता मोर हत है॥ अर याहि स्तखु अर प्रशंनन ता भिंन इन सों अर वर को नही
अर वही आत्मा अर दैवत रहु मनुष्य सर्व उतपन्न भये है॥ पंच तत्व अर सर्व पदार्थ वाही सो उ
त्पन्न भये है॥ अर पुनः वाही मो लीन होत है॥ वोई ईश्वर सर्व का है॥ अर सर्व ठवर पूर्न है॥
अर सर्व को आनन का कारन करनहारा है॥ अर देव है॥ अर्थ याहि जु प्रकाशरूप है॥ अर त्रा
तिउ स्तुति को योग है॥ अर तीरपर प्रापत करनहारा सर्व को है॥ जो कोउ साधवां वो उपास
ना करे॥ अर तिस्तखु को प्राप्त है॥ मनुष्य सर्व जीवों के अर मनों के अर सर्वदा अर स्थूल श
रीरों के चेतन्य वही है॥ यद्यपि चारह अर स्त्रअ सहनन ता उपन्न कीया हूया वाही का है॥ तो
हूं चाहीयत है कोउ अर चारह का जो वीज सर्व का इही है॥ ता गुकर करसंत अर धीरज

कोजबसाधयन्निष्केशात्लकवुद्धकेमध्यमनअपुनेकेस्थितकरे॥तबसाधमहादेवकेजोप्र
काशोंकाप्रकाशहेएमहे॥अरुवांहिलड्डसदाअचलहे॥अरुपुरातनहे॥अरुसंकेअरु
रसंगनसोजोवलउतपनहोतहे॥सोवहीहे॥अरुजोतपसीवांकोप्राप्तहे॥ताकोव
हिरद्रपाशशो॥अरुरचितवेसो॥अरुबंधअज्ञानताकीसोंमुक्तकरतहे॥अरुमारग
प्राप्तहोनेकासाधसद्रकेजोईश्वरसर्वजीवधारीयोंकाहेयाहिहेचाहीयतहे॥जब
संन्यासीविभूतधारनाकरेतवजानेजोयाहीविभूतहीअग्निहे॥अरुयहीविभूत
हीपवनहे॥अरुयविभूतहीअपहे॥अरुयाहीविभूतहीपृथ्वीहे॥अरुयाहीविभू
तहीआकाशहे॥अरुयाहीविभूतहीमनुअरुइंद्रहे॥अरुयाविभूतहीसर्वपदा
र्थहे॥जोजोसंन्यासीयाभांतिविभूतधारनाकरतहे॥अरुमध्यमारगमहादेवकेप्र
वर्ततेहे॥वाहियाभांतकीउपासनासोपाशअज्ञानताकेसोमुक्तहोतहे॥अरुवही

सद्रुम द्र अग्निके व्यापक हैं॥ अरु वही रुद्र म द्र अपके सर्व हैं॥ अरु वही रुद्र म द्र
तृणादिकोंके अरु औषधोंके अरु वृक्षहुके व्यापक भया है॥ अरु सर्व विश्वको
अरु लोकोंको अपुनी शक्तिसों धारण करता है॥ ता रुद्रको हम पुनः पुनः नम
स्कार करते हैं॥ अरु वही रुद्र पृथिवीको सामर्थ्य शक्तिके धारण करता है॥ अरु वा रुद्र
ने सामर्थ्य शक्ति अपुनीके प्रकाश शक्ति अपुनीके राखत हैं॥ म द्र सूर्य के॥
ताको हम पुनः पुनः नमस्कार करते हैं॥ जो को अथवा उपनिषदको जो अथ
र्वणवेद सो है॥ उच्चारण करे॥ जो वेदका ज्ञाता न हो तो वेदका ज्ञाता हो॥ अरु ज
न्म भर मन कीये होय तो भस्म करै सो कार करता है॥ अरु यज्ञके पुन्नको प्राप्त होय॥
अरु अग्निवाको भस्म करे॥ अरु पवन अरु अप अरु पृथवी अरु आकाश अरु
रवि अरु रस सत अरु रस तत अरु स्वरको जे ते भस्म करता पदार्थ है॥ संप

नेवाकोप्राप्त होवेहें॥ अरु सर्व देवतावांकोपछांने॥ अरु सर्व वेदवांकोजाने॥ अरु पुन अरद-
दोंण सर्व तीर्थोंवा॥ अरु पुन सर्व यज्ञोंवा॥ अरु पुन त्रिकाल संध्यावा॥ अरु सर्व व्र-
तोंवा॥ अरु पुन षष्ठअयुत सहस्र गायत्री उचारकरनेका॥ अरु पुन उचारक-
रने सर्व मंत्रोंवा॥ अरु पुन उचारकरने अयुत सहस्र प्रणव कावांकोप्राप्त हो
अरु जोकोआ एकवारस्वा उपनिषद अथर्वशिर कापाठ करे रसोपप्पिपतासो अ
र्द्ध अर्धकी कोपापोसोंमुक्त करकर शुभगतकोप्राप्त करे॥ अरु जेता बुंअ नमो
जेन षरवावे अरु दान करवे अरु धन जावे॥ अरु वासोपवित्रता कोप्राप्त हे॥
अरु एकहीवार उचारकरनेयाउपनिषदकेसो अपपमुक्त हे॥ अरु शुभकर्म जु
कीये न होहताकोयोग हे॥ अरु जोद्वेवार उचारकरे गणेश अरु चवा स्वामका
र्तवकेतुल्ल हे॥ अरु उचारकरनेत्रैवारकेसों आप महादेव हे॥ अरु यदि

जो प्रकाशों का प्रकाश है॥ अरु तेजों का तेज है॥ यहि वेदन ज्ञान सत है॥ अरु न
मस्कार को योग है॥ जो ब्रह्म है ता ने यहि कह्यो है॥ नमस्कार ज्ञानीयों को न
मस्कार ज्ञानीयों को सर्व को आनंद न हो सर्व को आनंद है॥ इति उपनि
षद अर्थर्व शिर समाप्तं॥ २०॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॥ ॥

५ अथ उपनिषद आत्म प्रबोध अथर्वण वेद भाषा॥ आत्मा यद्यपि सर्व सों भि
न अरु शुद्ध है॥ तो हु सभन के मन न के इस्थित है॥ अरु केवल आनंद है॥
अरु ब्रह्म है॥ अरु सर्व ठौर पूर्न है॥ अरु प्रणव जो अकार अरु उकार अ
रु मकार यहि तीनहीं मात्रा शाषत है॥ स्वरूप है वाका॥ अरु प्रणव अक्ष
र ॐ है॥ उपासना या ॐ की सों योगीश्वर पाश या संसार के सों मुकत होत
है॥ यहि उपासना उपासना नारायण की है॥ अरु वा नारायण को जा

मनुष्यके हृदयमें ब्रह्मपुर है - उसमें मनरूपकमल है - उस कमलमें आत्मा है वही आत्मा हृदयके मध्य में है

कोयहिउपासनाहैनमस्कार॥अरुवहिनारायणहैजोधारनकियहासंखअरुग
दाअरुचक्रअरुकमलकोहै॥ताकोनमस्कार॥वहिनारायणजोधनीउतपतइ
स्थितपरलोयातीनगुणकाहै॥उपासनावोकीवैकुंठमोइस्थानहैवोकाअरु
नमस्कारकोयोगहै॥अरुआत्माइस्थानप्रापतकरतहै॥अरुउपासनावोकीया
जातहै॥मनुष्यशरीरमानुषकेजोब्रह्मपुरहैतामोमनरूपकमलहै॥मनुष्यवाक
मलकेजोआत्माहै॥वहीआत्मामनुष्यसूर्यकेहै॥जोसूर्यइसायारूपकमलके
हैसुखपावतहै॥तातेयाहिदयएकहीहै॥आत्माउतपतकारनसर्वकोहै॥अरुये
याहिजोअर्थसर्थरूपसोउतपतकारनमनुष्यआकाशकेहै॥अरुमनरूप
सोउतपतकारनमनुष्यसंसारपितरलोककेहै॥अरुवहीनिराकारलोककेहै॥अरु
वहिआत्माकेवलचैतन्नहै॥अरुकेवलबुद्धहै॥अरुकेवलप्रकाशगंभीरहै॥

वही ब्रह्म उत्पत्ति स्थिति प्रलय का कारण है

जैसे साधु प्रकाश दीपक के संसर्ग ते पदार्थ दृष्ट परत है॥ अरु वासते देषणे दीपक को अवर प्र
काश चाहीय नहीं॥ तैसे ही वोहि आतमा स्व प्रकाश है॥ अरु सर्व पदार्थ वाही के प्रकाश
सें देषीयत है॥ अरु वोहि अवरोक्ष रूप पदार्थ सो देषा न ही जाता॥ अरु सहम तातें दे
व की आज्ञो नाश करता मध्य देतना है॥ आतम ज्ञान ही सो ज्ञान को प्राप्त होता है अरु साधु
ज्ञानीयों के जाति ते प्रगट ता था॥ अरु ब्रह्म सर्व प्राणीयों के वही एक नारायण है॥ अरु
उतपन्न कारन सर्व का है॥ अरु ब्रह्म सर्व के एक समान है॥ अरु पारब्रह्म है॥ अरु शोक
अरु अज्ञान ता सों रहित है॥ साधु जैसे सो विश्व के जो प्रीतपालक है॥ जो कोऊ उ
पासना करे वाको कछु दुःख न प्राप्त होता॥ अरु तेव जो सर्व दुःख मध्य दृष्टित है॥ अ
व साधु वोहि एक ता मई॥ कोऊ दुःख न रहा॥ अरु असम यम या॥ जो कोऊ एक आ
तमा को षंड षंड जानते है॥ अरु देषते है॥ वाको ब्रह्म सर्व लोकों के पाश मिरत के

जैसे दीपक को और दीपक की प्रकाश की आवश्यकता नहीं उसी तरह आत्मा स्व प्रकाश है

सो मुकत नहीं॥ मद्रकमल रूप मन जापु नै वही आत्मा को जो सर्व वही है॥ अरु
वां को साथ नै उ भद्र वुद्र के सवीयत है देष॥ जो वहि आत्मा केवल शुद्ध वुद्र
ही है॥ अरु प्रणव वही है॥ साथ ज्ञान नै उ वुद्र ही के चाहीये देषा॥ या स्थूल दि
ष सो द्रिष्टन ही परत॥ अरु आत्मा मद्र शुद्र वुद्र रहत है॥ अरु इही वुद्र के व
ल आत्मा है॥ जो को उ साधक आत्मा के जो मद्र मन रूप मैं दरसे विराजत है॥
यां भांत जो वरनन भया उपासना करे॥ वहि या काल मो संसार सो गमन
करे॥ वैकुंठ धाम की प्राप्त है॥ वां को॥ अरु वाठ वर मो सर्व कामना को पाइ के
स अविनाशी पद जु है मुकत ता को प्राप्त है॥ ततः मद्र या मैं उवे दोकत वे जैसे
वरनीयत है तैसे उचरै॥ वा लोक मो जो नित्य प्रकाश है॥ अरु सर्व लोकों को प्र
काशतां कता धक है मुये स्थित करै॥ हे मद्रकरता संपूर्ण लोको के जो प्रच

सै ज्ञानस्वरूपी ऐसै सब की स्थिति ब्रह्म करते हैं।

लै है। अरु नाशवंत नही। अरु नूतनता सो रहित है। अरु मुकत को प्राप्त करनहारा है॥
अरु तूं जो तौं है। अरु केवल वीहि प्रकाश ले रहै हैं तांकु मेरो नमस्कार॥ जो कोइ साध
या उपनिषद के आत्मप्रबोध के अर्थ विचारि के अभ्यास करे॥ पुनः मनुष्य जन्म के न
आवै॥ ज्ञानीयों को नमस्कार सर्व को आनंद दे है॥ इति आत्मप्रबोध उपनिषद अ
थर्वण वेद समाप्तं॥२९॥ ॐ॥ ॐ॥ ॥ ॥ अर्थ सर्व उपनिषद अथर्वण वेद॥ अर्थ
यहि जो सर्व गुह्य भेद आत्मा के यामे गुह्य है॥ ॥ ऐक बेर प्रजापति के ने प्रजापत
सो केते क ब्रहम कीये॥ ब्रहम॥ बंध कीयो है॥ अरु मुकत कीयो है॥ अरु विद्या कौं॥ अ
रु अविद्या कौं॥ अरु जाग्रत अरु स्वप्न अरु सुषोपत कीयो है॥ अरु तुरीया कौं॥ अरु
र पंच कोशां भांत कवन से है॥ एक अन्नमय कोश॥ द्वतीय प्राणमय कोश॥ तृ
या मे प्राणादिक है॥ अरु ततीय मनोमय कोश॥ अरु चतुर्थ विज्ञानमय कोश॥

अरु पंचमहाभूतनि के कोश ॥ अरु जगत्को करता कों सो कहत है ॥ अरु जीव अरु ज्ञाता शरी-
र को अरु साक्षी काहे को नाम लषत है ॥ अरु यद्यपि या वाध को भेद है वाको अरु ताको
देह को कहत है ॥ अरु अंतरजामी को सो कहत है ॥ अरु ज्ञाता को जीवात्मा काहे को क-
हत है ॥ अरु परमात्मा काहे को कहत है ॥ अरु माया काहे को कहत है ॥ भेद यास सर्व प्रश्ने-
नकों मांगत है ॥ उतर यास सर्व प्रश्नों को अब ज्ञापत देत है ॥ जीवात्मा जो या शरीर के अरु
सृष्टि के सत भाव अरु रोप करि ज्ञापु को अहं कहत है ॥ अरु ज्ञाप को लघु अरु दीर्घ अरु कृ-
श अरु स्थूल जानत है इही बंध है ॥ १ ॥ अरु या बंध सो जो मुक्ति है इही मुक्ति है ॥ २ ॥
अरु मिथ्या शरीर के अरु सृष्टि के बंध होने सो उत्पन्न होत है ॥ वही अविद्या अरु अ-
ज्ञान कहावता है ॥ ३ ॥ अरु या भ्रम की निवृत्ति ही विद्या अरु ज्ञान है ॥ ४ ॥ अरु या काल मो पां-
च ज्ञानइंद्रे अरु पांच कर्मइंद्रे ॥ अरु चतुर्थ (चारि) अंतःकरण ॥ यहि चतुर्दस ही विव

१ बंध
२ मुक्ति
३ अविद्या
४ विद्या

जब १० इन्द्रियें ४ अंतःकरण जब अपने व्यवहार में प्रवृत्त हो तो है तब जाग्रत अव० है।
जब सूक्ष्म शरीर द्वारा इन्द्रियों की क्रियाव विषयों को जीवात्मा कल्पता है तब स्वप्न० है
१२० जब जो तीनों जाग्रत तथा स्वप्न को न देखे वह सुषुप्ति - जब तीनों नहीं तब तुरीयाव० है।

द्वार अरु प्रवेत्तो प्रवर्तते है ॥ ताको जाग्रत अवस्था कहीयत है ॥५॥ अरु या काल मो जीवात्मा
सूक्ष्म शरीर को अंगीकार करकर सो यह इंद्रीयो को समेटि ताके भ्रम पदार्थो को कल्प
ते है ॥ अरु देषत है ताको स्वप्न अवस्था कहते है ॥६॥ अरु या काल मो पांच कर्म इंद्रे अ
र पांच ज्ञान इंद्रे अरु चतुर्थ अंतःकरन यहि चतुर्दस ही सूक्ष्म रहित होत है ॥ अरु वा
इस्थान मो कछु पदार्थ जाग्रत अरु स्वप्न का नही देषीयत ताको सुषुप्ति अवस्था
कहते है ॥७॥ अरु या काल मो यहि तीन ही अवस्था नही ॥ अरु अहं भावना हू नही ॥ केव
ल वहि साक्षी जु अचिंत है ॥ अरु निरंतर है अरु चेतन है ॥ अरु भिन्नता सो अवस्था नही कछु
वही है ॥ ताको तुरीया अवस्था कहते है ॥८॥ अरु पांच कोशो सो जो अंन कोश है ता अन्नम
य कोश मो बहु पदार्थ है ॥ रक्त अरु मांस अरु चाम यहि तीन माता की अंस सो है ॥ अरु अ
स्थि अरु मेद अरु मज्जा यहि तीन ही पिता की अंस सो है ॥ या भांत जो है स्थूल शरीर सो अंन

५ जाग्रत
६ स्वप्न
७ सुषुप्ति
८ तुरीया
९ अन्नमय कोश
१० प्राणमय
११ मनोमय
१२ विज्ञानमय
१३ आनंदमय

वृत्तियां

अन्नमय कोश में द्रव्य है
१ रक्त
२ मांस
३ चमड़ी
माता के अंश है
४ अस्थि
५ मज्जा
पिता के अंश है

अन्नमय कोश के बीच प्राणमय कोश है इसमें १४ वस्तु है दस प्राण मन बुद्धि चित्त अहंकार (अंतःकरण)

नमें कोश कहते हैं ॥ अर्थ यह है जो संपूर्ण अन्न ही है ॥ और यह है अन्नमय कोश मध्ये प्राणमय
कोश के स्थित है ॥९॥ और मध्ये प्राणमय कोश के चतुर्दश पदार्थ हैं ॥ दस प्राण और मन बु
द्धि चित्त अहंकार यह है चतुर्थ अंतःकरण ॥ और यह है प्राणमय कोश मध्ये मनोमय कोश
के स्थित है ॥१०॥ और मनोमय कोश जु है चतुर्थ अंतःकर्ण और प्रथम द्वय कोशयों मे
स्थित है ॥ सो यह है कोश मध्ये विज्ञानमय कोश के स्थित है ॥११॥ और विज्ञानमय कोश मो
प्रथम तृतीय ही कोश का ज्ञान है ॥ और वह है तृतीय ही यामें स्थित है ॥ और वही है विज्ञानम
य कोश मध्ये आनंदमय कोश के स्थित है ॥१२॥ और जैसे संपूर्ण वड का वृक्ष मध्ये बीज अस
पुने के स्थित है ॥ तैसे ही यह है चतुर्थ ही कोश मध्ये आनंदमय कोश के स्थित है ॥ ता
ते आनंदमय कोश जो है अपुना स्वरूप ताको या कारन जान कर सदा आनंद
ते चाहीये रहा ॥१३॥ इति प्रथम ब्राह्मण ॥ और मध्ये या के हरष और शोक और बुद्धे ॥

प्राणमय कोश के बीच मनोमय कोश है इसमें अंतःकरण और अन्नमय तथा प्राणमय कोश हैं

मनोमय कोश के बीच विज्ञानमय कोश है इसमें अन्नमय प्राणमय मनोमय कोश का स्थान है

विज्ञानमय कोश के बीच आनंदमय कोश स्थित है जैसे वट बीज में वट वृक्ष और इसमें अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय कोशों का स्थान है

वीन्कर्ता है॥ अर्थ यहि है जो इनका उतपतिका नवही है॥ याकाल में कामना वांकी पूर्न
होत है॥ तब प्रसंन होत है॥ अरु याकाल में वांकी कामना के प्रतिकूल होत है॥ तब अप्र
संन होत है॥ अरु कार न उतपति हर्ष अरु शोक का यहि पदार्थ है॥ तथा शब्द
स्पर्स अरु अस्पर्स प्रतिकूल अरु अनकूल अरु देषणे उतपति पदार्थ अरु नी
चकी सो अरु रसले ने मधुर अरु कटु के सो॥ अरु गंध प्रतिकूल अरु अनकूल के सो
प्राप्त होत है॥१४॥ अरु जीवात्मा आत्मा को सो कहत है॥ जो जब लग सूक्ष्म अरु स्थू
ल शरीर का अध्यास राषत है॥ अरु मन द्वारा शुभ अरु अशुभ कर्मों के बंध है॥ अरु
यहि अध्यास मल पर वांके सों भिन है मिथ्या है॥ केवल भ्रम सिद्ध है॥ याही ते
सो जीवात्मा को कहीयत है॥ अरु जो या अध्यास को सत प्रतीत सो दूर करे व ही
आत्मा है॥१५॥ अरु ज्ञाता शरीर का यासो कहत है॥ जो सूक्ष्म अरु इस्थूल शरीर

१४ आनंदमय कोश में सुख और दुःख प्रतीत होते हैं अतः आत्मा कर्ता है का (दि) इनका (हर्ष शोक) आत्मा है

१५ आत्मा जब तक अपने में स्थूल सूक्ष्म शरीर का अध्यास रखता है तब तक वह जीवात्मा कहलाता है और शुभ अशुभ कर्मों से बंधा है अध्यास आत्मा से भिन्न और मिथ्या है केवल भ्रम से सिद्ध है अतः जब अध्यास को दूर करे तो वही शुद्ध आत्मा है।

सूक्ष्मशरीर जबतक आत्मा कौन नहि चीन्हे तबतक मुक्ति नहीं होती।

१६ आत्माको यथी एका रामतो इस लिये कहते हैं कि अध्यासके कारण आ जो को यथार्थ कोम रामानता है जब आत्मज्ञान से आत्माको सत्य मानता है तब कुछ मुक्त है क्योंकि आत्मामे मिथ्या अध्यास की ही गांठ है जिसे नष्ट हो जाती है ज्ञान से।

कोअसुनेजानतहै॥ असुनेजानकरयोंमहतहै॥ सिरमेराहैचक्षुमेरेहै॥ करमेरेहैचरनमेरेहै॥ म
नबुद्धिचितअहंकारयहिचतुष्टअंतःकरनमेराहै॥ अरप्राणअरअपानअरव्यानअरसमा
नअरउदानयहिपांचप्रानमेरेहै॥ अरसतगुणअररजगुणअरतमगुणयहितिगुण
प्रकृतगुणमोरहतहै॥ अरहरषअरशोकइन्दोनोकाउपमुअरइनतीनोकीचाहै॥
अरकर्मसुभअसुभयासर्वपदार्थोसोएकसूक्षमशरीरकहीयतहै॥ अरयहिसूक्षमश
रीरआत्माकोनपछानेतवलगमुकतनहीपावत॥ अरजाकायाकानहीहोतअरय
हिसूक्षमशरीरसायानिश्चतहोनेआत्माकेसन्मुखसादिखाईदेतहै॥ अरजकअज्ञानजा
नकोप्राप्तभया॥ तकअवरजोसूहिद्रिशमोसत्तभासततैहैसोउठजातहै॥ अरजवयादि
गांठखुलीतवहीमुकतभया॥ अर्थयाहिजुएकआत्मामोमिथ्याआरोपणइहीगांठ
है॥१६॥ अरस्माद्दीयासोंकहीयतहै॥ जोजेयअरज्ञानअरज्ञातायहितीनहीउतपत्र

होत है ॥ अरु ये यहि जो प्रथम ज्ञाता उतपन्न होत है ॥ पुनः वहि ज्ञाता ज्ञान को उतपन्न करि करि ज्ञा
न सों ज्ञेय सों उतपन्न करत है ॥ अरु वहि जो इन तीन की उतपत्ति का अरु नाश का ज्ञाता है ॥ सो
अपना उतपन्न भया है ॥ अरु न नाश होयगा ॥ अरु स्वप्रकाश है ॥ वहि ज्ञात्मा साक्षी है ॥ अरु
रयथापि स्मा घया माइक पदार्थों के बंधे है ॥ ता को अनुभव करता यासों कहत है ॥ जो जव लग ब्र
ह्मा सों आदि की टी पर्यंत मध्य संपूर्ण जनों के समता भाव सों व्यापक है ॥ तव लग बंधस
है ॥ अरु जव यहि सर्व दिशा नाश को प्राप्त होत है ॥ तव वहि केवल अनुभव करता ज्ञा विषै ठी
रहत है ॥ ताते वोवा अनुभव करता तत्व मध्य या सृष्टि की उतपत्ति के अरु या मों बंध होने के हीसि
ष्ट भया ॥ ९ ॥ अरु स्वतंत्र जानीया सो कहत है ॥ जैसे एक सूत मनकन के मोतीयों के
व्यापक होत है ॥ तैसे ही वहि हूं मन ब्रह्म चेतन जनों के व्यापक भया है ॥ अरु सर्वज्ञ अंतः
करन के गुप्त भेदों का ज्ञाता वही है ॥ अरु भांत भांत के नाम अरु पदार्थ अरु युक्ता

९८ आसली सो ना
जैसे स्वप्न का बनकर
कोई कैसे लोक धा
ताहें तब ही
प्रकाशता ?
शरीर में कैसे कहे
जीवात्मा कहा
ताहे

याही अंतर जामी सो प्रगट भयो है ॥ १८ ॥ अरु आत्मा को जीवात्मा या सो कहत है ॥ जब लग भ्रांति का अ
थवा संकेच न अरु पुनि केवल स्वरूप मो है ॥ तब लग ही भ्रांति का अरु संकेचन या नाम सो प्रगट है ॥
अरु जब वा सो वासन अरु रमब न कल्पत कीये ॥ तब वा ही का अवर नाम अरु रूप प्रगट भया
तद्व त आत्मा सरीके संग सो जीवात्मा कहावत भया ॥ अरु मैं अरु तूं उपत भया ॥ अरु श्रुयदि
खाई देत भया ॥ अरु वही तत्व त अरु सउपदेस को योग भया ॥ अरु परमात्मा या सो कह
त है ॥ मध जीव के वासते प्रगट ता परमात्मा के तत्व मा क्रिया है उपदेस जीव को भया है ॥ सो
वीह परमात्मा स त अरु केवल ज्ञान ही है ॥ अरु केगत अरु केवल ज्ञानंद है ॥ अरु सि
ष्टिका उतपत कारन है ॥ अरु स्यान अरु काल अरु रूप यहि तीन ही नासवंत है ॥ वा द्रिष्टा
त्मा जो या मांत है ॥ अरु उतपत नहीं भया ॥ अरु नासवंत न ही ॥ अरु ज्ञाता सर्व का है ॥
वा को केवल चिन्न कहत है ॥ अरु के अंत या सो है ॥ जो मध सर्व वासनो भ्रांति का के एकाग्र

२० आत्मा सत् चित आनंद स्वरूप है अत: परमात्मा है।

सर्वमें भरपूरादि वांमें एक कौं चेतना दि कौं तरह आत्मा सर्वमें एक है उ. हे. है अंत है

तकौहै॥ मद्वसर्वमेषणकेवचनकैएकअंकेवचनहीहै॥ अरजैसेसर्ववस्तुमेंएकस्फूर्तहीहै॥ अर
वीहएकआत्माजोअनादिअरअनंतप्रत्यंतमद्वसर्वकेहै॥ याहीसोंवांकोवेअनंतकहतहैं॥ अर
आनंदस्वरूपजोकेवलआनंदहै॥ यासोंकहतहैंजोयाठवरमोंआनंदहैवाहीकेआनं
दहैवाहीकेआनंदहैवाहीकेआनंदकीअंसहै॥ वीहआत्माजोकेवलसत्तचितआनं
दअरअनंतहै॥ अरयाहिचतुरथोजरूपहैवांका॥ अरमद्वसर्वठवरकेअरसर्वकाल
केएकरससेहै॥ अरसत्ताजोसर्वतत्वमसिकेहैवहीसत्तहै॥ अरपरमात्मावाहीकोकहत
है॥ याकालमोंसाधकारनज्ञानकेत्वंपदमद्वततपदकेलीनहो॥ तववहीअसपद
परंब्रह्मलैहै॥ याकालमोंततअरत्वंयहिमद्वसोंनिविरतहो॥ अरआकाशवतसर्वठ
वरकेआपकोव्यापकजानें॥ अरसरूवमजानें॥ अररस्फूर्तहैतपदकोजानें॥ अर
केवलअसत्तपदजानें॥ तववांकोपरमात्माकहतहैं॥ [20] अरमायाजोअनादिकालहै॥

जब तें पद तें पद सें लीन हो तब आनंद नहीं ब्रह्म होता है।

२१ माया अनादि है सो दृश्य प्रपंच इसी से हुआ है और माया का आद अनादि प्रत्यक्ष कार्य का स्वरूप है अतः आत्मा को माया कहते हैं। माया रज्जु सर्प वत मिथ्या को सत्य दिखाती है नास्ति को आस्ति दिखाती है आविर्भाव नी यहीं। यही माया है।

सो वो को माया या सो कहते हैं॥ जा काल मो आत्मा सो या की प्रगट भई है॥ वा काल अते व प्र
गट नहीं॥ जो अहं रूपसो आदि संपूर्ण द्रिश्य प्रपंच या ही सो प्रगट भया है॥ अरु सर्व को आ
दि यही है॥ अरु यांको आदि केवल अनादि पुरुष यांको स्वरूप है अनुमा॥ अरु यांको वि
नाशी या सो कहते हैं॥ जो जब ज्ञान की उत्पत भई तब वा हि नहीं रहत॥ अरु माया आ रज्जु
सर्प वत सत्य को मिथ्या देषावत है॥ अरु मिथ्या को सत्य॥ अरु माया अनिर्वचनी है॥ अरु
या को न सत्य कहते है न असत्य॥ अते व जो लष्य देषीयत है सो नहीं लषु॥ अरु वही पर
पंच को जो नहीं लषु दिषावत है॥ अरु यह संपूर्ण जो वही अनादि पुरुष आकर ता है॥
ताको नहीं दिषावत॥ नास्ति को आस्ति दिषावत है॥ अरु संसार जो नहीं ताको दिषावत
है॥ यही है माया॥ ज्ञानी यो को नमस्कार॥ अरु श्रोता अरु वक्ता ताको निरसंदेह ता
प्राप्त हो॥ अरु सर्व को आनंद हो॥ इति सर्व उपनिषद समाप्तम्॥ श्री॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥

२२ आत्मा को विनाशी इससे कहते हैं कि जीवात्मा को जब ज्ञान हो जाता है तो आत्मा का जीवात्मत्व विनाश हो जाता है

१२५

आत्मा तीन प्रकार की है
१ बाह्य
२ आभ्यंतर
३ परमात्मा

अथ आत्म उपनिषद॥ अर्थ यहि है जो वर्णन आत्मा का॥ अंगिरा ऋषि ईश्वर से वक्ष प्रति उप
देश करते हैं॥ अंगिरोवाच॥ आत्मा अविनाशी तीन प्रकार है॥ तद्यथा॥ एक आत्मा वाह्
ज द्वितीय आत्मा अंतर तृतीय परमात्मा॥ वाह्ज आत्मा अर्थ यहि जो संपूर्ण स्थूल
शरीर॥ तद्यथा॥ स्पर्श और त्वचा और नख और मांस और केश शरीर के॥ और सर्व अंगुली
और मेरुदंड और गिटे जठर और नाभ और गुह्य स्थान जो द्वय हैं॥ और अस्थि और छाती और
र अंड स्थूल और भरव दे और मूर्धन और हृदय कर और हृदय पोस्व और नाडि का स्रदे
और स्थूल और मज्जा और हृदय नेत्र और हृदय कर्न और उपजण और रविनसण नाम
या संपूर्ण का वाह्ज आत्मा है॥ जो यांको स्फुरन तादेत है॥ और वहि अंतर आ
त्मा यहि है॥ तद्यथा॥ आपते जपवन पयवी आकाश और अवर की शुभता न चाह
नी॥ और आस्थ और चाह और हर्ष और शोक और रीतृ दमा और मोह और भावना सम

अर असुभ॥ अर मिश्रत राग नाम, तम भविष्यत वरतमान के पदार्थों का॥ अर वीचार करने हा
ऊंच अर नीच समानादिक सो का॥ जो काल मध्य कर्मों अनुसार होत है॥ अर ज्ञाता एक
र जो को स्फुरनता का॥ अर द्वितीय सत्व की स्फुरनता का॥ अर त्रतीय तम की स्फुरनता का
अर अहंकार का अंगीकार कर कर अत गंभीरता सो शब्द का उचार करना॥ अर जैसे
म ल्ल अखारे मो कुसती खेलनहारे दुःख कर अपुना वा मन वा हू अपुनी पर गरम सो ना
र तहैं॥ अर शब्द करत है॥ तैसे ही करना प्रसन्नता॥ अर नाचवा॥ अर वचना विला
स अर वीनादिक जो सम नजीरा गकी है॥ तां का वजावना॥ अर वाकी यांयुगता को जा
नना॥ अर श्रवण करना॥ अर आप गान करना॥ अर गंध का ग्राहीक होना॥ अर रसना
स्वोर स का अंगीकार करना॥ अर्थ यहि है जो इन्नी विषयो मो प्रवर्तना॥ अर जानना अर
वीचारना॥ अर समझना॥ अर संपूर्ण य शरीर के कामो का करना॥ जो मध्य संसार

केइ हीज्ञान है॥ अरु वेदअध्येन अरु उच्चारना शास्त्रों का अरु प्रवर्तना मद्द प्रवर्तक ग्रंथों के
अर्थ यथार्थ विषै पुरषु जो संपूर्न काम करत है॥ अंतर आत्मा राषत है॥ अप्रवर्तन पर
मात्मा का॥ अरु परमात्मा ज्ञान को साधु प्रणव के उपासत हैं॥ अरु अष्टअंग योग वासते
प्राप्त वो कीके करत है॥ सो विषै अष्टअंग योग कहीयत है॥ यम नियम अ आसन प्राणाया
म प्रत्याहार ध्यान धारना समाधि॥ अरु प्राणायाम अरु समदम साधके वलयाती
न अंग गहे सो आत्मा को प्राप्त हूजीयत है॥ अरु केवल द्विउ आत्म ज्ञान हू सो आत्मा
को प्राप्त होत है॥ अरु विषै आत्मा है जो तिस तिसर दमे है॥ अरु चीने के दाने सों अरु रव
टी व्रत के वीज सोल षण्युण अग ने सब के सो हू सत दमत रहै॥ वां को भिन ज्ञान वा
पदार्थों के जो वर्नन भये प्राप्त नहीं होसकत॥ अरु वा सूक्ष्म रूप जो जेसे साध
ने त्रों के अवर पदार्थों को देषीयत है॥ नहीं सकीयत देष कहीं हउ तपत न नहीं भया॥

अर वोहि अविनासी है॥ अर वोहि शुष्क नही होता॥ अर वोहि दग्ध नहीं होता॥ अर वोहि स्थूल न
ही होवत॥ अर वो सूक्ष्म अर नही बद्ध॥ अर गुणातीत है॥ अर सर्वप्रकासी है॥ अर अक्षुद्र है
अर पाणि अर पाद नही होवत॥ अर वोहि आत्मा व्यापक है॥ अर अद्वैत है॥ अर स्वतम है॥
अर असंखंड है॥ अर न्यारा है॥ अर निरअहंकार है॥ अर अदार है॥ शब्द स्पर्श रस परस गंध
नही होवत॥ अर निरन है॥ अर गुणाम को प्राप्त नही होता॥ अर निरन्वाह है॥ अर सर्व ठवर र
ने है॥ अर मन बुद्धि वीचार के नही होवत॥ न हि आवता॥ अर उत्पत्ति अर गुणेण सो परा है॥
अर शुद्ध करनहारा अशुद्ध पदार्थों का है॥ अर अभ असुभ कर्मों के पाप सो मुकत
करनहारी है॥ अर काहू सो मिश्रित नही॥ इही है परमात्मा जो सर्व ठवर पूर्न है॥ अर
ज्ञानीयो को नमस्कार॥ श्रोता अर वक्ता को आत्मआनंद प्राप्त हो॥ अर सर्व को आनं
द हो॥ इति आत्म उपनिषद समाप्तम॥ ३०॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥

१२६

अथ मंगलउपनिषद अथर्वणवेद॥ ॐ॥ मंगलरिषी स्वरयाज्ञवलक प्रति उवाच॥ ब्रह्म
(क्या)
ज्ञान अरु आत्म पछानिया है॥ अरु तत्ववेत्ता क्या कर्म करत है॥ अरु किस भांत वरतत है॥
याज्ञवलको वाच॥ उवाच॥ जा के अहंकार अरु जीवघातादिक संपूर्ण पदार्थ न निषेध नहीं व (निकृष्ट)
हीं निसंदेह है॥ अरु केवल मुकत इथत अरद्विउ यज्ञास्मी है॥ वाहि एकविंशत कुलपिता (जिरारा)
से आदि पाछे की अरु दस कुल ताते सो आदि आगे जो होजी॥ अरु आप को या शरीर धारे ऐसो
सकता है मुकत करे॥ अरु वाहि जो साय अद्रव कुन्ध के ज्ञान को प्राप्त भया है॥ सो एक शत अरु एक कु
ल संपूर्ण वा सो पचास अरु एक कुलपिता सें आदि अरु पचास कुल ताते सो आगे की अरु आप को
सकता है निश्चा करवत प्रकाश को प्राप्त करे॥ अरु मुकत करे॥ अरु शरीर जैसे ज्ञानवान का श
रीर अंत का होत है॥ जब या शरीर सो मुकत भया॥ तब पुनः या शरीर को मुकत करे॥ तब पुनः
अवर शरीर के पाश मो बंधन ही होता॥ कार्य या है जो अवर शरीर को नहीं धारत॥ जब ल

ॐ

गवहि जीवितहै शरीर अपुने कों रथवत जानतहै॥ अरु इंद्रिकों वासतें घैंचनें रथके तुरंगोंस्या
न जानतहै॥ अरु मनकों रज्जुस्यान जानतहै॥ जासों तुरंगोंकों षैंचीयतहै॥ अरु वहि
ज्ञानवान जो है वल आत्मा है॥ अरु आपकों या पर आरूढ अरु प्रेरक यांका जानतहै॥
अरु मन याभांतके ज्ञानीयोंका जो अथवा काहू ठोरनि नसजातहै॥ अतेव जो वहि
आपकों सर्व ठवर व्यापक वूझतहै॥ अरु रागनि रोग तुल्य जानतहै॥ तांतें संदेहि संयुक्त नही
होत॥ अरु यामें अपुनी स्वतंत्रता नही वूझत॥ अरु वहि आत्मा जो सर्व का साक्षी है॥
अरु नारायण है॥ जो मनुष्यों के मनों के सदा साक्षात विराजतहै॥ अरु वहि आपके
वल आत्मा है॥ अरु जवलग आउकी अवधि है तवलग जु शरीरउ नकार हतहै॥
वामें वहि है जैसें सर्प अपुनी कांचरीसों निरमोह रहतहै॥ तैसेंही रहतहै॥ अरु स्वइ
च्छत विराजतहै॥ अरु मूलस्वरूप अपुने कों शरीर मेंों भिंन जानतहै॥ अरु संसार

कुंअ

केकाम न हूमो प्रवर्तत है॥ अरु जैसे सर्प पुरातन कांचुरी को डार देत है॥ अरु वासो कछु प्रयो
जन नहीं राषत॥ तैसे या पुरुष ब्रह्म ज्ञानी त्याग शरीर को करत है॥ अरु वीचार रूप शरीर
सो विराजत है॥ अरु विचरत है॥ जैसे ज्ञानी मद्यव्यापारादिक अपर देव के शरीर त्या
ग करे॥ अथवा मग्र ग्रह चांडाल के सर्व ठवर वासते शरीर त्यागके वाको सम है॥ श
रीर के त्याग मात्र नहीं वीहि मुकत होत है॥ अरु पुनः या पाश मो बंध नहीं होत॥ अतेव ज्ञा
वाने प्रथम ही ज्ञान अग्नि सों शरीर को दग्ध कीया है॥ अरु नास कीया है॥ जैसे ज्ञान
वान को अंन को त्याग करना अरु अपर को उतपस्या करनी॥ अरु कछु साधना अ
वस चाहीयत नहीं॥ ईश्वर समान है जो कछु चाहीये सो करे॥ अरु पाछे निवृत के वां
के बंधन नहीं कछु॥ अरु दग्ध करना शरीर को काअवश नहीं॥ अतेव जो दग्ध कर
ना अवश्य नहीं॥ अरु पक्व भये को पुनः पकावना अवश्य नहीं॥ अरु पाछे निवृत

कोके जो वासते वांके कल्यानके दान करीयत है।। सो वासते वांके अवशान नही।। अर्थ यहि है जो वा
सते वांके को उ कर्म कीया नही चाहीयत।। और वहि केवल भया है।। जैसा परन्नै यज्ञासी को जिरास
केवल ज्ञान नही नो इस्थित है जो को।। ५ हलग्रस्त आर अर अग्र के कुटंब की करे।। अ यवा
न करे।। यांते जो मन वांका अद्व है।। अरस्य मजत है।। जो स्वत चित आनंद मे ही है।। वां
को विस्तस्था प्रवृत्ता व्यवन वा धक नही।। जो को उया भांत के ज्ञान वान सो संग रहे के रेव
हि हूरता ये है।। नमस्कार ज्ञानीयो को।। नमस्कार या ठवलकको।। अरु नमस्कार नं
गल्लरिषीस्वर को।। व्योता अरवकता को आनंद है।। इति उपनिषद मंगल अथर्व
णवेद भाषा समाप्तं।। ३।। ॐ।। ॐ।। अथ मिरतां गल उपनिषद अथर्वणवेद
मिरतां गल व्याख्यानो।। अस्य मिरतुलां गुल अनेत सअनुष्टुप छंदः।। कालाग्नि रुद्रो देव
ता वसिष्ट रिषिः यमो देवता मिरतमुपस्या नेविनियोगः।। ॐ नचा तो यो गाज हु।।

मधुमतीवाजितब्रह्मेबाहं कालंपुरुषं ऊर्ध्वलिंगंविरूपाक्षंविश्वरूपायनमोनमः॥ वरेण्यं
बभ्यापेन कृपलरूपायनमोनमः॥ पशुपतयेनमः॥ अथमंत्रः॥ ऋतंसत्यंपरंब्रह्म
पुरुषंकृष्णपिंगलं॥ ऊर्ध्वलिंगंविरूपाक्षंविश्वरूपायनमोनमः॥ ॐ क्लिं क्लिं क्लीं स्वा
हा॥ यइदंमित्रनुलांगलंत्रिसंध्यंकीर्तयेन्नित्यं॥ सब्रह्महत्याविपोहति स्वर्णस्तेयं
स्तेयीभवति॥ गुरुदाराभिगमयागामीभवति सर्वेभ्यः॥ पातकेभ्यः उपपातकेभ्य
श्च सदोविमुक्तोभवति॥ सकृतजपतेनमंत्रेणानेन गायित्रानबहिस्सहस्राणिफ
लानिभवंति॥ समस्तोब्रह्मणानज्ञात्वा ब्रह्मलोकमवाप्नोतिय॥ क
न्यांनदानदातिसाविंत्रीकुलीनबीवाभवतिय॥ प्रदीपमनन्तंप्रतिगृह्
नातिसोघोवधरोमस्कोवाभवति जितउपस्थतेषणमास्वादरवाकमंत्रोयंनप
स्यतिइतनेनमित्रनुलांगलागलाबेन महामंत्रसकृतिजापेन भगवानघ

मेरा रमम प्रीयतां॥ ॐ अतं तनएयदा काले बएमासेन मर्षियत सतं तु पंचमे
मास पारब्रह्मचर्यके॥ पुरुषं च तत्तीये वै द्वितीये लक्ष्मपिंगलं॥ ऊर्ध्वलिंगं च
मासेन विरूपाक्षं तदर्धके॥ विश्वरूपं त्रितीये दिवसे सस्यैव न मोनमः
इति श्रितो कालउपनिषद समाप्तम॥ २२॥ ॐ॥ ॐ॥ अथ तेजोविंद उपनिष
द॥ ॥ अर्थ यहि जज्ञातातेजकी विंदु है॥ यहि तेजो मय उपासना वा आत्मा
की है॥ जो संपूर्ण लोको सो परा है॥ अर मद्भ मनन के है॥ अर अतस्म दन है अ
र गंभीर है॥ अर वाको ग्राहीमहो ना कठिन है॥ अर वाकी तपस्या कठिन है॥
अर वाको देखना हू कठिन है॥ अर वाको द्वि उअंगीकार करना हूं कठिन है॥
अर वाको नहीं सकीयत जान॥ अर यज्ञाम्सीयों अर वुद्धवानहूं को वा की प्रा
प्तज्ञाति कठिन ता सोहै॥ प्रयत्न चाहीयत है जबुध्या कोवसकरे॥ अर असंग

जिराय

बुधा

रहे॥ अरु सर्व इंद्रे कों अरु पुनें वस मों राखे॥ अरु सीत अरु उश्न अरु हर्ष अरु शोक अ-
रु उस्तुति अरु निंदा इत्यादिक अवर पदार्थ हं सो मनु के तम याहे॥ अरु अहंकार अ-
र चाह अरु आसा का त्याग कीया है॥ अरु काहू पदार्थ का वासनें अरु पुनें संग्रहे न
करे॥ अरु अपुनें साक्षातकार की प्राप्त मों निश्चै द्रिढ राखता है॥ अरु सद्ग्रंथों के
केमिंन आज्ञा अंगीकार करनें अरु टहल करनें गुर के अरु अवर चाहन है॥ अरु
ऐसे यज्ञासी कों तीन साधन अवश्य है॥ प्रथम निहकाम द्वितीय द्रिढ उद्यम तृती-
य गुरु पर श्रद्धा तीनें॥ या तीन साधन सों आत्म प्रकाश कपाटा कों खुल जात है॥
जीवात्मा जो हंस नाम राखत है॥ तीन स्थानवों को जाग्रत स्वप्न सुषुपत अरु मूलइ-
स्थानवों का तुरीया है॥ अरु गुह्य है अरु सूक्ष्मतर है॥ या तीन स्थानन सों वहि आत्मा
प्रगट है॥ अरु प्रतिपालक है॥ अरु अनंता सों रहत है॥ अरु आकाशवत व्यापक

है॥ अरु मद्र सर्व इंद्रे के सरूप नवही है॥ अरु रवि इम गंभीर पद वाको है॥ अरु तीन नेत्र राषत
है॥ अरु तीन गुण राषत है॥ अरु तीन नेत्र यही तीन वेद है॥ अरु तीन गुणा उपद्र सिथ त
त पर ले है॥ अरु सर्व काम ना है॥ अरु धारन हारा तीन लोको का है॥ अरु अरूप है अरु
अचल है॥ अरु निर संदेह है॥ अरु साधक प्रभु ने ही दृष्ट है॥ अरु साध्य को सरूप दार्य
के दीन ता नहीं राषत॥ अरु कोउ गुण अरु रूप अवकाश वा मोष चेतन नहीं होता॥ अरु
सर्व गुण अरु रूप मद्र वा के है॥ या ठवर मो वीचार अरु वा इंद्री न ही प्राप्त होता॥ वा
ठवर मो ज्ञाता अवर ही प्राप्त है॥ वा को केवल ज्ञान सों आप सों आप सकीयत है प्राप्त है॥ कैसे
सा नाम नहीं कोउ जो वा के नाम के अन्तर सों भिन्न है सो वा को नहीं सकीयत प्राप्त होना॥ अरु त
र वही केवल ज्ञानंद है॥ अरु ज्ञानंद वा को अवर सो नहीं॥ अरु वा को साधक ठन ता के
सकीयत है प्राप्त है॥ अरु वही उत्पत न ही भया॥ अरु वा को संघार नहीं॥ अरु वा को दृष्टि उजस्या

सपरजीत नहीं॥ अरु वहि नित है॥ अरु वहि द्रिढ है॥ अरु वहि निरंतर तासों रहत है॥ अरु वहि
ब्रह्म है॥ संपूर्ण शरीरहू वही है॥ अरु जीवहू वही है॥ अरु पिताहू वही है॥ अरु अंत सर्व
मनोरथोंका वही है॥ अरु ज्ञानसों भिंन हीं वहि केवल ज्ञान हीं है॥ अरु आत्मा वही है
अरु आकाश वही है॥ अरु महाकाश वही है॥ अरु यद्यपि वहि रूप जो सर्वव्यापक है
अरु प्रगट है॥ अरु वहि आपुने आपहीसों पूर्ण है॥ अरु अज्ञानी वोको नाहिं जानत
है॥ अरु साधु वोके नास्तिपद अबहूं नहीं प्राप्त भया॥ वहि नित्य है अरु अस्ति है॥ अरु व
हि ज्ञाता ज्ञानसों सूक्ष्म है॥ अतेव जु सर्व ज्ञान वाहीको है॥ अरु सर्व वही है॥ अरु यद्यपि
जो पूजा पूजक पूज वही है॥ अरु वहि सर्वगुणोंसों सूक्ष्म अरु भिंन है॥ अरु वासों प
रा नहीं कछु॥ अरु सर्व परासों परा है॥ अरु वहि मन बुद्धि विचार में नहीं आवत॥ अरु वो
को जागत नहीं॥ अतेव जाको निद्रा होत है तौ जागत हू होत है॥ वहि जागृतको

रनिद्वशोभ्रष्ट है॥ अरु ऐसा कोऊ नही जो वाको सत न जाने॥ ज्ञानवान अरु आत्मा के प
छानन हारे वांको मल सर्व का जानत है॥ अरु ऐसा कोऊ नही जो वांको प्रकास क
अरु गंभीर न जाने॥ जो को लोभ न हो॥ अरु अज्ञान तान हो॥ अरु भय न हो॥ अ
रु गरव न हो॥ अरु चाह न हो॥ अरु क्रोध न हो॥ अरु अस्तु मम मैं मो प्रवर्त न न हो॥
अरु उष्म अरु सीत अरु सुध्या अरु पिपासा अरु दुख उन्हि अरु वानिछे को प्राप्त
हो ना॥ अरु अहंकार शास्त्र अर्थ न का॥ अरु हरख अरु शोक इत्यादिक कोऊ पदार्थ
न राषता हो॥ अरु इन सर्व सो शुद्ध भया है॥ कहि परमात्मा ब्रह्म गंभीर को प्राप्त हो
ते है॥ अरु वहि ब्रह्म गंभीर को जानत है॥ नमस्कार ज्ञानीयो को॥ अरु सर्व को आ
नंद है॥ अरु श्रोता अरु वक्ता को आनंद है॥ इति उपनिषद तेजोबिंद समाप्त ॥ ३३
७ ॐ॥ ॐ॥ अथ उपनिषद ध्यानबिंद अथर्वण वेद॥ उतपत कारणा स्वरूप का जो है ब्रह्म

जि सा रा

सोकहतहैं॥ब्रह्मोवाच॥तत्वयोगउपासनाकावासतेवल्पानयज्ञासीउकेउपदेस
करताहोंमैं॥अरयहिवहिपदार्थहैजाकेश्रवणकरनेअरउचारकरनेहूंसोसंपूर्न
पापोसोमुकतहोतहै॥बीजसर्वकेअदारेकोअकारउकारअरमकारहै॥अरमुख्य
श्रेष्ठइनसोबिंदुहै॥याहीसोबिंदुऊपरइनकेस्थितहै॥अरततवाबिंदमोशव
दहै॥अरवहिशवदअनाहदहै॥अरज्योतिसंयुक्तहै॥अरअकारअरउकारमकार
अरबिंदुअरशवद॥इनपांचकीएतैंकताकोप्रणवकहीयतहै॥अरजबयाकोउ
चारीयतहैअरशवदप्रनहोतहै॥तववहिज्योतिगंभीरपदहै॥जवापदमोब्रह्म
अरशवदहै॥अरवहिवहिपदहैजोअनाहदहूंसोपरहै॥जाकोऊयोगीस्वरज्ञा
नवानवाआत्माकोप्राप्तहो॥ताकेमनकेसर्वसंदेहनिवर्तहोहा॥अरअनाहदज
सवनहै॥वहिआत्मावाहूसोज्योतिस्वरूपमनतरहै॥जैसेएककैंअगकेलाघभागकीज्यो

शके

१ अकार
२ उकार
३ मकार
४ बिंदु
५ धुनि
को प्रणव कहते हैं

थे॥ वां ते अर्धमात्र अतिसूक्ष्म होत है॥ तैसे ब्रह्म आत्मा गुणातीत अतिसूक्ष्म है॥ अरु सर्व
तत्त्व अरु जीव धारी जैसे मद्द पुष्प के गंध है॥ अरु मद्द दुग्ध के घीउ है॥ अरु मद्द तिलो
के तेलु है॥ अरु मद्द पाषाण के स्वर्ण है॥ अरु मद्द मणि के उ केसूत है॥ तैसे ही वाहि हूं मद्द
सर्व के है॥ अरु याही भांत ब्रह्म ज्ञाता जो निश्चे बुद्ध रावत है॥ अरु अज्ञान ता मद्द वां के न
है॥ एसो केवल होइ रहत है॥ जैसे मद्द पुष्प के गंध अरु तिलो के तेल अंमंच अरु वाहज व्याप
क है॥ तैसे आत्मा हू मद्द शरीर के अंमंच अरु वाहज व्यापक है॥ अरु यद्यपि त्रिदस ता अ
रमल है अरु प्रतिबिंब वां का मिथ्या अरु विनासी है॥ तै हू आत्मा बिंब अरु प्रतिबिंब
दोनो के सें परे है॥ अर्थ याहि जो आत्मा मद्द जीवात्मा हू के है॥ जो अस्तन है॥ अरु म
ना द्ध अंतमा के हू है॥ जो अस्थूल है जां को शरीर कहत है॥ प्राण रोधन त्रय प्रकार है
पूरक कुंभक रेचक॥ प्राण के पूरक काल मो या भांत नाम कमल के पुष्प मो ब्रह्मा को

आत्मा बिंब और प्रति बिंब से परे है।

सूक्ष्म स्थूल शरीर का कहते हैं।

पूरक - कुंभक - रेचक -

१८२

पूरकमें नाभिकमलके कुण्ड में ब्रह्मा रजोगुणीको ध्यान करे श्वेत स्वरूप गौरवाला ४ मुख

कुंभकमें हृदयकमलमें सतोगुणी विष्णु का ध्यान करे ४ भुजा अलसी पुष्प सा रूप

रेचकमें त्रिकुटी कमलमें है जो तमोगुणी महादेव का ध्यान करे स्फटिक सा रूप केवल चेतन ३ नेत्र प्रकाश रूप

औरजगुणउत्पतिकारनहैध्यानकरे॥तद्यथा॥स्वेतरूपविचत्रकततासोमिश्रत
असुचतुर्मुखवांकेइहांचतौई.दे है॥अरुपितरोकापित॥अरुकुंभककालमोयाभां
तीहृदेकमलमोजोवहीमनहै॥विष्णकोजोसतगुणस्थितकारनहैध्यानक
रे॥तद्यथा॥चतुर्भुजजोराषतहैसोयाहिचतुर्दिशाहै॥अरुसपुत्रलसीकेपु
ष्पवतराषतहै॥अरुर्ध्ययाहिजोठेहूकेहरेदानेकीन्याई॥अरुशक्तिकाधनीहै॥
औरेचककालमोयाभांतीत्रिकुटीकमलकेमध्यमहादेवकोजोतमगुणसंघा
रकरनहाराहैध्यानकरे॥तद्यथा॥त्रिनेत्रजोराषतहैसोयहीतीनलोकहै
औरस्फटकरूपयाहिजोकेवलप्रकाशरूपहै॥अरुरत्ननतासोरहितहै॥अरु
नासकरतापापोकोहै॥अरुरेकेवलचेतनहै॥अथध्यानकमलनाभादिकजु
तीनकमलहै॥प्रथमनाभकमलदसदलराषतहै॥अरुरसखुवांकाजघ:कौं

नाभिकमलको १० दल हैं जो मूलाधार से ऊपर है।

कोहै॥ और मल ऊर्ध्व को॥ और द्वितीय कमल जो मध्य छाती के है॥ द्वादस दल राजत है॥ और ले
लेके पुष्ट वत मुख वां का अधः जो है॥ और मल जो है तेही सो ऊर्ध्व को है॥ और वां को मन रूप
अष्ट दल हूं कहत है॥ और सर्व देवता मध्य वां के दलों के है॥ और तृतीय दल जो मध्य ब्रह्म
रंध्र के है॥ और सहस्र दल राजत है॥ और मध्य वा के सूर्ज और सूर्य के मध्य चंद्रमा का चंद्र
मा के मध्य अग्नि का ध्यान करे॥ और ध्यान के काल मों मुखती नहीं कमलों का ऊर्ध्व को
ध्यान करे॥ और मध्य वा सहस्र कमल के रवि और ससि और मन की एकता करे॥ और
इन को अभेद जाने॥ या उपासना सो जीवात्मा को ज्ञान स्वरूप प्रापुने का होत है॥ औ
र सर्व ठवर यही विचरत है॥ इही जीवात्मा ही जो ब्रह्म है॥ मध्य नाभ के साथ रूप उत्पत
कारन ब्रह्मा के और छाती के जो मन है॥ ता मों सो पालिस्थित कारन विष्णु के और मध्य त्रि
कुटी के साथ संघार कारन महादेव के वही विराजत है॥ और वही प्रणव रूप सो साधे

त्रिमात्राधारतहै॥ जोकोऊयाभेदकौंउनेकोसमझै॥ वहीहैवेदज्ञाता॥ मद्धशवदउचारक
रनेप्रणवकेसवदजोअर्धमात्रासोप्रगटहोतहै॥ घंटाकेशवदवतजोपाछेघंटावजाव
नेकेरहतहै॥ अथवापाछेवजावनेतवलनगारेकेप्रगटहोतहै॥ अरशवदकोदोरमो
नहीआवत॥ जोपाछेउचरनेप्रणवकेसोवाकेअंतमेअर्धमात्राकेउचारसोप्रग
टहोतहै॥ जोकोउसाधयानादकेउपासनाकरेवीहैवेदकाज्ञाताहै॥ अवरअंत॥॥
प्रणवकोधनुषकरेजीवात्माकोसरकरे॥ अरब्रह्मकोवेझाकरे॥ साधयाद्रिढतामन वेध्य
कीके॥ जोअवश्ययावानवेझकेलगनेसोअन्यायानहोगा॥ जोकोऊयावानकोवेझमे
लीनकरे॥ वहीहैवेब्रह्महै॥ अवरअंत॥ शरीरअपनेकोअधःकीलकरीकरे॥ अर
प्रणवकोलकरीऊर्धकी॥ अरउपासनाप्रणवकेसोवालकरीहैलाकरसाधसदीव
याउपासनाकेवाप्रकाशरूपआत्माकोजोमद्धयाकेहैजोकोऊदेषे॥ वहीहैब्रह्महै॥

जैसे कमल को मध्य जल के राषकर डंडी के मारग सो आप को ऊर्ध को षैंचत है ॥ तेसे ही
योगेश्वर जो योग मो पूर्न भया है ॥ पवन को अधः सो ऊर्ध को षैंचत है चाहीयत है
अर्धमात्रा जो है शब्द ब्रह्म ताको रजवत जानकर जैसे कूप के मध्य को सो ऊर्ध को अ
प को षैंचत है ॥ तेसे वा कूप सो जो अधः को है ॥ अर मल द्वार वा को कहत है ॥ अपान प
वन सो वार वार सो साथ अर्धमात्रा के मारग सुषमना के सो ऊर्ध को षैंचकर मध्य त्रिकु
टी के स्थान संधि है ॥ दोनो नासिका के छिद्रो के अर वहि इस्थान अविनाशी है ॥ वा ठवर
ब्रह्म को जो संपूर्न से संसार वा मो स्थित है परकाशक जाने ॥ अर अपान को अर्ध सह
त वा शिव मो लीन जाने ॥ पाप श्रोता अर वक्ता या उपनिषद के नास को प्राप्त हो
अर सर्व को कल्यान हो ॥ ज्ञानीयो को नमस्कार ज्ञानीयो को नमस्कार ॥ इति ध्या
नविंदु उपनिषद समाप्तम् ॥ ३४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अथ उपनिषद जपाल ॥ या

१८४ याज्ञवल्क्यप्रति बृहस्पति जाबालने प्रश्न कीयेहैं॥

या उपनिषद् मोबृहस्पत आदिकोरिषीश्वरोनें याज्ञवल्कसो प्रश्न उत्तर कीयेहैं॥ ॐ बृहस्पतियाज्ञवल्कप्रति उवाच॥ प्रश्न॥ कुरषेत्र जोइस्थान मोसंबृहदेवत्योंकेपुमात्मा कोपूजतहे॥ सोवीहमें वनसोहे॥ याज्ञवल्कोवाच॥ जैसेमनुष्य वनारसमें शरीरपातहेमासंतेमुक्तकीप्राप्तहैहे॥ तेसेयहिशरीरहीअवमुक्तकुरषेत्र है॥ जैसेमानुष वनारसमेंसंयोगसोमुक्तपावतहै॥ तेसेजीवात्मासाथसंयोगशरीरकेपरमात्माकोपायकरमुक्तपावतहे॥ अरशरीरकोकुरुषेत्रयासोकहतहे॥ कुरुमेंनामप्राणकाहै॥ अरषेत्रनामषेत्रीकामन्नयाशरीररूपषेत्रमेंजोकुरुनामप्राणसतहै॥ याहीसोकुरुषेत्रकहीयतहे॥ अरजेसेकुरुषेत्रतीर्थपरसंबृहदरिषोकेब्रह्मकोपूजतहे॥ तेसेमनुष्यशरीरकेअधिष्ठातादेवताइंद्रिकेजीवात्माद्वारापरमात्माकोपूजतहे॥ याहीसोसंपूर्णजीवधारीयोकोइस्थानप्राप्तहोनेकाइहीशरीरहै

कुरु प्राण
षेत्र-क्षेत्री
कुरुक्षेत्र-शरीर है

कुरुक्षेत्र

ऋषियों

जैसे कुरुक्षेत्र में ऋषि लोग ब्रह्म को पूजते हैं वैसे ही इस शरीर में इंद्रियों के देवता जीवात्मा द्वारा परमात्मा को पूजते हैं

जिज्ञासु मुमुक्षु

पप्यवीहै॥ तांतेंचाहीयतहै यज्ञासीमुमो॥ अरु ज्ञानवानयाठवरस्थितहे॥ अरु जदिवामन
करेयाहीशरीरअपुनेकोवनारसअरकुरुषेत्रजानें॥ अतेवजोपुजाइस्थानइंद्रके
जोअधिष्ठातादेवतोकाअरमुक्तिइस्थानजीवधारीयोकाइहीशरीरहै॥ अरजवलग
मद्धजीवधारीयोकेज्ञानकीप्राप्तिनहीहोतभतवलगमुक्तिकीप्राप्तकठिनहै॥ अरजोजी
वधारीमद्धवनारसकेहुंजवशरीरकात्यागकरतहै॥ वाकालमोमहादेवजवमहावाकतार
कमंत्रजोकारनमुक्तिकाहै॥ उपदेशकरतहै॥ अरुवोहिमंत्रतारकयहिहै॥ तत्वमसि॥ वहि
शरीरत्यागकरनहाराजवहीयामंत्रकोमद्धदत्तिकरनअपुनेकेमहादेवकेमुखसोश्र
वणकरतहै॥ तिसीकालमोअद्वैतज्ञानकोप्राप्तहोकरअविनाशीहोतहै॥ तांतेंचाही
यतहैजोयाशरीरसोअज्ञाताहनहो॥ याकाज्ञाताहो॥ अर्थयहिजोमद्धअनिच्छपदा
र्थोकेनप्रवर्तें॥ याज्ञवल्ककोवाक्य॥ हेबृहस्पतियहिवेद अज्ञातासत्नहै॥ बृहस्पतिने

तत्वमसि यह तारक मंत्र है।

ञ्गीकार कीया॥ ततः अत्रिरिषीश्वर यागवल्क प्रतिउवाच॥ प्रश्न॥ आत्मा जो है अनंत है॥
अरु अनिरदेश्य है॥ तांको मैं कौन भांत जानो॥ यागवल्को वाच॥ उत्र॥ मद्र अविमुक्त
के साथ वां के उपासना चाहीये करी॥ आत्मा जो है अनंत है॥ अरु अनिरदेश्य है॥ सो मन
द्र अविमुक्त के वसते है॥ प्रश्न॥ अत्रिरिषीश्वर॥ अविमुक्त कौन से पदार्थ सो है॥ यागव
ल्को वाच॥ मद्र वरना अरु असी के प्रगट है॥ जो मद्र वरना अरु असी के जो यहि है दो
नो ही वहे हैं बनारसी कर्हते है॥ अर्थ यहि मद्र या द्वय संगम ताके जो पृथिवी है बना
रसी सो है॥ अत्रोवाच॥ प्रश्न॥ अर्थ वरना का कियो है॥ अरु असी का कियो है॥ याग
वल्को वाच॥ वरना अर्थ यहि जो दूर करन हारी वादो षे अरु न ता इंद्रे की॥ अरु अ
सी अर्थ यहि जो नास करन हारी पापे अरु विदित प्रता इंद्रे की जो वाप्य भरव है॥
पुनः प्रश्न अत्र॥ मद्र शरीर मानुष के यहि है न दी अवनसी है॥ अरु बनारसी

कवनसीहै॥ याज्ञवल्कोवाच॥ दुयधिकुजोनासकाकेहै॥ जांकोवरनाऔरऔसीकहतहै॥ औ
रजलइस्थानयामोपरवाहपवनकागमनकरतहै॥ औरयाउभेहीधिकुरोकीसंधमो
जोत्रिकुटीइस्थानहै॥ वीहवनारसइस्थानमहादेवकाहै॥ औरसंधवयलोककीहै॥
एकस्वर्गजोब्रह्मलोकहै॥ औरद्वतीयवैकुंठजोविष्णुलोकहै॥ ब्रह्मज्ञानीऔरज्ञानीऔ
रयोगेश्वरतात्रिकुटीइस्थानकोसंधइस्थानजानतहै॥ औरसदाकाहीठवरमोप्राण
रोधनकरकरसदाशिवमोमगनहोतहै॥ औरयेयाहिजोप्राणवमोलीनहोतहै॥ औ
रयाभांतजोउपासनाप्राणवकीमद्वशरीरकेजोवनारसहै॥ करतहै॥ महादेववा
पुलषकेशरीरत्यागकालमोजांठवरवांकेशरीरकात्यागहोवाहीठवरजोतारकमं
तरजोकारनमुकतकाहै॥ दछणकरनमोउपदेसकरतहै॥ इतिप्रथमब्राह्मणम्स
माप्तम॥ संपूर्नसेवकयाज्ञवल्कके प्रश्नकरतमये॥ जांकेउचारकरनेसोमुक

तकीप्राप्तहोवेहमकोउपदेसकरो॥याग्यवल्कोवाच॥प्रायउचारनेशतरुद्रीउपनिषदकेअ
रथहिशतनामकअमृतमाअविनाशीकाहै॥अरउचारकरनेवानामोकेसोंउचारकरनेहा
राहूंअविनाशीहोतहै॥याकालमोराजाजनकविदेहहूंनिकटस्थितथावानेजैसेगु
रुसोसेवकअतिदीनतासोंग्रस्तितकरप्रश्नकरतहै॥तैसेहीजनकसेवकभा
वसोप्रश्नकरतभया॥जनकोवाच॥मोनमस्कारकोयोगमुझेसंन्यासउपदेसक
रो॥याग्यवल्कोवाच॥वर्ननमात्रसंन्यास॥संन्यासचतुरप्रकारहै॥प्रथमब्र
ह्मचर्य॥अर्थयहिजोसंपूर्नरसोकोत्यागकरगुरुसोवेदअध्ययनकरे॥अरद्वितीय
जोहैगृहस्थआश्रमताकोपाछेब्रह्मचर्यकेअंगीकारकरे॥अरसंतानकोउप
जावे॥अरतृतीयजोहैवानप्रस्थआश्रमताकोपाछेगृहस्थआश्रमकेअंगी
कारकरे॥अर्थयहिजोसंतानहूंकात्यागकरे॥जोइस्त्रीवाकेवासतेटहलकेसा

थ्हेतौवांकोसाथअरुपुनेराषे॥अरजोनहोतौएकअपहीमन्दकाहूपरवतकेअथवातीर
थकेगमनकरकरवाटवरमोस्थितहै॥अरसमदमकरै॥अरमनकोअपुनेवसमोरा
षे॥अरसीतउष्णउदमताकोसहारे॥अरसर्वचाहाकोत्यागकरै॥याकोवानप्रस्थकह
तहै॥जबप्रथमब्रह्मचर्यअरगृहस्थअरवानप्रस्थयातीनहीआश्रममेदृढहो
अरकेवलयज्ञादिकअपुनेस्वरूपहीकोराषतहै॥अरवांकेमनमोसंपूर्णचाहाकीशांतभ
ईहै॥तबवहिसंन्यासीहोतहै॥अरजेसेवर्णनकीयाजोवामांतआदिमोनप्रवर्तोहो
तौजिसहीकालमोयांकेमनसोचाहाकीनिवृत्तिभईहोवहिहूसंन्यासीहो॥अरकर्मय
ज्ञोकेमध्मार्गतपस्याकेकरतहैअरयांनेकीयेहै॥तासोत्यागकीआज्ञाअंगीकार
करे॥तथ्यथा॥ऊपरवाअग्नियज्ञकीकेप्रथमकरअपुनाभावनासोराषे॥पुनःवाक
रकोऊपरमुखअपुनेकेराषे॥अरसनमखवाअग्नियज्ञकीकेनमस्कारकरकर

याभांतवेनतीकरे॥तथया॥हेअग्नियज्ञकीअबतूअभ्यंतरमेरेआगमनकरो॥
औररजसततमयहितीनगुणजोमुजमोहैतांकोदग्धकरो॥जोगुणातीतहोवोमैं॥
औरतूंप्राणमेरेहैं॥मुजेसायअआत्मप्रकाशकेद्वाप्रकरो॥पुनःकहैहेअग्नितूंप्राण
मेरेसोउत्पतभयाया॥पुनःमद्रप्राणकेआगमनकरो॥औरमुजमोधनगंभी
रज्ञानकाहैतांकोअधिककरो॥पुनःतृतीयवारकहेहेअग्निप्राणमेरेसोजोउत्पत
भयाहैतं पुनःमद्रवाकेआगमनकरो॥औरजोअग्निमेहोतृनरावताहै॥औवर
अग्निकोपवित्रढवरसोल्यायकरजैसेवरननकीयातैसेवाकोकरे॥औरजोवा
वनमोअग्निनहो॥तोमद्रजलकेआगमनकरलरऔरवाजलकोअग्निजा
नकरकहे॥हेअपअग्नितुहीहै॥औरअपतुहीहै॥अभ्यंतरमेरेआगमन
करो॥औरकर्मजोमद्रअपकेकहेहै॥सोमद्रअपकेकरे॥अतेवजोमद्रअपकेसं

सर्वदेवतावसतहै॥ अरजोकोउकर्मअपकेयथ्यवेदअज्ञाकरतहैयहिअमरपदवीकोप्राप्तहो
तहै॥ अरकर्मजोमहअपकेकरै॥ तासंपर्नकर्मोमोगंभीरनामजोप्रणवहै॥ ताकोउचारण
करनकर्मउनमोकरे॥ अतेवजोतीनहीवेदअरसर्वकर्ममहप्रणवकेहै॥ याकालमोप्रणव
काउचारकीयावाकालमोयासर्वकाउचारकीया॥ अरयहीप्रणवब्रह्महै॥ अरसंन्या
सीकोभिंनप्रणवसोअवरउपासनानही॥ जनकोवाच॥ हेनमस्कारकोयोगएता
हीहैसंन्यासु॥ याग्यवलकोवाच॥ एताहीहै॥ पुनःअत्रिरषीश्वरयाग्यवलप्रतउवाचप्रश्न
अवरठवरतुमोनेअज्ञाकरीहै॥ जवसंन्यासकाअंगीकारकरे॥ तवयज्ञोपवीतअर
शिषाकोदूरकरे॥ यज्ञोपवीतसोरहितब्राह्मणकिसभांतहो॥ याग्यवलकोवाच॥ उत्तर॥
जवआत्मज्ञानभया॥ तवसर्वपदार्थनामोअभावेशकरतभये॥ यहिआत्माहीवोकाय
ज्ञोपवीतअरशिषाभयाहै॥ यज्ञोपवीतअरशिषाकोमहअग्निकेद्वारकरआत्माहीं

आत्मा ही को शिखा सूत्र समझो।

कोयज्ञोपवीतअरुशिखाअरुपुनीकरे॥ प्रश्न॥ अरुजोकोसंन्यासकोअंगीकारकरनानही वहमी
कहा॥ जैसेछत्रीअरुवैश्यवोकोविधयाकरतव्यहै॥ जासोवहिहूंपाशअरुविद्याकेसोंमुक्त
होइ॥ याज्ञवल्क्यकोवाक्य॥ वाकोचाहीयतहै जोअशतुसोयुद्धमोंमुखनफेरे॥ अरुजोमद्ध
युद्धकेशरीरकात्यागकरे॥ वहिहूंसंन्यासवतउत्तमगतिकोप्राप्तहोहि॥ अरुएयहिजोसं
न्यासीसदासावधानकेअरुइंद्रकेअरुप्राणअरुपुनेकेयुद्धकरकरमसअतिहोतहै॥ अ
रवहिहूसाथप्रगटयुद्धकेस्वर्गकोप्राप्तहोतहै॥ अरुजाकोरोगानेगसाहो॥ अरुरो
गसोंअशक्तताशरीरमोंअतिभईहो॥ अरुशरीरत्यागकेप्राप्तभयाहो॥ ताकोचाही
यतहै जोअंन्नकाअरुजलकात्यागकरे॥ अतेवजो यहिहूंमानोसंन्यासहै॥ अरुय
हिजोयाहूसोस्वर्गकीप्राप्तहोतहै॥ अरुजोयहिहूंनकरसके तौअवरभांतकरे॥ त
था॥ चाहीयेजोवहिरोगीमद्धजलकेप्रवेशकरकरशरीरकात्यागकरे॥ इनमार

संन्यासी एक
को अन्न न खावे

गोहूं सो स्वर्ग की प्राप्त होत है ॥ अथ यथाप्रकार रहत संन्यास व रहन ॥ चाहीयत है जो सदा वस्त्र में लेत लू
पका ओढे ॥ अरु सदा सिर को मुंडत करवावत रहे ॥ अर्थ यह है जो सीस पर केस न रखे ॥ अरु
मद्यीक स पदार्थ के आपा न आरोपे ॥ अरु सदा पवित्र रहे ॥ अरु साथी क सर को विसर्जन करा
वे ॥ अरु कौसे न करे जो कोऊ एक जा को उत्तम संन्यासी जान कर संपर्न आहार दान
करे ॥ अरु यहि विधा का अंगीकार करे ॥ अथ वा वासते आहार के सर्व नगर में मो मुमे ॥ जो
या भांत आपु अपुनी जीता वे ॥ तौ जीवात्मा वा का परमात्मा है ॥ अरु जो का मेन्द्रि इच्छा सं
न्यास अंगीकार करतन्ने की उपजे ॥ अरु ग्यान दर्शन न प्राप्त हो ॥ तौ चाहीयत है जो मोह शरीर सो
दूर करे ॥ अरु साधु धर्मी अरु रजि हूं आपुनी के उपदेस कीया करे ॥ जो मैं संन्यास अंगी
कार कीया है ॥ अरु मैं संन्यासी भया हों ॥ ता ते मैं सर्व त्याग कीया ॥ अरु ब्रह्म भया हों ॥ अर्थ
यहि है जो मन सो सर्व त्याग करे ॥ वेद की आज्ञा है ॥ वेद की आज्ञा है जो मारग हूं सो संन्यासी

१८९

होतहै॥ अरु मुकतिकोपावतहै॥ अरु ब्रह्मलेहोतहै॥ अथ उत्तवाच॥ हे नमस्कारकोयोग्याहीभां
तहैयाहीभांतहै॥ पुनः यागवलकोवाच॥ वोहंसंन्यासीजोपरमहंसभयेहै॥ अर्थयोहै
जोजीवात्मावांकाहंसमोपरमहंसभयाथा॥ अरु तत्ववेताथे॥ तामोविस्तारिकसूसोवरन
नकरतहैं॥ तथ्यथा॥ प्रथमरिषीश्वरइसमरीच द्वितीयउदालक त्रितीयश्वेतकेतु॥ च
तुर्थदुर्वासा पंचमराजामदाक॥ षष्टममदाक जडभरथ॥ सप्तमदत्तात्रेय॥ अरु अष्टम
अशोनक॥ अरु ऐसेअनेकरिषीश्वरअवरहै॥ सोइनकामारगगुप्तछिन्निभेन
हीस्वकीयतकर॥ अरु योवेदमेंबीवोनहींसकीयतजाए॥ यद्यपिपीद्विष्टिमोअतिअवधूत
भयेहैं॥ तोहूकंतरसोचैतनथे॥ वरननमारगपरमहंससंन्यास॥ डंडअरुकरमंडल
हैनहींराषत॥ अरुसर्वत्रवास्मतेजलभक्षकरनेकोहैनहींराषत॥ अरुशिषाअरुय
ज्ञोपवीतनहींधारत॥ अर्थयहिजइनसर्वठवरोकेइस्थानब्रह्महीकोजानतहैं॥ अ

को

रयाभांतकीरहतवारिषीश्वरेशकीयी॥ जोवर्ननकीयेहै॥ तातेचाहीयतहै जोइनसर्वपदार्थोंको
मद्धअपुन्नेउारकरमद्धसंपूर्नेउवरकेएकआत्माहीकोजानेअरदेषे॥ अरजैसेमाता
केउारमसोंनउानहीनिकसाया॥ तैसेहीनगनरहे॥ अरउदमअरसीतसोअमयरहे
अरउदमअरसीतवामोप्रवेशननहीकरत॥ अरनवोकोहरषनशोकहै॥ जोकोउमनअप
नेकोष्ठद्वारकरमद्धमारगव्रसवेप्रवेशकरे॥ वाहिनिश्चैसोंव्रसलेअवस्थामोप्राप्तहोतहै॥
अरजबलगयाहिशरीरपातुनहीभया॥ तबलगजैसेबरननभया॥ वाहीभांतनगरमो
भिष्याकरकरद्वयडोरकेजठरकेपरनीकरै॥ द्वयडोरअंनसोपर्नराषेनही॥ द्वयडोरअंन
सोअन्नराषे॥ अथवाकरसोंग्रासमोमद्धमरवकेडारे॥ अथवाकरसोभिंनसाथ
मरवकेग्रासकाअंगीकारकरे॥ जोभिष्याप्राप्तहोअथवानहो॥ अरहरषअरशोक
नउपजावे॥ जोकालमोषुध्यावंतहो॥ नवनगरमोआगमनकरे॥ अरजबलगषु

ध्यावंतनहोतवलगमद्रवनहींकरेहै॥अउरउपरसनकूपों॥अउरसूनइस्थानोंको॥अउरतीर्था
दिकजेतपस्थानीठवरहै॥अथवामद्रवनोको॥अमयठवरदेखकरकेदे॥अथवामद्रवु
दापर्वतकीके जो कोषोहकहतहै॥अथवामद्रविछद्रके जोवासतेतपस्याके मद्रएथवी
केषोदकरहतहै॥अथवानीचेत्रिदोके॥अउरअथवामद्रगारके॥अउरअथवामद्रज
लशालाके॥अयथीहजो जोठवरमोकवहहवनादिकमयेहोह॥अउरअथवामद्रवाहि
दोके जो नानुषोसोसूनहोहै॥अउरअथवामद्रपरवतोके जोसदाइस्थानहोत
है॥अउरअथवामद्रवेल्योके॥अउरअथवामद्रमसलवाद्रिदोके जो सूनहोतहै॥अउ
रवाठवरमोजोजलस्रवतहै वसयाकरे॥अउरचाहीयतहै जोनिद्रएकठवरनवसे
करवीचारकिसकामकानकरे॥अउरसदाचित्तसोंविसपदार्थको॥अपुनानकरे॥
अउरसदामद्रउपासनागंभीरनामजोप्रएवहै॥ताहूकीकरे॥अउरमद्रअपुनेकआ

पहीस्थित है॥ अरआपकों मद्ब्रह्म आपुनेही देषे॥ नाम ऊंसें संन्यासीकों परमहंस है॥
नमस्कार यागवलककों अर नमस्कार ज्ञानीयोकों॥ ज्योतक अर वक्ताकों आनं
द है॥ अर ज्ञानकी प्राप्त है॥ अर सर्वकों आनंद है॥ इति जापाल उपनिषद या
गवलककउत्तरसमाप्तम्॥ ३५॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ अथ योगतत्त्व उपनिषद जो प्र
सेवकप्रति तत्त्वयोगकाउपदेस कीया॥ प्रजापतोवाच॥ तत्त्वयोगकाउपदेस तुझे
करतहों मैं॥ जो संपूर्न यज्ञासीयोंके ज्ञानने सो योगकी पूर्नतामों प्राप्त है॥ अर
श्रवणकरने अर उचारकरनेयाके सो मुक्त है॥ अर पुनः या संसारमें आगम
न नकरे॥ योगी गंभीर विहमु है॥ अर माया वाकी जो उतपत्ति कारन जगतका है॥
वहि हू गंभीर है॥ अर वाका ज्ञान अर पहिचान ए गंभीर है॥ अर वाकी तपस्या
गंभीर है॥ जोयज्ञासी अर योगी जो मद्ब्रह्मज्ञानके अर तपस्याके प्रकाश जो दीपकी

परमात्माकी मायासें जगत उत्पन्न होता है

जिज्ञासु

१८१

लाटवतदेषतहै॥वहिप्रकाशविह्नपरमात्मा है॥अरगंभीरपुरषुहै॥अरमन्नसर्वकेपूर्न
है॥यद्यपिवहिप्रकाशसमाधिसर्वमनोकेपूर्नहै॥अरज्ञातनिकटहै॥याकारनसों
मानुषवाप्रकाशकोमन्नपुनेन्नहीदेषत॥अरसापअवरपदार्थोकेउपासनाक
रतहै॥सोवहिकारनअतिज्ञानहै॥याज्ञानसोवाइस्यानोसोजोदुग्धपान
करतेहै॥पुनःवाहीइसतनोसोअवरकुचजानकरसोयकरकेवाकेरसकोग्राहीक
होतहै॥अरयाद्वारसोंनिकसैहै पुनःवाद्वारकोअवरद्वारजानकरमद्धवाकेगम
नकरनेकोप्रवर्ततहै॥अरइस्त्रीकेरूपकोमाताकहतेथे॥पुनःवाहीरूपइस्त्री
केकोइस्त्रीअपुनीकहतहै॥अरजारूपपुरषकेकोपिताकहतेथे॥पुनःवाहीरू
पकोसुतअपुनाकहतहै॥अरवाहीतातएककालमोपिताकहलावतहै॥अरवा
१८ हीकालमोसुतहोतहै॥जेसेरूपकेहररटकीरिंडेजोआपसोपूर्नहोतहै॥अरपु

अहंकारसेभीता काचुकाद्दारनहीं देखता

नः जलसैंसंसनहोतहै॥ तैसेहीभेदयासंसारकोहै॥ जोसाधयाहीभ्रमअरुअज्ञानताकेम
ष्टअपुनेकुलोकेआवागमनुरावतहै॥ तातेचाहीयतहै जोवासनेमुक्तनहोएयासं
सारकेसोउपाअनाभ्साधनाम गंभीरप्रणवकेकरे॥ तथ्यथा॥ मध्रतीनअक्षरहैयाना
मकेतीनहीलोकहै॥ मध्रप्रथमअक्षरकेपृथवीलोकहै॥ अरुद्वतीयअक्षरकेअंत तरि
रक्षलोकहै॥ अरुमध्रतृतीयअक्षरकेस्वर्गलोक॥ अरुरिग यजुरसामयहितीनहीवे
द॥ अरुब्रह्माविष्णमहेशयहितीनहीदेवता॥ अरुसूर्यकीअग्निअरुवैश्वानरअ
ग्निअरुयहिअग्निजोप्रसिद्धपृथवीमंडलमोमध्रआकारकेहै॥ यहितीनहीअग्नि
अरुरजस्तमयहितीनहीगुण॥ मध्रयातीनहीअक्षरकेभिंनाभिंनयहिस्वरून
हीपदार्थहै॥ अरुअर्धमात्राचतुर्थजोभिंनयातीनअक्षरसोहै॥ वहीप्रणवहै॥ का
रवोकोप्रणवदब्रह्मकहतहै॥ अरुजोकोउवाकोउचारकरेअरुजाने॥ उचारस्वरन

हारावोंकासर्वपदार्थोंकोजोवरननभयेप्राप्तहै॥अरपरमपदजोगंभीरपदहैवाहू
कोप्राप्तहै॥अरमध्ययाअदारप्रणवकेसोजोस्यार्धत्रिमात्राहै॥यहिसंपूर्नपदा
र्थयामांतहैं॥जैसेमध्यपुष्पकेगंधअरमध्यपयकेघीउअरमध्यतिलोकेतेलअ
रमध्यपषाणकेस्वर्न॥अरमारगउपासनाप्रणवकीकायामांतहै॥तथ्ययां॥म
ध्यातीकेसहदामुमांसकमलकाल्पुराषतहैं॥अरमरवुवाकमलकाअंधःको
है॥अरमलउडीवांकीजोहैसोऊर्धकोहै॥मध्यघडुवांकेकेवाकमलहीकेरू
पवतमनविराजतहै॥अरउचारनेप्रथमअदारप्रणवकेसोजुअकारहैमन
वासोशुद्धहोतहै॥अरउचारनेद्वितीयअदारप्रणवकेसोजोउकारहैकलीवांक
मलकीषुलजातहै॥अरवांकेषुलनेसोंसंपूर्नपदार्थोंकोज्ञानमवहोतहै॥अर
उचारनेत्रतीयअदारप्रणवकेसोशवदजोहैनादताकीप्रगटताहोतहै॥अर

अर्धमात्रा जो केवल शब्दब्रह्म है अरु सदा दृढ है ॥ मनु वामो लीन होकर केवल प्रका
शही होत है ॥ जो वहि प्रकाश केवल स्फटिक वत स्फटिक अरु उज्वल है ॥ अरु रवि के
प्रकाशवत यहि प्रकाश अति सूक्ष्म है ॥ यामें तत्काउपासक वा पुरुष गंभीर को जो म
नु सर्व के परे है ॥ प्राप्त होत है ॥ अरु जो ऐसे प्रकाश को जो मनु सर्व के परे है ॥ ध्या
न वां का मनु मनन के न सके कर ॥ तो मनु ब्रह्मरंध्र के केरे ॥ अरु यहि ध्यान ब्रह्मरंध्र के
वा काल में दृढ होत है ॥ जब न वही द्वार शरीर के जासों पवनु वाहज को गमन क
रत है वां का अरु रोध न करे ॥ तद्यथा ॥ पवनु मल द्वार का साथ मल बंध आसन के
रोके ॥ अरु पवन लिंग इन्द्रिय स्थान का वाहज को विशेष नहीं गमनु करत ॥ अरु दो
ए चरन सो अंगुष्ठी सो वाहू को रोके ॥ अरु सप्त द्वार जो है मनु सिर के ताको साथ महा
मन मुद्रा के रोके ॥ तद्यथा ॥ द्वय श्रोत्र जो है ताके द्वय छिद्र को साथ द्वय अंगुष्ठ के

अरयुगमहीनेत्रोकोसायायुगमहीकरोमीतरजनीकेअरयुगमहीन्नासिकाकोसा
यायुगमहीमध्यमाकोअरमुषकोसायायुगमहीकरोकीअनामकाअरकनिष्टका
सेअधारोधनकरे॥सायायामांतकेप्राणरोधनसोयज्ञासीमुक्तकोप्राप्तहोतहै॥या
मांतप्राणरोधनसोंवहीदीपजोमध्यशरीरतूपवासनकेहै॥पवनसोरहामोहोअर
सर्वशरीरतूपवासनसोप्रकाशकरतहै॥उपासकयाअभ्यासकेकोचाहीयतहैजोश
रीरकेत्यागमोप्रवर्तेगतववाकालमोमनअरप्राणअरजीवात्माकोएकहीअभेदध्या
नकरकरमध्येत्रकुटीकेजोयुगमहीनासकाकेछिद्रोकीसंधिहै॥अरवहियाशरीर
मोवनारसइस्थानहैतामोस्थितकरे॥सायायायोगकोशमतिअरउपाशनाके
आत्मास्वप्रसादीकोप्राप्तहोतहै॥अरसंपूर्णशोकवाकेनाशहोतहै॥नमस्कारस्ता
नीयोको॥श्रोताअरवक्ताकोआनंददेहो॥अरसर्वकोआनंददेहो॥इतियोगतत्वउप

निषदसमाप्तम्॥३६॥ ॥ ॐ॥ ॥ अथ क्षुरकाउपनिषद अथर्वण वेद भाषा लिख्यते
अर्थ याहि जो काटने अज्ञान अरु आवरन की छुरका है॥ अपुने सेवको प्रति प्रजापति उवाच
या उपनिषद छुरका को जो धारना को योग है॥ सो तुमको वासते याके उपदेस करते हैं॥ जे छुरा
ना अरु जीवात्मा को अज्ञानि निश्चै सो अभेद अद्वैत ध्यान करे॥ ताते पुनः मद्र पाशी कस्त लो
क के नाश होए॥ अरु केवल आत्मस्वरूप है॥ अतेव जो तत्ववेद अरु ज्ञान का यही है॥ अरु अज्ञा
ज्ञा शिव शंकर शंभु की जो स्वयं जोत है॥ अर्थ याहि जो स्वप्रकाश यही है॥ अरु मारग धा
रना का याहि है॥ तत्र याके वाहीयत हे जु असंग एक ही वाद वर मो जो शब्द का हूं का अरु
थ ब्रह्म॥ सु मन अरु अमका हूं की मद्धकरन के न प्राप्त हैं॥ तहां गमन करकर सुखासन स्थि
त है॥ अरु जैसे सवकछुए सर्व अंग गोअपुन्यों को मद्ध अपुने खेंचत है॥ तैसे ही वहि हूं सर्व
इंद्रे अभ्यंतर अरु वाहज अपुन्यों को मद्ध अपुने खेंच कर मन को मद्ध छिद्र के जुम

थ मन के है इस्थित करे ॥ अर द्वादस मात्रा जो पवन वा हृदय को आगमन करते है ॥ बाबा
हर के पवन को साध एक ही बार उचारने प्रणव के अभ्यंतर मो षैंच कर अभ्यंतर को ता
पवन सो पूर्न करे ॥ अर साध युगम ही करे को अंगुलीयो के कुंभक मुद्रा सो सपत ही
द्वार सिर के रोके ॥ अर साध अडी युगम चरन की के गुदा अर लिंग अस्थान की
जो संधि है ॥ यो न इस्थान ता सो रोके ॥ अर जब लग स्वास को अभ्यंतर षैंच क
र मध्य शरीर के राषे ॥ तब लग ध्याती को अर मुष को अर पीठ को स्थ षे राषे ॥ अ
र रेचक काल मो सनै सनै रेचक करे ॥ अर ऐसे न हो जो अपान पवन वा कुंभ
क काल मो अधः के मारग सो जे से सदा वाहन को गमन करते है ॥ ते से तब हू करे ॥
अर अवर भांत यहि साध ध्यान के मारग युगम अंगुष्ठ चरनो के पवन को षैंच
कर मध्य गांडियो के प्राप्त करे ॥ अर गांडियो सो षैंच कर मध्य गोडुयो के प्राप्त करे ॥ अर

सुषुम्ना नाडी नाभि से ब्रह्मरंध्र तक है

गोहृयोसोषैंचकारमयस्यलोकेप्राप्तकरे॥ औरवाठवरसोमध्यलिंगाइंद्रेके॥ औरलिंग
इंद्रेसोमब्रनाभकेप्राप्तकरे॥ औरमब्रनाभकेसुषमनानाडकोहै॥ औरसाधवास्तु
षमनाकेऔवरसंवूहनाडकाके जोऔतिरके॥ औरस्तद्वारके॥ औरपीतऔरस्वजओ
रसंदलीलूपराषतेहैं॥ भिम्मतेहैं॥ औरवहिनाडकासुषमनाऔतिसूक्ष्मेहै॥ और
उज्जलस्वपेदलूपस्फुरंवतेहै॥ औरवापवनकोजोमब्रनाभकेप्राप्तभयाथा॥ ताकोमब्र
नाडकाकेप्राप्तकरे॥ जैसेलूतातारकोआपसोनिकासकरपुनः मब्रआपुनेलीनक
रकरऊर्धकोगमनकरतेहै॥ तैसीहीसाधध्यानकेवापवनकोमब्रकमललूपमन
केजोऔत्मइस्थितइस्थानहै॥ औरसूपवोकारकतेहै॥ औरमब्रसर्ववेदोंकीउपनि
षदोंकेवोकानामलूपवर्णनभयाहै॥ प्राप्तकरे॥ औरवोकेमब्रसोपुनःकेठइस्था
नमेप्राप्तकरे॥ औरवाठवरसोपुनःब्रह्मरंध्रकोप्राप्तकरे॥ औरवाठवरमोस्थितक

निश्चयात्मक

१९५ रे॥ अरु साध मनन रूप छुरिका के जब छुरिका को साध निश्चयात्मक बुद्धि के तीक्षण कीया होय
अरु साध स्थित मनन कीके चाहीयत है जब छुरिका उज्वल अरु शुद्ध करकर संपूर्न नाम
अरु रूपों को काटे॥ जब साध ध्यान मनन रूप छुरिका तीक्षण के संपूर्न नाम अरु रूपों को जो
कारण है तिनको है अरु इही माया है काटे॥ तब जीवात्मा अरु परमात्मा की एकता है॥ अरु याको
तिका छुरिका व जो है इंद्रका॥ अरु वहि इंद्र राजयोग का राजा है॥ अर्थ यहि जो परब्रह्म उत्पति का
रन गंभीर है॥ अरु यहि छुरिका वास्ते काटणे पाप अरु पाद आवरण अरु विक्षेप के अति उत्त
म है॥ अरु कारन प्रगट तावां की का वास्ते याही के भया है॥ इति प्रथम ब्राह्मण॥ अथ द्वि
तीय ब्राह्मण॥ मरमस्थान गंभीर मन्त्र सुषमना के है॥ अरु मरमस्थान याको कहते है॥
जो याठवर अति दुःख की प्राप्त भये मानुष जीवत नहीं॥ अति तेव जो वहि आत्म इस्थान
है॥ ताते सदा वाठवर मो चाहीये स्थित भया॥ अरु युगमन्ना स्यकाके छिद्रों की संघ जो है

प्राण १२ ओंगुल बाहर जाता है।

सुषुम्णा मे जो लीन होता है वही आत्मा है

आत्मा मे सुषुम्णा मे लीन होते हैं।

मूलकमलताइ स्थानमो सुषमना एकताको प्राप्त भई है॥ बाठवरमो प्राण पवनको जो वाद
समाजावाहजको आगमन करते है॥ स्थितके है॥ अरु सुषमनाको वाठवरमो जाने॥ उ
पाश्रकयाभांतको आत्माको प्राप्त होते है॥ अते व जो सुषमनामे ब्रह्म आत्मामे लीन होरहे
है॥ अरु जोको उमब्रवांके लीन होते है॥ वहि ब्रह्म आत्मा होते है॥ अरु सुषमनाके वलसतग
णही है॥ अरु प्राण रोधनके कालमो वहि त्रिसहस्रनाडका जो साथ सुषमनाके नि
श्चत भई है॥ वहि संपूर्न पवन सो पूर्न होते है॥ अरु रोधनके मारग सुषमनाके मा
रग पवनका वांधीयत नही॥ अते व जो वाहरसो प्राण आपुने मारगमो विचरत है॥ ताते
साथ उपासनारूप छुरिकाके जो साथ प्रधानयोगके तीक्ष्ण करी है॥ अरु अग्निवत अ
तिचमतकारको प्राप्त भई है॥ साथ छुरिकाके संपूर्न मारग अवर नाडिकाके कोकाटे॥ अ
र्थ यहि जो वांधे॥ जैसे गंधपुष्पोकी मधुतिलोके आवेश करते है॥ तैसेही गंध सुभआत्म

मकर्मोंकीदूरकरकरएकांतमोएकाग्रापहींस्थितहै।।अर्थयहिजोकाहूकोसाथनराखे
अरकाहूकासंगनकरे।।अरवाउवरमोकाहूकाशबदनश्रवणहै।।अरसर्वपदार्थोंकी
चाहकात्यागकरे।।अरमन्त्रमारगयोगकेअभ्यासकरे।।जैसेंहंसपक्षीजोमन्त्रपासकेबं
धभयाहै।।अरवापाशकोसाथमुषकअपुनेकेकाटकरअरवापाशसोमुक्तहोकरआ
पकोआकाशमोप्राप्तकरे।।तैसेहीजीवात्माहूसर्वअपुनेशरीरकेबाधकपदार्थोंकोका
टकरअरत्यागकरकरआपकोमन्त्रचिदाकाशकेजोमहलरूपवांकोहेप्राप्तकरतहै।।अरु
जैसेंदीपकीजोतजोवाटीअरतेलकोदग्धकरकरलीनहोतहै।।तैसेंयाहूकोचाहीय
तेहैसर्वकर्मअरकर्मोंकेफलकोदग्धकरकरपारब्रह्ममोलीनहै।।अरजोकोऊप्रा
णारोधनअभ्यासकोछुरकाजानकरअरप्रणवकेउचारकोवाछुरिकाकीसदृश्यधार
जानकरअरउपरपषाणत्यागकेअरअसंगताकेतीक्ष्णअरशुद्धकरकरमन्त्रक

मे रूप रजके जो बंधहै॥ तासंपूर्न शरीरके कर्मोंको जामे बंधहै॥ सायवाघूर काकेवा
रजुकोजैसे साकाटे जो पुनः मुद्रुबंधनकेनजावे॥ जोबंधनेकाकारनहीनरहे॥
तोतिसु पदार्थसो वहि बांधनेके योगहै॥ अर्थयहि जो पुनः अबंधहोतहै॥ ज्ञानी
योको नमस्कार॥ श्रोता अर रक्ताको आनंदहो॥ सर्वको आनंदहो॥ इति क्षुरिका
उपनिषद अथर्वणवेद भाषा समाप्तम्॥ ४०॥ ॐ॥ अथ योगसिखा उपनिषद अ
थर्वणवेद॥ अर्थयहि जो उपनिषद सिखा है अथर्वणवेदकी॥ ॥ ॥ प्रजापति सबको प्रति
उवाच॥ योगसिखा उपनिषदको मै तुमे उपदेस करत हो॥ और वहि गंभीर मारगत
ता।ओं त्ववेत्ताओ अर ज्ञानीयोकाहै॥ जो मन न मोया उपनिषदके धारनेही मात्र संपूर्न स्थूल
शरीरको पत है॥ अतेव जब यहि मन सो जावे शकरे॥ अब सर्व मनन का मनन त्वम
न सो दूर होत है॥ अर मारग बांका यहि है॥ तथा॥ एकांत ठवर मो पद्मासन न सो स्थि

१९८

ते है॥ अरु जो पद्मासन न करसके सो स्थित न होइ॥ तौ जिस भांत सुखसों स्थित होइ सके ता ही भां
तके आसन सों स्थित होइ॥ अरु दृष्टि ऊपर नासिका के राखे॥ अरु अपानवायु गमपाद अरु
युग्मपाणि अन्योन्य मिश्रित करि कै रया आसन सों स्थित होइ॥ अरु मन की विर
त को सर्व ठवरसों रोके॥ अरु वाणी मन मों गंभीर नाम प्रणव को उचरै॥ अरु याश ब
द ब्रह्म प्रणव सो अशव ब्रह्म मोलीन करे जो कायहि नामु है॥ अरु वाही का ध्यान करे
यहि स्थूल शरीर वहिरंग है है॥ जो जामों एक स्थूल इस्यंभ है॥ अरु नव द्वार है॥ अरु ती
न इस्यंभ मलपु है॥ अरु पांच देवता है वामे॥ जो कोऊ बुद्धिवान है॥ या वरनन मया
साथ ज्ञान दृष्टि के या गृह को देखत है॥ तद्यथा॥ अरु यह ही शरीर मानुष का है॥ अस
रेमेर उरु जो मह्मपृष्ट के है॥ अरु जो के मरुस्तुव मना है॥ वही एम इस्थूल इस्यं
भ है॥ अरु युग्म द्वार श्रवण इंद्रे के॥ अरु युग्म द्वार चदां इंद्रे के॥ अरु युग्म द्वार घ्राण

इंद्रके॥ अरमुखअरगुदाअरलिंगइंद्रेयइनवछिद्रहीनवद्वारहे॥ अररजसततमयीह
तीनगुणहीलघुरुथ्यमहे॥ अरपांचप्राणइहीपांचदेवताहे॥ मनुष्यदेहकेजेमन
रूपकमलहे॥ मनुवामनकेएकछिद्रहे॥ जोवाछिद्रमेमनतत्पप्रवेशकरसूर्यकाअ
तिप्रकाशहे॥ अरवाकोसूर्यकामंडलकहीयतहे॥ वामंडलमेदीपकीलाटवतएकजो
तहे॥ जोऊर्धकोगमनरावतहे॥ ताकोध्यानकरेवहीजीवात्माहे॥ ज्ञातप्रकाशजा
नकरउपासनाकरे॥ मनुयाहीउपासनाकेयोगीश्वरशरीरत्यागकेकालमेमनु
मारगसुषमनाकेजोमुख्यमारगहे॥ ब्रह्मरंध्रकोभेदकरकेसूर्यकेमंडलद्वारप
रमलोककोजोब्रह्मलोकहेगमनकरतहे॥ अरवाठवरमेप्राप्तहोकरज्ञानकोजु
ममोषपदहे॥ प्राप्तहोतहे॥ अरजवज्ञानमेदृढभयेतववाहिजोप्रकोशोकाप्रका
शहेतामेलीनहोतहे॥ अरजोकोउसंसारकेपदार्थमेजोविनाशीहेवंधहे॥

अरयाउपासनातेवेमुषहैं॥ ताकोंचाहीयतहैजोप्रातमध्यान्हसायंकालयातीनहीका
लइसउपनिषदकापाठकरै॥ अवश्यवाहिहूउत्तमगतिकोप्राप्तहै॥ प्रजापतउवाच
मेंसाधयाहीउपाशनाकेजोवर्ननकरी॥ यागंभीरपदवीकोप्राप्तभयाहैं॥ अवरजो
कोउयामांतउपाशनाकरै॥ गंभीरपदजोहैकेवलआनंदतामेंप्राप्तहै॥ अरवाहि
संचितअरप्रभकर्मजोनाशकोनहीप्राप्तहोततातूकानाशहै॥ वासुतेदूरकरनेसे
सारेकेनशोकादिकदुःखहै॥ याउपाशनासेंउत्तमअवरपदार्थनहीकछु॥ ज्ञानीयों
कोनमस्कार॥ नमस्कार॥ इतियोगशिषाउपनिषदअथर्वणवेदसमाप्तम॥ २४॥
ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ अथहंसनादउपनिषदअथर्वणवेद॥ गौतमरिषीस्व
रनिकटसनतसुजातकेगमनकरकरप्रश्नकरतभया॥ गौतमोवाच॥ हेन
मस्कारकोयोगअरज्ञातासर्वअध्यात्मशास्त्रोंकेजानिहकामकर्मकावक्ताहै

अरु ज्ञाता मुक्ति शाप्त्रोके मार ग अध्यात्म ज्ञान को अरु मुक्ति को कवन सो है॥ सनतसुजा
तोवाच॥ जो अघम महादेव ने संसर्ने उपनिषदों वेद कीया सो जो केवली सिद्धांत वर्ननेन
करत है॥ निश्चे करि करि सायपारवती के उपदेस कीया था॥ अब मै वही तुझे उपदेस
करत है॥ अरु यहि भेद अति गुप्त करने को जोग है॥ अरु भिनय ज्ञासी सो अब वर को प्र
गट करतव्य नही॥ ज्ञानीयो का मंडारा यही है॥ यहि स्वास जो हंसस शवद है यामो॥ अ
र याही शवद के उचारने मो अगागमन नहू करत है॥ अरु गमन नहू करत है॥ जो कोउ यामे
द का ज्ञाता है॥ मद्र या संसार के गंभीर घन को प्राप्त है॥ अरु मद्र वा लोक के मुक्ति
पावत है॥ सो जो वर्ननन हंसस अरु परमहंस का करत है मै॥ अरु यहि वां को चाहि
ये उपदेस कीया॥ जो ब्रह्मचारी है॥ अर्थ यहि जो दमसम मो है॥ अरु गुरु की अज्ञा
मो है॥ अरु निश्चे गुरु परा द्रिडु राषता है॥ वर्नन अजपा गायत्री॥ यहि मंत्र जो है

१९५
सो है ॥ अर्थ यहि है जो वीह मे ही है ॥ सदा मुक्तजीव धारीयो के रूने है ॥ अर जो कोउ वो को नही जा
नत ॥ जैसे अग्निमसुल करी सर्व के है ॥ अरु भिंन यतन के प्राप्त नहीं होत ॥ अर जैसे तेलम
श्रीति लो के है ॥ अर भिंन यतन के प्रगट नहीं होत ॥ तैसे ही जो कोऊ अहनिंस यो को पाव
तहै ॥ अर या की न्याई वहि हूं अविनाशी होत है ॥ वरननउपासना ॥ चाहीयत है जो सा
धक अईश्वरन की मार्ग मूल धारे को जो प्रथम चक्र है वाघे ॥ अर अजपा न को जो सह
स्रधः को गमन करत है ॥ सूर्य को षंचकर दक्षिण उर सो त्रिवार द्वितीय जो स्वाधिष्ठा
न चक्र है ॥ ताके सर्व उर प्रदक्षिणा वतभ्रमा कर वापवनके त्रितीय जो नाभ चक्र है
ता मे प्राप्त करे ॥ अर वाठ वरसो हृदे चक्र के जो मध्य मनन के मन नही कोल पचतुर्थ च
क्र है ॥ ता मे प्राप्त करे ॥ पुनः वाठ वरसो कंठ चक्र मे जो पंचम है ॥ प्राप्त करे ॥ अर वाठ वरसो
पुनः भ्रूचक्र मे जो षष्टम है ॥ अर भावना वा की यहि है जो मध्य संवेदन ने है ॥ अर यों को

प्रापूकरकरतहांप्राणरोधनकरे॥ वहीअजपानपवनजवयाठवरत्रानहोतहै॥ तबवाहीको
नामप्राणकहीयतहै॥ अरुमनब्रह्मलयरंध्रकेभावनागंभीरनामप्रणवकीकरे॥ अरुजा
मेवाहिब्रह्मजोकायहिनामहै सोमैहीहैं॥ अनाहदशब्दकोजोअरूपहै अरुस्फुटवत
सुद्धहै॥ अरुअविनाशीहै॥ अरुमनब्रह्मसर्वशरीरोकेवर्तनेहै॥ वांकोसुद्धअरुनिराकारअरुअ
रुअविनाशीजानकरउपासनावालीमनब्रह्ममनलयपकमनलयकेकरे॥ अरुवाहिअनाहदश
ब्दपरमात्माहै॥ अरुब्रह्मलैहै॥ अरुभावनावालीयाहिजोमनब्रह्मसर्वकेवर्तनेहै॥ अरुयाकोजा
नेजोयहीउपासनाअजपाकीहै॥ जोस्वतेहीअजपतननएकीवंशतसहस्रअरुषट्सत
वारुअहर्निशमोसर्वप्राणीयोकेएकएकस्वासमोउचारहोतहै॥ सोयहज्ञानयाउपास
नाकेवाआत्माकोजोकेवलप्रकाशहै॥ अरुअजअरुअलिप्तहै॥ अरुप्रकाशवांकाअदि
तीया॥ अरुवाहिप्रकाशहैजाकेप्रकाशसोरविससप्रकाशितहै॥ अरुमनब्रह्मसर्वकेवहीप्रकाशक
है॥ अरुअतिसूक्ष्महै॥ जानतहैजोवाहिमेहीहैं॥ जबलगयाअर्थकोनयासमझा॥ त

५ प्रमाणों के
प्रत्येक
इक्कीस हजार
छै सौ श्वास
रात दिन में
आते हैं।
२१६०० ॥ व दिन में
[illegible]
श्वास आते
हैं।

वलगहेंसु या॥ अर्थयहि जो जीवात्मा या॥ अरु जब याभेद को समुझात ब परमहंस भया॥ अ
र्थयहि जो परमात्मा भया॥ अरु वहि जो जीवात्मा सो परमात्मा भया॥ तां के प्रकाश को कोटि
कोटि सूर्य का प्रकाश नही प्राप्त होता॥ जांने मन का अपुने को अपुनी आज्ञा मे कीया है॥
तिहि सा यगंभीर प्रकाश के प्राप्त होता है॥ अरु जो मन का अपुने को अपुनी आज्ञा मो नही
कीया॥ मन वा कामइ अष्ट दलो के जो मन न रूप कमल के वर तुला कार है भ्रमत है॥ अरु व
हि अष्टदल कमल मन नही का स्थूल रूप है॥ अरु जब वहि मन पूर्व दिशा के दल पर स्थित
होता है॥ तब वां को चाह पुन की होता है॥ अरु जब अग्नि को ए के दल पर प्राप्त होता है तब
वां को आलस अरु नींद्रा प्रगट होता है॥ अरु जब दक्षिण डोर के दल पर गमन करता है
तब वां को क्रोध अरु कठोरता मन की प्राप्त होता है॥ जब नैरित को एके दल पर स्थित
होता है॥ तब वां को पाप जो है अधर्म ता की इछा उपजता है॥ अरु जब पश्चम दिशा के

दलपर प्राप्त होते है ॥ तब वाको भ्रमंनता प्रगट होते है ॥ और षेलपर इछा राषते है ॥ और ज
ब वायव कोण के दलपर गमन करते है ॥ तब वाको मारग गमन करने की और स्फुरन जो
है चपलताता की इछा उपजते है ॥ और जब उत्तर दिशा के दलपर प्राप्त होते है तब वाको +
चाहइ स्त्री संग की और मैथुन की उतपत होते है ॥ और जब ईशान कोण के दलपर स्थि
त होते है ॥ तब वाकी कामना दान मे प्रवर्तते है ॥ और जब मध्य पुष्प के वामन रूप कम
ल के प्रवेश करते है ॥ तब वाकी कामना त्याग पर और एकांत स्थित होने मे प्रवर्तत
है ॥ और जब वाहय वा छिद्र के जो मध्य छिद्र के जो मध्य पुशप के वरतलाकार है ॥ तामे
मन भ्रमते है ॥ तब जाग्रत अवस्था मे प्राप्त होते है ॥ और जब वा वरतुलाकार के अं
तर अग्र गमन करते है ॥ तब स्वप्न अवस्था मे प्राप्त होते है ॥ और जब वा छिद्र के जो घां
ई के दाने समान है ॥ तामे प्रवेश करते है ॥ तब सुषुपति अवस्था मे प्राप्त होते है ॥ और

२०१

जवमनुवाकमनलकोजोस्थूलरूपहैवांकात्यागकरतहै॥तवमनतुरीयाकेमगनहोतहै
अर्थयहिवहिजीवात्माजोमनकोसूक्ष्मरूपहै॥जैसोजीवात्मातुरीयामोमग्नअपुनेआ
त्मस्वरूपकेमगनहोतहै॥जैसेमनकोसूक्ष्मस्वरूपजीवात्माहै॥तैसेहीजीवात्माको
सूक्ष्मस्वरूपपरमात्माहै॥अरुजवजीवात्मामग्नअनाहदशवदकेलीनहोतहै॥अरु
जीवभावनाआपसेदूरकरतहै॥तवपारब्रह्मजोजीवकोजीवअरुसर्वकोआत्माहैसोहो
तहै॥अरुयाहीकोजीवनमुक्तकहतहै॥अरुउपाशनाअजपाकीसोयाअवस्थामो
प्राप्तहोतहै॥अरुजवयहिअवस्थाप्राप्तभई॥तववाउपासनाहूपूर्नभई॥अरुयहि
सर्वजोवर्ननभयासोमननसोसमझजातहै॥तातेमननमोचाहीयेसमझ॥जोमन
मोअनाहदयामांतउपजतहैश्रवणकीयाचाहीयतहै॥अरुजीवात्मासायमनकेजु
शरीरहैवांकाश्रवनकरतहै॥अरुअनाहदइसप्रकारहै॥इतिप्रथमब्राह्मणसमाप्त

अथ वर्ननं दस प्रकार अनाहद्या॥ शवद वा नाद ता जो प्रथम प्रगट होत है॥ चिडे के शवद
वत है॥ जो चनोचरत है॥ नाद द्वितीय हि जो चन्चन पुनः पुनः होत है॥ त्रितीय नाद यहि
जो घंटे के शवद वत होत है॥ चतुर्थ नाद यहि जो शंष के शवद वत होत है॥ पंचम नाद यहि जो
वीना के शवद वत होत है॥ षष्टम नाद यहि जो नाचवे के काल मे सायप षावज के जो ता
ल देत है॥ तासो प्रगट होत है॥ सप्तम नाद यहि जो वांसुरी के शवद वत है॥ अष्टम नाद
पषावज के शवद वत है॥ नवम नाद यहि जो लघु नफीरी के शवद वत है॥ दसमनाद
यहि मेघ की गर्जे मो जो दादुर शवद अति गंभीर ता अरु शीघ्र तासो होत है॥ यहि दस
शवद जो वर्ननं भये अति अभ्यास काल मो प्रगट होत है॥ सो वहि त्याग को योग्य है॥
चाहीयत है जो नव शवदो मो वंधन है॥ अरु दसम शवद जो मेघ की गर्जे वत है॥ तामो
सदा अभ्यास करे॥ अरु जो कोताहन के तेते जो अनाहद शवद इ ही है॥ अथ ल

दाणवर्नने॥ लक्षण प्रथम नाद यहि जवा शबद के श्रवण काल मो केश शरीर के ठा
डे होत है॥ लक्षण द्वितीय नाद श्रवण का यहि जो वा नाद के श्रवण काल मो शरीर के
अंगो मो आनंद उत्पत्ति होत है॥ लक्षण त्रितीय नाद श्रवण का यहि जो वा नाद के श्र
वण काल मो मन अरु अंगो शरीर क्रिया मो प्रेम प्रगट होत है॥ लक्षण चतुर्थ नाद
श्रवण का॥ यहि जो सिर या नाद के उपासक का जैसे अधिक मद पानी का भ्रमत है॥
लक्षण पंचम नाद का॥ यहि या काल मो यहि नाद श्रवण होत है ब्रह्मरंध्र या उपा
सक के सो आनंद तब श्रवत है॥ लक्षण षष्ठम नाद का॥ यहि जो काल मो यहि नाद श्र
वण होत है॥ तब वहि अमृत कंठ मो आगमन करत है॥ अरु वहि वाको पान क
रत है॥ अरु लक्षण सप्तम नाद का यहि॥ या काल मो यहि नाद श्रवण होत है॥ तब
वहि उपासक धनी शक्ता होत है॥ अर्थ यहि जो मानु बहु के मन के भेद को पाव

तहै॥अरुवाकेअंतःकरनकेगुह्यभेदहुकोपावतहै॥अरुअतिदूरकेशवदकोश्रवण
करतहै॥अरुअतिदूरकेपदार्थोंकोदेखतहै॥अरुलक्षणनादअष्टमकायीहै॥याका
फलमोयीहिनादश्रवणकरतहै॥वीहशवदमरुलनादकाजोअभ्यंतरसंपूर्णमानुषो
केस्वतैंप्रगटहोतहै॥अरुमानुषवांकोश्रवणनहीकरता॥अरुनहीसमझता॥व
हिवानादकेशवदहूंकोश्रवणकरतहै॥अरुसमझतहै॥अरुलक्षणनवमनाद
कायीहै॥यांकोयीहिनादश्रवणहोतहै॥वीहिउपासकयासूक्ष्मताकोप्राप्तहोतहै
याअवरमोगमनकीयाचाहेवाअवरमोगमनकरे॥अरुजिससौंशरीरअपनागु
प्तकीयाचाहेतासोगुप्तकरे॥अरुवीहसर्वकोदेखतहै॥जेसेदेवतासर्वकोदेखतहै
अरुकालोकोकोउनहीसमझेदेखा॥अरुलक्षणदसमनादयीहै॥जांकोअनाहदकहतहै
सोयीहहै॥याकाफलमोयीहिअनाहदश्रवणहोतहै॥सोतावाकोजेसेअनाहदीन

२०३ रगुण ब्रह्म है तैसे यहि हूं ब्रह्म होत है ।। याकाल मो या अनाहद की उपासना नो मन लीन होत है ।।
तब वहि उपाशक अनाहद सो अभेद ताको प्राप्त होत है । और संकल्प विकल्प अर्थ यहि जो
शुभ अशुभ आचार ।। पाप और पुन्य अर्थ यहि जु कर्म शुभ अशुभ संपूर्न दग्ध होत है ।।
और नाश होत है । और वाकाम रहूं नहीं रहत । अर्थ यहि जु वहि उपासक सदाशिव है
औरी निजानंद वाको प्राप्त होत है । और केवल चेतन होत है । और केवल प्रकाश
होकर सर्वठवर पूर्न होत है । और केवल शुद्ध और केवल बुद्ध और केवल निसंग औ
र अलिप्त और स्वरूप केवल होत है । सर्व को आनंद दायक होत है । और आप आनंद
ही होत है । और नाम वा उपाशक का केवल ब्रह्म ही होत है । और नाम यहि सर्व सो परा
है । और सर्व नाम और गुण का अस्त मा है ।। नमस्कार ज्ञानी यो को ।। जो ता और वक्ता को ज्ञान
की प्राप्त है ।। सर्व को आनंद दे है ।। इति उपनिषद हंस नाद अथर्वण वेद भाषा समाप्तम् ।। ३४

॥अथ उपनिषद् अमृतनादः॥ प्रथमशास्त्रोंकापुनःपुनःअध्येयनकरकेअक्षरतत्वकोकाढिदेसो
राषकरा॥अक्षरब्रह्मजोसर्वकाआत्माहैताकोययार्थसमझकरजैसेलकरीकोसाथअग्निके
प्रकाशकरकै॥वासतेनाशकरनेअंधकारकेमद्धकरकेअंगीकारकरतहै॥अक्षरज
वअपुनेप्राजनकोप्राप्तहोतहै॥तववालकरीसोवकरसोडारदेतहै॥तैसेहीयाकाल
कोअपुनेगंभीरआत्मस्वरूपकासाक्षात्कारहोतहै॥वासर्वशास्त्रोंकाजोअध्येयन
कीयाथा॥त्यागकरतहै॥अक्षरमारगप्राप्तहोनेवास्तेअलस्वरूपमोयहिहै॥तद्यथा॥वा
सतेप्राप्तब्रह्मलोककेजोआत्माइस्थानहैंतेंरूपरथपरआरूढहो॥अर्थयहिहैंतोंकी
उपासनाकरै॥ब्रह्मलोकमोप्राप्तकीचाहनाहै॥अरविष्नुकोजोसर्वलोकोपरभी
तहैंजोकोताकोरथवाहीरथीजोहैंप्रेरककारथकासोजानकरअपुनाआपजा
नै॥अक्षररुद्रजोहैसेघास्करनकाज्ञानकाताकोअपुनाआपजानकरसर्वदं

डिकामरूलसोसंघारकेरे॥ अर्थयहिजु इनकोअपुनेवशमोकेरे॥ अतेवजांके समद
मनहीतांकेविषैरूपशब्दोकोयहिसंघारकरतहै॥ अरजउंकारूपरथपरआरूढहो
करअपुनाब्रह्मइस्थानजोसर्वकामनाहेतामोप्राप्तहो॥ वाकालमोयारथकोत्या
गकेरे॥ अर्थयहिजोउंकारउपासनाहूनरोषे॥ केवलचेतन्नआत्माहोकरआका
रउकारमकारयहिजोतीनअक्षरप्रणवकेअरस्थूलसूक्ष्मकारनयहिजोतीन
शरीरइनसर्वकोनिश्चैसोत्यागकरवापदमोजहांअक्षरअरशब्दनहींसमावत
अरकेवलहैप्राप्तहोतहै॥ अर्थयहिजुहैप्रणवकातांकेज्ञानहूकोवासूक्ष्मस्वरूपको
जोकेवलआपुनाआपहै॥ प्राप्तहूजीयतहै॥ अरुअवरयाषट्पदार्थहूसोजामा
रगयोगकाहैप्राप्तसोस्वरूपकीहोतहै॥ तत्पथा॥ प्रथमप्रीतिआहार॥ अर्थयहि
जोसमदमा॥ द्वितीयध्यान॥ त्रितीयप्राणायाम॥ चतुर्थधारना॥ पंचमत्याग॥ षट्

षट् पदार्थ ३
१ प्रत्याहार
२ ध्यान
३ प्राणायाम
४ धारणा
५ त्याग
६ समाधि

प्राणायामसे इंद्रियोकी मैल जलती है

मसमाधिमें जैसें कंचन अरु रूपा जो मध्य पाषाणके सो याअग्नि तपतकरिके निश्चितहैं॥ वांकों षानसे निकासकरसोआय अग्निकैं वांकी मैलकों दग्धकरशुद्धकैंलकेनाहींकरहोतहैं॥ तैसें हीप्राणायामसेंमैलइंद्रकीदग्धहोतहैं॥ तातेप्राणायामसोंमैलइंद्रकीदग्धकरे अरधारनासोजेमनकोसायएकमह्नपदार्थकेबचतकरनायाकोधारनाकहतहैं॥ पापोंकोदग्धकरकरस्सदामध्यवीचारआत्माप्रकाशरूपकेस्थितहै॥ प्राणायाम तीनप्रकारकेहैं॥ एकपूरकद्वितीयकुंभकतृतीयरेचक॥ अरआगरएकरकार्य्यहिहै॥ जैसें कमलकेअगरकोमध्यजलकेरायकरवांकीडंडीसोजलकोसायपवनकेषेंचतहै तैसेंहीबाह्यकीपवनकोसायप्राणकेजोमध्यलेताकाशकेहैषेंचकरअभ्यंतर अपुनेपूरनकरे॥ इतिपूरक॥ अरजबलगकुंभककरेतबलगनध्यावाप्राणकेप्रणव काउच्चारकरतरहे॥ अरवाकालमेंऐसेंनहोजोपवनबाह्यकोगमनकरे॥ अर

पूरक मे वायु को अंदर खैंचे - कुंभक से ठहराये रेचक से धीरे २ निकाले ओंका उच्चारण मनमें करे मुंह से नहीं -

२०५ ग्भ्यंतरहू मो न षैंचे ॥ अरु कोऊ अंग शरीर का न स्फुरे ॥ अरु वा पवन को जो साय प्राण
के षैंच कर मस्तक पुनै धारा है ॥ त हाही राषे ॥ इति कुंभक ॥ वा पवन मस्ताकाश की जो
मस्तक पुनै धार राषी ॥ ताको पुनः शनै शनै वाहर य मस्त ताकाश के लीन करे ॥ इति
रेचक ॥ अरु या काल मों अंग धवत देषे ॥ अरु वधरव तत्त्व वर्णा करे ॥ अरु लकरी की न्याई
जडत को प्राप्त होय ॥ तो यों चाहीये जान ॥ जो यांको ध्यान का स्वरूप प्राप्त भया है ॥ अरु
याही कों दृढ ध्यान कहत है ॥ इति ध्यान ॥ अरु जो कोऊ निश्चै अरु ज्ञान निश्चै की प्राप्त
को मनन का स्वरूप जान करे ॥ अरु मन को संपर न चाहें सो षैंच कर अरु रूसा सात्याग सब
स्थानो मो प्राप्त कर कर मस्तकाकाश को स्थित करे ॥ इही स्थित कर नाम मन का मस्तका
काश में दृढ करे धारना नाम न कहीयत है ॥ इति विवेक ॥ अरु रूस देवतन्या त्याके स्थाय युक्ति
कों निश्चै कर कर मस्त शरीर कुंभार के अरु कीट के सर्व काल मो समान देषणा याही

कोसमाधिनिर्विकल्पकहीयतहैं॥ इतिसमाधि॥ अरमारगयज्ञासीकामधउपासनाके
यहिहै॥ जोकोएकांतसेवनकरहतहै॥ तथया॥ जोउवरमोसुखकीप्राप्तहे॥ अररवि श्लाकीन
नाशिविद्विपत्ताकोनप्राप्तहे॥ अरमयअरदया॥ अरधातुका॥ अररैनानुइत्यादिकपदार्थों ि
कीवाउवरमोउतपतिनहे॥ अरएपवीसमदेषकेरवाउवरात्रिएणकादिककाज्ञा
सननिस्थितकरे॥ अरज्ञातिधीरजमनके सोवाज्ञासनपरस्थितहे॥ अरवाउ
वरमोअपुनेवरतुलाकारएकमांतकरे॥ अरजानेजोज्ञाताकासर्वदिशाकीउोर
सोरवकमेराहै॥ अरउपासनाकेवलप्रएवसोकरे॥ अरपद्मासनकसघवकाव
रकाहूसरवासनस्थितहे॥ अरमुखकापनाउत्तरायणदिशाकीउोरराखे॥ अ
रसाणएकअंगुएकेदक्षिणनेत्रकीनासकाकेछिद्रकोवांधे॥ अरवामनास
काकेछिद्रसोपवनकोषेंचकरसाधकनासिकाअरअनिएकाकेप्राणकोराखे॥

वैश्वानर

प्राणरोकना

२०६ अरु प्रणव को केवल विस्वानर अग्नि माजो मन मनन करै है जानि कर जव लग कुंभक
करै।। तव लग प्रणव के अभ्यास का त्याग न करै।। अरु उपासना प्रणव की सो जो प्र
काश रूप मंत्र है।। संपूर्न मलीन ता अपुनी उका नास कर कर।। सो यव ब्रह्म के जो
केवल तेज है।। अरु मन मनन करै है या भांत उपासना चाहीये करी।। जो वहि प्रणव
रूप मै ही है।। अरु उपाशना अपुनी आप ही करत है।। अरु जव लग पवन को
अभ्यंतर अपुने धारत मया है।। तव लग नाभस्थिन मों असी वार मन वा
पवन के प्रणव को उचरै।। अरु जव पूर्न अभ्यास होत वजे ता पवन को राषस
के तै ता प्रणव को मन वां के उचारै।। अरु रेचक जव करै तव वा पवन को नाम सो षैं
चकर दक्षिण नासका के मारग सो रेचक करै।। अरु या अभ्यास का उपासक जो
बुद्धिमान है। तो वां को चाहीयत है जो दृष्टि अपुनी उर्ध्व अरु अध अरु दक्षिण

मनमे तेजरूप ब्रह्मको ठहरावे।

ररवानन करे॥ अरु शरीर के काहू अंग को स्फुरनता कों न प्राप्त करे॥ अरु अचलता सों
स्थित होए॥ अरु या पंच पदार्थ में चाहीयत है॥ जो सदा अभ्यास करे॥ तथा या॥ प्रथ
म जो या म मर्यादा पूरक की जो मिरजादा सो अधिक अरु न्यून न होए॥ द्वितीय मिरजादा कुं
भक की त्रितीय मिरजादा रेचक की॥ चतुर्थ मन को एक पदार्थ में द्रिढ राखना॥
पंचम जीवात्मा अरु परमात्मा की एकता का ज्ञान राखना॥ अरु आदि आरंभ काल
प्राणायाम के द्वादस नाम परयंत कुंभक करे॥ अरु मध्य कुंभक के ध्यान प्रणव का
ही करे॥ ये यथार्थता में वहि प्रणव अक्षर अरु शवद है सो ब्रह्म है॥ अरु न्यूनता
न ही राखत॥ अरु साय प्रकाश वाही के वाको सकीयत है देख॥ जो केवल अज्ञ पुन अज्ञा
प है॥ अरु स्फुरनता देनहारा प्राणों का वही है॥ अरु वासु ते प्राप्त वा की के तीन द्वा
र है॥ चाहीयत है जो साध अभ्यास प्राण के सतरूप आत्मा को मारग वा द्वारों के सो प्रा

प्राणायाम से
ओं को कहता र
३ धारों से आत्मा
को प्राप्त करे
३ द्वार ये हैं
१ मन का छिद्र
२ तालुका
३ मेरुदंड की नली

२०३ ब्रह्मैं॥ प्रथम द्वार यहि है॥ छिद्र जो मध्य मनके हैं॥ अरु इस्थान सुषमनाका है॥ अरु द्वि
तीय द्वार यहि है॥ जो मध्य ब्रह्मरंध्र के है॥ जाकौ तालूकी छिद्र कहत है॥ अरु यौह द्वार मा
र्गमुक्तिका है॥ अरु त्रितीय द्वार नलवत है जाकौ मेरुदंड कहत है॥ अरु यहिहू मा
मुमुक्षु रग मुक्तिका है॥ अरु यहि शरीर मुमोषौ कौ वास तेसा जानकार के सेतुवत है॥
अरु मनयोगीश्वरोंका शरीर के त्याग काल मे वा तीन द्वार सो एकका हू द्वार मो प्र
वेश अभ्यास अनुकूल प्रवेश करत है॥ अरु यज्ञासी कौ चाहीयत है॥ या पदार्थौं को
जो वरनीयत हैं निन त्यागकरे॥ तद्यथा॥ एकअर्थ द्वितीय क्रोधु त्रितीय आलस
चतुर्थ अधिकी निद्रा॥ अथवा अधिक जागृत पंचम अधिक आहार॥ अथवा
त्याग आहार॥ जोकौ उपाय अभ्यासकौ जो वर्नन कीया तीन मास पर्यंत तीन त
करे॥ वाकौ वहि अवस्था प्राप्त है॥ जो आ अवस्था सो चतुर मास मो देवतोंका दर

सन्नवाकोप्राप्तहे॥अरुअरमद्रमासपंचमकेआपद्रेवस्रावस्यामोप्राप्तहे॥अरुअरमद्र
मासषष्टमकेस्वेतमुकतिकोप्राप्तहे॥करकेवलकासाल्याहे॥मद्रयावचनकेकछुसं
देहनहीं॥मद्रयज्ञासकेउपासनासाथप्रणवकेयामातहे॥तथथा॥जोसाथपनं
पंचमात्राप्रणवकेउपासनाकरे॥पृथिवीकेमारगकोप्राप्तहे॥अर्थयाहिजेसेपृथि
वीशवदस्पर्शरूपरसगंधयाहिपांचगुणराषतहें॥तैसेयाहूकेयाहिपांचगुणव
शहोरहा॥अरुतैवजोप्रणवहूपांचमात्राराषतहे॥अकारउकारमकारविंदनाद
जोप्रथममात्रारहितसाथयाहिचतुरमात्राप्रणवले जोउकारमकारविंदुनाद
हेउपासनाकरेतोमारगजलकेकोप्राप्तहे॥अर्थयाहिभिंनगंधकेजोकेवलगु
णपृथिवीकाहे॥अरुवस्चतुरगुणवशहोरहेवो॥अरुजोद्वयमात्रारहितसाथया
त्रिमात्राप्रणवकेजोमकारविंदुनादहे॥उपासनाकरेतोमारगअग्निकेकोप्रा

प्तहे॥ अर्थयहि जो गंध अरु रस सो रहत तीन गुण वश होवो के॥ अरु जो त्रिमात्रा रह
त साध्यहि द्वयमात्राप्रणव के जो बिंदु नाद है उपासना को प्राप्त है॥ अर्थयहि
जो गुण स्पर्श अरु शब्द वश होवों के॥ अरु जो साध्य याएकमात्राप्रणव के जो
नाद है उपासना करे॥ तौ मार गआकाश के को प्राप्त हो॥ अरु आकाश एकगु
ण शब्द ही राख है॥ अर्थयहि जो नाद वश होवो के॥ अरु मध्यापद के जो मात्रा
न ही समावत॥ अक्रिही रहे॥ अरु जो वां का वीचार करे तौ यहि वीचार ही वां
का मध्य मन के संध्या है॥ आप को जो आप जानना॥ अरु आपुणी आप ही उपा
सना करनी यहि संध्या है॥ वर्नन यां का जो जीवात्मा अरु प्राण एक है॥ मूल
चक्र सो आदि कंठ चक्र परयंत जो मध्य या के त्रिस अंगुली परमान विस्ता
र है॥ अरु तामो प्राण विचरत है॥ मध्य वा प्राण के जीवात्मा विराजत है॥ याही

नाभिचक्र से
कंठ चक्र तक
३० अंगुल प्रमा-
ण है इसी मे प्रा
ण घूमते हैं-
प्राण को जीवात्मा
शक्ति चलाने की
देता है

जीवात्माकोप्राणकहतहैं॥अरस्वासहैसोप्राणयासोकहतहैं॥जोजीवात्मावोकोस्फुर
नतादेतहैं॥एकोविंशतसहस्रअरषट्सतवारजिरजादास्फुरनताप्राणोंकोहै॥
जाकेप्रश्वासकाआगमनकहतहैं॥अरएतीहीस्फुरनताअपानकीहै॥अरएतीही
स्फुरनताव्यानकीहै॥अरएतीहीस्फुरनतासमानकीहै॥अरएतीहीस्फुरनता
उदानकीहै॥याहीसंपूर्नपांचहीप्राणस्फुरनताएकलक्षअरषटसहस्रहोतहै॥
अतेवजोअपानादिकचतुरपवनअवरनाउकोप्रवेशकरतहैं॥तासोंपवनों
कीस्फुरनताहोतहै॥अरयहिपांचहीपवनसंपूर्नअहनिशमनुष्यशरीरकेफु
रनकरतहै॥प्राणपवनजोहैमनुष्यहिदेकेस्थितहैवोकी॥अरअपानपवनम
द्मलद्वारकेवसतहै॥अरव्यानपवनजोमनुष्यशरीरकेहै॥सोसंपूर्नशरीरमो
व्यापकहै॥अरसमाननमनुष्यनाभमेवसतहै॥अरउदानमनुष्यकंठकेवसतहै॥वर्न

नरूपथापांचपवन॥प्राणपवनसोयरूपपंनेके॥अरअपानपवनजोमध्यशरीरके
है॥सोसोयरूपचीजवहुटीके॥अरसमानजोमध्यअपानकेहै॥सोसोयरूपस्फ
टिकके॥अथवाछोकेदुग्धके॥उदानजोमध्यसमानकेहै॥सोसोयरूपसंदलके
अरव्यानजोमध्यशरीरकेहै॥सोसोयरूपदीपकीलाटके॥जोकेप्राणशरीरत्याग
केकालमोब्रह्मरंध्रकेमारगसोंसफोरकरनिकसे॥जोज्ञापृथिवीपरशरीरकात्या
गकरे॥ब्रह्मलोककोजमनुकरतहै॥वाकोउत्तमठवरजोहैतीर्थादिकतापैश
रीरकात्यागकरनाअवश्यनहीं॥पुनः वहिगरभमेंअवेशनहींकरता॥नम
स्कारज्ञानीयोंके॥श्रोताअरवकताकोज्ञानकीप्राप्तहो॥अरसर्वकोआनंदहो॥
इतिश्रीअमृतनादउपनिषदअथर्वणवेदभाषासमाप्तम्॥७०॥ॐ॥ॐ॥ॐ॥ॐ॥
अथउपनिषदपरमहंसअथर्वणवेद॥नारदरिषिनेब्रह्मचर्यकाअंगीकार

की

करत भए ॥ अरु यज्ञासी निराकार ज्ञात्मा होइ करि निकट ब्रह्मा के गमन कीया ॥ अरु ब्रह्मा सो
प्रश्न करत भया ॥ नारदोवाच ॥ मो नमस्कार कौ योग वहि है योगी चाहत परमा हो ने कौ
राखते है ॥ अर्थ यहि है जो चाहत है हंस जो है जीवात्मा सो परमहंस परमात्मा है ॥ नु मुम
ज्ञा करि जो वहि ज्ञवन से मारग सो ॥ अपुने मनोर्थ को प्राप्त है ॥ अरु रिष समान ज्ञाउ सो
पुनी को वीताव ॥ ताके उत्तर मो ब्रह्मा ने जो नमस्कार को योग है ॥ सो यथा नारद के कहा
ब्रह्मोवाच ॥ हे नारद या मारग को जो तू पूछत है ॥ सो मनुष्या संसार के अति कठिन है ॥ अरु
अति दुर्लभ है ॥ या मारग निराकार के को कोटि मो को उ एक प्राप्त होत है ॥ जो को अया
मारग मो गमन करत है ॥ सो सदा प्रसन्न है ॥ अरु शुद्ध ही है ॥ अरु वेद हू याही गंभी
र पुरुष की उस्तुति करत है ॥ अरु वेद के ज्ञाता या पुरुष को महापुरुष कहत है ॥ अरु वा
का केवल मैं है ॥ अरु मैं केवल मनुवां का है ॥ जो को अयज्ञासी या मारग का है ॥ ता

कोचाहीयतहै॥जोब्रह्मअभ्यासछेदनकरे॥वेदका॥अरुसंपूर्णीवांकेअर्थोकोरहस्यजान
करवेदअनुकूलकर्मकरे॥अरुकछुककालगृहस्थआश्रमकाअंगीकारकरकरतां
केउपरांतसंपूर्णचाहेकात्यागकरे॥अरुपरलोकके फलोकोछर्दसमानवूझिअरु
रवतअरुइस्त्रीअरुरामकअरुसंगकावंधीअरुमानादिककात्यागकरे॥अरुसि
खायज्ञोपवीतअरुवेदअध्येनहूंकोभिनउपनिषदहूंसोत्यागकरकेरनिसंदे
हतासोविराजे॥अरुसंपूर्णब्रह्मउहीकात्यागकरे॥अरुजोकछुसाधनअपुनेराषे
सोयहिहै॥तपध्यान॥एककोपीनअरुदंतीदंडवासतेरनाअपुनीके॥अरुवादंडसोयहिको
हूकाभयदायकनहै॥अरुजोमनुष्यनकेसीतकालकोनसहारसके॥तोचाहीयतहैपु
रातनवस्त्रोंकेटुकरियोकोजोमानुषडारदेतहै॥वावस्त्रोंकेटुकरियोंकोगरहणकरअ
रएककठवरकरकेरजोदरीसीकरवासतेसीतनिवर्तिकेराषे॥अरुएकवासनलवरीका

अयाचितको अथवा तूंवेको वासते जलपानके जो अभ्यास है ताको॥ अरु जे ते अंनसो
रसदने सा वलु उतपत है॥ अरु तेव जो शरीर पातन है॥ वासते ते ते ही अहार के मिदा करु
करे॥ अरु रक्षा पान द्रव्य को के न अग्रे एकर करु याभाव नासो मदानु करे॥ जो पुनर्वो कादाता
को प्राप्त है॥ अरु यहि मारगु संन्यास का है मारगु उत्तम परमहंस का नहीं॥ पुनः नारदउ
वाच॥ हे नमस्कार को योग मारग उत्तम मनवनसा है॥ ब्रह्मोवाच॥ मारगु उत्तम यहि है॥
वस्त्र सीत निवृत्त को अरु कूपीन को वासनु जलपान को अरु दंड करमो गावन को॥ अ
रु उपनिषदो को उच्चारना या संग्रह न को त्याग करे॥ अरु जो को ऊ या का त्याग करतु है
अरु या परमहंस संन्यास को अंगीकार करतु है॥ वो कोन सीत है न उष्ण है॥ न हरख
है न शोक है॥ अरु न उस्तुति सो प्रसंन होत है॥ अरु न निंदा सो अप्रसंन होता है॥ ब्रह्मज्ञ
वस्था यहि जो शरीर पर है॥ तथ्यथा॥ प्रथम जन्म द्वितीय जीवितेर हन्ना त्रितीय पलना॥

२११ चतुरथ्रण॥ अब अवस्था का अर्थ यहि जो लरकाई सो युवा अवस्था अरु वृद्धा सो जरा मो प्राप्त
होना॥ पंचमस्थल अरु तृषा॥ अरु षष्ठम ऊर्मि तु जैसे या ब[illegible] अवस्था मो आत्मा मैं न
अरु ग्लानि प्र है॥ तैसे ही वाहि परमहंस संन्यासी हैं या ब[illegible] अवस्था सो तामैं न अरु ग्लानि प्र
है॥ अर्थ यहि जो शरीर की स्नन ता सो अरु प्रफुल्लिता सो वां के प्रयोजन नहीं कछु॥ अरु
न वहि काहू की स्तुति करते है॥ अरु ना निंदा करते है॥ अरु वां को मित्र स अरु अभिमान अरु
र शत्रु भाव नहीं॥ अरु ईश्वर की स्तुति अरु निंदा सो भेद को नहीं प्राप्त होता॥ अरु वहि आ
प को ऐसे नहीं कहलावता॥ अरु जो गुण आप मो न राखते है वा गुन को आप मो नहीं प्रग
ट करता॥ अरु कछु चाह नहीं राखता॥ अरु सो प्राणी के स्नेह अरु री के स्व पदार्थ के वैर भाव नहीं रा
खता॥ अरु क्षमा सम अरु तितिक्षा॥ अरु क्रोध अरु गर्व अरु ज्ञापा नहीं राखता॥ अरु रीके स्वपदार्थ
सो हर्ष संयुक्त नहीं होता॥ अरु काहू की स्तुति सो अप्रसन्न नहीं होता॥ अर्थ यहि जो यासे

सर्वपदार्थोसेंअस्पर्शरहतहै॥अरुशरीरकोमिरतकअरुनिर्षिरजानतहै॥जोयाश
रीरकोसाष्यज्ञानअग्निकेदग्धकीयाहैमैनें॥यासोंहैजोदग्धकरनासंन्यासीका
पाछेमृतुकेनहीकह्या॥अरुमध्यज्ञानकेहूवाकोसंदेहनहीउपजत॥अरुतेव
जोभिंनआत्मासोंअवरकाहूपदार्थकोनहीजानत॥अरुमोहसाष्यशरीरअरुपुत्रके
नहीराषत॥अरुयैयाहैजोशरीरसोवाकोअहंभावनहीभिंनजानतहै॥अरुसदाके
वलचेतनआत्मपदमेंरहतहै॥अरुवहिआत्माजोसभकासाक्षइस्थानहै॥अरुकेव
लहै॥अरुद्वैतनहीराषत॥अरुकेवलआनंदहै॥अरुचैतंनआत्मासोपूर्नहै॥ताकोजान
तहै॥जोवहिआत्मामेंहैं॥अरुगूढगंभीरमेरावहीआत्मागंभीरहै॥अरुप्रणवजो
नामगंभीरवाकोहैसोनाममेराहीहै॥अरुयहीप्रणवशिषावाकीहै॥अरुयहीप्र
णवयज्ञोपवीतवाकाहै॥अरुजीवात्मापरमात्मामेजोअभेदहैरहतएकभावहैवही

२१२ तपस्या है वांकी॥ अरु संसर्ग ते पदार्थों का त्याग करि मन आत्मा में दृढ ही के विराजत है॥ यही है व
रतनवागं भी रसंन्यासी का॥ अरु दंड जो वासना ते रहा के राषता था॥ सो वहि दंड ज्ञान ही
का करि मो राषत है॥ अरु याही को एकदंडी वेद मो कहा है॥ या को एकदंडी नहीं कहत जो दं
ड मो कर मो धार करि एकदंडी कहलावत है॥ वोहि जो केवल दंड ही करि मो धार करि सर्व ठ
वर भ्रमत हैं॥ अरु समकाहू की भिक्षा अंगीकार करत है॥ अरु जो अधुप्राप्त हो तां वो का भ
क्षण करत है॥ निश्चै है जो वांको ज्ञान की प्राप्ति नहीं भई॥ वोहि अतिनिषिद्ध सो जो है नि
षिद्धतर नीच लोक अरु केवल अंधकार ही है॥ जा मो ता मो गमन करत है॥ याते जो वां
को आहार उत्तम अरु नीच की नहीं॥ यद्यपि शास्त्रो का अर्थ नै न कीया है तो हू वां की अज्ञा
ना मो नहीं वरतता॥ अरु ज्ञान सर्व त्याग का नहीं प्राप्त भया॥ अरु निष्कामता अरु अ
संगता नहीं राषता॥ अरु वासना ते याही के भेषु संन्यासी का धारा है वाने॥ जो मानवे सो

कछु ग्रहन न करै रम रमण मैं॥ अर्थ यहि जु वासतें सर्वंता उदर ही कै याहि में बुधारा
है वा ने॥ तातें वीहि संन्यास मार्ग का घात को है॥ अरु श्रीति पाषिए सो है॥ अरु प्रथम
जो दंडधारी संन्यासी वर्णन भया था॥ सो वा संन्यास को हंस कहत हैं॥ अरु जो वा गं
भीर अवधूत संन्यास मों प्रवर्त्तत है सो परमहंस होत है॥ अर्थ यहि जो जीवात्मा वां
का परमात्मा होत है॥ अरु यहि परमहंस संपूर्नों दिशा ही वास्वास अरु पुनें जानत
है॥ वीहि काहू को नमस्कार करने को अरु आदर करने मों अरु सक्तो है॥ अरु यहि हूं न ही चा
हत जो कोऊ मके आदर अरु नमस्कार करै॥ अरु कर्म जो वासतें देवत्योपि तरोंके
चाहीयत है सो वासतें वांके नहीं चाहीयत॥ जो कछु भविष्यत है सो वाने भया ही
षूसा है॥ अरु वांको चाहदी घेसाउँ को नहीं॥ अरु रीमूं तु सो जमये है॥ अरु काहू के आ
गमनु करने अरु गमन न करने सोनि करु अरु पुनें वा थके नहीं होत॥ अरु न वीहि

काहूमेंवृत्तीउपासनाकरतहै॥अरुनकाहूकाध्यानकरतहै॥वोकेएजरुएजाएज्या
यहितीनहींनहीं॥अरुध्याताध्यानुध्येययहिहूंवाकेअवशनहीं॥जोकरैतोकछु
बाधकनहीं॥अरुनकरैतोवाकोकछुहुंउनहीं॥अरुनवहिकाहूसोभिनहै॥अरु
नसाधिकिस्केनिश्चितहै॥अरुवाकोरैनहैनदिवसहै॥अरुनवाकोत्वंहैअरुन
ममहै॥अरुयहिजुवांकीअवस्थामोत्वंअरुममरहानहीं॥अरुवाकोकछूहू
नहींभिन्नजातासे॥अरुवाकीएकइस्थानोंस्थितिनहीं॥याइस्थानमोसा
यंकालहेवाहीठवरवसतहै॥अरुयहवांकासर्वठवरहै॥अरुवासतेवी
तावनेनिसिकेयाठवरमोनिद्राअंगीकारकरे॥अरुरकरतहैसोयहिठवरहै॥तथ्य
था॥याठवरसिूतनकदग्धहोतहै॥अस्यवाम्हनइस्थानोमोअपनीचौवृदांको॥
वामक्षवनोंको॥अरुपाछेमध्यानकै॥वासतेभिदाकेजवसंदर्नमानुपअंन

पकान्नरनर भक्षण करते रहे हैं ॥ और वांके गृह में मद्य धर्यो न निकसत है ॥ और अ
ग्न प्रकाश मद्य गृह होंके न होइ ॥ और भिक्षुक संपूर्ण भिक्षा कर करि गमन करत
मयें होइ ॥ तब वहि ग्राम तें भिक्षा के मद्ध नगर में आगमन करे ॥ और वांके गृह में
गमनु करे जो यांको न पहचानत है ॥ और आदर या का विशेष न करे ॥ और या ठवर
में भिक्षा चाहत है ॥ जो वहि भिक्षा देवे तो प्रसन्न न है ॥ और जो न देवे तो अप्रसन्न
न है ॥ और जब लग गौ दुहीयत है तब लग वा ठवर स्थित है ॥ और यदि जग डारे है
जो एते काल पर्यंत भिक्षा न प्राप्त है ॥ तो पुनः अन्य ठवर ठवर गमन न करे ॥ और संन्या
सी को मद्य मांस भक्षण करनो नाहीं कह्यो ॥ भिन इन द्रव्य सों अन्य वस्तु सर्व भक्षण करे ॥
और स्वर्ण और रूपा अरु वर जो तांबादिक धातु है जो कोउ देवे तो चाहीयत है जो वांको
करस्यों स्पर्श न करे ॥ और वांकी ओर दृष्टि हू न करे ॥ और जो कोउ संन्यासी को भिन

पक्षकों भंजन के अवर अछूदेवे वहिहूं पतित होय॥ प्रद्युम्न उवाच॥ हे नमस्कार के योग्य सं
न्यासी को दृष्टि और स्पर्श ही मात्र स्वर्ण अर रत्न पादिक अर जवाहरे के भांत पतित होत
है॥ ब्रह्मो वाच॥ याही भांत है जो संन्यास चाहके वाकी उ(ओ)र दृष्टि करे याते पतित होत है॥ अ
र आत्मघात कीये कावां को पाप होत है॥ अर जो न्याहस हित वा पदार्थो को कर सो स्पर्श
करे तब चांडाल होय॥ अर पापकर्म पुने घात करने कावां को होय॥ अर्थ यहि जो आत्मघाती
होय॥ ताते चाहीयत है जो संन्यासी या पदार्थो की उ(ओ)र न दृष्टि करे॥ अर न कर सो स्पर्श
करे॥ अर न वां का अंगीकार करे॥ अर संपूर्ण चाहे को त्याग करे॥ अर जो रोग वां को प्रा
प्त होय अर शरीर असमर्थ होय॥ तो चाहीयत है जो धीरज दृढ राखे॥ अर वासते वा रोग नि
वर्त करने के चिकित्सा न करे॥ अर जे कछु प्रसंन्नता अर आनंद वां को प्राप्त होतो ह
र्ष संयुक्त न होय॥ अर अपनी कांहू इंद्री सो रस को अंगीकार न करे॥ अर सदा अपुने

हीआपसोमगनरहे॥अरयहिअवस्थाकेवलआनंदहै॥अरआपकोब्रह्मजाने
अरतांकोंकछुकरनानहीजोकरे॥नमस्कारज्ञानीयोंको॥अरनमस्कारप्रजा
पतकों॥नमस्कारनारदकों॥श्रोतावकताकोज्ञानकीप्राप्तहे॥इतिउपनिषद
परमहंसआथर्वणवेदभाषासमाप्तम्॥४१॥ॐ॥ अथउपनिषदआरंगअ
थर्वणवेद॥उदालकतातेअरनारिषीअरकाप्रजापतिकेलोगगमनकरकरप्रजापति
सोप्रश्नकरतभया॥उदालकउवाच॥हेनमस्कारकेयोगसंदनेकरनीकात्यागीकसमां
तकरेहैं॥जोकोऊकर्मकरनानरहे॥प्रजापतिरुवाच॥तातेकोअरमातेकोअरसंपर्नेकु
टंबकोअरशिषाकोअरयज्ञोपवीतकोअरयज्ञकोअरअधेनवेदकाभिनउपनिष
दोसो॥अरअधेनसर्वशास्त्रोंका॥अरयाऊर्धकेसप्तलोकोंका॥एकभूलोकअरदि
तीयभुवःलोकतृतीयस्वर्गलोकचतुर्थमहर्लोकपंचमजनलोकषष्टमपितृलोक

२९५ सप्तमसत्यलोक॥ अरु अधः के सप्त लोक कौं कहे॥ एक अतल द्वितीय पाताल त्रितीय वितल
चतुर्थ सुतल पंचम रिसातल षष्टम तलातल सप्तम महातल॥ अर्थ यहि संपूर्ण पदार्थों
सहित चतुर्दस लोक॥ जो ब्रह्मांड है॥ ताका त्याग करे॥ अरु चाह इनकी कदाचित न करे॥
अरी भिनवे पीढ अरु दंड सो अवर कछु न राखे॥ अरु तीन अग्नि को जो तीन आश्रम तीन
सेवत हैं॥ एक ब्रह्मचर्याग्नि जो ब्रह्मचारी सेवत हैं॥ द्वितीय गृहस्थाग्नि जो गृहस्थ सेवत
हैं॥ त्रितीय वानप्रस्थाग्नि जो वानप्रस्थी सेवत हैं॥ मध्य अरु पुनि जठराग्नि के या तीन
ही अग्नि को डारे॥ अरु गायत्री को मध्य वाकर इंद्रीं की अग्नि के दग्ध कर करमन मो धारे
अर्थ यहि जो जिह्वा सो न उचरे॥ अरु यज्ञोपवीत को मध्य पृथवी के षोद कर गाडे॥ अरु आय
वा मध्य जल के डारे॥ अरु उत्तम संन्यास यहि है॥ जो संपूर्ण नरसो का अरु कुटंब का त्या
ग करे॥ अधः जो तले जो ते नीहृदो के वासा करे॥ अरु काहू प्रकार का वासना न राखे॥

अरसंन्यासीकोंसंग्रहत्रिगुणकादिकहूकौकरनौनहींकह्यौ॥अरदंडकोंनराखेअर
संग्रहकाहूकौनकरे॥इति उपदेस प्रजापति॥अथ प्रजापतीवाच॥कोऊमंत्रनउचरे
अरवासतैंसिद्धकरनेकाहूकीकामनाकेकोऊमंत्रनआराधे॥अरप्रातःकालअ
रमध्यान्हकालअरसायंकालस्नानुनकरे॥अरयहीतपुकरेजोसदामनआ
त्माकेलीनरहे॥अरजोमध्युअध्येंनपरसंकल्पउपजेतौभिंनउपनिषदोंसोंआव
रअध्येंननकरे॥अरपुनःपुनःउपनिषदोंहीकाउचारकरे॥अरभिंनउपनिष
दोंसोंसंग्रहकाहूकौनकरे॥अरयग्योपवीतसोंकछुप्रयोजनुनहींराखत॥ताते
याययग्योपवीतकाजोविवहारमात्रहैत्यागकरकेआपकोंजोकेवलब्रह्महीजा
नतायहीयग्योपवीतपहरे॥जोकोऊयाभांतसमझेअरजानेजोमैंसर्वत्याग
कीयामैंसर्वत्यागकीया॥अरतेंद्रदमाअरचाहअरक्रोधअरपिशुनताअर

२१६ लोभ अरु मोह संसार का॥ अरु अपुनी श्रेष्टता प्रगट करनी अरु गुरु सुं अरु रमि थ्यावा
द॥ अरु इत्यादिक जो निषिद्ध पदार्थ है या सर्व का त्याग करे॥ वही है परमहंस है॥ व
के नवरनता संन्यास की॥ संपूर्ण जीव धारीयों को या भांत कहे॥ हे सर्व जीव धारीयो
मुझ सो मत भय संयुक्त होहो॥ अरु मत भय पदाय कहे हो॥ अते व जो तुम हूं के वल मै ही हैं॥
अरु जव देह उपद्रव न करे तव वा काल मो दंड सो कहे॥ जैसे शास्त्र व ज्ञान राषत है तैसे मै
ने तुझे धारा है॥ अरु जव कौपीन को ग्रहन करे तव साधु कौपीन के या भांत कहे॥ जो
तुझे तास ते रहा लज्जा अपुनी के धारा है मैने॥ जव कंथन को ग्रहण करे तव वा मो
रस की भावना का त्याग कर कर केवल वास ते नर्वत्र सुध्या के औषद व तज्ञान कर
म ग्रहण करे॥ अर्थ यह है जो षुध्या रूप र्गाठिन को साधु जल रूप अंजन के भांत करे॥
अरु चतुर पदार्थ वास ते अपुने राषे॥ प्रथम त्यागुरस का॥ द्वितीय मनसो वचन

सो शरीर सो काहू जीवधारी का घात न करना ॥ द्वितीय संग्रह काहू पदार्थ का न करना
चतुर्थ मध्य सर्व पदार्थों के निहकपट वरतना ॥ अर सोयया चतुर्थ ही पदार्थों के क
हे ॥ जो मैने सर्व पदार्थों का त्याग कर तुमको अंगीकार कीया है ॥ ताते तुमहू मुझे अं
गीकार करो ॥ अर यहि वचन एक एक पदार्थों को तीन तीन वार कहे ॥ अर कहे जो
मै सर्व त्याग कर कर संन्यास का अंगीकार कीया है ॥ संन्यास का अंगीकार कीया
है ॥ अर वासते वैठने अर सोवने के एथवी ही का अंगीकार करे ॥ अर वासते जल
पान के वासु निमित्त का का अथवा तूंबे का अथवा लकरी का राषे ॥ अर जो चाहे ए
कठ वरस पर्यंत रहे तो चतुर मास ही एक ठवर स्थित रहे ॥ अर अष्ट मास अवर अंसं
ग नैत न नैत न ठवर निवास मन तर हे ॥ एकइ स्थान सदा न वसे ॥ अर जो चतुर
मास एक ठवर न रहे ॥ तो दय मास सावन अर भादो जामे वर्षा बने घहोत है ॥ ॥

अवशएकठवरवसे॥ जोयहिद्वयमास्तेदेख्याज्ञाहै एकठवर रहे एकठवर रहे॥ इतिप्रथम
ब्रालएसमाप्त॥ अथनवेदकअरवेदोऊकेमोकात्यागकरे॥ अरसर्वकुटंबअस्नेव
साकजोहै प्रतिबंधताकात्यागकरे॥ अर्थयहिजोअसंगरहे॥ अरमद्रगावोंकेअसग
रोके जोवास्तेआहारकेगमननकरे॥ अथवाऊनेनषोउसगम्यमेमैंभषणनकरे॥ जोपासो
ह्नेनभषणकरेतोउत्तमहै॥ अरमारगभिक्षाकायहिहै॥ तथ्यथा॥ मद्रवासनकेभिक्षा
काअंगीकारकरे॥ अथवाऊपरकरकेअंगीकारकरे॥ अरउसीकालमोभषणकरे॥ अथवा
मद्रवस्त्रकेग्राहीकहै॥ अथवाऊपरकरकेअथवापथ्वीहीसोसाथमबकेग्राहीकहै॥
अथवामद्रगृहकेवास्तेभिक्षाकेगमननकरे॥ मांगेनहीअजवलगागऊकेदोहीयतहै
तबलगताडारेहै॥ जोभिक्षादेवेतोवाकाअंगीकारकरेअरजोनदेवेअवरठवरभिक्षा
कोगमननकरे॥ अरजोमांगनेकीइच्छाहोवेतोत्रयवारसाथठांभीरशवदकेप्रणवको

१५ ग्रास से अधिक न खावे।

कैसेउचरै॥ जोस्वामीगृहस्थाश्रम करै॥ अरभिक्षामहतीनगृहोंकेअस्थरस्थप्रकाशहोके
करै॥ अरजोअथवाप्राप्तनहोतौभूख्याहीसोरहै॥ अरभिक्षाकरकरपुनःमद्भवनके
गमनकरै॥ नगरमोनरहै॥ याभांतकासंन्यासआतिगंभीरपदराखतहै॥ अरश्रेष्टपदहो
सोश्रेष्टपदहै॥ अरवाहिपदजोगीमैंनज्ञानीयोसोआवरपदकोनहीप्राप्तहे॥ अरनही
देखीयत॥ अरज्ञानीवाकोसर्वठवरप्रत्यक्षकाशवतदेखतहैं॥ अरब्रह्मज्ञाताजोनाम
अररूपअरइंद्रिकेस्वभावोंकात्यागकरकरमद्भदेवऐस्वतत्पअपुनेकेचेतंनदै॥ अर
जागतेहै॥ वीहिवापरमपदविष्णुपरमात्माकेकोप्राप्तहोतहै॥ मारगमुक्तकायहीहै॥
अरवेदअज्ञाहूयाहीभांतहै॥ अरचाहेजोवासतेप्रत्नंताकर्मोंकेसंन्यासपदकोप्रा
प्तहै॥ तोचाहीयतहै॥ जोप्रथमब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थइनतीनहीआश्रमोंकोजे
सेवेदमोवरननभयाहैपर्नकीयाहै॥ तबपुनःयाकाअंगीकारकरै॥ बर्ननमारगसंगीका

२१८ रकरनेसंन्यासकरा॥ ॐ॥ यथाकालमेसंन्यासकाअंगीकारकरे॥ अरचाहेजोगृहस्तसोवाहृयगम
नुकरे॥ तवचाहीयतहै जोपिताअरमाताअरसंपूर्णकुटंवसोंआपसेप्रसंनुकरे॥ अरमि
त्रोंकोयथाक्रमप्रतिपादनकरे॥ अरतीनआश्रमोकीअग्निकोजोआगेवरननभईसह
हृदेकैअग्निमेएकज्ञानकरअरशिखाअरयज्ञोपवीतकोदूरकरकरअरतातकोनिक
टआपुनेसनमुखस्थितकरकरसाथवांकेकहै॥ तूब्रह्महै तूयज्ञरूपहै॥ तूसंपूर्णसंसार
रूपहै॥ अरसर्वतूहीहै॥ संपूर्णसंसाररूपहै॥ तूसर्वसंपूर्णसंसाररूपहै॥ चाहेंमेरीयो
नेतुझमोआवेशकीयाअरकरे॥ अरजोसंतानराषतहै॥ यावचनोकोसापआपुने
हीकहकरगृहस्तसोवाहृयगमनुकरे॥ प्रथमहीगृहस्तसोपूर्वदिशाकीओरगमनुकरे॥
अरवास्तेगेहहैं पहरैनेआपुनेकेवासांसपुरातनजोराषताहोतोसाथलेवे॥ अथ
वासाथपात्रअरखालविंदोकीकेवीतावे॥ अरवास्तेषुधाकेहीननहै॥ शरीरकोसं

यमभोराखे॥ जो स्थूलता अरु बलको न प्राप्त है॥ अरु सदा मध्य आत्मा उपासन हीके रहे॥ आ
थवा यहि कल्पना हूं न उपजावे॥ निर्विकल्प ही रहे॥ वांको उपासना अवश्य न ही॥ नम
२ स्कार ज्ञानीयोको॥ ॐ गरिषी अरु प्रजापति को नमस्कार॥ श्वेता अरवमता को ज्ञान
की प्राप्त है॥ अरु सर्वलो आनंद है॥॥ इति अरंग उपनिषद अथर्वण वेद भाषा समाप्तम
ध्व॥ ॐ॥ ॥ अथ चोटका उपनिषद अथर्वण वेद॥ अरु चोटशवाको कहत है॥ ॥॥
ग्नात्मा अरु पाद राखत है॥ जो साधवां स्फुरत है॥ अरु कोंमकाज करत है॥ अरु इनसो मध्य
हू है॥ अरु हंस है॥ अरु यहि जो जीव है॥ अरु ज्ञान प्रकाश करत है॥ अरु वांको तीन प्रक
त त्रिगुण तीन रज्जुवत है॥ जाको सर्व लोको आवरत न अरु रवि वहां टिकि रहे है॥ अरु आ
प आत्मा निर्दोष है॥ संसार जो दृष्टि परत है सो त्रिगुण प्रकृति है वांको॥ अरु यहि सं
सार जो दृष्टि परत है सो नही मिथ्या केवल भ्रम ही है॥ आत्मा प्रकाशो का प्रकाश है॥ य

आत्माकी त्रिगुणा प्रकृति है संसार है आत्मा निर्दोष है.

हिऽऽनतिप्रकाशहै॥ यद्यपि वांकोसर्वहीदेषतहैपरनहींदेषत॥ कारनयहीऽज्ञावरणअरविक्षे
पहै॥ अरसंपूर्नजीवधारीजोवांकोदेषाचाहतहै॥ यहिउनकादेषनाहींआत्माकेसाक्षातका
रमोंजोसंपूर्नवाहीकाप्रकाशहैअंतरालपरोहै॥ अरयाभेदसोअभेदकोप्राप्तहोनाही
आत्माकाजोगुणातीतहैसाक्षात्कारहै॥ अरवांकोकेवलसतगुणसोमद्रमनरूपकमल
केसर्वगुणनिधानपरमाविदम्म जोहैपूर्नहैसकीयतहैदेषा॥ अरजबलगअज्ञावरणअ
रविक्षेपदूरनहींहोततबलगवांकोनहींसकीयतदेषा॥ अतेवचाहआत्माकीजोएक
कालमोंआत्मासोप्रगटभईहै॥ जांकोमायावहीयतहै॥ अरआत्मज्ञानसोलयको
प्राप्तहोतहै॥ अरभ्रमकाउतपतकारनहै॥ अरजोकछुदृश्यपदार्थहैयहीरूपवांकोहै
अरअपरूपधारतहै॥ अरवहिअपरूपयाहिहै॥ तथ्यथा॥ एकत्रिगुणप्रकृतिद्वितीय
संबूहहवुद्धोकोपुरकवुद्धजोआकाशहै॥ त्रितीयअहंकारचतुर्थपांचसूक्ष्मभूतजोको

हि२ एप्रकार भक्हीयत है॥ अरु जैसे माता सिसु अपुने को अपुनी छाती अरु भुजों सो ग्रहण क
रै है॥ तैसे ही वाने केवल चेतन को ग्रहण कीया है॥ अरु माया सो प्रथम ही भिन्न ब्रह्म सो अव
रन था अरु छु॥ या ही सो अनादि काल है॥ अरु अचल सी है॥ अरु अनिरवाणी है॥ जब ल
ग अपने स्वरूप वां के जो पूर्व वर्नन भये दूर न होइ॥ तब लग आत्मा का साक्षातकार नही हो
ता॥ अरु वहि माया को उ काम आप सो नही कर सकत॥ जो आपी भिन्न आत्मा सो अवर
को उ पदार्थ नही॥ जब वाने विधवत केवल चेतन आत्मा को मन अपुने ग्रहण कीया॥
व ही आत्मा जो अचल था सो स्फुरनता को प्राप्त होकर प्रसरत भया॥ अरु वह ही आत
मा जो आदि दृशा था महा दृशा के आप ही दृशा भया॥ अरु जो अघु वहि केवल चाहत है सो वा
स ते वां को तिसी काल मो प्रगट करत है॥ अरु वहि माया जो आस्रवदवत है॥ अरु उतपत क
रन हारी अरु पालन हारी सर्व की है॥ अरु तीन रूप राषत है॥ एक अरु उतपती एसकलो चिती

मायाने चैतन्य को प्रकारका है अहरव आत्मा रूप हुआ

माया के ३ रूप – १ रज २ सत ३ कृष्णा

यक्षहन॥ और वहि है गौ का धेनु नाम धारत है॥ अर्थ यहि है जो वहि संपूर्ण चाहो वांछे तन
कीया को प्राप्त करन हारी है॥ और सर्व जीव धारी दुग्धवत जो है विषयों के रस सो सिस
वेत पर वश वा सो पान करत है॥ और एक पान करनहारा वार सो का अवर हूं है॥ जो प
र वश नहीं पान करता॥ स्वइछत पान करत है॥ जा को आत्मा कहीयत है॥ अर्थ यहि है जो
वाही ने केवल वासे तर सो ही के आप रूप माया का अंगीकार कीया है॥ और वहि रस का
लेनहारा जो धनी सर्व का है और नमस्कार को योग है॥ और गुण गाती है॥ संपूर्ण विश्व
ए सो प्रथम ही आप रस का अंगीकार करत है॥ और विश्व ए हूं वहि है॥ माया जो देनहारी
रस रूपी क्षीर की गो समान है॥ वां के निकट रसु देने मो सर्व ब्रह्मण्ड और सृष्टि एक से है॥
और संपूर्ण कर्म और धी वाही के संयोग सों और वा सते वाही के कर्म करत है॥ और माया
सो आत्मा के वश है॥ और केवल प्रकाश है॥ और वहि जो सकाम कर्म करत है यथा कामना

वाकी ईश्वररूप सो फलांको प्राप्त है ॥ और आप सर्व सो मुक्त और भिन्न है ॥ और और अन्चले ॥

अरहंत से है नाम वांका ॥ और नहारे वेदोक गंभीर अर्थ नेक करे ताके वाको जानत है ॥ और वा स

ते वाही की प्रशंसा ताके कर्म करत है ॥ और वहि आत्मा सर्व काम लम्म समो है ॥ को उएक वांको

यों कहत हैं ॥ पंचविंशत पदार्थ शरीर कियो सों भिन्न है ॥ वहि अरयामों आवेश करत भया

है ॥ और वहि पंचविंशत यहि है ॥ तथ्य था ॥ एक त्रिगुण प्रकृति ॥ द्वितीय बुद्ध ॥ त्रितीय अहंका

र ॥ और चतुर्थ सूक्ष्म भूत पंचम स्थूल भूत ॥ और दस इंद्रि और एक मन ॥ और एक जीव अस

र को एक वांको यों कहत है ॥ जो शरीर षड्विंशत पदार्थों सो है ॥ और वहि यासों भिन्न है ॥

और मनुष्य शरीर के आवेश करत भया है ॥ और पंचविंशत वहि जो वर्नन भये है ॥ और एक

प्राण या सों भिन्न वहि आत्मा मनुष्य सर्व के पूर्न है ॥ और गुण तीन है वाको केवल ज्ञान

हीसों शंकीयत है प्राप्त है ॥ संपूर्न रिचा आदि तत् आत्मा ही को वरनन करत है ॥ और पंच

आत्मा शरीर के पच्चीस पदार्थों से भिन्न है -
१ त्रिगुणात्मक प्रकृति
१ बुद्धि
१ अहंकार
५ सूक्ष्मभूत
५ स्थूलभूत
१० इन्द्रियें
१ मन
१ जीव
कुल [illegible]
[illegible]

२२१ हैजोसर्वमारगोमोएकआत्माहीकोनिश्चयकरतभयेहैं॥जोवहीएकहै॥ओरवहिसमाहै
सर्वको॥ज्ञानीवाकोयाभांतजानतहैओरसमझतहै॥ओरयाहिसंपूर्नजोमूलमानु
वकोवर्ननिभयासोमूलसर्वकोहै॥ओरसर्वगुणओरजोवछुदेषीयतहैसंपूर्न
वहीहै॥ओरएकहूओरद्वितीयहूवहीहै॥ओरपांचहूवहीहै॥ओरतीनहूवहीहै॥ओ
र्थयाहिजोपांचभूतओरतीनगुणप्रतीतहूवहीहै॥ब्रह्मसोआदिदेकेप्रयंतज्ञानवा
नसोयहज्ञाननेत्रोकेजोकछुदेषीयतहै॥ओरजडओरचेतनजोकछुहैवाहीसोहै
ओरवाहीमोलीनहोतहै॥जैसेसलतासोतंगप्रगटहोतहै॥ओरवाहीमोलीनहो
तहै॥मारगआत्मज्ञानकाजोजीवकाजीवहैयहीहै॥ओरचाहीयेजानाजोसंपूर
नपदार्थवेअंतवाआत्माहीसोप्रगटहोतहै॥ओरपुनःवाहीमोलीनहोतहै॥जो
ब्राह्मणयाउपनिषदकोउत्तमकालमोओपुनेसेवकोश्रवणकरवावेफलवाके

ऐसैंनोकाश्रीघुता सो अंतको न प्राप्त है॥ अर ब्रह्मऐं सो अररा जयो सो अर अवर जो वे
ऊ या उपनिषद को ज्ञाता है॥ वोहि ब्रह्म को ज्ञाता है॥ अरु विछो नेअज्ञानता के परस्योयव
र केवल वही है॥ अर्थ यहि जो ब्रह्म ही है॥ नमस्कार ज्ञानीयोको॥ वेदांत अरु वक्ता
को ज्ञान की प्राप्त है॥ अर सर्व को आनंद है॥ इति उपनिषद चोटका समाप्तम्॥४३॥
ॐ॥ ॐ॥ इति॥ ॥ अथ उपनिषद सोन को॥ या उपनिषद मो जीत देवत्यो की है॥ साय
सहाय प्रणव के॥ ॐ॥ सुर असुर वासते युद्ध के उदित भये थे॥ जो सद्व देवत्यो के इंद्र न
आगमनु करत भया॥ तव रिषीश्वरों को जो वसु नाम राषत है॥ अर प्रातःकाल के य
ज्ञ को उपासते थे॥ वा देवत्योने तांको अपुने अगवारवार वासते जीतने असुरों के
युद्ध को उदित भये॥ पून ताहि रिषीश्वरों के न थी भई॥ जो वाठवर मों दैत प्रगट भये
अर सा यरिषीश्वरों के कहत भये॥ जो आज हमारी सुरों पर जीत न भई॥ तो यज्ञ तुमा

२२२

रेकोप्रथ्वींसबैंरंगेहुत॥ तबवीहींरबीस्वरभयकोअंगीकारकरकेरया जलसोंवह
नहवनकीपरअभिषेककरतेथे॥ तासोंकुशाकोभिगोयकेअसुरेनकोदेतभये॥ अ
रकहतभये॥ याकोयुद्धकेकालमोंस्पर्श पुनेराषे॥ अरयाकेधारनेहीमात्रअसु
रोपरजीतहोजीतुमारी॥ देवतावांकोअद्याहीकहोकरवासमेतेयुद्धकरनेसाथदेवत्योके
गमनुकरतभये॥ अरयुद्धमोदेवत्योकोअमकतकरतभये॥ अरअपजीततभये॥
अवइंद्रुनेमननताअरअशकततासुरोकीदेषी॥ तबसाथगायत्रीछंदकेकहतभ
या॥ वासमेतेजीतसुरोकीकेतूं याकेअगमहो॥ गायत्रीउवाच॥ अतेवजोसर्वदेवता
वासोंभागेहैतातेमैंभयअरवीचारसंयुक्तहोतहो॥ जोमुजसोहूंइनकाजीतना
अतिकठनदेषीयतहै॥ तबइंद्रनेप्रणवकोअगगायत्रीछंदकेकरकरकहा॥ इंद्र
गायत्रीप्रतिउवाच॥ यीहप्रणवरत्नकेतेराहो॥ गायत्रीउवाच॥ प्रणवजोअग्रमे

रै है॥ ताथाते मेरी श्रेष्टता की न्यूनता होगी॥ इंद्रउवाच॥ संदेह मन कर प्रणव की सहाय सो तेरी
न्यूनता न होगी॥ याते जो श्रेष्टता प्रणव की सर्व सें अधिक है॥ वोहि अवर की श्रेष्टता का या
ही कछ न्यूनहीं होत॥ प्रगट है जो आप गंभीर अपार श्रेष्ट है सो अवर की विभूत को नहीं ग्रहत॥ ता सं
र है संसार मो श्रेष्टता वांकी है॥ तुझे साथ प्रवेश के मध्य प्रवेश जनन नहीं॥ तू रहा वास
देरिषी सुरों की कर आज्ञा॥ तब गायत्री छंद ने प्रणव को उचार कर अंगीकार कीया॥
प्रणव इंद्र प्रति उवाच॥ मै याने मसो सहाय सुरों की करतें है॥ जो संपूर्न कामों के
आरंभ मो प्रथम मुझे वाकइंद्री सो उचरे॥ अवर जो न करत भये मैं उन की रक्षा मो
न प्रवरतो॥ या॥ यहि वचन वांका सर्व देवतों ने अंगीकार कीया॥ अतें तब जो संपूर्
णव है॥ ता ते साथ उचारने प्रणव के जो अक्षु नाम रूप है संपूर्न प्रणव ही है॥ अवर प्र
णव को आहै तयासो कहत है जो सर्व मो व्यापक है॥ अवर संपूर्न श्रुति हर काम के आरंभ

२२३ मोक्षर मध्य मोक्षर ऽंत मो प्रणव को उच्चारत है॥ अक्षर जो को ब्राह्मण सो मद्दूर तीजस काम
कारछ्य त है॥ वोई प्रणव को उच्चार करयो को मद्दर तदेत है॥ अक्षर जो को ऊ काहू काम का ऽं
गीकार करत है॥ प्रणव ही को उच्चारत है॥ अक्षर जो वच न को जीवघाती महम्चाद्द त है॥ ब्रह्म
मैं॥ को कहर करत है॥ अक्षर्यहि नाम सर्व को जीत कादेनहारा है॥ अक्षर ऽक्षा हि ऽंशतय
हो के यही नाम है॥ अक्षर सदा ऽसच ल है॥ अक्षर सर्व तत्रो को अक्षर जीवघाती यो को आप
मो लीन करत है॥ यद्यपि फक्षद्व त है तो हूं आपार है॥ तो हूं ऽसद्दै त है॥ अक्षर ऽन्ने क लक्ष
र ऽन्ने क शब्द अक्षर ऽक्ष ने क गंध अक्षर ऽन्ने क रस अक्षर ऽन्ने क सपर्श मांत मांत राष
त है॥ याही सो प्रणव को इंद्र कहत है॥ अर्थ यहि जो अकार थी आदि मकार पर्यंत सं
पूर्ण अक्षर अक्षर सर्व तत्र अक्षर सर्व जीवघाती साधया ए कही नाम के षचित है॥ जे सर्व
पदार्थ इंद्र की आज्ञा मो है जो राजा सर्व का है॥ ते से ही संपूर्ण वेद अक्षर संपूर्ण पत्र आज्ञा

प्रणवकीमोहै॥ सोगजाप्नर्वञ्जदाराकाहै॥ अग्रॐकारकाउच्चारकरनेप्रणवकाप्रातह्काल
कोहै॥ अग्रशनैःशनैःउच्चारयतनसोरहतहै॥ जवयामंत्रउपदेशाइंद्रकादेवतोनेअंगीका
रकीया॥ तववहिदेवतपरस्परवीचारतभयेमतघयाम्सेनाशहोकीजवप्रातःकालको
सन्मुखहोवेतवप्रथमहीप्रणवकोसाथगायत्रीछंदकेशनैःशनैःउच्चारचाहीये
कीया॥ जोशत्रोपरजीतहै॥ यातेजोदेवनिकरपैअसुरदेवतोनेशनैःशनैःउच्चारकीया
तवप्रणवअजातिप्रकाशरूपहै॥ अरसाथदेवतोंकेमहतभया॥ प्रणवउवाचा॥ मेसत्र
मतासोशत्रोनुमारयोकोनाशकोप्राप्तकरतहै॥ तातेनिश्चेभयायामंत्रकाउपा
सकहै॥ ताकोचाहीयतहैजोप्रातःकालकोसाथवामंत्रकेप्रणवकोशनैःशनैःउच्चारे
अतेवगायत्रीछंदजोसंपूर्णमंत्रोमेंश्रेष्ठहै॥ तानेप्रणवकोसाथअपुनेअंगीकार
कीयाहै॥ तातेजिसमंत्रकोसाथप्रणवकेप्रातःकालकोउच्चारीयतहै॥ बीहमंत्रहू

२५ गायत्रीकीन्याई प्रणवहीहोतहै ॥ अवगायत्रीछंदकोवासतेरतावसोकेस्थितकीया ॥ त
व प्रणवनेसापइंछेकेकहा ॥ प्रणवउवाच ॥ मैजोमरंहैं ॥ अरक्रारजादिगायत्रीछंदके
हूंमयाहों मुझेइनेदेवत्योकीसहायकरनेसोकियासद्रहोजी ॥ छंदउवाच ॥ तुमेआ
दिगायत्रीकेउचरेजो ॥ अरगायत्रीछंदकीधारनामोसायपरकरकेअकारकेउचरे
जो ॥ ता सोनिश्चेभयाजोगायत्रीकेपहिलेप्रणवकोचाहीयेउचारकीया ॥ प्रणवनेगौं
अवदेषाजोमेगायत्रीकेसर्वअक्षरोमेव्यापकभया ॥ यासंपूर्नदेवतारूपमेरेको
देषेगे ॥ पीछेप्रगटतारूपमेरेकीउत्तमनही ॥ अतेवसर्वरूपोअपन्योकोअ
पनेमेंछंदकरअर्धमात्राजोचतुर्थीहै ॥ अरब्रह्मविद्याहैतामोआपकोगुप्तक
रतभया ॥ अरमात्रासोरहतभया ॥ इसीतेसर्ववाहीइस्थानकीप्राप्तिकोषोज
तेहै ॥ अरवाहिअर्धमात्रा त्रितीयमात्रामोप्रगटहै ॥ अरप्रणवअर्धमात्रामोहै

ग अरुज्ञान ब्रह्मज्ञानपदको वा मोक्षको जानते हैं। अरु कहत भये हैं॥ जो वल्कार वीरज अरु प्रकाश अरु अच
लत अरु अदोषता सर्ब वोहि अर्धमात्रा ही है। अरु याही सो जो रहित अर्धमात्रा प्रकाशरूप अ
रु अविनाशी है अरु अदोष है। अरु प्रणव वा मो लीन भया है। अरु सुरा के संबूह वाही सो
प्रकाशरूप अरु अमरपद को प्राप्त होते हैं। अरु याही सो असुरा के संबूहन्नूनता को प्रा
प्त होकर भागे। अरु सुर जीत को प्राप्त भये॥ इही प्रणव ही इंद्र है। अरु जो कछु है इही प्र
णव। अरु गायत्री छंद अरु धारना गायत्री की अरु वशिष्ठ रिषीश्वर अरु प्रातकाल को
यज्ञ संपूर्न प्रणव ही है॥ कहते हैं जो कछु जड अरु चेतन्न है सो वहि इंद्र है। अरु इंद्र ही
प्रणव है॥ तथापि देवतन्ह न ताको प्राप्त होकर गछत भये थे॥ तोहू पुनः एकठवर होकर म
ध्यानकाल को जो गायत्री का धारना करीयत है॥ मध्य यज्ञ रिषीश्वरो के आगमन कर
त भये॥ पुनः ह वरिषीश्वर यज्ञ के करता भयसंयुक्त होकर वहि जल जो यज्ञ मो जा सो

अभिषेककरतेथेकिंचितवाजलसोअसुरोंकोदेवतभये॥ औरकहतभयेजोयाहैजलतिनकर
तुमारेहोंगा॥ तोअसुरन्हनताकोप्राप्तहोहिंगे॥ औरजीततुमारीहोगी॥ जबअसुरोंनेचाहा
जुवाजलसोअसुरोंकोस्नानकरें॥ तबइंद्रनेदिवसकेअद्रिणतादेवत्योकोवास्तेसहायसेरो
केपठा॥ तोहूदेवताअसुरोंसोन्हनतासोप्राप्तभये॥ पुनःइंद्रनेत्रिष्टुपछंदछंदको
कहातूसहायवाकीकेगमनकर॥ त्रिष्टुपउवाच॥ देवताजोवलवानथेसोन्हनताकोप्राप्त
भयेहैं॥ यासोमैंइंभयसेयुक्तहोताहों॥ पुनःइंद्रप्रणवप्रतिउवाच॥ तूओंकार्देसर्वछंदोंका
होकरगमनकर॥ प्रणवउवाच॥ मुझेरक्ताइनअसुरोंकीसोक्रियासिद्धहोगी॥ इंद्रउवाच
जोकछुमेरेहैंसोतूहीहै॥ तुझेरूपमेराजानकरउच्चरेठो॥ औरजाठवरइंद्रआत्माकोजा
नतवहै॥ जोप्रकाशदेवत्योकाहैपुनःप्रणववीच्चारतभया॥ जोसंपूर्णदेवत्योपरयथार्थ
भेदमेराप्रगटहोगा॥ औरप्रगटतारूपमेरेकीउत्तमपदार्थनहीं॥ यासोपुनःसंपूर

रूपअपुनेकोआपमोषैचकरमध्यअर्धमात्राकेआपकोग्र्स्वीकीया॥अकारमात्रासोरहित
भया॥अरवाकालमोकेवलउकाररूपविद्यमानभया॥अर्थयाहिजोत्रितीयमात्रासोरहित
भया॥याहीसोदेतान्हनताकोप्राप्तहोकरपीठदेतभये॥अरदेवताजीतकोप्राप्तभये॥
तासोप्रएवअज्ञादिदिवसकेदेवतोकाअरात्रिरूपछंदहूंकाभया॥ॐ॥यद्यपिअस
रोनेप्रातकालहूंकोअरमध्यानकालहूंकोपीठदईथी॥तोहूंपुनःएकठवरहोक
रसायंकालकोजासंध्याउपाशनकरीयतहै॥मध्यवायज्ञोरिषीश्वरोकेप्रगटभये॥
पुनःएवंवतवहिरिषीश्वरयाभयसोजोयज्ञकोपरध्वंसनकरतहोयज्ञकीकुशा
वाकोदेतभये॥अरकहतभयेजोयाहिनिकटतुमारेहोगीतोतुमदेवतोपरजीत
कोप्राप्तहोवोगे॥तवपुनःइंद्रुनेजगतीछंदकोकहाजोतूवास्यतेसहायदेवतोके
गमनकरो॥जगतीछंदोवाच॥जोअसुरोकेसंबूहवासोन्हनतासोप्राप्तभयेहो॥

तो मैं वासो विसमा तयुक्त मोसन्न मुखहो सकत हैं ॥ तव इंद्र ने पुनः प्रणव को जो आदि सें स्वरनं छं
दों का है ॥ अरु आदि जगती छंद हूं गा कीया ॥ पुनः प्रणव उवाच ॥ मुझे देवतों की रक्षा करने से मैं या
प्राप्त होगा ॥ इंद्र उवाच ॥ तुम्हे साथ धारना के उच्चारे अरु वासों ते तीक्ष्ण एता प्रगट होगी ॥ अरु
सूर्य जो देवता द्वादस मासका है ताको वासतेरक्षा देवतों की सर्वप्रस्त्र एक रूप ठ ॥ अरु तेव देव
ता अधिष्ठाता सायंकाल के सूर्य अरु जगती छंद भये ॥ तव प्रणव ने देखा जो धारना के वलसू
र्य हैं ॥ अरु सूर्य के वल व्रत हैं ॥ अरु व्रतसे अभेद हैं ॥ अरु साथ सर्वरूप अरु पुन्ने के मध्य अर्धमा
त्रा के द्वय वार सर्वगुह्य भया हैं मैं ॥ प्रणव पाछैया वीचारके निकट सूर्यके जो अधिष्ठाता
द्वादस मासका है ॥ गमन करत भया ॥ तव दिनकर हू प्रणव को तेजरूप वज्र अरु पुना जान
करकार कर मर अरु असे रोप रैसे साङ्गारा ज्ञो संपूर्ण नाश को प्राप्त भये ॥ अरु भाखे ॥ अरु षं
डं डं भये ॥ अरु पुनः शकत एक ठवरहाने कीन राषत भये ॥ पासो साथ संपूर्ण रूपो

कै प्रणव ही प्रगट भया ॥ और गंभीर पद को प्राप्त भया ॥ और अतिश्रेष्ठता प्रणव ही मों है ॥ स
र्व भूत और जीवधारी मद्ध प्रणव ही के है ॥ और स्थित इस्थान प्रणव का ॥ और धर्मात्मा च
तुर्पद अपुने मों है ॥ यामो सर्व पुनः पुनः व्याप्त भया था ॥ ताते जो कछु मनोरथ चाही
ये राषा ॥ और जो उपाशना चाहीये करी ॥ सो प्रसाय अर्थ मात्रा ही की चाहीये करी ॥ अ
र याही पर अथर्ववेद को साधपरमाण है ॥ तथ या ॥ प्रणव चतुरमात्रा ॥ और त्रिपाद अ
र हृदय सिर अरु अष्टकर राषत है ॥ और तीन प्रकार मों लिप्त भया है ॥ और गंभीर है ॥ अ
र शब्द गंभीर राषत है ॥ और अति प्रकाशरूप है ॥ और सर्व मंत्र वाही सो है ॥ सार्ध
त्रिमात्रा जो प्रणव है ॥ यही चतुर्मात्रा है वां की ॥ और त्रिपाद के यही अकार उकार म
कार तीन अक्षर है ॥ और हृदय सिर वां के अकार उकार यही हृदय सिर है ॥ जो इन को एक अक्षर
ठवर ॥ ॐ ॥ शब्द सो उच्चार करीयत है ॥ सो याहि एकी सिर है वां का ॥ और मकार जो साथ

२२० शब्दरूपअर्धमात्राकेएकउच्चारकरीयतहै॥सोद्वितीयसिरहै ताका॥अकारआदिक
जेअक्षरसिद्धहैं इहीअक्षरहैवाके॥अरवहितीनप्रकारजोसोलिप्तभयाहैसोयहिहै
प्रथमअक्षरवाकेमोब्रह्मा॥अरअग्नि॥अरअधःलोकहै॥अरद्वितीयअक्षरवाकेमो
विष्णुअररविश्वानरअग्निअरमिरतुलोकजोमध्यलोकहै॥अरतृतीयअक्षर
वाकेमोरुद्रअरसूर्यकीअग्निअरऊर्धलोकहै॥अरतेसेहीत्रिकालसंध्यामोयाको
उच्चारीयतहै॥यासोप्रणवहीइंद्रहै॥अरप्रणवहीगंभीरहै॥अरचारवेदमोयामों
तवर्णनकियाहै॥तथायाइंद्रधनीसुरीकाहै॥अरगंभीरहै॥अरसर्वकोउत्प
तादेनहाराहै॥अरदूरकरनहाराशोककाहै॥अरप्रकाशरूपहै॥अरसर्वकोअ
ज्ञानमोपरवर्तावनहाराहै॥अरसर्वपरउत्पतारषतहै॥अरसर्वकोप्रकाशदेन
हाराहै॥अरसर्वगंभीरपदार्थोकाधारनहाराहै॥अरसर्वपरकरुणानिधिहै॥जैसे

सेइंद्र की प्रशंसन ताको वासतेरहताजा पुनीके चाहतेंहैं मैं ॥ अरु ब्रह्म को जो गंभीर शब
द वर्नन कीया सो गंभीर ता शबद वाके कीया सो है ॥ जो सर्व उपासना ब्रह्म वही की सो गं
भीर सब्द जो आत्मा है ताको प्राप्त होतहे ॥ अरु संपूर्न मंत्रो मो वही है ॥ अरु सर्वमय तो मो
यापक है ॥ याही सो साधु ब्रह्म के ही जो आदेतहे उपासना चाहीये करनी ॥ या भांत सो
नकारिषीश्वरने कहा ॥ नमस्कार ज्ञानीयो को नमस्कार सो नकारिषीश्वर को जो नम
स्कार को योग है ॥ औ ताजरवकताको ज्ञानकी प्राप्त है ॥ इति सोनकारिषीश्वर उप
निषद अथर्वण वेद भाषा समाप्तम् ॥ ४४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
अथ ब्रह्मविद्या उपनिषद अथर्वण वेद ॥ प्रजापति सर्व सेवको प्रति उवाच ॥ ॐ ॥
ब्रह्मविद्या तुमको उपदेसतहैं मैं ॥ जो आत्मज्ञान के ज्ञान सो संपूर्न शास्त्रो के रहसे
का ज्ञान होतहे ॥ अरु यहि आत्मज्ञान सर्व सो श्रेष्ट है ॥ अरु यासो श्रेष्ट अवर नहीं क

ध्या॥ अरु यहि ब्रह्मविद्या वहि पदार्थ है जा सो ब्रह्मा अरु विश्न अरु महेश उतपत भये हैं॥ अरु
र पुनः वाही मो लीन होते हैं॥ अरु वा विश्न जो प्रतिपालक है॥ अरु सर्व उवरप्तने हैं॥ अरु
र सर्व व उवरसरद्दम तासों व्यापक है॥ अरु री बिस्तार को प्राप्त होरहा है॥ अरु र कामवां के आश्र
ये है॥ अरु री दृष्टि मो अनेक रूप राषत है॥ या ब्रह्मज्ञान सो सर्व एक ही ब्रह्म जो है सो जा
न्या जात है॥ अरु यहि ब्रह्मविद्या तत्व ब्रह्म को है॥ अरु र सर्व विद्या अरु ज्ञान शास्त्रो मो
यही तत्व है॥ अरु यही ज्ञान अग्नि है॥ वासते दग्ध करने अरु वर्ण॥ अरु रीबद्ध फक्त अरु अ
ज्ञान ताके॥ अरु संपूर्ण ज्ञानी योने अरु तत्ववेत्तों ने यो कहा है॥ जो वीहि ब्रह्मविद्या केव
ल एक नाम गंभीर यही प्रणव है॥ जाको ॐ कहीयत है अरु यहि गंभीर नाम प्रतिपा
लक है॥ अरु अक्षर यानाम के यही जो शरीर है जं का॥ अरु रस्थित इस्थान या नाम
का अरु मारग या नाम की धारना का॥ अरु लीन होना या नाम मो॥ अरु तीन देव

ताया नाम के अर तीन लोक या नाम के अर तीन वेद या नाम के अक्षर तीन अग्नि जो या
नाम मो वसत है ॥ इन संपूर्ण पदार्थों को जो तुझे कहत हों मैं ॥ तथा या ॥ तीन मात्रा जो
या अक्षर की या है सो स्थूल सूक्ष्म कारन यहि तीन शरीर है यांके ॥ अर्धमात्रा जो केवल
आनंद है ॥ सो जीवात्मा है वांका ॥ अर प्रथम जो अकार स्थूल शरीर है वांका ॥ ताको ब्र
ह्मसंज्ञा ता अर आत्मज्ञ यों कहत है ॥ जो वहि अकार रिग वेद अर यहि अग्नि जो है पृ
गट है ॥ पृथ्वी अर ब्रह्मा है ॥ अर द्वितीय सूक्ष्म शरीर वांका जो उकार है सो युजुर वेद अ
र सूर्य रूप अग्नि अर अंतरिक्ष लोक अर विष्णु है ॥ अर तृतीय कारन शरीर वांका
जो मकार है ॥ सो साम वेद अर विश्वानर अग्नि अर स्वर्ग लोक अर महादेव है ॥ अर
ब्रह्मज्ञाता या भांत कहत है ॥ जो प्रथम अकार अक्षर को सूर्य के मंडल वत ब्रह्मरंध्र
मो प्रकाश रूप ध्यान चाहीये कीया ॥ अर द्वितीय उकार अक्षर को वाही स्थान मो चिंत

करकेमंडलवतप्रकाशरूपध्यानचाहीयेकीया॥अरत्रितीयमकाअक्षरकोवाहीठव
रमेंविद्युतकीजोतवतलाटसीद्धंयेसोंरहतध्यानचाहीयेकीया॥अरयहितीनही
मात्राजोरविअसिअरविद्युतवतअग्निधंयेसोंरहतहै॥मध्यमंडलइनती
नहीअउनोकेप्रकाशअर्धमात्राकेजोचतुर्यपदप्रणवकाहेदीपकीजोतवतध्या
नकरे॥जैसीलिषनेमोप्रणवेऊर्धमात्राकोलिषतहै॥तैसहीभावनाकरे॥अर
मारगअभेदहोनेकअरप्राप्तहोनेसाधवस्लेके जोकेवलप्रकाशहीहै॥प्रकाशजो
तयाअर्धमात्राहीकाहै॥जोसदाहैअरयांकोप्रणवेकेशरीरकीशिषाजाने॥अ
रवाअर्धमात्राकीजोतकोजाने जोमारगसुषमनाकेसोत्रिकुटीमोप्राप्तभयेहै
अरभिसकीतंतवकेसदृशअथवाकमलकीतंतकेसदृशअतिसूदमहै॥अरसूर
यकेप्रकाशसोअधकप्रकाशहैवांका॥अरसाधसुषमनाकेवहउसहस्त्रनाड

कोप्रचतभई है॥ ज्ञानयाभेदके कोवहि अर्धमात्राप्रणवकी है॥ शरीरत्यागके कालमोमा
गवासुषमनाके सो जो अंतिस्वदा ओंकारप्रकाशरूप है॥ सूर्यके मंडलमो प्राप्तकरके
अरु समुद्रवा मंडलके छिद्र करके॥ अरु वासो निकसकर ब्रह्मलोकमो प्राप्तहो
त है॥ अरु उपासना या अर्धमात्राकावालोकमो अतिशय तवान अरु संपूर्णगंभी
रलोकोकी चाहोको प्राप्त होत है॥ अरु मारग उचारनेअभ्यासकरने कायाभांत
है॥ तथा॥ जैसे शवद घरीयालका जो घरीयालके वजावनेसो प्रथम अगाधक
होत है॥ अरु पाछेसो शनैःशनैः जांठ वरप्रगट भयाथा तहांहीलीन होत है॥
तैसेहीचाहीयत है जो प्रथम अतिगंभीरधुनसो प्रणवको उचरे॥ अरु जाठव
रसो वहिधुनप्रगट भई थी तहांहीवांकोलीनकरे॥ अरु जवलग एकनामपर्न
न है॥ तवलग अवं नामन उचारे॥ अरु सदायहि अभ्यासु स्वसांचित्तसो कीपा

करे॥ औरजोकोऊस्थितमनकीऔरसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिकोचाहै॥ वहिस्ययप्रणवकेया
भांतउपासनाकरे॥ औरयाउवरमोवहिशब्दप्रणवकालीनहोताहै॥ सोपारब्रह्महै
औरशब्दजोब्रह्मसेसोप्रगटभयाहैसोप्रणवहीहै॥ औरजबप्रणवपर्नताकोप्राप्तहो
तेहैतबवाब्रह्महीमोलीनहोतेहै॥ औरशब्दजोउच्चारनेप्रणवकेसोप्रगटहो
तेहै॥ वहीशब्दहैजोचिदाकाशसोप्रगटभयाहै॥ औरपुनःवाहीमोलीनहोतेहै॥ जो
कोऊयाभांतब्रह्मकोजानेजोवहिशब्दप्रणवरूपाद्वारवाहीसोप्रगटभयाहै॥ औरवा
हीमोलीनहोतेहै॥ औरवाकोअतिद्रिऊऔरस्माचलजानकरसायवोकेउपासनाक
रे॥ वहिअविनाशीपदकोप्राप्तहोताहै॥ जोनामहैसोरूपसोभिंनहै॥ औरयहि
नामसंपूर्नवेदऔरशास्त्रोमोऔरयकोसोनिश्चभयाहै॥ जेप्रापुनेस्वरूपसो
भिंननही॥ नमस्कारज्ञानीयोको॥ श्रोताऔरवक्ताकोप्रणवसोएकताहै॥ औरस

नामरूपसेभिन्नहै॥

र्वकोआनंदहै॥ इति ब्रह्मविद्या उपनिषद अथर्वणवेद समाप्तम॥ ४५॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
अथ अथर्वशिषा उपनिषद॥ ॐ॥ पपलाद अरु अंगिरा अरु सनतकुमार अथर्वा रिषी
श्वर सो जो नमस्कार कीयो गहै प्रश्न करत भये॥ प्रश्न॥ प्रथम ही उतपत्र कारन सर्व के ने
किया कहा॥ अरु उपाशना किया है॥ अरु को भांत उपाशना करे अरु करवावे॥ अरु उपाश
ना करनहारा कवन है॥ अरु उपाशना किसकी चाहीये करी॥ अथर्वे वे ने॥ ॐ कहकर
कहा॥ सर्व सो आदि यही नाम उतपत्र करनहारे ने कहा॥ अरु उपाशना यही है॥ अरु
यही उपाशना करत वे है॥ अरु अपुनी उपाशना करते है॥ अरु या भांत उपाशना करे॥
अरु करवावे॥ तथ्य था॥ यहि नाम जो आत्मा गंभीर है सो या मां त्यचतुर पाद राषत है॥ तथ
था॥ प्रथम पाद वां का प्रथम मात्रा जो अकार है॥ अरु वामो जाग्रत अवस्था अरु रिगवे
द संयुक्त निश्कृतो सहत वचत है॥ अरु ब्रह्मा अरु अष्ट वशा देवता है॥ वा अकार को अरु

२३१ याउवरुअष्टवशयाकोज्ञातवेहै॥पंचसूक्ष्मभूतजोपंचीकृतनहीभये॥अरुषष्टम
मनअरुसप्तमबुद्धिअरुअष्टमअहंकार॥अरुयाहूकारकोगायत्रीछंदहैसोवा
मोलीनहै॥इतिप्रथमपाद॥उकारजोद्वितीयमात्राहैसोद्वितीयपादहैवाको॥अरुतम
प्रवाकेसंपूर्णअंतरिक्षलोकअरुयजुर्वेदइनतेसहितवर्चतेहै॥अरुविष्णुअ
रुएकादशरुद्रयाउकारकेदेवताहै॥अरुयाउवरमेपांचकर्मइंद्रिअरुपांचज्ञान
इंद्रिअरुएकमनयहीएकादसरुद्रज्ञातवेहै॥अरुत्रिष्टुपछंदहैयाको॥अरुसू
र्यकीअग्निनास्थितहैयामे॥इतिद्वितीयपाद॥मकारजोतृतीयमात्राहैसोतृती
यपादहैवाको॥अरुमप्रवाकेस्वर्गलोकअरुसामवेदसंपूर्णइनतेअरुद्युनो
सहितवर्चतेहै॥अरुमहादेवअरुद्वादसआदित्यदेवताहैयामकारके॥अरुज
गतीछंदहैयाको॥अरुविश्वानरजोतृतीयअग्निहैसोस्थितहैवामे॥इति

त्रितीयपाद॥ चतुर्थपाद जो अर्धमात्रा है और शब्दरूप है॥ और मकार सो अभेदरूप है
और बिंदरूप सो भिंनरूप देषीयते है॥ अतएव जो भिंनता सो लिषते है॥ और नामवों को
अर्धमात्रा ही है॥ और यहि अर्धमात्रा ब्रह्मविद्या है॥ और अनाहदस्वरूप शब्दब्रह्म
है॥ और आत्मज्ञान है॥ और अथर्वणवेद संपूर्ण इसको तो स्हत नक्षत्रवों के षचते है॥ दे
वतावों का परमात्मा है॥ और अकार उकार मकार और ब्रह्मा और विष्णु और महे
श और तीनही लोक और तीनही अग्नि मंत्रवों के लीन होते है॥ और विराट नाम षेदे
वों का॥ और अग्निवाणी के तत्सात्म प्रकाश है॥ इति चतुर्थपाद॥ प्रथम मात्रावों की के
से चतुरक्त तासो मिश्रत स्वेत रूप ध्यान चाहीये कीया॥ और ब्रह्मा को देवतावों का जाने
और द्वितीयमात्रा को किंचत सरदस्याम तासहत गऊडूके रूप ध्यान करतव्य है॥ और
विष्णु को देवतावों का जाने॥ और त्रितीयमात्रा को स्फटकवत स्वेत रूप ध्यान करे॥

कारमहादेवकोदेवताजानै॥अरुअर्धमात्राअचतुर्यकोसंपूर्णस्वरूपोमेध्यानकरै॥अरुदेवतावां
कावापुरषकोजानेजोसर्वठवरपूर्णहै॥अरुवहिअर्धमात्राजोब्रह्मविद्याहै॥सोसाध्यत्र
कासजपुनेकेमध्यतीनहीमात्राकेप्रकाशतसतहै॥चाहीयतहैजोसाध्ययासार्धत्रिमा
त्राकेजोपरीप्रणवहैउपाशनाकरै॥अरुखरवावे॥अरुसाध्ययाअचतुर्मात्राकेजोसर्व
पदार्थवामोहैएकप्रणवसर्वनाकोप्राप्तहोतहै॥अथमारगउच्चारनेप्रणवका॥चा
चाहीयतहैजोअकाररूपब्रह्माकोनाभकमलसोसाध्यप्रणवकेउच्चापनकरकेहृदेक
मलमोजोउकाररूपविष्णुस्थितहैतामोलीनकरै॥पुनःवाह्यहीकोवाठवरसोम
भ्रिकुटीकमलकेजोमकाररूपरुद्रहैतामोलीनकरै॥अरुपुनःइनतीनहीकोब्रह्म
रंध्रमोमध्यअर्धमात्राकेलीनजानै॥यामांतजोवर्ननकीया॥जोकोउसाध्यप्रणव
केउच्चारवांकावकरे॥सोसाध्यगंभीरप्रकाशकेप्राप्तहे॥अथनामप्रणवकेवर्ननं॥

वहि प्रकाश गंभीर प्रथम पद मे जे अकार है प्राणपवन को ऊर्ध को गमन करवावत है॥ अरु ते व
याका नाम प्रणव भया॥ अर्थ यहि जो ऊर्ध को ले जानहारा प्राण का॥ अरु प्राप्त करनहारा
मह गंभीर पद को॥ अरु या गंभीर नाम का प्रलेहूं नाम है॥ अर्थ यहि जो लीन करनहारा है
॥ अर्थ यहि जो यहि नाम का सपुने उपासना करे प्राण को अंत काल मो सुषमना के मारग सो
शरीर सो निकाश कर मह परमात्मा मे लीन करत है॥ अरु जो को ऊ या नाम की उपाश
न नहीं करत॥ प्राण वा के अवर मारग सो निकस कर वा लोक मो जो उनके कर्मैं॥ अनु
सार है गमन करत है॥ अरु यहि नाम का सपुने उपासना करे प्राण को अवर मारग गमन
करन नहीं देत॥ अरु निश्चे सो मह आत्मा ही मे लीन करत है॥ अरु नाम या गंभीर ना
म का चतुर्धा हूं है॥ अर्थ यहि जो चतुर ही वेद मह या नाम गंभीर मे है॥ अरु ब्रह्मा
और विष्णु अरु महादेव जो गंभीर देवतों के देवता है॥ अरु चतुर्थ ब्रह्म जो उतपन कार

नसर्वकाम्मनाहै॥जोयहिसंपूर्नमन्त्रयानामहीकेहै॥अक्षरअवरनामयाकाधारनाहै
अर्थयहिजोसर्वकोधारनाहारा॥अक्षरतारहूनामराषतेहै॥अर्थयहिजोयाहरषक
रषोकरूपसमुद्रसेअपुनेउपाशककोतीरपरप्राप्नकरनहारा॥अक्षरअवरतारके
अर्थयहिजोब्रह्मतृहीहै॥अक्षरविद्युतहूनामयागंभीरनामकोहै॥अर्थयहिजोप्रति
पालकसर्वकाहै॥अक्षरब्रह्माहूनामयागंभीरनामकोहै॥अर्थयहिजोयहिनामगं
भीरकेमनोकोप्रकाशहोतहै॥अक्षरविद्युतहूनामयागंभीरनामकोहै॥अर्थयहि
जोदेवतामेअक्षरप्रकाशोमोसर्वसेंश्रेष्ठहै॥अक्षरनामकीप्रथममात्रामेजाग्रत
अवस्थाहै॥अक्षरद्वतीयमात्रामेस्वपनअवस्था॥अक्षरत्रतीयमात्रामेसुषप
तेअवस्था॥अक्षरमन्त्रचतुर्थअर्धमात्राकेतुरीयाअवस्थाहै॥जोजामेआत्माका
साक्षातकारहै॥अक्षरजोकछुमन्त्रचतुरहीमात्राकेहैसोसंपूर्नमन्त्रएककमा

वाहूकेहै॥ जोकोउआदिसोसंपूर्नआउप्रयंतयाप्रणवहीकाउचारकरैसोब्रह्माहै॥ अ
रजोकोउयानामसोमननहीसोउचरै॥ अरसमदमकरैरीवहमुहै॥ अरजोकोयाना
मकोप्राणायामकरैरमध्यनामइस्थानकैजोहिंरनगरमआधिष्टाताप्राणको
हैताकोस्थितकरैसोमहादेवहै॥ अरजोकोउहिंरनगरमैकोवसकरयानाम
गंभीरकोमध्यअनाहदकैराखे॥ अर्थयोहैजोआपकोअरयानामकोलीनकरैसो
आत्माहीहै॥ जासोउतपतभयाहै॥ अरब्रह्माआरीवहमुअरमहेशअरसर्वदेवता
अरआधिष्टाइंद्रेकेअरसंपूर्नइंद्रेअरसर्वतत्वअरउतपतअरताउतपतकर
नहारियोकाहोतहै॥ अरआपहीउपाशकअरआपहीउपाशहोतहै॥ अरआ
पहीसर्वकाईश्वरहोतहै॥ अरआपीचदाकाशवतादृड्हातहै॥ अरजोकोउएकन
मेषआघवाएकस्वासप्रयंतहृमध्यदृड्अभ्यासप्रणवकेअर्धमात्रामोलीनहो॥

२३४ वीहैपुनसर्वयज्ञोकेकोअकारपुनसर्वजपोकेकोअकारपुनसर्वतपस्याकेकोअकारपुनस
र्वत्यागोकेकोअकारइकंतसेवनकेकोअकारपुनसर्वकर्मोकेकोअकारयज्ञोकेकोप्राप्तहोतहै
याहीउपासनासंन्यासआश्रमकेकोअवश्यहै॥जोसर्वत्यागकरकेरयाहीउपासना
सोप्रवर्तहै॥अकारयाउपासनासोकेवलआनंदमयहोतहै॥जोकोउयाअथर्वशि
खाकाउचारकरे॥सोपुनःमद्रुशरीररूपपाशकेनप्रवेशकरे॥नमस्कारज्ञानीयो
केअभ्यासताअकारवकताकोज्ञानकीप्राप्तहै॥अकारसर्वकोआनंदहै॥इतिअथर्वशि
खाउपनिषदअथर्ववेदसमाप्तम॥४६॥ओं॥ओं॥ओं॥अथमांडूक्यउपनिषदअ
थर्ववेद॥ओं॥जोअक्षरहैप्रणवहै॥अरथयाहिजोकछुभयोहै॥अरजोकछुहोतहै॥अ
रजोकछुहोगा॥संपूर्णवहीहै॥अरजोकछुयामैंतभीविष्यतवर्तमानसोपरांहैसर्व
वहीहै॥अतेवजोकछुहैयहीप्रणवहै॥जोब्रह्महूहैअरआत्माहूहै॥जैसेप्रणवच

तुर्य्यमात्रा गावत है॥ तैसे आत्मा हूं चतुर्पाद राषत है॥ प्रथमपाद वांको यहि जाग्रत अवस्था
जो प्रगट है॥ अरु यामो सर्व्व दिशा पदार्थों को ज्ञाता है॥ अरु या प्रथम चरन मो सप्त अंग
धारत है॥ तथ्य था॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध षष्ठम मनु सप्तम बुद्धि॥ अरु सो यथा नवद
स पदार्थों के मद्ध्य जाग्रत के प्रवर्तत है॥ तथ्य था॥ अरु पांच ज्ञान इंद्रे अरु पांच कर्म इंद्रे
अरु पांच सूक्ष्म तत्व अरु एक मनु यहि जो षोडश कला है॥ अरु प्रकृत के तीन गुन अरु ये
यहि जो या प्रथम चरन सो स्थूल पदार्थों को वहि आत्मा जो इश्वर है॥ अरु रविं स्थान रक्ता
गिन के रूप सो सर्व जीवधारी तें मो प्रकाशित है॥ सो गाही के होत है॥ इति प्रथम पाद॥
आत्मा जो याको ऋषि ध्याता विश्व नाम राषत है॥ ॐ॥ अरु द्वतीय पाद जो स्वप्न अवस्था
है॥ यामो हूं सब तो वान वदस पदार्थों के जो ज्ञा सो मद्ध्य जाग्रत के रसो को गाही कभया॥
या सूक्ष्म पदार्थों के रसो सा यथा नवदस पदार्थों को सूक्ष्म शक्ति तो के अंगीकार करत है॥

अरु अधिष्टाता सर्व जीव धारीयो का मध्य अवस्था के तैजस नाम राषत है॥ अर्थ यहि
जो प्रकाश रूप या भांति जो स्वप्न अवस्था विषे अनुभव इह द्वितीय चरन आत्मा का है॥ द्विती
य चरन आत्मा का॥ इति द्वितीय पाद॥ अरु त्रितीय पाद वहि है अवस्था है जो या मो चाह नही
राषत कछु॥ अरु जो कछु जाग्रत अरु स्वप्न मो देषीयत है सो या मो नही द्रिष्टि परता॥ अरु
याही को सुषुप्ति कहत है॥ अरु मध्य या अवस्था के जीवात्मा अरु परमात्मा एक होत है॥ अ
रु या अवस्था मो केवल सत चित आनंद ही होत है॥ अरु अपुने आनंद मो ऐसा मग
न होत है॥ जो अवरि किस पदार्थ का ज्ञान नही राषत॥ अरु अधिष्टाता या सुषुप्ति अ
वस्था का प्राज्ञ नाम राषत है॥ अर्थ यहि जो केवल ज्ञान रूप है॥ इति त्रितीय पाद आ
त्मा का॥ यही आत्मा धनी सर्व का है॥ अरु यही ज्ञाता सर्व का है॥ अरु यही अंतरजामी सर्व का
है॥ अरु यही उतपति इस्थान सर्व का है॥ अरु स्थित अरु संघार कारन हू सर्व का वही है॥

अरु चतुर पाद वांका जो तुरीयाअवस्था है ॥ सो जाग्रत अरु स्वप्न सो परा है ॥ वहि या सुषपत हू
सो अतीत है एक अरु परा है ॥ अरु या भांत अरु वरनत वेद की मो वर्नन भया ॥ तद्यथा ॥ जी
वात्मा अरु परमात्मा की एकता जो सुषुप्ति मो वरनन भई सो या भांत हू न ही सकी
त यत कहि ॥ अतेव जो परमात्मा मो जीवात्मा कलपत है ॥ अरु याहि जीवात्मा परमा ही है ॥
अरु वां को ज्ञाता हू न ही सकीयत कहि ॥ याते जो अज्ञाता अरु ज्ञाता याहि द्वय ही कलप
गता मो सिद्ध होत है ॥ अरु वाहि दृष्ट पदार्थ न है ॥ अरु वाको उस्मृति नही शकीयत क
रा ॥ अतेव जो वहि गुणातीत है ॥ अरु वां को ग्राहीक न ही सकीयत है ॥ जो षोज अरु आ
कार सो रहत है ॥ अरु वाको साथ मन के न ही सकीयत प्राप्त है ॥ अरु वाहि मद्ध वाक
इंद्रीके न ही आवत ॥ अरु वां को पुरुष कुअचवाइ स्त्री न ही सकीयत कहि ॥ अरु वाको
साथ वाही के सकीयत है जान ॥ नास सर्व लोको का वाही के स्वरूप मो होत है ॥ अरु व

हि केवल आनंद है॥ अरु अद्वैत है॥ याको चतुर पाद आत्मा कहत हैं॥ इति चतुर पाद॥
यही है आत्मा॥ अरु याही को आत्मा जानत है॥ अरु जो मद्रनामो के अरु गुरुएं अरु आदरो
के आत्मा को चाहिये निश्चै कीया॥ तो या प्रणव ही को आत्मा चाहीये जाना॥ अरु प्रण
व ही चतुर पाद राखत है॥ अरु यहि चतुर मात्रा ही वाके चतुर पाद है॥ अरु जो कछु चतर
पाद आत्मा के मो वरनन भया सो संपूर्न चतुर मात्रा प्रणव की मो है॥ अरु जो कछु चतु
र मात्रा ही मो है अरु पुनः हू संदोप सो वरनीयत है॥ तथ्या॥ अकार उकार मकार
अर्धमात्रा यही चतुर पाद प्रणव के है॥ सो आत्मा के प्रथम चरन इस्थान है याको जा
गत अवस्था कहत है॥ अरु अधिष्टता देवता वांको वैस्वानर है॥ अरु वाको अकार
या सो कहत है॥ जो सर्व सो आदि है॥ अरु सर्व पदार्थ वाही सो पाईयत है॥ अरु जो को
ऊ अकार को या भांत जाने सो संपूर्न चाहें अरु पुनी थो को प्राप्त है॥ अरु आदि सर्व

काहै॥ अरउकारजो द्वितीयमात्रा प्रणवकी है॥ अरआत्माके द्वितीयचरन इस्थान है॥ जाको स्वप्नअवस्थानहीयतहै॥ अरअधिष्ठातादेवतावांका प्रकाशकहतहै॥ अर उकार वांको याते कहतहै जो सर्वसेश्रेष्ठहै॥ अथियाहै जोसर्वउवरएअरसअर स्पर्श है॥ अर प्र थअद्वस्संस्पर्श स्मृतिसहतमध्यामेंहै॥ जोकोऊ उकारको याभांतजाने वांकी सं तानमेंकोऊ ज्ञानसेरहतनहोय॥ अरआपपर्शज्ञानसो प्राप्तहै॥ अर मकारजो त्रितीयमात्राअरत्रितीयचरनप्रणवकाहै॥ सोआत्माकेत्रितीयपदइस्थानहै॥ जा सुषुप्तअवस्थानहीयतहै॥ अरअधिष्ठातादेवतावांकाकेवलज्ञानशकतहै॥ अर वांकोमकारयासेकहतहै॥ जोप्रकाशकलीनकरनहारासर्वकोहै॥ जोकोऊयाकोयाभांत जानेसोप्रकाशकसर्वकाअरलीनकरनहारासर्वकाआपमेहै॥ अरचतुरमात्रा जोप्रणवकीहै॥ सोवांकोमात्राअरचरनआत्माकानहीसकीयतकहि॥ अतेवजोव

२३२ द्रवरननमोनहीजागवत॥केवलसर्ववहीहै॥अरसर्वकाहीमोलीनहोतहै॥अरअ
निर्वचनीहै॥अरकेवलआनंदहै॥अरअद्वितीयहै॥अरतुरीयाहै॥अर्थयाहिजोअ
सविद्याकेवलआत्माहीहै॥जोप्रणवनामसोप्रगटभईहै॥वहिआत्माहीयाहि
प्रणवहै॥अरयाहिप्रणवहीवहिआत्माहै॥अरयहीक्रियाअरप्रकाशअरज्ञान
अरआनंदशक्तहै॥जोकोउप्रणवकोयाभांतजानेवहिआत्माहै॥अरआप
मोआपलीनहै॥अरजोकोउप्रणवकोयाभांतजानेवहीज्ञानीहै॥अरवहीज्ञा
नरूपहै॥नमस्कारज्ञानीयोको॥श्रोताअरवक्ताकेपापकोनाशहै॥ज्ञान
कीप्राप्तहै॥इतिमांडूकउपनिषदअथर्वणवेदसमाप्तम॥४७॥ॐ॥ॐ॥
अथतारकउपनिषदअथर्वणवेद॥अरराजयाज्ञवल्ककोप्रश्नकरत
भया॥ॐ॥तारकअर्थयाहिजोसलितासेपारउतारनहाराकवनहै॥अरजो

उतरेहैसोकहतहै॥याज्ञवल्कउवाच॥जैसेजीवात्माअरपरमात्माजोदोहैं॥औअकार
साथउकारकेएकतासोप्राप्तहोतहै॥तबउँकारहोतहै॥अरज्ञातिप्रकाशकहै॥अर
पुनः मकारजोमध्यकेस्थितहैताकोनमस्कार॥अरअर्धचंद्रजोऊर्ध्वउनतीन
हीकेउदरमेंहै॥अरमस्तकमहादेवकेपरहैताकोनमस्कार॥अरमध्यवाअर्धचं
द्रकेजोशब्दरूपबिंदहै॥ताकोनमस्कार॥अरमध्यवानादरूपबिंदकेजोआनंदहै
ताकोनमस्कार॥प्रथमअकारद्वितीयउकारत्रितीयमकारचतुर्थचंद्रकलापं
चमबिंदषष्ठमनादयाकोएकनामप्रणवप्रर्नहोतहै॥अरयहीब्रह्महै॥अरयही
आत्माहै॥अरयहीसतचितआनंदहै॥अरइहीविद्याहै॥अरयाहीकोचाहीये
जान्या॥अरइहीचाहीयेजान्यो॥अरयहीचाहीयेउचार्या॥अरयानामकोतारक
यासोकहतहैं॥जोसंसाररूपसमुद्रतासेआपुनेउपासककोतीरपरप्राप्तकरन

२३८ ओं तारक मंत्र है
हारा है॥ अरु याही सो वाको तारक हू कहत है॥ पुनः याज्ञवल्क्य भारद्वाजसु से वचन प्रति उवाच॥
साध्यन्निश्चे आत्मक बुद्धि के समझ तारक अर्थ यहि जु तारनहारा या नाम की उपासना
सो कवन है सो तू ही है॥ अरु जो वात्मा हू अरु आत्मा हू तू ही है॥ अरु सर्व तू ही है॥ अरु जो
कोऊ साध्य या नाम के उपासना करत है॥ यहि नाम उपासक अपुने को पाप शक्ति सु के
सो अभय करत है॥ अरु तीर पर प्राप्त करत है॥ याही सो वाको शक्ति तासो उतारनहारा
कहत है॥ जो कोऊ ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति को चाहत है ताको चाहीयत है॥ या नाम को जो केव
ल ब्रह्म है उच्चार करे॥ निस्संदेह वोह सर्व पापो को त्याग कर तीर पर प्राप्त है॥ अरु मृत्यु
के भय सो मुकत है॥ अरु ब्रह्महत्या के पाप सो अरु गर्भपात के पाप सो अरु वा पापो
सो जो संसार में कोऊ कपट सो मृत्यु को प्राप्त कीया है॥ अरु सर्व संसार के कष्टो सो अरु भ्र
मणो सो मुकत है॥ अरु जो कोऊ या उपनिषद को श्रवण हू करे॥ वोह हू तैसे ही सर्व पा

पोसो मुक्त होकर सदा उन मुमुक्षुत इस्या नो मो प्राप्त है॥ अरु अविनाशी है॥ नम
स्कार ज्ञानीयो के॥ अरु याज्ञवल्क को॥ ॐ हरे॥ इति तारक उपनिषद समाप्तम्॥ ५८॥
ॐ॥ ॥अथ उपनिषद प्रणव॥ या उपनिषद मो उच्चार प्रणव वर्णन ता प्रणव की मो व
५ र्णन भये है॥॥॥ ईश्वर ने ब्रह्मा को नदृष्टि अना मे कमल के उत्पत कीया॥ अरु जब ब्र
ह्मा प्रगट भया॥ तब सो प्रत्यक्ष उने वीचारत भया॥ कहि कवन सा एक अक्षर है तुम्हार है॥
जासो सर्व चाहो की पूर्णता है॥ अरु वा सो सर्व लोकों को अरु सर्व देवत्यो को अरु सर्व वे
दों को॥ अरु सर्व वेलां सहित यज्ञों को अरु वा के फलों को अरु सर्व चाहो को अरु सर्व ज
उ अरु चेतन पदार्थों को समझे मै॥ या भांत ब्रह्मा ने वीचार कर कर सर्व रसो का त्या
ग कीया॥ अरु सर्व रसो के त्याग सो वा अक्षर तुम्हार को देषत भया॥ अरु ज्ञान तम
या॥ अरु वहि नाम जे च्चतुर मात्रा राषते है तां के द्वय भाग है॥ एक भाग अकार उका

र ॥ अरु द्वितीय भाग मकार आरनादरूप अर्धमात्रा ॥ अरु व्यापक सर्व मो है ॥ अरु धनी सर्व को है ॥
अरु सदा नूतन है ॥ अरु आत्मा की वा कुंडली है ॥ अरु आत्मा ही है ॥ अरु अधिष्ठाता देवता
वों को है ॥ आत्मा है ॥ अरु साथ प्राप्त होने या एक नाम जो चतुर मात्रा सो ॥ अरु हृदय भाग सो
पर्ने होत है ॥ संपर्ने या की मात्रा के भेदों को प्राप्त हू जीयत है ॥ अरु याही नाम के भेद सो
अरु ज्ञान सो ब्रह्मा सर्व चाहे ॥ अरु सर्व लोकें ॥ अरु सर्व सुरें ॥ अरु सर्व यज्ञ ॥ अरु शब्दों अ
र सर्व फलें ॥ अरु सर्व जीव धारीयों जड अरु चेतनों को प्राप्त भया ॥ अरु प्रथम उकार रू
प सो अपक अरु सर्व अपवर्गों को अर्थ या हि जो वा के कार्य को ॥ अरु जो पदार्थ षंड वंडे है ॥
ता को जानत भया ॥ अरु द्वितीय मकार अरु अर्धमात्रा जो शब्द स्वरूप है ता सो
अग्नि के प्रकाश को जानत भया ॥ अरु प्रथम मात्रा सो जो अकार है पृथ्वी को अरु
अग्नि को ॥ अरु उकार तृतीय जीस्व इष्ट को ॥ अरु ऋगवेद को ॥ अरु भूः जो है प्रथम अक्षर गायत्री का

ताकोऔरगायत्रीछंदकोऔरनवरिच्चोसामवेदकीयोंको॥ औरपूर्वदिशाकोऔरहृयमास
जोवसंतरितकेहै॥ ताकोऔरमनुष्यशरीरकेवाकइंद्रेऔररसनाऔररसनासोजोरस
कोग्राहीकहूजीयतहै॥ इनसेपूर्नपदार्थोंकोसमझतभया॥ औरद्वितीयमात्रासोजो
उकारहै॥ औरअंतरिक्षलोकऔरपवनऔरयजुर्वेदऔरद्वतीयअक्षरगायत्रीकाजोभु
वः है॥ औरत्रिष्टुपछंदऔरपंचदसरिच्चोसामवेदकीया॥ औरपश्चिमदिशाऔरहृयमाग्री
सउष्मकालकोरितके॥ औरमनुष्यशरीरकेप्राणऔरनासकाऔरघ्राणइंद्रेसोजोगंध
कोग्राहीकहूजीयतहै॥ यासर्वपदार्थोंकोसमझतभया॥ औरतृतीयमात्रासोजोम
कारहैस्वर्गलोकऔरसूर्यऔरसामवेद॥ औरतृतीयअक्षरगायत्रीकाजोस्वः है॥
औरजगतीछंदऔरसप्तदसअवरिच्चोसामवेदकीयां॥ औरउतरदिशाऔरवरखारि
तकेहृयमासऔरमनुष्यशरीरकेप्रकाशचक्षुइंद्रेकाऔरवाप्रकाशसोरूपकोग्राहीक

२५० कहोगा॥ एते पदार्थां को समझ उत भया॥ अरु चतुर्थ अर्धमात्रा सो जो शब्द रूप है अरु केला क
अरु अथर्वण वेद अरु रूप अरु इनि शाब्द अरु संपूर्ण नक्षत्र अरु ब्रह्म वेद के संपूर्ण नाम
सो जीवात्मा अपुने को अरु चतुर्थ अक्षर गायत्री का जो तत्व है॥ अरु अनुष्टुप छंद अरु
सप्तविंशति अरु अवरीरंचा सामवेद की यां अरु दक्षिणादिशा अरु सीतकाल की रितु छय मा
स अरु मद्य शरीर के मन अरु ज्ञान अरु ज्ञान सो या पदार्थ को ग्राही कहू जीयत है॥ एते
पदार्थां को समझ उत भया॥ अरु सावधान होइकरि ने वा शब्द के जो मकार अरु चंद्रकला
सो प्रगट होत है॥ अरु वेद आथर्वण अरु उतपति संघार संसार का अरु उतर ब्रह्म वे
द के॥ अरु संपूर्ण गंभीर मंत्र अरु सर्व वेदों के उपनिषद अरु वेद की आज्ञा अरु या
प्रकार सप्त नाम गायत्री के॥ तद्यथा॥ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ
तपः ॐ सत्यं॥ इति सप्त व्याहृति॥ अरु सप्त स्वर जो सो सर्व उपनिषदों की प्रगटता भ

इहै॥ और वीनादिकन ने कवजंत्र और नाचवा और गायवा यासर्व पदार्थो को समकत भया॥ और
चित्र रघराज्ञाजोराग्गोमको है॥ ता सहित सर्व रागऔर प्रकाशविद्युत को और बृहती छंद जो गं
भीर सर्व छंदो सो है॥ और रात्रिसू और तीन और वरीरचोसा मवेद कीया॥ और ऊर्ध्वदिशा
जो स्वर्ग कर स है॥ और त्रयोदसपोह कीयां दिसों त्रयोदस्यै वैशाख की संक्रांति पर्यंत ऋ
चतुरमास और दयारितु है॥ और मनुष्य शरीर के स्ववर्ण इंद्र और अरन और यासो जो शव
को नाही नह जीयत है॥ इन संपूर्ण पदार्थो को समकत भया॥ यहि प्रणव जो एक नाम है॥
सो संपूर्ण नी रचो है॥ और ब्रह्मा के वीचार और तपस्या और नाही कहो ने सो आगे ही प्रग
ट थाय ही ब्रह्म है॥ और इही बीज वेद का॥ और या प्रणव सो ही सर्व मंत्र प्रगट भये है॥
और प्रणव वाहि पदार्थ है॥ जो को ऊ या मंत्र को समद मसो रहत और गुरु की टहल सो
हीन॥ और या काल मो उचार करन्ना मंत्र का नही कहा वा काल मो उच्चार करे॥ और

गउच्चारकरने सो जो अनंता मइ मंत्रके अक्षर होत हैं॥ और का मंत्रकी शक्ति जो बीन होत है॥
और स्त्री मिलत जो प्राप्त होत है॥ और मंत्र फलदायक नहीं होत॥ सो याते मंत्रके प्रणवके उच्चार
ने सो जो प्रणव रहस्य अर्थ वर्णका है॥ और सर्व मंत्रोंने अपुनी शक्ति और आपुणे गुने
कों देत हैं॥ और वहि मंत्र अनंत नंता सो पर्नै ताको प्राप्त होत हैं॥ और जो पुन्ने उपाशकके
फलदायक होत हैं॥ तातपर्य यहि जो मंत्र प्रणव सहत उचारीयत है॥ वही अभ फलकोंदे
त हैं॥ और या मंत्रमो प्रणव नहीं होत वहि निह फल होत हैं॥ जैसे इस्त्रीके प्रसूतकाल
मो जो सिसु गर्भ सो टेडो निकसत हैं॥ तो माताकों मृत्यु पर्यंत दुषदायक होत हैं॥ और जो
सुद्ध निकसै तो वहि कारन सुषक होत हैं॥ ताते प्रणवको आद्यादि और अंत मंत्रके ज
प करे॥ तो वहि सदैव मारग उपाशकको उत्तम गतको प्राप्त करत हैं॥ दुखदायक नहीं होत
या है॥ सो आद्यादि और अंत संपर्न करै मैं॥ और यज्ञो के प्रणवको चाहीये उचार॥ जो वहि यज्ञ

॥आदिक कर्म अजीव घूरर्न ताको प्राप्त है॥ अकार अक्षर वेद की श्रुति मो वर्नन भयो है॥ तथा
प्रणव एकही रिचा है जो आदि अरु अंत संपूर्न कामो के वांका अंगीकार करीयत है॥ वाहि रि
चा जो एकही नाम है सो आकाश वत गंभीर है॥ अरु आकाश हू वही है॥ जो सर्व के अधिष्ठा ता
इंद्र के अरु अवर सर्व देवता मद्ध वांको स्थित है॥ जो कोउ वांको नहीं जानत वहि वेद अर्थ वे
द की श्रुति को अभ्यास करत है॥ सो जन्म मद्धि वांको सिद्ध न होगा॥ वहि जो वांको जान राष
राषत है सो अमरपद को प्राप्त होत है॥ केवल सर्व इही एक नाम प्रणव है॥ जो ब्राह्मण कछु
कामना राषता है ताको चाहीयत है॥ जो त्रिदिवस अहार रैन निराहार ब्रत करे॥ अरु कु
शा को विछायकर वापे सुषासन सो स्थित है॥ अरु मुष ऊपुना पूर्व दिशा की ओ
र करे॥ अरु तू इसी को अंगीकार करे॥ अरु एकएक अहर्निसि मो सहस्र सहस्र जाप प्र
णव का मद्ध मन न के करे॥ या उपाशना सो जो कामना राषत है॥ वहि सर्व मनोर्थ वां

केसिद्ध होहिं॥ अरु जो अघु कर्म करे तांके फल को प्राप्त हो॥ इति प्रथम अ०॥ ॐ॥ वसिष्ठ नाम
नगारथा जो वाडव रमोहं इन्द्र को चतुरउ अरु सो दैतीने घेरा कीया॥ अरु संतूह जो गंभीर
सुरो के घे॥ सो अति दुःखरूप गडे मो लीन होकर वीचारत भये॥ जो या असुरो को जी
जीतने मो कवन समर्थ होगा॥ तब उँ की उ अरु जो प्रथम गंभीरता तआत्मा है देषत
भये॥ अरु प्रणव को आत्मा का स्तुतवर्णन करने का अर्थ यी है॥ जो आत्मा सो आदि
सो प्रथम प्रणव सो अवर उतपतन ही भया अघु॥ अरु साथ प्रणव के कहत भये॥ तूं
ओम ब्रह्म संपूर्णो के स्रेष्ट है॥ सा घसहाय तेरी के चाहत है हम जो असुरो पर जीत
पावे॥ प्रणव उवाच॥ रत्नातु मारी सो मु ऐश्वर्या सिद्धि होगी॥ जाते मैं अर्थ तुमारे की
सिद्धता मो प्रवर्ते॥ सुरो वाच॥ जो आज्ञा करो तुम॥ प्रणवो वाच॥ वेद के आध्येन करता
जव प्रथम ही मुके उचार करे तब पुनः वेद अध्येन करे॥ अरु जो उचार करने मे रस्सो

रहतवेदअध्ययनकरेतवचेदवांकोफलदायकनहे॥सुरोनेयहिवचनअंगीकरकी
या॥अरउत्तरदिशामोजोयज्ञअरवलकरतेथे॥वाहीठवरमोयुद्धकाआरंभकर
तभये॥अरजवहीप्रणवकोउचारतेवाइस्थानमोगमनकरतभये॥तिसीका
लमोअसुरभयप्रणवकेसोनसुनताकोप्राप्तहोकरभाजे॥अतेवमद्रसर्वकामोके
प्रणवकोउचारहीयेउचारा॥जोकोउयाप्रणवकाअज्ञाताहैसोतिसहकामनमोअपुनी
समर्थतानहीराषत॥अल्पज्ञरहतहै॥जोकोउयाकाज्ञाताहोतहैसंपूर्णवे
दवांकीआज्ञामोप्रवर्ततहै॥वाहीसोजोअनादिरिगवेदकेअपुनेउचारनेकाफल
देतहै॥अरजोअनादियजुर्वेदकेयाकोउचारेतोसामवेदअपुनेअध्ययनकरने
काफलदेतहै॥अरयाकर्मकेआरंभमोयाप्रणवकोउचारतहैवाहिकर्मकेफलप्र
णवहीहोतहै॥अरउचारनेप्रणवकेमोकेवलअपुनाअज्ञापप्रगटहोतहै॥इति

२४३ इति द्वितीय व्याख्यान ॥ ॥ पुनः संसर्ग न सुरें नें उँकार उच्चारन करे ॥ इति शब्द सब प्रथम की
ये ॥ तथा ॥ सत्य अनुमान ताकि याहे ॥ अरु कोभांत वांको चाहीये उचार ॥ अरु साथ को
पदार्थ के याको निश्चय तकरत है ॥ अरु वांको पुनः अथवा प्रकृत अथवा संसर्ग न सुर गुण
कों मद्ध वाके अद्वैत ज्ञान कर उपासना चाहीये करी ॥ अरु वांके अहंकार स्वदेवण कर सर
हत है ॥ अथवा कवहूं न्यूनता हूं को प्राप्त होत है ॥ अरु वांको साथ सदा अंभीर शब्द के अ
थवा सद्य मद्ध शब्द के अथवा सूक्ष्म शब्द के कोभांत चाहीये उचारन ॥ वांका वीहस्त
कीयत है कीहू ॥ अथवा उसी सो है ॥ जैसे से कहण को योग्य है ॥ अरु याजो कछु है वही है
जैसे चाहीये कहा ॥ अथवा साथ वांके है ॥ जैसे चाहीये जान्ना ॥ अथवा जो कछु है
वामों है ॥ या ज्ञान को चाहीये अंगीकार कीया ॥ अथवा यहि संपूर्ण वासते वाही के
है ॥ या भांत चाहीये समझ ॥ अथवा वाको उँ सो है या भांत चाहीये जान्ना ॥ अथवावा

को सत्त है ॥ अरु सर्व काल्ही नकार न हारा है ॥ या भांत तैसे सेस कीये कहि ॥ अरु वाहि अक्षर कवनसा है ॥ जो सात प्रथम अक्षर वांके मिश्रत होने सो वहि प्रथम अक्षर अवर अर्थ का अंगीकार के ॥ अरु वरनन वांका जो एक स्वरूप सो अवर स्वरूप को धारे ॥ भयो है मात्रा वांकी केती है ॥ अरु साधी कस पदार्थ के किस भांत मिश्रत भया है ॥ अरु मन्त्र शरीके उत्तम इस्यान उचरने वांके का कवनसा है ॥ अरु को भांत वांके अक्षरो को चाहीये उचार ॥ उपदेस करता वांको को भांत उचार कर उपदेश करत है ॥ अरु छंद वांका कवन है ॥ अरु स्वरूप वांका कवनसा है ॥ अरु मारग उचरने वांके का मन्त्र संपूर्न के मो के को भांत है ॥ मंत्र प्रणव का कवनसा है ॥ अरु वर्नन प्रणव का कवने से ब्राह्मण मो है ॥ अरु रिगवेद वांके कवन से अक्षर मो है ॥ युयुर वेद वांके कवन से अक्षर मो है ॥ साम वेद वांके कवन से अक्षर मो है ॥ अरु को प्रोजन सो वेद के ज्ञाता आदि सर्व कार्यो के वांको उचरत है ॥ अरु देव

तावांकाकवनसाहै॥ औरउत्तममहूर्त्तवांकावासतेउचरैनेकेमद्रकर्मोंकेकवसा
है॥ औरवरनतावांकेआचारोंकीकिसठवरहै॥ औरस्थितइस्थानवांकाकवनसा
है॥ औरकिसठवरसोप्रगटभयाहै॥ औरमद्रशरीरकेकिसठवरमोहैस्थितवांकी
प्रजापतिरुवाच॥ याहित्रिश औरषट्प्रश्नजोमद्रप्रणवकेहैताकोतीनभागकरक
रवर्ननकरतहोंमैं॥ तत्रयथा॥ मूलवांकावहिओंमहैजोसर्वकाममाहै॥ औरकोएक
मूलवांकाउकारकोकहतहै॥ अर्थयहिजोउकारहीसर्वकेआदिव्यापकहै॥ और
द्वितीयअर्थयहिप्रतिपालकगुणहूसोपराहै॥ याहीसोसमुद्रवतगंभीरओंमसोउकारकीउ
तपतिभईहै॥ जैसेब्रह्मकीगंभीरतासर्वठवरहै॥ तैसेउकारहूसर्वठवरगंभीरव्यापकहै॥
औरउचारवाप्रणवकेआकाशखंडहै॥ औरभिन्नभिन्नहूहै॥ जोरकारअक्षरवांकेकोभिन्नभिन्न
उचारकरीये॥ तोएकारअक्षरवांकेकाहूवहिअर्थसिद्धहोतहै॥ जोपंचपर्न्ननामक

अर्थ है ॥ अरु जो अबंउ एक नाम कउचारन करीये ॥ तौ वही अर्थ सिद्ध होत है ॥ अरु अवर अ
क्षर को जो साथ वांके मिश्रत करत हैं ॥ अरु यद्यपि वहि अक्षर साथ वांके मिश्रित नहीं हो
त ॥ तौ हूं प्रणव वाके अक्षर को साथ अपुने अर्थ के मिश्रत करत है ॥ तातपर्य यहि है जो अ
र्थ प्रणव का है वही अर्थ वांका होत है ॥ वाकें पुरुष अरु प्रकृति इन दुय ही स्वरूप सो सो
अरु अबंउ अर्द्ध तसर्व काम ममाहू जानकरु चाहीये उचार कीया ॥ वाही के अक्षर सदी
व एकरस है ॥ अस्त अरु उदे को नहीं प्राप्त होत ॥ संपूर्न भांत सो उचार वांका काम
ना की सिद्ध को देत है ॥ वांको गंभीर शब्द सो हूं अरु मद्ध शब्द सो हूं अरु सूक्ष्म शब
द सो हूं चाहीये उचार कीया ॥ वाको वाहि हूं सकीयत है काहि ॥ अरु वाकों वाही सों है जैसे
से हूं सकीयत है काहि ॥ अरु वाकों जो वध है वही है ॥ जैसे से हूं सकीयत है काहि ॥ अरु वा
कों साथ वांके है ॥ जैसे से हूं सकीयत है काहि ॥ अरु वाको जो वध है मद्ध वाही के है ॥ जैसे

२४५ सेहू सकीयतैहै कहि॥ अरु वांको यहि संपर्न वास्तेवाही केहै॥ याभांत हू सकीयतैहै कहि॥
अरु संपर्न उनीकियो सोहै याभांत हू वाको सकीयतैहै कहि॥ अरु तेव जोम्निकट वाके सर्व
समनैहै॥ अरु सर्वकाल यस्थान है॥ ताते वाको स्वतहू सकीयतैहै कहि॥ अरु वहि अवर
उकार है॥ यामें अकार प्रवेश कर कर ओकार भया॥ अरु ओकार जो अंभ रूप है सो यमका
रके जो अर्धचंद्र रूप मस्तक प्रणव के पर है॥ मिश्रित होकर संपर्न एक नाम प्रणव होत है
मात्रा वांकी तीन है॥ अकार उकार मकार॥ अरु अर्धमात्रा साथ मकार के मिश्रित भई है॥
याभांत प्रणव सार्धत्रिमात्रा भया॥ मनुष्य शरीर के उत्तम कंठ सो उचरना वाको अति गं
भीर धन है॥ अरु मारग उच्चारने वांके काह्यपठ वरसो है॥ अर्थ यहि जो उच्चारने उकार
केसो कंठ पसर जात है॥ अरु साथ उच्चारने मकार के ऊर्ध्व अरु अधः ह्रदयहीतें एक आ
प मो अंन्यो अंन्य मिश्रित होत है॥ पुरातन रिषीश्वर या प्रणव को वा भांत उचारते थे॥

अरु उपदेश करते थे॥ जैसे वक्ता को पुनः आशंका न उपजती थी॥ अरु अब ताही मात्र उप
देश कोई नाहीं कहो ये थे॥ अरु या भांत उच्चारने के ज्ञान को प्राप्त होये थे॥ तथा॥ जैसे
पुरातन एक रिषीश्वर सो कनौज देस मो जो ज्ञान मो आति चतुर्थ तारा बता था॥ अ
रु अनहद नाम धारता था॥ वा ने संबहुत एक आत्म ज्ञानीयों के सों अनेक प्रश्न उत्त र
कीये॥ अरु याही विवाद वा मो या जो वा रिषि ने अवर सर्व रिषो सो जो ज्ञान निष्ठे
वा काल मोय यही प्रश्न कीया॥ तथा॥ को भांत प्रणव को चाहीये उच्चारा॥ जो जो के उच्चा
रने सो सर्व रिषि प्रश्न ताको प्राप्त होहु॥ अरु उत्तम ताको करे॥ अरु कैहे जैसे उ
च्चरना प्रणव का कहा है तैसे ही याने उच्चारा॥ अवर वहि प्रणव को को भांत उच्चरत
है॥ याको रिषीश्वर कहते है॥ जो याने उत्तम भांत नहीं उच्चारा॥ वा ठवर मो जो ब्रह्म
वा रिषो ने निश्चै कीया सो यहि था॥ तथा॥ मत्र उच्चारने प्रणव के यहि बहु पदार्थ

जो षट शास्त्र हैं॥ सो चाहीयत हैं जो मंत्र कर्मों के अवशेष हैं॥ अरु तेव जो या मैं सो ज्ञान अरु दारोक
अरु ज्ञानु छंदों का अरु ज्ञान कर्मों के काल का होत हैं॥ प्रथम शिक्षा द्वितीय कल्प तृतीय
व्याकरन चतुर्थी निरुक्त पंचम ज्योतिष षष्टम छंद॥ जो कोउ उचारन हारा ब्राह्मण वला
या षट शास्त्रों का ज्ञान राषत है ताकी उस्तुति करत हैं॥ जो कोउ या का ज्ञान नहीं राष
त ताकी उस्तुति नहीं करत॥ तातें निश्चे भया जब या षट शास्त्रों का ज्ञान न राषता हो
त वल अस्त्र उचार ब्राह्मण का वा सो नहीं होत॥ अरु जो या के ज्ञाता है सो अपने सेव
को प्रति याही भांत उपदेस करत हैं॥ छंद वां का गायत्री है॥ रूप वां का अस्वेत है॥ मारण
उच्चरन्ने वां के का मंत्र कर्मों के या षट शास्त्र ही है सो है॥ इति उत्तर प्रथम प्रश्न सो अष्टा
दि चतुर्विंशत पर्यंत॥ अरु उत्तर पंचविंशत सो अष्टादि त्रिंशत अरु षष्ट पर्यंत॥ वहि मंत्र
जो मंत्र तीन ही वेद के अरु मंत्र संपूर्ण कर्मों के अरु ब्राह्मणों के जो का अध्यायन करत हैं

अरुमध्यअर्थवणकेजोरिगयजुरसामइनकोतत्वहै॥तातत्वंकोत्वंयाहीकोनिरूप
णकीयोहै॥सोप्रणवहै॥२५॥वरननप्रणवकोमध्यअर्थवणकेअतिविशेषहै॥२६॥
आदिरिगवेदकेवांकोभूरनामसोउचरतहै॥अरुसंपूर्णरिगवेदवांकेउकारप्रथ
मआद्यरमोहै॥२७॥आदियजुरवेदकेवांकोभुवःनामसोउचरतहै॥अरुसंपूर्ण
यजुरवेदवाकीद्वितीयमात्रामोहै॥आदिसामवेदकेवांकोस्वःनामसोउचरतहै॥
अरुसंपूर्णसामवेदवाकीत्रितीयमात्रामोहै॥अतेववेदकेज्ञातासर्वकार्योंकेआ
रंभमोवाकोउचरतहै॥जोप्रणवसर्वस्योश्रेष्ठहै॥जोवाकोसर्वकार्योंकेआरंभमो
अरुचतुरहीवेदोंकेआदिमोनउचरे॥तोसंपूर्णकार्यअरुवेदनिहफलहोह॥अ
र्थयहिवेदोंकीशक्तिन्नताकोप्राप्तहै॥अरुउचारकरनहारेकोफलदायकन
हो॥अरुयाहीपरयहिद्रिष्टांतहै॥तद्यथा॥पाछेवीतनेसतयुगकेअरुत्रेताकेआ

२४८ द्वापरके जो त्रितीय युग है॥ को ऊ एक रिषीश्वर वीचारत भये॥ जो कोऊ स्म मद मसों रहित जो
रहस्य रिग और यजुर और सामवेद को है॥ या तीनही वेदों का अध्येन करे॥ अर्थ याहि
जो यथार्थ वो को जाने॥ और यज्ञादिक कर्मों को करे॥ कर्मवों के न्यूनता को प्राप्त हो
हुगे॥ और फलदायक न होहिंगे॥ और यज्ञ फल है संपूर्न कर्मों के॥ ताते कर्म को भा
तपूर्नता को प्राप्त होहिंगे॥ या वीचार सो संदेह संयुक्त और दुषत भये॥ और कहत भ
ये॥ जो पुरातन रिषों ने यों कानि कर्म नही कीया कछु॥ यो या काल मो मानुष स्म
मद मसो रहित होहिंगे॥ और वेदों न्ह फलता को प्राप्त होंहिंगे॥ तब कि या चाहीये
कीया॥ ताते चाहीय तहे जो हम संपूर्न एक ठवर होकर निकट जाय वा रिषीश्व
के जो नमस्कार को योग है गमन करें॥ और कहे जो तुम हमारे सुषदायक हो॥ या
मो याहि संदेह हमारा निवृत्त करो॥ और निवर्त्त होय सो हमको उपदेश करो॥ ॥

याभांतनिश्चैकरकैर पुनः मद्रवीचारके मगनभये॥ अरु कहतभये॥ जुवल्लभासेवक
भावकोअंगीकारकरे॥ अरु नमस्कारसोनिकस्आचार्यवांके सीसअरुपुनानउका
वै॥ तवल्लभाहमकोअव उपदेसकरतहै॥ ततः वहिरिषीश्वरनिकस्आचार्यवांके गमनक
तभये॥ अरु नमस्कारकोअंगीकारकरतभये॥ अरु अपुनेसंदेहकोवासतेंनिवृत्तिके
उचरतभये॥ प्रश्नरिषीश्वरोकाउवाच॥ आचार्यवांनेगरुभावआपमोअरोपकरवांकोउत्र
दीया॥ तत्पथा॥ वहिहंभीरनामजोआदिआचार्यवएकेहै॥ अरु आचार्यवएमेरेनामसोप्र क
टहै॥ तोनामकोसेवकमेरेआदिसर्ववेदोके अरुआदिसर्वकर्मोके उचरतहै॥ या
हीसोसंपूर्नमंत्रअरुरीचांवेदमेरेकीयांनिहफलताकोनहीप्राप्तहोत॥ तातेआच
र्यवएवतजोतुमहूमद्रतीनहीवेदोकेयाद्रएवकोषचितकर॥ अरुआदिवातीनहीवेदो
अरुवाकेकर्मोकेयाकोउचरोतोसर्ववहिकर्मनफलदायकहोहा॥ अरुजोयाभांतन

करतभये॥तासंपूर्णकर्मतुमारेन्नताअरनिःफलताकोप्राप्तहोहिंगे॥अरकर्मो
काकरतीअरकर्मोकाकरवावनहारादोनोंकष्टअरदुःखकोप्राप्तहोहिंगे॥अरमंत्र
तुमारेनिःफलहोहिंगे॥चाहीयतहैजोसृतीअपुन्योकोअरसृतोकीसंतानकोय
हीउपदेशकरो॥अरमद्धचतुर्थयुगकेकेवलअथर्वणहीचतुर्पुरषार्थकीसिद्धता
काजोधर्मअर्थकाममोक्षहैदेनहाराहोगा॥ संपूर्णरिषिअथर्वाप्रतिउवाच॥
हेनमस्कारकेयोगयहिआज्ञातुमारीअंगीकारकरीहमनें॥अरअभयअर
अशोकताकोप्राप्तहोअरअतिप्रसंन्नताकोप्राप्तभयेहम॥याहीसोसर्ववेदअ
ध्येनकरनहारेअरवेदोक्तकर्मोकेउचरनहारेमद्धसर्वअध्यायोकेअरतीन
हीवेदोंको॥अरआदिसर्वमंत्रोकेअरकर्मोकेगंभीरनामप्रणवहीकोउचरतहै
आदि औरौंरगवेदकेजोप्रणवकोउचरेतोअधिष्टातावोकाअग्निअरप्रकाशवोका

वहीप्रणवऔरछंदवांकागायत्रीऔरलोकवांकापृथ्वीकोचाहीयेजानां॥औरआदिउच
रनेरिगवेदकीरिचोकेउस्तुतिअग्निकीचाहीयेउचरी॥औरआदियुयुरवेदकेजोप्र
णवकोउचरैतैआधिष्टातावांकापवनऔरप्रकाशवांकायहीप्रणवहै॥औरछंद
वांकात्रिष्टुपहै॥औरलोकवांकाअंतरिक्षचाहीयेजानां॥औरआदिउचरनेयु
युरवेदकीरिचोकेउस्तुतिमेघोकीचाहीयेउचरी॥औरआदिसामवेदकेजोप्रण
वकोउचरे॥तोआधिष्टातावांकासूर्यऔरप्रकाशवांकावहीप्रणवहै॥औरछंद
वांकाजगतीऔरलोकवांकास्वर्गकोचाहीयेजानां॥औरआदिउचरनेसाम
वेदकीरिचोकेगावनऔरउस्तुतिसूर्यकीअग्निकीचाहीयेकरी॥औरआदिअ
थर्वणवेदकेजोप्रणवकोउचरे॥तोआधिष्टातावांकानिशाकरऔरप्रकाशवां
कावहीप्रणवऔरछंदवांकासंपूर्णछंदा॥औरलोकवांकाअपलोकचाहीयेजानां

२५४ और आदि उचरने को अथर्वण वेद की रिचां के अपका जो मूल अप है ताकी स्तुति चाहीये
उचरी ॥ और वहि ओंम है जो संपूर्न स्थावर और जंगम वाहीसो प्रगट भये हैं ॥ ताते
चाहीये जाना जो कछु है ओंम है ॥ और कछु है अथर्वण वेद है ॥ याहीसो अप और प्रणव
एकही है ॥ और मंत्र संहसरति के अपको अपुना आपु कहत है ॥ और अदार प्रथम
प्रणवका जो अकार रूप अप है वही उकार भयो है ॥ और वासते उचरने प्रणव के
उतमस्हूं ह्रीं इही है ॥ जो संपूर्न कर्मों को प्रणवही चाहीये जाना ॥ और वरनन वा
के अदरो का मंत्र आत्मा के है ॥ और मना वां का आत्मा है ॥ जो अपरूप है और आ
त्मा वाहीसो प्रगट भया है ॥ और मंत्र शरीर के कमल रूप मन के वही विराजत है ॥
और वही अजपा नाम सो प्रसिद्ध है ॥ और वही अथर्वण वेद है ॥ और याहीसो व्या
सरिषी ने कहा है ॥ तद्यथा ॥ रवडी के दिवस मो जो सावन सुदी पंदरस को है

तहैं॥जवलगब्राह्मणज्ञाताअथर्वणवेदकाजोकर्मवादिवसमोक्षहैहैंसोनकरे॥
औरअवरतीनवेदोंकाउच्चारकरे॥औरवांकेकर्मकीयेकछहूंफलदायकनहो
हिंगे॥अतेवजोकोउचाहेजोमैंअपनेवेदकेकर्मोकोकरोंताकोचाहीयततहै॥जोअथर्व
णवेदकाउच्चारकरे॥यासोजेअथर्वणवेदसोरहितकोउवेदफलदायकनहीहोत
सामवेदकीश्रेष्टतायस्सोंहै॥जोविषयोकेत्यागसेऔरयोगादिकर्मोंसेउच्चारकरन
हारेकोफलदायकहोतहैं॥तैसेहीरिगवेदअरयुयुर्वेदहूकेत्यागसेफलदायकहो
तहैं॥अरअथर्वणकोयाभांतचाहीयेजानना॥जोविनायोगादिकअरत्यागरसेवे
फलदायकहोतहैं॥याभांतजेअथर्वणकाज्ञाताहैवहितीनहीवेदोंकाज्ञाताहै॥
अतेवजोतीनहीवेदमेंअथर्वणकेहै॥अरवेदअज्ञाज्ञाहै॥वाहिजोमूलकर्मोकोहै
सोमध्यअथर्वणकेहै॥तातेतोकाअभ्यासवासतेआत्मज्ञानकेचाहीयेकीया

२५० तथया॥ अज्ञानता जीवात्मा मोय ही है॥ अरु याही सो रोगी भया है॥ जो आपसों भिन्न ई
श्वर को देखत है॥ अरु सबरे वा का प्रणव ही है॥ जो अथर्वण वेद के आदि मो है॥ अरु उपास
ना या प्रणव की सो जीवात्मा निरोगता को प्राप्त होकर परमात्मा जो अपुना स्वरूप
है ता मो मगन होत है॥ चाहीयत है जो साथ ध्यान प्रणव के जो वहि प्रणव यहि
आप ही है॥ मध्य अपुने जीवात्मा अरु परमात्मा को एक करे॥ अरु संपूर्न वेदो के
कर्मो का त्याग कर करके केवल आत्मा ही होर है॥ अर्थ यहि जो आत्म भावना मो
मगन रहै॥ अरु यद्यपि यहि अवस्था प्राप्त नहू है॥ तो हूं या अवस्था मो हू वधु
इन के देते सिद्धि होत है॥ चाहीयत है वहि मे ही है॥ जैसा जो ज्ञान है ताहू का त्या
ग करे॥ अरु निरविकल्प समाधि मो जो अति गंभीर अवस्था है मगन है॥ अ
र्थ यहि जो या अवस्था मो अहं भावना ही॥ ता अवस्था मो केवल आत्मा ही अ

दैतहोरहै॥जोयाठवरमोमायानिरगुणस्वरूपमोलीनहै॥कार्यवाकाजोब्रह्मं
उहैसोनही॥तहाजोकोउउत्रआरप्रह्मसोयथार्थआपुनेस्वरूपकाज्ञाताभ
याहै॥वाहिसर्वउत्रआरप्रह्ममोकाज्ञाताहोतहै॥आरजावरकोउपदेसकरसक
तहै॥याउपनिषदमोस्वरूपप्रणवकायथार्थवर्ननभयाहै॥नमस्कारज्ञानी
योको॥नमस्कारआथर्वणरिषीस्वरको॥जोताआरवहताकोज्ञानकीप्राप्तहै॥
आरसर्वकोआनंदहो॥ इतिप्रणवउपनिषदआथर्वणवेदसमाप्तम्॥४९॥ ॐ॥
अथउपनिषदनरसिंहतापनीआथर्वणवेद॥ ॥एककालमोसुरोनेसंवृह
न्निकटश्रीप्रजापतिकेगमनकरकरसेवकभावसोप्रह्मकरतभयेसुरोवाच
ज्ञानजोकेवलप्रणवजातिसूक्ष्मथीसूक्ष्मतरहै॥ताकोमुझेउपदेसकरनेको
तुमयोग्यहो॥ताप्रश्नश्रीप्रजापतिवाकीप्रार्थनाअंगीकारकरकरउपदेसक

२५१

जीवात्मा और प्रणव और परमात्मा एक है -

रहेमो प्रवृत्ति मये ॥ अरु आज्ञा करत भये ॥ प्रजापति उवाच ॥ संपूर्ण संसार तौं ही है ॥
अरु भूत भविष्यत वर्तमान इन तीनों काल मध्य एक तौं ही है ॥ अरु परा जो इन तीन
काल सो है सो तौं ही है ॥ अरु याहि सर्ववहि तौं ही है ॥ अरु जीवात्मा को साक्षप्रए
व रूप परमात्मा के अभेद ज्ञातव्य है ॥ अरु याहि अद्वैत जरा सो रहित है ॥ अरु सं
है सार काल ते हीन है ॥ अरु अभय है ॥ अरु या भांत प्रणव ही को ज्ञातव्य है ॥ अरु जी
वात्मा जो तीन शरीरों में तीन अवस्था धारत है ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति या तीन
ही अवस्था को साक्ष जीवात्मा के अभेद जानो ॥ अरु वाही को तत्त्व प्रणव का जान
कर या तीन ही अवस्था को तामो लीन करो ॥ अरु प्रणव ही को जो केवल आत्मा
है राखो ॥ अरु व जीवात्मा के अरु परमात्मा जो है सर्वज्ञता के भिन्न भिन्न शरीर अ
वस्था सहत प्रवण करने को योग्य है ॥ प्रथम तीन शरीर स्थूल के या भांत जा

ब्रह्मके ३ शरीर हैं
१ त्रिगुणा प्रकृति
२ हिरण्यगर्भ
३ स्थूल संसार (प्रजापति)

जो॥ तस्य घण॥ एक त्रिगुणात्मक प्रकृति॥ द्वितीय संपर्न जो है सूक्ष्म शरीरता का
अधिष्ठाता जो हिरंनगर्भ एक है॥ तृतीय यहि जो स्थूल सर्व संसार दृष्ट परत है
अरु जाको प्रजापत कहीयत है॥ जैसा जो है आत्मा या कारन सूक्ष्म स्थूल तीन श
रीरो के धारन सारा व है अनेक शरीरो मो प्रतिबिंब तकल्पत संते जीव कहीयत
है॥ जीवात्मा ताका यहि जो है शरीर अरु यही जो है जाग्रत अवस्था जाकी सो॥
जैसा जो है जीवात्मा या जाग्रत अवस्था मो साथ स्थूल इंद्रे के अरु तिनके जो है
पंच विषै शब्दादिक तिन करके स्थूल शब्दो को ग्राही के होत है॥ अथ जीव
स्थूल शरीर जाग्रत अवस्था सहित अरु विश्व नाम जो वरनीयत है॥ ब्रह्म का जो
है स्थूल शरीर संपर्न संसार प्रजापति तामो एक ही परमात्मा जाग्रत अवस्था
विषेर सो ग्राही कहोत है॥ इति ब्रह्म स्थूल शरीर॥ जीवात्मा जो है यही सत

आत्मा का प्रतिबिम्ब जीवात्मा है

जीवात्मा जाग्रत अवस्थामें स्थूल इंद्रियोंके द्वारा ३ नके विषयों शब्दादिकों भोगता है। इस ब्रह्म के स्थूल शरीर को (विश्व) कहते हैं।

२५२ म शरीर तामो स्वप्न अवस्थाविषे इंद्रिकी सूक्ष्म वृत्तिसो सूक्ष्म सो भोग ही कहेतहै॥
इति जीव सूक्ष्म शरीर जाको तैजस कहतहै॥ ब्रह्मका जो है सूक्ष्म शरीर हिरन्यग
र्भ तामो एक ही ब्रह्म संपूर्न सूक्ष्म पदार्थो को अंगीकार करत है॥ इति ब्रह्म सूक्ष्म
शरीर॥ जीवात्मा को जो है कारन शरीर अहं जा नाम, तामो सुषुप्ति अवस्थाविषे
मनादिक सर्व इंद्रि को आप मो लीन करकर आत्मानंद मो मगन होतहै॥ इ
ति जीवात्मा कारन शरीर जाको प्राज्ञ कहीयतहै॥ ब्रह्म जो है कारन शरीर त्रिगुण
प्रकृति तामो एक ही ब्रह्म संपूर्न संसार की सुषुप्ति अवस्थामो सर्व जीवो को आ
प मो लीन करतहै॥ आपुने आनंद मो विराजतहै॥ इति ब्रह्म कारन शरीर॥
अथ वर्ननं चतुरपाद जीवात्मा के जो प्रणव रूप है॥ तथ्यथा॥ प्रणव रूप जीवा
त्मा जाग्रत अवस्थामो प्रथमपाद सो वर्ततहै॥ अकार आत्मा सो अभेद है॥ अकार या

उपमचरनजाग्रतकेमेजोहेसर्वस्थूलपदार्थताकोसाषयाअंगीकारकरतहे॥
ॐतथया॥श्रवणत्वचदृघ्राणरसनात्वचामनबुद्धियहिसप्तशरीरकेअंगरावतहे॥
अरपांचकर्मइंद्रियअरपांचज्ञानइंद्रियपंचभूतएकमनयहिजोहेवोउशकलाको
रतीनगुणइनसेएकनेकरकरनवदसमरवुराषतहे॥ताकेसाथस्थूलइंद्रियके
स्थूलविषयोंकेरसोंकोग्राहीकहोतहे॥अरयाप्रकारचतुरजोहेदेखीयोतिप्रथ
मवहीअभ्यंतरजठराग्निहे॥यासोआहारपचतहे॥अरवाह्यमेवहीयहिअ
ग्निहेसोप्रसिद्धहे॥द्वितीयवहीअभ्यंतरनेत्रद्वाराप्रकाशितहे॥अरवाह्यमेसूर्य
रूपविचरतहे॥तृतीयअभ्यज्ञानाग्निहे॥अरवाह्यमेवहीविद्युतरूपविच
रतहे॥चतुर्थअभ्यंतरमहाप्राणकेजीवरूपहे॥अरवाह्यमेवहीमहापवनकेप
वनकोस्फुरनदेतहे॥याभांतजोहेएकअंतरआत्मामहाभिन्नभिन्नशरीरोंकोद

जीवात्मा की १९ मुखों से कला २१ करके ३ अवस्था के द्वारा स्थूल विषयों के रसों को भोगता है

हृदय की ४ तरह की ज्योति आभ्यंतर और बाह्य है
१ आभ्यंतर जठराग्नि बाह्य प्रसिद्धाग्नि है
२ आभ्यंतर नेत्राग्नि बाह्य सूर्याग्नि है।
३ आभ्यंतर मेधाग्नि बाह्य विद्युताग्नि
४ आभ्यंतर प्राणाग्नि बाह्य वायु मध्यवर्ती अग्नि है।

२५३ तीयवहि जु सर्व संसार का एक वैश्वानर अग्नि है ॥ यहि उभै रूप एक वैश्वानर अग्नि
साथ सर्व पदार्थों के जो वरनन भये ॥ जाग्रत अवस्था रूप एक प्रथम पाद आत्मा का
है ॥ इति प्रथम पाद आत्मा ॥ स्वप्न अवस्था जो द्वितीय चरन आत्मा का है ॥ तामो वही
सप्त जो है अंग शरीर के नव दस जो है मख आरु चतुर प्रकार जो है इंद्रिदे की जोति ॥ तिन
करके साथ सूक्ष्म इंद्रिदे के आर वो के सूक्ष्म विषयों के सूक्ष्म रसों का ग्राहीक होत है ॥ अ
रु प्रकाश मनन का आरु हिरन्यगर्भ जो है सूक्ष्म शरीर यहि द्वय साथ संपूर्ण पदार्थों
के यो वर्नन भये द्वितीय पाद है आत्मा का ॥ इति द्वितीय पाद आत्मा ॥ सुषुप्ति अवस
था मो संपूर्न चाहा मन जीवात्मा के एकता को प्राप्त होते हैं ॥ आर या त्रितीअवस्था मो
जीवात्मा आपुना जो स्वरूप चतुर अवस्था है ॥ जो कोई ईश्वर पद आत्मा कहत है ॥ ता
मो लीन होत है ॥ या अवस्था मो केवल एक सब ज्ञान मैं राखत है ॥ आर प्रकाश च

तरूपप्रकारजोनिद्रदेखीजैसीहै॥ औरमनतेंआदिलेकरसर्वइंद्रियेंस्थितहोतीहैं॥ स्वप्नअव
स्थातहांनहींप्राप्तहोत॥ औरजीवात्माआपुनेस्वरूपकीएकताकोप्राप्तहोतसंतेकेवल
चितआनंदकोप्राप्तहोतहै॥ औरआनंदहीकेरसकोग्राहीकहोतहै॥ औरप्रका
शचेतनताका॥ औरसत्ताआपुनीयहिद्वयसायसंपूर्नपदार्थोंकेजोवर्ननभयोत्रितीय
पादहैआत्माका॥ त्रितीयपाद॥ अधिष्ठातायाअवस्थाकाजोस्वपतकाज्ञाताहै॥
वहीईश्वरहै॥ वहीअंतर्यामीहै॥ वहीसर्वकाज्ञाताहै॥ औरसर्वकोआत्माहै॥ और
सर्वप्राणीयोंकेमनोमोस्थितहै॥ उतपतस्थितसंघारकारनसंपूर्नभूतात्मके
चतुरदसलोकोंकावहीअंतहै॥ औरतीनजोसंपूर्णपादआत्माकेवर्ननभये॥
सोयाचतुर्थपादविषेजोयहीतुरीयाअवस्थाकहीयतहै॥ भेदरूपभीतसेहै॥ और
सोदनस्वरूपसेयाहीमेरहतहै॥ जैसेमनीयाजोसूतकेसंयोगतेमालाकहीयत

सुषुप्तिकालीन। ईश्वर है वही तुरीयावस्था है,

है॥ तैसेही याचतुर्थअवस्था मो तीनहीपाद जो वरने सो रहत है॥ अरु वहि आत्मा याको
यहि तीनही अवस्था अरु तीनही लोक॥ अरु वर्ने सो है सो एकरस है॥ इति चतुर्थपादः॥ अ
थ या तुरीया अवस्था के है यो तत्ववेतायोने चतुर अवस्था को सिद्ध कीया है॥ अब ताको नि
रूपण करत है सो॥ तद्यथा॥ सत चित आनंद यही है स्वरूप है याका॥ अरु या सत चित
आनंद मो जाग्रत स्वप्न सुषुपति यहि तीन अवस्था रहत है॥ अरु आप जो है तुरीया सो
केवल महाआनंदरूप है॥ या चतुर्थ अवस्था मो जैसा जो ज्ञान है॥ जो सर्व ब्रह्म ही
व्यापक भया है॥ सो यही जाग्रत अवस्था है॥ अरु जब यहि ज्ञान आपु ने परिनिष्ठ
भया॥ जो ब्रह्म मे ही है॥ इही या अवस्था मो स्वप्न अवस्था है॥ अरु जहा प्रथम अवस्था
जो ब्रह्म भावना है॥ अरु द्वितीय अवस्था यो ब्रह्म भावना को निश्चै है या मे॥ अरु यहि ज्ञा
ता अरु ज्ञान इन तीनो मे ही का भ्रम जो है सो सो निरसंदेह आप मो वूडकर निर

जहां ज्ञाता ज्ञान
और ज्ञेय भी नहीं वह
तुरीयावस्था आनंदरूप है।
इस अवस्था में आत्मा
इन्द्रियरहित केवल परमात्मा है।
परमात्मा में ३ अवस्था
माया अविद्या है जो
है सो है

गेकल्परहनायाअवस्थामोयहीसुषुपतिअवस्थाहै॥अरजहांज्ञातज्ञानअरज्ञे य
यातीनहीकाअभावहै॥अरमैंनहूंनहीं॥सोअसतपदतुरीयाकेवलआनंद
स्वरूपहै॥याभांतजोआपकोजानेसोवाकीतुरीयाहै॥अरयाअवस्थामोआत्मात्रि
गुणरहतकेवलपरमात्माहै॥अरयामोतीनअवस्थाओंकारादिसर्वजोवर्ननभया॥
सोमायाअविद्याहै॥अरवहिअविद्यावाठवरमोनहीं॥अतेवजोआत्मानिरंज
नकेवलचेतनहै॥एकरसहै॥चतुर्थअवस्थाहै॥सर्वमलीनताते रहतहै॥अरस्व
दअरस्थूलतासोदूररहतहै॥अरजाग्रतस्वप्नयाउभेअवस्थामोजोरसोकोग्रा
हीकहोतहै॥अरसुषुपतमोआनंदकाअंगीकारकरतहै॥याभांतहूउचरनेकोबु
द्धिनहींसमर्थहोत॥अतेवजोयाहूतेसूक्ष्महै॥अहंनजानामि॥यहितभअवस्थात
हांनहीं॥केवलचैतननहींहै॥अरसंवूहहैचैतन्यताका॥अरखंडतनहींभया॥अ

२५५ रवामें बुद्धि नहीं प्राप्त होती॥ और इंद्रियां में नहीं ग्राही करे सकती॥ और प्रवर्त संसार की सो परा है
और वाकों काहू युक्ति सों और दृष्टांत सों नहीं ग्राही कहो सकीयत॥ यातें यो वरनन सो परा है
स यही कहै कीयत है जो अद्वैत आत्मा आपुन आपु ही है॥ सर्व अवस्या सो ही न है॥ केवल
ही है॥ आनंद ही है॥ निस्फुरन ही है॥ और द्वैत ते रहित है॥ या भांत केवल चतुर्थ अव
स्या कों ज्ञानवान वर्नन करत हैं॥ इति केवल तुरीया अवस्या॥ यही आपुन आपु है॥
और यही ज्ञातव्य है॥ रूप प्रजापति का जो है यही पंच स्थूल भूतात्म संबूह ही विसतार जो है
ऊपरत है॥ और जाग्रत अवस्या है॥ ताकों हिरंन्यगर्भ आपमें लीन करत है॥ और हिरं
न्यगर्भ जो संबूह सूक्षम तांका आकार न सूक्षम शरीरों का और स्वपन अवस्या है
त्रिगुण प्रकृति आपमें लीन करत है॥ और त्रिगुण प्रकृति रूप वाका कारन शरीर॥ और
है न ज्ञान॥ और सर्व काल यह स्यान और सुषपत अवस्या है॥ या स्थूल सूक्षम

प्रजापति को
इस दृश्य मानस मैं
को हिरण्यगर्भ अपने
अपने मै लीन करता है।
और हिरण्यगर्भ अपने
आपको अपने में
लीन करता है

कारनतीनहीकोतुरीयाजोचिद्घनअनंतकेवलआनंदस्वरूपआत्माकाहै॥ अरुसर्वका
महाकारनहै॥ आपमोलीनकरतहै॥ यहीहै चतुर्थपादआत्माका॥ इतिप्रथमखंडेनृसिं
हतापनीउपनिषदअथर्वणवेदभाषासमाप्तम्॥१॥ आत्मायाकालमोजाग्रतअ
वस्थामोविराजतहै॥ नाजाग्रतमोनस्वप्नअवस्थाहै अरुनसुषुपतहै॥ अरुजबस्व
प्नअवस्थामोप्राप्तहोतहै तबअवस्थामोजागतअरुसुषुपतअरुयहिद्वयहीनही॥ होत॥
अरुसुषुपतमोजागतअरुस्वप्नअवस्थाकोअभावहोतहै॥ अरुमद्रतुरीयाकेइनतीनहो
अवस्थातेअतीतहै॥ अरुसर्वसोउपरातनहै॥ अरुशुद्धहै अरुनित्यहै॥ अरुकेवलआनं
दहै॥ अरुअलिप्तपदहै॥ अरुसर्वअवस्थामोसमहै॥ अरुएकरसहै॥ अरुचक्षइंद्रिअ
रुश्रवणइंद्रिअरुनासकइंद्रिअरुमनअरुबुद्धिअरुप्राणअरुआवर्णअरुजीवदेपयाअरुप
दार्थोहीकाजाताहै॥ अरुइनसंदर्भोसोभिनहै॥ अरुइनसानही॥ अरुइनसर्वकासा

२५६ कीहै॥ याहीसों नाशवंत नहीं॥ अरु विद्या याकी सर्वसों श्रेष्ठ है॥ अरु सर्वतें परे है॥ केव
लआनंदही है॥ अरु स्वप्रकाश है अभय है॥ अरु एकरस है जरातें रहित है॥ संघारतें रहित
है॥ अरु अद्वितीय ब्रह्म है॥ माया के संयोगतें वोका निरूपण करत कीयत है॥ अरु याभांत
उचरनेको योग भया है॥ जो चतुर अवस्था चतुर्पाद है॥ आत्मा के॥ तातें प्रणवको सा
थ आत्मा के अरु प्रणवकी चतुर मात्राको साथ चतुर्पाद आत्मा के एकताको प्रपंचा ही
येकीया॥ तद्यथा॥ योवाधप्रथम चरन आत्मा का जो जाग्रत अवस्थारूप निरूपण
भया॥ तासे दर्शन चरनको प्रथम मात्रा प्रणवकी जो है अकार नाम प्रज्ञात वहै॥ अ
रु अकार अर्थ आपते आपका है॥ यो आधिपत्य सर्वका ब्रह्मही है॥ जैसे ब्रह्म सर्वठवर
है॥ तैसे अकार हू सर्व अक्षरोंमों है॥ जैसे ब्रह्म आदि सर्वको है॥ तैसे ही अकार हू आ
दि सर्व अक्षरोंको है॥ याहीसों अकार स्थूलहू है॥ अरु सूक्ष्म हू है॥ अरु सर्वको बीज

संहार

है॥ अरु सर्व का साक्षी है॥ अरु सर्व ब्रह्म मो है॥ जो जन याऽकार अक्षर को इसमं
त जानै॥ जैसे अकार सर्व मो व्यापक है तैसे ही सर्व मो व्यापक है॥ जैसे अका
र आदि सर्व का है तैसे ही वी है आदि सर्व का है॥ इति आत्मा अरु प्रथम अक्ष
र प्रणव के की एकता॥ जो कछु द्वितीय चरन आत्मा के मो यो स्व प्रकाश स्यारूप
वरनन भया॥ सो सर्व ही द्वितीय मात्रा यो प्रणव की है उकार मो स्थित है॥ अ
रु अर्थ उकार का याहि यो सर्व सो श्रेष्ठ ता याही सो है॥ अरु अकार जो प्रथम मा
त्रा है सो या मो लीन है॥ अतेव जो उकार स्थूल है॥ अरु स्वतंत्र है॥ अरु सर्व का
बीज है॥ अरु सर्व का साक्षी है॥ अरु यहि सर्व ब्रह्म ही है॥ यो जन उकार को सर्व को
श्रेष्ठता दे न हारा जानै॥ ता के संतान ज्ञानसंयुक्त विशेष है॥ अरु ब्रह्म के स
दृश है॥ इति एकता आत्मा की द्वितीय अक्षर प्रणव के सो॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥

जो अवस्था त्रितीय चरन आत्मा के मो यो सुषुपति अवस्था है चित्रूप एम भया है ॥ सो संपूर्न ही त्रि
तीय मात्रा प्रणव की विषे जो मकार है स्थित है ॥ अरु मकार प्रणव मो अध्य है लिषणे मो न
ही आवता ॥ अर्धमात्रा सो वां को अभेद ता है ॥ अरु अर्थ मकार का यहि सर्व का प्रकाश करे है ॥
अरु सर्व को लीन करता है ॥ यां ते स्थूलन है है ॥ अरु सक्ष्म है है ॥ अरु सर्व का बीज अरु स
र्व का साक्षी है ॥ याही ते सर्व ब्रह्म सो है ॥ यो मकार को या प्रकार जाने ॥ सो सर्व का प्रकाश करे
अरु संहार करता है ॥ अरु जो अधुस्ता धीत्र मात्रा प्रणव की मो है ॥ सो संपूर्न एक एक
अक्षर प्रणव के मो है ॥ अरु चतुर्थ चरन आत्मा के मो जो तुरीया अवस्था है जो अछुवरन
न भया है ॥ सो सर्व ही चतुर मात्रा जो है प्रणव की अर्धमात्रा या को विंदु कहत है ॥ अरु सर्व ब्रह्म
है ता मो स्थित है ॥ जैसे जाग्रत अरु स्वप्न को सुषुपति आप मो लीन करत है ॥ तैसे ही अ
र्धमात्रा लीन करन हारी या तीन ही मात्रा अरु तीन ही अवस्था की है ॥ जो तुरीया है

अरु आपको आपही प्रकाशित है ॥ अरु सभ मात्रा पुनां आपही है ॥ अरु स्वतंत्र प्रगट है ॥ अरु पुनः
चतुरभांत आपही है ॥ प्रथमभांत यहि जो तंत पटचेतन सर्वमो व्यापक है ॥ अरु ते आत्मा है ॥ जै
से आत्मा सर्वमो प्रवेश करि रहा है ॥ तैसेही यहि अर्धमात्रा शब्द ब्रह्महूं सर्वमो व्यापक है ॥
जैसे महाप्रलैकालमो आत्मा निर्गुण रूप अरु अगिन रूप अरु सूर्य रूप होत है ॥ अरु अपुने
किरनो सो सर्वमो व्यापक होत है ॥ तैसेही यहि अर्धमात्राहू सर्वमो व्यापक रूप है ॥ अरु द्वितीयप्रका
र यहि जैसे ब्रह्म आत्मय ज्ञासी को आप सा करत है ॥ अरु अपुना ज्ञाता आपही है ॥ जैसे दिनक
र तम को अपुने तेज मो लीन करत है ॥ केवल प्रकाश करत है ॥ अरु तृतीय भांत यहि जो सदा केव
ल चेतन अरु ज्ञान रूप है ॥ अरु जैसे अगिन ईधन आदिक को दग्ध करकै आपही रहत है ॥
तैसे अर्धमात्राहूं तीन ही गुणों को आपमो लीन करकै केवल स्वतस्वरूप रहत है ॥ अरु च
तुर्थ भांत यहि जो आवागमन तें रहित है ॥ अरु निराकार है ॥ आत्मा जैसे दृश्य केवल आत्मा ही

२५८ निर्गुण स्वरूप है॥ याही ते यों है चतुर प्रकार यो वरनन भये सो चैतन्य रूप आत्मा ही मे स्थित है॥
और चतुर मात्रा रूप केवल आत्मा ही है॥ और प्रणव ही चतुर भांत भया है॥ और एक एक अक्षर प्र
णव के मे संपूर्ण प्रणव ही है॥ और उ ही चतुर भांत ते आ भयो है सो आत्मा है॥ और यो है सर्व संसा
र नाम और रूप है आत्मा है॥ याही ते अति निश्चे सो प्रणव केवल आत्मा ही है॥ और आत्मा
और प्रणव जो पर अपर अभेद है॥ ता ते आत्मा हू चतुर प्रकार है॥ और केवल चैतन्य है॥ और प्र
णव हू केवल चैतन्य है॥ और चतुर भांत है॥ और संपूर्ण संसार केवल आत्मा ही है॥ और ते
व जो आत्मा सो द्वैत का इस्थान नही॥ और वही आत्मा यो तैसो है॥ ता को पुनः और्धमात्रा
सो अभेद ता करीयत है॥ तथ्य या॥ आत्मा चतुर भाग राषत है॥ अर्धमात्रा हू चतुर भाग
राषत है॥ आत्मा संसार प्रपंच ते भिन्न है॥ और मात्रा हू वाक इंद्रि ते अलिप्त है॥ जगत मो स
त्य आत्मा की है॥ तीन मात्रा मो सत्य अर्धमात्रा ही की है॥ आत्मा केवल आनंद ही है॥

अर्धमात्रा हू केवल ज्ञानंद है॥ आत्मा के अस्ति पद मो देत जो है संसार ता की हान
है॥ अर्धमात्रा हू मो देत जो है तीन मात्रा संपूर्ण अक्षर ता की हान है॥ आत्मा के वज्ञा
नंद है॥ अर्धमात्रा हू केवल ज्ञानंद है॥ आत्मा हू अद्वैत है॥ अर्धमात्रा हू अद्वैत है॥
याही सो ॐ आत्मा ही है॥ यो जन्न्या स्वभेद का ज्ञाता हो वही अपुने मो आपको पावे
इति द्वितीय खंड नृसिंघतापनी उपनिषद अथर्वण वेद संपूर्ण॥ प्रथम अक्षर जो प्र
णव का है सो प्रथम पाद आत्मा का है॥ द्वितीय अक्षर जो प्रणव का है॥ सो द्वितीय पाद आ
त्मा का है॥ अर तृतीय अक्षर जो प्रणव का है॥ सो तृतीय पाद आत्मा का है॥ अर्धमा
त्रा जो चतुर्थ है॥ अर या चतुर पदार्थों सो सो हत है॥ तथा॥ ॐ॥ प्रथम यी है जो सर्व के
अपुने स्थूल प की प्राप्त का स्थान है॥ द्वितीय आत्म प ज्ञा सी को आप मो लीन करत है॥
तृतीय सदा चेतन्न है॥ चतुर्थ सर्व मो आलिप्त है॥ ऐसा जो है चतुर्थ पाद आत्मा का

प्रणव की प्रथम द्वितीय तृतीय और अर्द्ध मात्रा चतुर्थी आत्मा के 4 पाद हैं। रूप चतुर्थ हि [illegible]

अर्धमात्रा तामे आत्मा को जो सूक्ष्म ही है ॥ और स्थूल रूप वही है ॥ और कारन रूप वही है ॥ महा
कारन रूप वही है ॥ सो जब कर और आप को अर्धमात्रा और आत्मा को एक जान कर संपूर्ण च
तुर्दस लोकों को एक आत्मा के समान जान कर आपु ने आप मे लीन करे ॥ और प्रथम अ
क्षर के मे जो अकार है ॥ पाताल ते आदि लेकर संपूर्ण पृथिवी है ॥ और रिगवेद सा पस
वै रिचों के ब्रह्मा और आठ वसु और गायत्री छंद अरु अग्नि देवता याहि सर्व ही वस्तु
ते है ॥ या प्रकार जो प्रथम पाद आत्मा का वरनन भया सो स्थूल रूप वही है ॥ और सू
क्ष्म रूप वही है ॥ और कारन रूप वही है ॥ और महाकारन रूप वही है ॥ इति अकार ॥ और द्वि
तीय अक्षर प्रणव का जो उकार है ॥ तामे अंतरिक्ष लोक और युजुरवेद संपूर्ण रिचो
सहित और विष्णु और एकादश रुद्र और त्रिष्टुप छंद और सूर्य याहि सर्व वस्तु मे है
और याहि द्वितीय पाद स्थूल रूप है ॥ और सूक्ष्म रूप है ॥ और कारन रूप है ॥ और महाका

रन्न हू है ॥ इति उकारः ॥ द्वितीय अक्षर प्रणव के मो ये मकार है ॥ स्वर्ग लोक अरु साम वेद गीत सहित अरु
महादेव ॥ अरु स्पर्श रब अरु जगती छंद अरु जठराग्नि यो अन्न को पचावत है ॥ यहि सर्व रहित है
अरु यही द्वितीय पाद स्वप्न रूप है ॥ अरु यही सूक्ष्म है अरु कारन अरु महाकारन है ॥ इति मकारः ॥ अरु
अर्धमात्रा चतुर्थ जो है अंत प्रणव के ॥ अरु स्पर्श तातें जो कीवाही सो है ॥ अरु आत्मा ही है लोक जाको ॥
जाको ब्रह्म लोक कहत है ॥ अरु अथर्वण वेद मंत्रो सहित अरु गायत्री ते आदि बृहती पर्यंत संपूर्ण
वेदों के जो छंद है ॥ अरु यहि जगत जो है अविद्यात्मक नाशवंत अरु ताकी दग्धकरता जो है
ज्ञानाग्नि अरु पवन सर्व का भरमायो एक देवता है ॥ अरु यहि अर्धमात्रा केवल प्रकाश ही है
अरु चतुर्थ पाद आत्मा का है ॥ अरु स्थूल सूक्ष्म कारन महाकारन सर्व प्रकार वही है ॥ इति
अर्धमात्रा ॥ एक एक पाद मो चतुर पाद है ॥ ताते चतुर पादों मो षोडश पाद है ॥ अरु एक एक
मात्रा मो चतुर चतुर मात्रा है ॥ ताते चतुर मात्रा मो षोडश मात्रा है ॥ या संपूर्ण चतुर दश

२६० लोकोसहितएवऱ्यासकेसमान जानकरअपुनेमोलीनकरे॥ औरवहीज्ञानीऔरवहीअपुने
स्वरूपकोज्ञाताहै॥ औरप्रलैतेरहितहै॥ औरसर्वचाहेअपुनीयोकोवहीनेज्ञानाग्निमो
दग्धकीयाहै॥ औरआवर्णऔरविक्षेपतेसदाभिन्नहै॥ औरअपुनेहीस्वरूपकीजाग्रत
मोजाग्रतहैवाकी॥ याभांतकेतत्ववेताकोपुनःजन्मनहीं॥ औरभयतेरहितहै॥ तातेचा
हीयतहै॥ योजाग्रतअवस्यामोऔरस्वप्नअवस्यामोभेदसंपर्णजगतकेकोभ्रमवतदे
षकरऔरसमझकरयाकोजोकेवलतमहीलपराखतहै॥ अपुनेप्रकाशमोलीनक
रकरऔरइनकेपाशसोमकतहोकरऔरसुषुप्तिअवस्याकेसुखकोप्राप्तहोतसं
तेयाचित्तीअवस्याहूकोअपुनेमोलीनकरे॥ औरसंपर्णआपहीकोजानकर
सर्वसमहीजाने॥ ऐसीनिश्चैसदाजोहैकामृत्यकोप्राप्तहोतहै॥ औरस्थूल
सूक्ष्मकारनमहाकारनऔरसर्वकाबीजऔरसर्वकासाक्षीऔरतारपटवतहोत

है॥ अरु या मांत्र चतुर प्रकार जो है प्रणव सो आपको जानै॥ तथ्यथा॥ आत्मस्वरूप का ज्ञान
द्वितीया॥ आलयज्ञानी को आपसा करनां॥ त्रितीया॥ सर्व सो असंगी॥ चतुर्थी॥ या सर्व का भ्र
म आपको निश्चै ज्ञानणां॥ अरु आत्मकों त्रिगुण सहित अपुने ही मन नरूपक मल मो जो
य ही है शरीरवां का तीचार करै॥ अरु प्रणव को जो चतुर मात्रा राषत है॥ अरु एक एक मात्रा
मो अष्टाविंशत पदार्थ है॥ तथ्यथा॥ चतुर वेद चतुर ज्योति, चतुर अवस्था चतुर छंद चतर
देवता चतुर शरीर चतुर लोक॥ प्रथम अकार जो सप्त धर्म अपुने या प्रकार राषत है
तथ्यथा॥ पाताल ते आदि पृथिवी मंडल पर्यंत तारिग वेद, गायत्री छंद॥ अग्नि ब्रह्मा, जा
ग्रत अवस्था, स्थूल शरीर॥ तैसे ही सप्त धर्म मद्ध उकार के है॥ बहिर आप मो राषत
है॥ तथ्यथा॥ अंतरिक्ष लोक यो पृथ्वी अरु आकाश के मद्ध है॥ यजुर वेद त्रिष्टुप छं
द, जठराग्नि स्वप्न अवस्था, हिरण्य देवता, सूक्ष्म शरीर॥ अथ सप्त धर्म मकार स्वर्ग,

२६१ लोकसामवेद जगती छंद॥ सूर्य देवता। जो हृदै की जोति सो अभेद है॥ सुषुपति अवस्था अकार
रुद्र देवता कारन शरीर॥ याही प्रकार सनध्यान अर्धमात्रा के मध्य अकार के स्थित है॥
तेयथा॥ ब्रह्मलोक अथर्वण वेद बृहती पंक्ति त्रिष्टुप छंद ज्ञानाग्नि अर्धमात्रा देवता तु
रीया अवस्था महाकारन शरीर॥ जैसे या भांत एक अकार मो अष्टविंशत पदार्थ वर
नन भये॥ तैसे ही अवर तीन मात्रा मो है। एक एक मात्रा मो यही अष्टविंशत पदार्थ
ज्ञातव्य है॥ अरु प्रथम अक्षर अकार जो पदार्थो सहित वरनन भया॥ ताको अग्नि
स्वरूप ब्रह्मलोक नाभि कमल मो ध्यान करे॥ अरु द्वितीय अक्षर उकार साथ संपूर्ण पदा
र्थों के जो अलसी के पुष्प रूप हृदै कमल मो विष्णु का ध्यान करे॥ अरु तृतीय अक्ष
र मकार साथ संपूर्ण पदार्थो के जो स्वेत रूप केवल महादेव है ताको त्रिकुटी के क
मल मो ध्यान करे॥ अरु अर्धमात्रा जो मूलमाया तीन ही मात्रा को है॥ त्रिकुटी ते अ

दि ब्रह्मरंध्र पर्यंत ताके मध्य वांको ध्यान करे ॥ अरु ललाट दीपवत रूप वांको जाने ॥ अरु ऐसे
से आनंद रूप करि पुनि मो ऊँ को चतुर अर्द्ध रो सहित अम्रत रूप ब्रह्मरंध्र मो जानके
र संपूर्ण प्रणव यो चतुर मात्रा अरु अष्टविंशति पदार्थ है वा मो ताको अपुनि मो ली
न करे ॥ ऐसा प्रणव के ऊँ को अभेद करके वह आनंद रूप है ॥ अरु ब्रह्मा अरु वि
ष्णु अरु महादेव को अकार उकार मकार रूप जानके अरु तीन अवस्था को या आद
रो के प्रान जानके अरु अर्धमात्रा को याके मध्य यहि तीनो स्थित है ॥ व्यापक जान
के या प्रकार के ज्ञान मो मन को लीन करे ॥ अरु तीन ही देवता अरु तीन ही आद
र अरु तीन ही अवस्था जो यहि सर्व पदार्थ अर्धमात्रा मो लीन कीये थे ॥ ता अ
र्धमात्रा सहित या प्रकार जो है चतुर्थ ही चरन ताको आप मो लीन जाने ॥ अरु
संपूर्णों का जो है प्रकाश ताको अभेद समझकर या प्रकाश मो स्थूल सूक्ष्म कारन

यातीन्वहीअरुपुनेशरीरेकोपर्शकरे॥अरुअरुपुनेजीवात्माकोजोयातीन्हीशरीरेमस्थि
तेहै॥याकीकेवलप्रकाशरूपकरकरसंपूर्नपदार्थोंकोअरयातीनहीशरीरेकोसा
षचैतन्यप्रकाशकेचेतनाररूपकरे॥अरयाहीभांतप्रजापतिजोहैस्थूलशरीरईश्व
ररूपअरुपुनेकाताको॥अररीहरंन्यगर्भजोहैसूक्ष्मशरीरताकोअरप्रकृतियोहै
कारनशरीरताको॥अरचतुर्थअवस्थासाषसंपूर्नपदार्थोंके॥अरचतुरपाद
जोहैप्रणवके॥ताकोवाअात्मप्रकाशमोयोकेवलचैतंनहैलीनकरक॥अरआ
पकोवहीप्रकाशरूपचैतन्यअरअानंदजानकरसंपूर्नवर्नताजोमईहै॥ताको
अापमोमासवतलीनकरे॥इतिद्वितीयषंडनरसिंघतापनीउपनिषदअर्थव
णवेदभाषा॥यद्दिजीवात्मासर्वअर्थतअात्माहीहै॥अररमनरूपकमलमोस्थितहै
अरउतपतकरतासर्वकामरमात्रहीहै॥अतिप्रकाशजोभ्चतुरमात्राहैतासोवाको

उपास्य
उपासना
उपासक

श्रानहू जीयत हैं॥ ऽरु तत्ववेत्ता वाही कों ऽरु पुन ऽरु आप देषत हैं॥ ताते पुनः पुनः एकरि चा
वेद की सो नमस्कार है वाकों॥ जैसे सें ऽरु पुने ऽरु आप कों ऽरु आपत्र संत्र करकर ऽरु उपासक
र उपासना ऽरु उपास्य ये तीन ही कों एक जानकर पुनः जाने जो यहि सर्व मैं ही हौं
ऽरु आत्मा ही ब्रह्म है॥ चतुर्थ मात्रा यो प्रकास रूप है ताते जान्या जात है॥ ऽरु स्रुति वे
द की सो यो एकादश नाम राषत है॥ वही एकादस प्रकार रूप है वाका॥ ऽरु अनेक जी
वो कों ऽरु पुने सो लीन करकर केवल ऽरु पुन ऽरु आप करत हैं॥ ताते वाकों नमस्कार क
रकर ऽरु प्रणव को उचार करकर साधक ऽरु पुने एकता करै॥ वही आत्मा जो ब्रह्म है॥ ऽरु
चतुर्थ मात्रा ॐ की सो प्रगट होत है॥ वाकों साथ प्रणव की उपासन के ऽरु आप कों ॐ ही जा
नकर॥ ऽरु मैं ऽरु तूं जैसे से द्वैत कों दूर करकर स्तांचित ऽरु आनंद आत्मा जो सर्व उ व
रपन है॥ ऽरु ब्रह्म है॥ ऽरु आत्मा सर्व का उतपति ऽरु स्थान है॥ या भांत के ऽरु तीति न

२६३ ऐसेतौनिधारकआपहीकोजानै॥ येवहिमेहीहैं॥ औरएकादशनामसंयुक्तजोश्रुति
है॥ सोवाकोहूआपहीकोजानै॥ औरवहिआत्मायेअपुनाआपहै॥ औरसर्वकोआ
मेलीनकरतेहै॥ सोयहिभांतहै॥ तथ्य॥ संपन्नैठवर्ऽऔरसदाहै॥ औरसर्वका
जीवात्माहै॥ औरलीनकरनहारहीदेवतायेब्रह्माऔरविष्णुऔरमहेशहैचारह
तेहीऔरशांतअंगीकारकरतेहै॥ औरयेयहियेपुरुषुवेधनयातीनगुणोकेतेये
देवताहैमुक्तहोतेहै॥ इतिषष्टमखंडनरसिंहतापनीउपनिषद्समाप्तम्॥
पुनः देवताअधिष्ठाताइंद्रादिकेप्रजापतिसेवनतीसोप्रश्नकरतभये॥ तुमयोन
मस्कारकेयोग्यहै॥ पुनः अधुहमकोउपदेसुकरो॥ तातेप्रजापतवेनतीवाकी
अंगीकारकरी॥ औरउपदेसुकरतभया॥ प्रजापतिरुवाच॥ प्रथमअक्षरजोअ
कारप्रसिद्धहै॥ औरअनादिसिद्धहै॥ औरआनंतहै॥ औरश्रेष्टहै॥ औरअजरहै

अरु अभय है। अरु अशोक है। अरु अमोह है। अरु षोभ ते रहत है। अरु छुधा अरु पि
पासा ते हीन है। अरु देत है। या भांत यो प्रथम अकार है॥ तामो जीवात्मा को षोजे॥ अरु दु
तीय अक्षर जो उकार है सो स्वरूप है। अरु उत्पत्ति स्थिति प्रलै को कारन वही है। अरु सर्व सो
पर है अरु सर्व का आधार है। अरु महा स्वरूप दृष्टा है। अरु करता है। अरु निर्विशेष पदा
र्थों का बाधक है। अरु महा लीन करता है। अरु महा चैतन ताको देत है। अरु सदा है
या प्रकार उकार मो परमात्मा को षोजे। अरु अकार प्रसिद्ध को यो जीवात्मा के सदृश
है। सो या उकार के एकता भाव प्राप्त होत संते नर ऐसे लीन करता होत है। अरु तृ
तीय अक्षर यो मकार स्थित है। अरु स्वरूप है। अरु ज्ञान प्रकाशक है। अरु केवल प्रकाश
ही है। अरु अद्वती है अरु अनंत है। अरु महा प्रकाश है। अरु महा स्वरूप है। अरु महा
सत है। अरु महा चैतन है। अरु महा आनंद है। अरु महा दृढ है। अकार जब उ

२६४

कारकेलयकोप्राप्तभया॥ तबमकारसिद्धहूया॥ ताकोसाध्यमकारकेयोयामेंस्थित
है॥ अरपरमात्माहैएककरे॥ पूर्णनरसिंहलीनकरताहै॥ जोमैंऊयाभेदका
ज्ञाताहै॥ सोपरस्थूलसूक्ष्मकारनयातीनहीशरीरोंकेसोमकहै॥ अरकेवल
सतचितआनंदहै॥ अरस्वप्रकाशसोप्रकाशरूपहै॥ पुनः इंद्रकेदेवतोंनेप्रजा
पतिसोंवेनतीकरी॥ सुरउवाच॥ प्रश्नम्॥ तुमकवनहै॥ प्रजापतिउवाच॥ अहं
याहीसोजामेंकोऊपूछतहैजोतूकवनहै॥ वहिप्रथमअहंशब्दकोउचरअर
पाछेसोअपनोनावरकहतहै॥ तातेसर्वअहंहीउचरतहै॥ तातेसर्वअहंहीसर्व
कोनामसिद्धभया॥ अहंकेआदिहूप्रगटप्रथमअक्षरप्रणवहीकाहै॥ अरप्र
णवअरअहंपरस्परयोंहीद्वयहीअभेदहै॥ अरउत्पतिअकारकीसर्ववर
ननमेंहै॥ योकेवलआत्माहै॥ अरनामरूपसर्ववहीहै॥ अरसर्वआत्माहै

अरु सर्वमों ओंकार ही स्वरूप धारा है॥ अरु रामि न आत्मा सो वो उपदार्थ नही॥ संपूर्न आदि तं
आत्मा ही है॥ यो केवल ओंकार प्रगट है॥ अकार ही सो आत्मा को षोजे॥ जो किया है॥ जो क
छु देषीयत है सर्व ब्रह्म है॥ ब्रह्म सत चित आनंद है॥ अरु तेव यो कछु देषीयत है सत्रता वा
ही की है॥ यो प्रगट है अरु देषणे ते सत्तता ही समझीयत है॥ अरु स्वै ते न ता ही यो केन प्र
प्रगट होत है॥ पुनः सुर उवाच॥ प्रश्न॥ सत्रता किया है॥ प्रजापति उवाच॥ केवल स
मझा मैं यहि अरु वाहि न है॥ अरु वाही समझ को आनंभव करीयत है॥ अरु वही सत्रता
है॥ पुनः सुर उवाच॥ प्रश्न॥ अनुभव का को वरनीयत है॥ प्रजापति ने त्रौंको मूद कर
तूष्णी भये॥ अरु उत्तर न दीया कछु॥ तातपर्य यहि है॥ अनुभव वापदार्थ है॥ वाकं
डुवा को ग्राही कन ही होसकत॥ पुनः आसंका करत भये॥ चित अरु आनंद किया है
प्रजापति उवाच॥ यहि है अनुभव है॥ पुनः प्रश्न॥ अनुभव किया है॥ प्रजापति पूर्व

वत नेत्रों कों स्वदा॥ अरु तूरीया सेयु अकथ अउ तुरीया॥ जे स्वतच्चित आनंद ही अनुभव
है॥ पुनः प्रजापति उवाच॥ यो कथ इंद्रि का विषे है वीहि हूं स तच्चित आनंद है॥ अरु यो क
थ इंद्रि द्रा विषे न हीं वाहि हूं स तच्चित आनंद है॥ अरु आत्मानंद महानंद॥ अरु वहि महानं
द ही ब्रह्म है॥ अरु नाम वो का हूं ब्रह्म है॥ अरु ब्रह्म नाम के अंत मो हूं मकार स्थित है॥ या उ
मे के अंत मकार ही है॥ मकार ते रहित प्रणव ही न ही होत॥ पुनः प्रजापति उपदेस॥ या का
ल मों काहू सों जो कथ्यु परछीयत है॥ जो यहि है यों है॥ यो वा पदार्थ मों वा को नि श्रेयादि उ होत
है॥ तो वा के अर्थ मो जो ही कहत है॥ जो समर्थ है स्वतत्र है॥ ताते उ ही स्वतंत्र है॥ अरु स्वाहीय
ते है जो मकार मो पार ब्रह्म को षोजे॥ अकार मो जीवात्मा को षोजे॥ अरु उकार मो स्वतंत्र
सत्र जान करमकार जो ब्रह्म है ता सों एक ता के॥ अरु जो को उ या मो तन्निश्चे सो जाने॥
सो तीन ही शरीर के अहंमाव सो मुक्त है॥ अरु रजस्के वलस तच्चित आनंद हो कर स्व

काशहै॥ यहि सर्व संसार जो बध्यो है ब्रह्म ही है॥ अरु तेव ब्रह्म लीन करता सर्व को है॥ अथ वशे
ष उ संपूर्णप्रणव॥ वहि कृपालु है॥ वही धनी शक्ति का है॥ वहि प्रतपालक गंभीर है॥ वहि
केवल प्रकाश ही है॥ वहि सर्व दिशा मुष राषत है॥ वहि सर्व काल लीन करता नरसिंघ है॥ ६
वहि भयदायक सर्व को है॥ वहि सर्व को आनंद दे है॥ वहि मृत्यु का नाशक है॥ वहि योग न
मस्कार है॥ वहि अहं शबद का उचारन हारा सर्व मो है॥ अरु सर्व मो योग्य वही है॥ धनी
शक्ति का वही है॥ केवल प्रकाश वही है॥ सर्व दिशा मुष राषवाही को है॥ नरसिंघ लीन क
रता वही है॥ भयदायक सर्व का वही है॥ आनंद सर्व का वही है॥ नाशक रता मृत्यु का
वही है॥ नमस्कार को योग वही है॥ अहं शबद का उचारन हारा सर्व मो वही है॥ अरु
तेव प्रगट जो आकार है वासो परम ब्रह्म कानि जध्यान करकर साधम कार के जो
प्रथम अक्षर तारो मो स्थित है॥ अरु रूप अर्धमात्रा सो अभेद है॥ अरु धारनहारा मन कार

२६६ सर्वइंद्रिकाहै॥अरुसर्वकासाक्षीहै॥वाआत्मास्वस्वरूपकोषोजे॥आत्माजोसंसाररूपदं
डजालकाद्रिष्टाहै॥जवहीमायाकीओरदेषतेहै॥तवहीयहप्रपंचप्रगटहोतहै॥अथए
ककाललीलाकेनिमितआपमेधारतेहै॥पुनःसर्वप्रपंचकोजवमायाकीओरसोंद्रि
ष्टिखैंचतेहै॥तवप्रवृत्तिकोनिवृत्तिकरतेहै॥अरुसर्वकोएकठवरमेलकरअरुस्थूलता
अरुअहंकारप्रपंचकेकोदग्धकरकरआपहीभक्षणकरतेहै॥अर्थयहजोआपमे
लीनकरतेहै॥अरुसर्वकोअद्वैतअवस्थामेप्राप्तकरतेहै॥अरुसंपूर्णआपहीहै
जोचाहतेहैवहीकरतेहै॥अतिक्रपालुहै॥अरुधनीशक्तिकाहै॥अतिप्रतिपाल
कअरुअतिगंभीरहै॥सर्वदिशाअतिमुखवाहीकेहै॥अरुअतिकेवलप्रकाशहै॥अ
तिगंभीरनरसिंघलीनकरताहै॥अतिभयदायकहै॥अतिआनंददायकसर्वका
है॥अतिनाशकरतामित्रताकाहै॥अतियोगनमस्कारवेहै॥अतिअहंवकतासर्व

मो है॥ सा घ इत्यादि कगुणनि के प्रमान होत संते तिनि तें अपुने ही अंभीर तामें विराजत हैं॥ ताते
चाहियत है॥ यो जीवात्मा को साथ मकार के यो व्यापक है॥ एक जान क रूप अरु अकार को सा
थवां के अर्थ के यो पार ब्रह्म है एक करू अरु साथ उकार के संपर्ण संदेह अपुन्यो कौ ना
श करे॥ जो को ऊयाभां तनि कै सो जाने॥ सो तीन ही शरीरे के बंधन सो मुकत
होकर स्वतीचित आनंद मय है॥ अरु स्वप्रकाश है॥ अरु अवर वेद मो हू वर्ने नभ
या है॥ तथा॥ प्रथम मात्रा को द्वितीय मात्रा मो लीन करे॥ अरु द्विती मात्रा को त्रि
तीय मात्रा मे अरु या तीनन ही को अर्ध मात्रा सो लीन एकता भाव को प्राप्त करे॥
इति सप्तम षंड नरसिंघ तापनी उपनिषद अथर्वण वेद भाषा समाप्तम॥
अथ अर्धमात्रा जो चतुर्थ पाद प्रणव को है॥ ताको साथ या आत्मा के यो वर्ने नभ
या॥ तारपर व तत्त अभेद चाहीये बूझ॥ अरु यहि आत्मा नरसिंघ है॥ यो सर्व को

लीन करत है॥ यहि हंस पर्ण संसार मध्य आवत है॥ अरु वही संसार है॥ अरु यो अध्यस्त है सर्व व
ही है॥ अरु तारतम्य सर्व वही है॥ अरु द्वैत न ही राखत॥ अरु तेउ यो अद्वैत है॥ अरु प्रणाम को
न ही प्राप्त होत॥ अरु यहि सर्व संसार ये असत्य है॥ अरु दृष्टि परत है सो परमार्थ असत्ता
सो न ही अध्यस्त देखीयत॥ केवल आत्मा ही स्फुरत है॥ अरु वही स्थित है॥ अरु यहि आत
मा सत्ता ही सो पर्ण है॥ अरु द्वैत नाना सो ही पर्ण है॥ अरु सर्व ठवरस मे है॥ अरु पृथ्वि र
त संसार को सो अलित है॥ अरु अद्वैत है॥ याही भांत प्रणव हू आत्मा सो तार पट वत
अभेद है॥ जव ताहू सो अध्यस्त देखीयत है॥ सो यहि यों ही है॥ सो वाको सत्ता ब्रह्म की सो
निश्चै होत है॥ तो वाके उत्तम मो वीहे तो ही उचरत है॥ अरु यो को अध्यस्त देखीयत है जो यों न
ही॥ अरु असत्ता वाकी सो ताको निश्चै होत है॥ तो हूं वाके उत्तम सो वीह प्रणव ही क
हत है॥ अरु तेउ जो प्रणव केवल सत्ता है॥ अरु व्यापक है॥ ताते वाके इंद्रि प्रणव ही को प्र

गटअरत है ॥ अरु सर्व भांत वाही इंद्रि ही है ॥ वाकू इंद्री सों भिन्न नहीं कह्यु ॥ याही सों जो
कछु है प्रमाण वही है ॥ अरु यही प्रमाण केवल ज्ञान है ॥ अरु सर्व संसार चेतन नहीं है ॥ अते
व जो सर्व चेतन नहीं है ॥ महाप्रलै मों मद्र चेतन नरूपधनी संसार के सर्व संसार लीन
होत है ॥ अरु वा काल मों जव लीन होत है ॥ तव याहि हू अभय अरु अक्षय पद को प्राप्त
होत है ॥ यो ब्रह्म अभय अरु अक्षय है ॥ अरु जो कोऊ या भेद को निश्चै सो समझे वाहि
हू अभय अरु अक्षय है ॥ याहि भेद जानि तिग्य वकरने को योग है ॥ अरु यहि ज्ञाता आत्म
पुनेय ज्ञासी को आपसा करत है ॥ अरु याहि स्वतें जीवत नहीं सर्व वाही सों जीवत है
अरु वाको याहि हू कहि सकीयत नहीं जो तार होकर सर्व मों व्यापक भया है ॥ अरु य
ह हू कह सकीयत नहीं जो आपुनेय ज्ञासी को आपसा करत है ॥ अते व जो वा सों क
छु भिन्न ति तन नहीं होत ॥ जो तार होकर मद्र वाके प्रवेश करे ॥ अरु प्रमाण को नहीं प्राप्त

होतभ्रांतिहीहै॥ तातेआपसाकाकोकरे॥ संपूर्नआपसायअपुनेहीहै॥ अरउंहूत
दवतयज्ञासीअपुनेकोआपसाकरतहै॥ याहीसोजोकछुकोऊधारतहै उंहीउ
चरतहै॥ जोमलवाकंद्रिकाउंहीहै॥ तातेवाकूंइंद्रिहीसोसर्वपदार्थोकोधारीयत
है॥ अरउंहीकेवलचैतन्यहै॥ अरसंपूर्नसंसारहूकेवलचैतन्यहै॥ अरयाहिसं
सारअपुनीचैतनतानहीराषत॥ अरवहिआत्माकेवलचैतन्यहै॥ यामोआवेश
करतहै॥ अरचैतन्यताअपुनीकोदेषतहै॥ याहीसोसर्वसंसारआत्माजोमहा
चैतनगंभीरहै तामोलीनहोतहै॥ अरजवलगवामोलीनरहतहै॥ तवलगअ
भयअरअषयपदमोप्राप्तरहतहै॥ जोब्रह्मअभयहै॥ तातपर्ययहि तुरीयापद
जोकेवलआत्माहै वहीचेतनहै॥ अरजहातुरीयाकीन्यूनताहै तहाचेतन
ताहूकीन्यूनताहै॥ अरकेवलतुरीयामोसर्वसंसारचेतनहीहै॥ ताततहा

संसारहीनहीं॥कवचनमोलीनहोकेवलस्वरूपचेतननहीहै॥अरुजोकोयामांतनिश्चे
सोसमुझे॥वहिहूअभयहो॥याहिभेदअतिगुप्तकरनेकोयोगहै॥सर्वमांतआत्मा
केवलचैतंनहै॥अरुएकरसहै॥अरुचैतंन्यताहीसोपूर्नहै॥अरुसर्वहीसर्वसं
सारकेप्रकाशकहै॥अरुवहिजोप्रकाशकपुरातनहै॥सोकेवलअनुभवहै॥प
मैचेतन्यहै॥अरुतारहूहोनेसोअरुअद्वैतपदहूसोशुद्धहै॥अतेवजोयाअवस्था
मोजोकछुहैआत्माहीहै॥भिंनवासोअवरनहीकछु॥जाकोआपसाकरे॥अरु
याहीसोनतारहीहै॥योवुनमेमोपरवतहो॥वहिकेवलआनंदहीहै॥याकाल
मोयोकोऊपुलषुस्वप्रतीतकरतहै॥अरुएकरसहै॥जबवहीअनुभवआतम
ईहै॥तबवउँकोउचरताहूआस्तप्रतीतकरतहै॥वाकइंद्रिउँहै॥याहीसोयोजा
कोवाकइंद्रिअंगीकारकरकरतहैयहीसत्प्रतीतहोतहै॥अरुउँहीकेवलचेतन

है॥अरु सब प्रतीत करनी सर्व पदार्थो के हू चेतन्न मानते है॥अन्ते व सर्व संसार स्वाप्न ध
नी संसार के एक होत है॥या काल मो जो सुषुप्ति संसार साथ गंभीर धनी संसार के
एक भया वा काल मो अभय अरु असे पद मो रहत है॥अन्ते व जो ब्रह्म अभय है॥अ
अर जो कोउ या का ज्ञाता है वहि है अभय है॥यहि भेद अति गुप्त करने को योग है
या भांत ज्ञे आत्मा अभेद है॥ता ते अद्वैत है॥अरु यहि ऊँ केवल चेतन्न है॥याही सो सु
षुप्ति संसार साथ गंभीर धनी संसार के एक होत है॥या अवस्था सो आत्मा कछु हू व
लपत वे धन नही लषत॥कारन वे धन कोन ही तहा॥अरु जो कोउ या अद्वैत अवस्था
आत्मा की मोए क अभिन्न हू को भिन्न वा सो प्रतीत करत है॥वह पुरुष तब उ अरु सहस
षंड होत है॥अरु या लोक मो गमन न करत है॥महा मित्र तुम्हे मुख सो मुक्ति को नही प्रा
स होत॥तातपर्य यहि जो कोउ अंकरन हू को आत्मा सो भिन्न जानत है सो आत्मा को

खंड जानत है॥ अरु जब आत्मा को खंड खंड जाना आप हू खंड खंड भया॥ अरु वा आत्मा को दे
त कठिन है॥ स्वप्रकाश है॥ अरु महा आनंद है॥ अरु केवल आत्मा है॥ अरु अक्षय है अरु
अभय है॥ अरु यहि सर्व ब्रह्म ही है॥ ता ते अभय है॥ अरु जो को ऊ या भांत समझे वह
हू अभय है॥ अरु यहि भेद गुह्य करने को योग्य है॥ या प्रकार प्रजापति देवतों प्रति उ
देश करत भये॥ इति अष्टम खंड नरसिंह तापनी उपनिषद॥ ॥ पुनः सर्व असु
रनि कर प्रजापति के सेवक भाव सो प्रश्न करत भये॥ असुरो वाच॥ तुम जो नम
स्कार को योग्य हो॥ वा अद्वैत आत्म रूप प्रणव को हम को उपदेश करो॥ प्रजापति असुरे
प्रति उवाच॥ आत्मा सर्व ते भिन्न है॥ अरु सर्व को द्रष्टा है॥ अरु शुभ अशुभ सर्व सं
सार के पदार्थों से अलिप्त है॥ अरु निष्काम है॥ अरु यह आत्मा नरसिंघ लीन
करता संहार कारन शरीरों का है॥ अरु केवल चेतन्य है॥ अरु वाग मन सो रहत है

अरु सर्व का ज्ञाता है॥ अरु सर्व काल मों अरु सर्व ठवर मों पूर्न है॥ अरु सर्व सरूप है
अरु सरूप तावा मो कठिन है॥ अरु अभ्यंतर सर्व के बाहिर अद्वैत ही पूर्न है॥ अरु य
हि अद्वितीय आत्मा ही सत्य है॥ अरु अनवर सर्व मिथ्या है॥ वाकों द्वैत नही॥ माया के
संयोग सों भिन्न सो है॥ यही आत्मा मुख्य है यही आत्मा सर्व है॥ वहि को उयो ज्ञानवा
न अरु बुद्धिमान है संपूर्न संसार प्रपंच को जो देषते है केवल मिथ्या अविद्या
समझते है॥ अरु यहि जीवात्मा ही परमात्मा है॥ या सों भिन्न जो कछु है मिथ्या
है॥ अरु या पदार्थ के समझने को कछु चाहीयत नही॥ आप ही आप लो समझ
लीयत है॥ याही सो यहि दीर्घ अरु विस्तीर्न जो कला पंच महातत्व के विकार यो
दे षीयत है॥ अरु मनु वांको नाही वेदांत है आत्मा वा सो अस्पर्श अरु भिंन्न
है॥ वांको साधन काहू पदार्थ के नही सकीयत प्राप्त है॥ आप ही सो घट अपुने को आ

कौसमुझतेहै।अरुज्ञानअरुज्ञातवहूसोपरोक्षहै।केवलअनुभवहूसोप्राप्तहूजीयतहै।मया
ज्ञातमञ्जरस्पष्टंनजानामियहीहैस्वरूपवाकाताकोहूअपुनेअपुनेअनुभवहूतेप्र
प्रहूजीयतहै।मायाअविद्याप्रगटकरनहारीजड़पदार्थोंकीअरमोहअरुममताअर
स्थूलताकीहै।जैसेइत्यादिकभ्रमरूपपदार्थोंकोप्रगटकरतेहै।तैसेकोऊआपहूभ्रमअरुरज
उहै।अरुरीनश्रेतकेवलज्ञानितहीहै।याभांतकीमायाकोबुद्धिहीनअपुनाअज्ञानताजा
नतेहै।अरुयहमायाहीसत्यकोअसत्यकोप्रगटकरतीहै।सत्यकोमिथ्यादिखावतहै।
अरुमिथ्याकोसत्य।अज्ञाताजोहैसत्यताकोमिथ्यादिखावतहै।अरुदृश्यपदार्थजो
मिथ्याताकोसत्यदिखावतहै।समर्थकोअसमर्थदिखावतहै।असमर्थकोसमर्थमा
यावद्वृक्षकेबीजवतहै।जैसेवटहूकेबीजहैवसोमोअतिसूक्ष्मवहै।अरुविस्तारकरने
मोअंभीरहै।अरुसंपूर्णवाक्षमोव्यापकहै।तैसेहीमायाहूसर्वशरीरमोव्या

माया सत्यको असत्य और असत्यको सत्य दिखाती है।

पड़े है॥ औरसंपूर्ण शरीरों को भिन्न भिन्न करकर एक कोई स्वरूप और एक को जीव कहते है॥
पुनः माया द्वयभेद को प्राप्त भई है॥ एक भेद यहि जो अविद्या है॥ और अप्रमाण जो केव
ल चैतन्य है॥ और ज्ञान रूप है॥ तासों मिश्रित होकर जीव कहलावत है॥ और दी
न ताको प्राप्त होकर विनाशी जो है सुख और दुःख ताको अंगीकार करते है॥ और
द्वितीय भेद यहि ये आपको वा चैतन्य मे लीन करकर तसे ते ईश्वर कहलावत है॥ और य
हि माया जो आपने स्वरूप राखत है॥ उत्पत्ति हेतु है॥ और स्वरूप ने भेदों को प्रगट करत
है॥ और आपको उत्पत्ति स्थिति और संघार या तीन गुण के भेद सों भिन्न भिन्न जीवों को है
और सर्व को आत्मा है॥ और सर्व ते परे चित्र है॥ और सर्व रूप होकर सर्व को भक्षण करत
है॥ और या काल मे सर्व को भक्षण करते है आप अबे त ही रहते है॥ वही परम तुरीया
है॥ और स्वरूप द्वार वा स्फूर्ति जो वेद का तत्व है या मे सो यहि एकादश नाम है॥ तथ्य यथा

त्मसर्वपरप्रशंसनहै॥शक्तिकाधनीहै॥प्रतिपालकमहागंभीरहै॥केवलप्रकाशहै॥स्व
यंदिशमुखवाहीकोहै॥लीनकरतासर्वजीवोकोहै॥सर्वकोअपुनेभयसोराषतहै॥
सर्वकोआनंददायकहै॥मित्रकानाशकरताहै॥सर्वकोचरनवंदनाकरतहै॥
सर्वमोअहंपदवहीहै॥यासर्वकामरमाआपुकोजानकरसाषपरमात्माअरउ
कोअभेदहै॥अररूअवरवेदोकीहृदयश्रुतीमोवर्ननभयाहै॥द्वितुब्रसभावनासो
ब्रह्मभावनाकेकरनहारास्वरूपकोग्रहतेहै॥तातेद्रिदेअपन्योकोयोसेजानमा
यावीहै॥अररएकएकइंद्रिअपन्योअपन्योविषयोमोप्रवृत्तेतहै॥यासर्वकोनिषि निकृष्ट
ध्यपदार्थांकीप्रवर्ततसोफेरकरकरएकठवरमोल्याके॥अररहस्युवेदकायोहै
उपनिषदतासोइंद्रिकोकाटे॥अररमायायोअसत्नलपसोसर्वठवरपसीहै॥अररगो
वतयोमायामानाहैइंद्रिकी॥अररइंद्रिवाकेवधारितुसमानहै॥तामायाकोज्ञानके

मायाको स्याग
केवलसे नाशकरै

२२२ वल्ससोन्नाशकरे॥ अरु आत्मा जो नृसिंह व तसर्व का भक्षण करन हारा अरु आपुना आपु
है॥ ताको यहि संपूर्ण प्रपंचयो मायिक है॥ सो माया सहित भक्षण करवावे॥ यो पुरुष या
मां तप्रवर्त्ते वहीं प्राकि का धनी है॥ अरु वही सूरमा है॥ अरु वेदों का रहस्य जो उपनि
षद है तामो इंद्रि अपुन्यो को लीन करकर अरु चरनो के अधः ऊरकरीभूतकर
रे॥ पुनः माया को यो संपूर्ण चाहे होकी माता है॥ आपभक्षण करे॥ आत्मा यो नृसिंह
रूप सर्व का लीन करता है॥ ताको पुनः पुनः संबूह नमस्कार करकर सदा आपको या
मां तजाने॥ यो आत्मा नृसिंह रूप सर्व का लीन करता मे ही हैं॥ यो पुरुष या प्रका
र निश्चे ते निधरकवर्त्ते वही आत्मा है॥ इति चतुर्थ खंड नृसिंहतापनी उपनिषद
समाप्तम॥ यह आत्मा॥ ॥॥ यह अकार यो प्रथम मात्रा प्रणव की है॥ सर्व को अरम
म्हांके यो तद्रुत है॥ ताके अंति प्रेय है॥ अरु आत्मा नृसिंह लीन करनहारा जीवो

माया साथ रहै
योकी माया है

